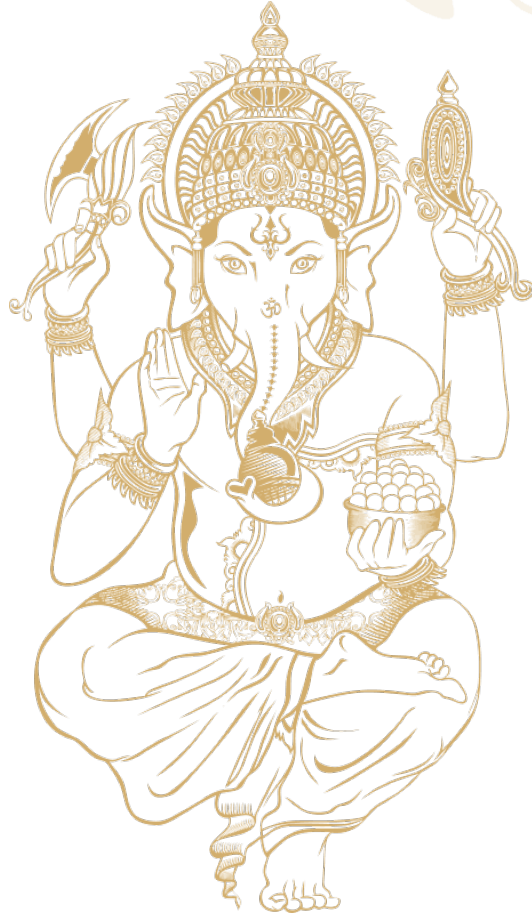




Arunkumar Tiwari

25 Feb 1966

07:00 AM

Varanasi

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119720401

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 25/02/1966  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 07:00:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 01:26:07 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Varanasi  
राज्य \_\_\_\_\_: Uttar Pradesh  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:19:03 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 82:58:26 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:01:54 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 07:01:53 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:13:14 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 17:19:47 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:25:33 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:57:18 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:31:45 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 12:36:58 कुम्भ  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 22:53:41 कुम्भ

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: कुम्भ - शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मेष - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: अश्विनी - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: केतु  
योग \_\_\_\_\_: शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: अश्व  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: चतुष्पाद  
वर्ग \_\_\_\_\_: सिंह  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: चे-चेतन  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मीन



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
 पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
 माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
 जाति \_\_\_\_\_ :  
 गोत्र \_\_\_\_\_ :

| कैलेंडर    | वर्ष          | मास     | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|---------|----------------|
| राष्ट्रीय  | शक : 1887     | फाल्गुन | 6              |
| पंजाबी     | संवत : 2022   | फाल्गुन | 14             |
| बंगाली     | सन् : 1372    | फाल्गुन | 13             |
| तमिल       | संवत : 2022   | मासी    | 13             |
| केरल       | कोल्लम : 1141 | कुंभम   | 13             |
| नेपाली     | संवत : 2022   | फाल्गुन | 14             |
| चैत्रादि   | संवत : 2022   | फाल्गुन | शुक्ल 5        |
| कार्तिकादि | संवत : 2022   | फाल्गुन | शुक्ल 5        |

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
 तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 26:37:14  
 जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : अश्विनी  
 नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 26:25:03 घंटे  
 जन्म योग \_\_\_\_\_ : अश्विनी  
 सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
 योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:16:45 घंटे  
 जन्म योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
 सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बव  
 करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:56:40 घंटे  
 जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
 भयात \_\_\_\_\_ : 16:26:21  
 भभोग \_\_\_\_\_ : 64:59:01  
 भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : केतु 5 वर्ष 2 मा 26 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : कार्तिक  
 तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
 दिन \_\_\_\_\_ : रविवार  
 नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मघा  
 योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
 करण \_\_\_\_\_ : बव  
 प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
 वर्ग \_\_\_\_\_ : मृग  
 लग्न \_\_\_\_\_ : मेष  
 सूर्य \_\_\_\_\_ : कर्क  
 चन्द्र \_\_\_\_\_ : मेष  
 मंगल \_\_\_\_\_ : सिंह  
 बुध \_\_\_\_\_ : वृष  
 गुरु \_\_\_\_\_ : कन्या  
 शुक्र \_\_\_\_\_ : तुला  
 शनि \_\_\_\_\_ : मिथुन  
 राहु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक

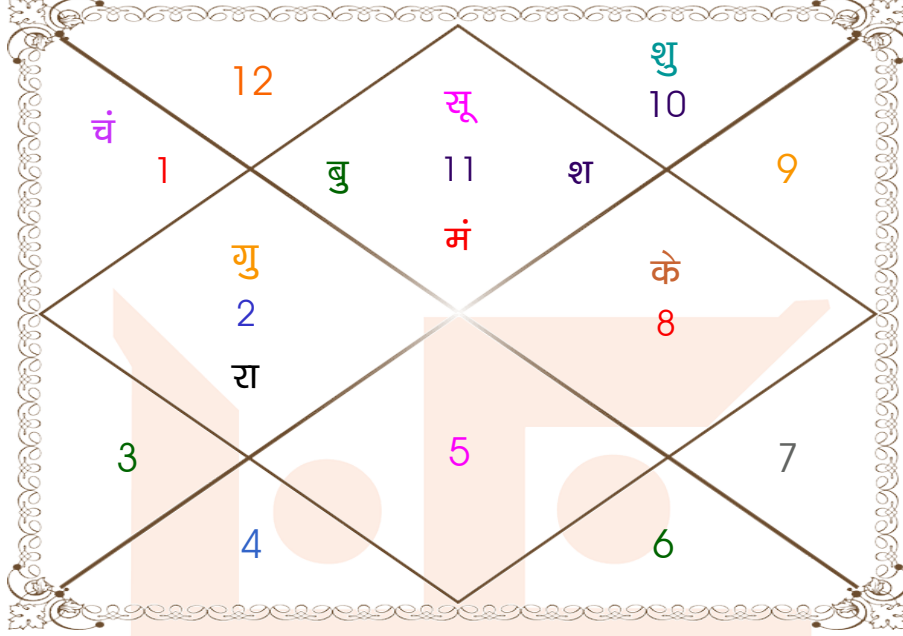


**FUTUREPOINT**  
 Astro Solutions

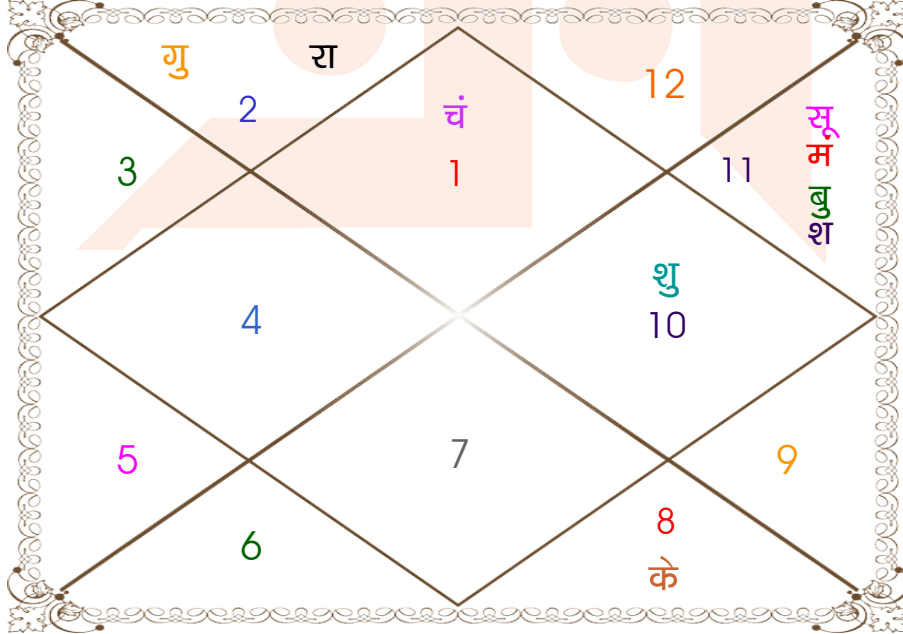


# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली



## चन्द्र कुंडली



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

|    |    |    |  |
|----|----|----|--|
|    | चं | रा |  |
| श  | ल  | गु |  |
| मं | सू |    |  |
| शु |    |    |  |
|    | के |    |  |

### लग्न कुंडली

|    |    |    |
|----|----|----|
| रा | चं | श  |
| गु |    | ल  |
|    |    | सू |
|    |    | शु |
|    | के |    |

विंशोत्तरी  
केतु 5वर्ष 2मा 26दि  
केतु

25/02/1966

23/05/2084

|        |            |
|--------|------------|
| केतु   | 24/05/1971 |
| शुक्र  | 24/05/1991 |
| सूर्य  | 23/05/1997 |
| चन्द्र | 24/05/2007 |
| मंगल   | 23/05/2014 |
| राहु   | 23/05/2032 |
| गुरु   | 23/05/2048 |
| शनि    | 24/05/2067 |
| बुध    | 23/05/2084 |

योगिनी  
भ्रामरी 2वर्ष 11मा 28दि  
संकटा

23/02/2023

23/02/2031

|         |            |
|---------|------------|
| संकटा   | 03/12/2024 |
| मंगला   | 22/02/2025 |
| पिंगला  | 04/08/2025 |
| धान्या  | 04/04/2026 |
| भ्रामरी | 23/02/2027 |
| भद्रिका | 04/04/2028 |
| उल्का   | 04/08/2029 |
| सिद्धा  | 23/02/2031 |

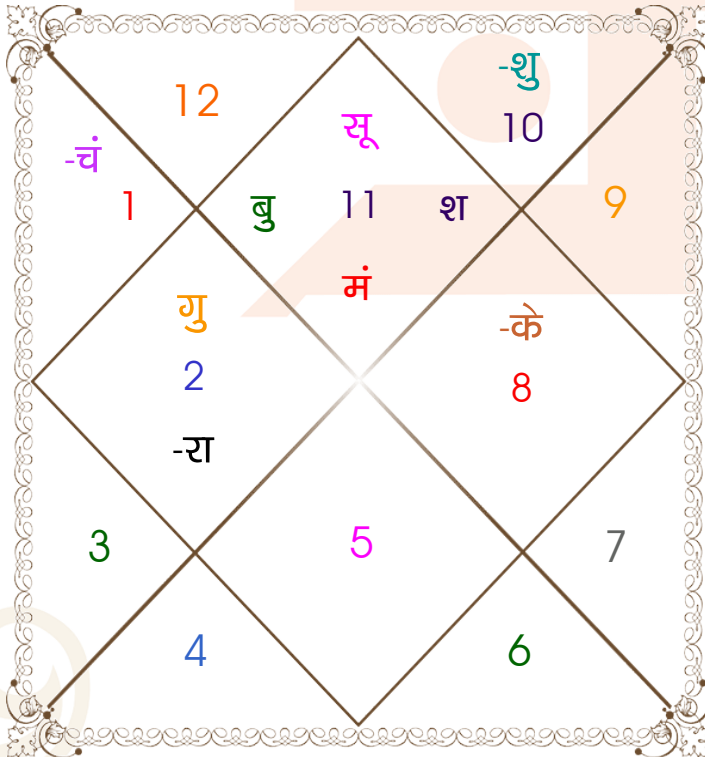
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह    | व | अ | राशि   | अंश      | गति       | नक्षत्र     | पद | नं. | रा    | न     | अं.   | स्थिति     |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|-------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न    |   |   | कुंभ   | 22:53:41 | 487:57:00 | पू०भाद्रपद  | 1  | 25  | शनि   | गुरु  | शनि   | ---        |
| सूर्य   |   |   | कुंभ   | 12:36:58 | 01:00:21  | शतभिषा      | 2  | 24  | शनि   | राहु  | बुध   | शत्रु राशि |
| चंद्र   |   |   | मेष    | 03:21:08 | 12:15:32  | अश्विनी     | 2  | 1   | मंगल  | केतु  | सूर्य | सम राशि    |
| मंगल    |   |   | कुंभ   | 26:53:43 | 00:46:58  | पू०भाद्रपद  | 3  | 25  | शनि   | गुरु  | शुक्र | सम राशि    |
| बुध     |   |   | कुंभ   | 27:39:32 | 01:40:49  | पू०भाद्रपद  | 3  | 25  | शनि   | गुरु  | शुक्र | सम राशि    |
| गुरु    |   |   | वृष    | 28:01:41 | 00:01:57  | मृगशिरा     | 2  | 5   | शुक्र | मंगल  | शनि   | शत्रु राशि |
| शुक्र   |   |   | मक     | 06:29:07 | 00:20:11  | उत्तराषाढ़ा | 3  | 21  | शनि   | सूर्य | बुध   | मित्र राशि |
| शनि     |   |   | कुंभ   | 24:47:35 | 00:07:17  | पू०भाद्रपद  | 2  | 25  | शनि   | गुरु  | बुध   | स्वराशि    |
| राहु    | व |   | वृष    | 05:33:44 | 00:05:00  | कृतिका      | 3  | 3   | शुक्र | सूर्य | बुध   | मित्र राशि |
| केतु    | व |   | वृश्चि | 05:33:44 | 00:05:00  | अनुराधा     | 1  | 17  | मंगल  | शनि   | बुध   | मित्र राशि |
| हर्ष    | व |   | सिंह   | 24:42:40 | 00:02:33  | पू०फाल्गुनी | 4  | 11  | सूर्य | शुक्र | बुध   | ---        |
| नेप     | व |   | तुला   | 28:47:53 | 00:00:05  | विशाखा      | 3  | 16  | शुक्र | गुरु  | सूर्य | ---        |
| प्लूटो  | व |   | सिंह   | 24:04:39 | 00:01:33  | पू०फाल्गुनी | 4  | 11  | सूर्य | शुक्र | बुध   | ---        |
| दशम भाव |   |   | वृश्चि | 27:22:36 | --        | ज्येष्ठा    | -- | 18  | मंगल  | बुध   | गुरु  | --         |

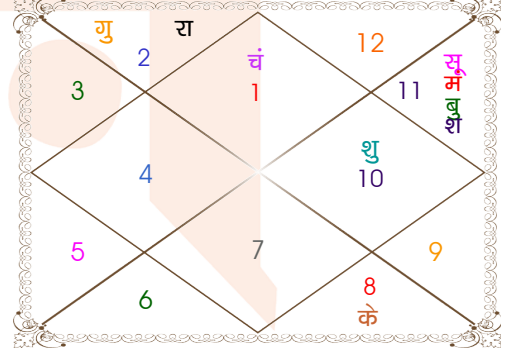
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:22:49

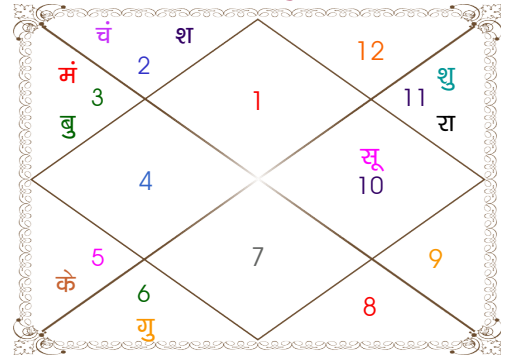
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि         | भाव मध्य         |
|-----|------------------|------------------|
| 1   | कुम्भ 08:38:31   | कुम्भ 22:53:41   |
| 2   | मीन 08:38:31     | मीन 24:23:20     |
| 3   | मेष 10:08:09     | मेष 25:52:58     |
| 4   | वृष 11:37:47     | वृष 27:22:36     |
| 5   | मिथुन 11:37:47   | मिथुन 25:52:58   |
| 6   | कर्क 10:08:09    | कर्क 24:23:20    |
| 7   | सिंह 08:38:31    | सिंह 22:53:41    |
| 8   | कन्या 08:38:31   | कन्या 24:23:20   |
| 9   | तुला 10:08:09    | तुला 25:52:58    |
| 10  | वृश्चिक 11:37:47 | वृश्चिक 27:22:36 |
| 11  | धनु 11:37:47     | धनु 25:52:58     |
| 12  | मकर 10:08:09     | मकर 24:23:20     |

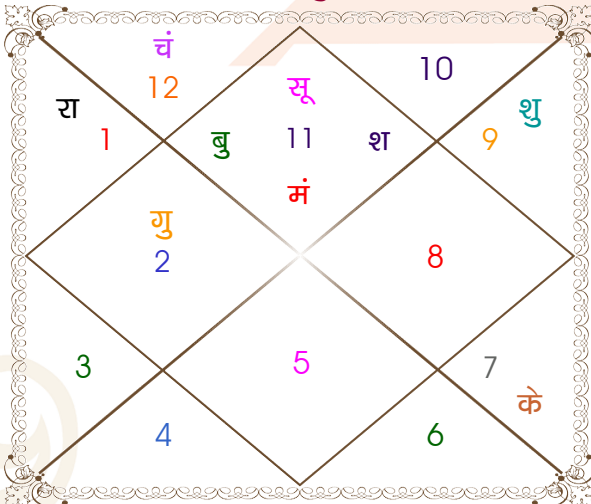
## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि             | अंश |
|-----|------------------|-----|
| 1   | कुम्भ 22:53:41   |     |
| 2   | मेष 01:27:25     |     |
| 3   | वृष 02:02:55     |     |
| 4   | वृष 27:22:36     |     |
| 5   | मिथुन 21:30:02   |     |
| 6   | कर्क 18:28:15    |     |
| 7   | सिंह 22:53:41    |     |
| 8   | तुला 01:27:25    |     |
| 9   | वृश्चिक 02:02:55 |     |
| 10  | वृश्चिक 27:22:36 |     |
| 11  | धनु 21:30:02     |     |
| 12  | मकर 18:28:15     |     |

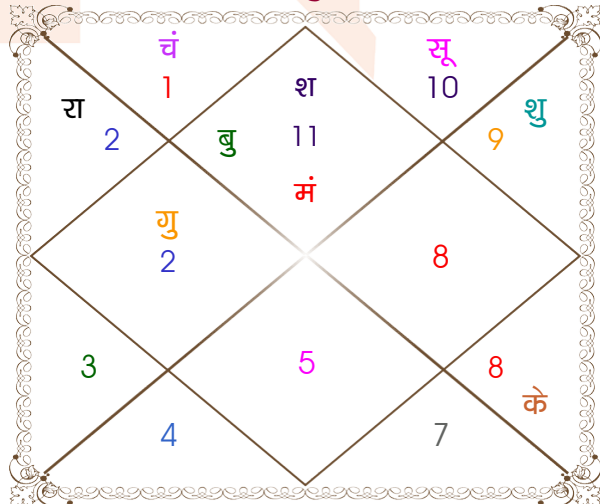
## तारा चक्र

| जन्म    | सम्पत्         | विपत्       | क्षेम  | प्रत्यारि | साधक    | वध            | मित्र     | अतिमित्र |
|---------|----------------|-------------|--------|-----------|---------|---------------|-----------|----------|
| अश्विनी | भरणी           | कृतिका      | रोहिणी | मृगशिरा   | आर्द्रा | पुनर्वसु      | पुष्य     | आश्लेषा  |
| मघा     | पूर्वाफाल्गुनी | उ०फाल्गुनी  | हस्त   | चित्रा    | स्वाति  | विशाखा        | अनुराधा   | ज्येष्ठा |
| मूल     | पूर्वाषाढ़ा    | उत्तराषाढ़ा | श्रवण  | धनिष्ठा   | शतभिषा  | पूर्वाभाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती    |

## चलित कुंडली



## भाव कुंडली



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



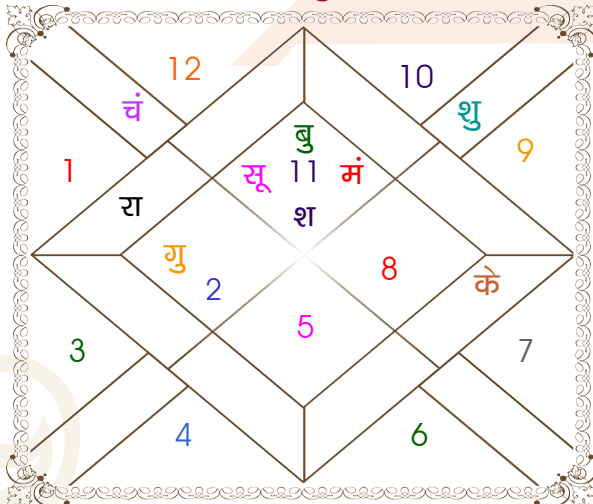
## कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह  | ----- कारक ----- | ----- अवस्था ----- |                                      |
|-------|------------------|--------------------|--------------------------------------|
|       | चर               | स्थिर              | बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल |
| सूर्य | पुत्र            | पितृ               | युवा खल शयन 2.72 62 %                |
| चंद्र | कलत्र            | मातृ               | बाल शक्त गमन 9.02 46 %               |
| मंगल  | भातृ             | भातृ               | मृत निपीदित प्रकाश 2.10 66 %         |
| बुध   | अमात्य           | ज्ञाति             | मृत निपीदित शयन 0.24 71 %            |
| गुरु  | आत्मा            | धन                 | बाल खल नृत्यलिप्सा 2.22 73 %         |
| शुक्र | ज्ञाति           | कलत्र              | वृद्ध मुदित शयन 5.90 40 %            |
| शनि   | मातृ             | आयु                | मृत स्वस्थ भोजन 2.30 57 %            |
| राहु  | ---              | ज्ञान              | मृत मुदित शयन 0.00 38 %              |
| केतु  | ---              | मोक्ष              | मृत मुदित सभा 0.00 38 %              |
| कुल   |                  |                    | 24.51                                |

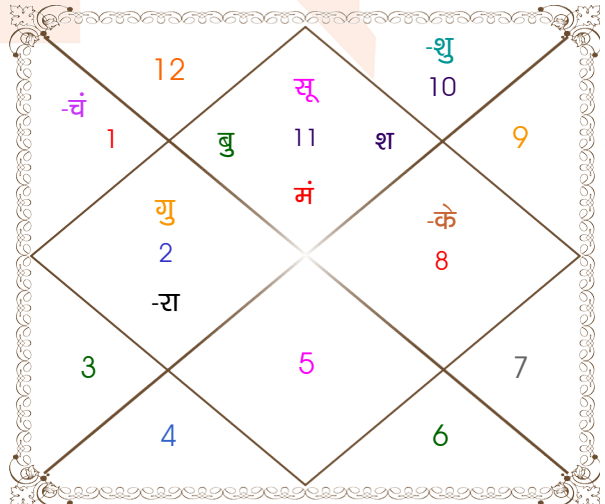
### तारा चक्र

| जन्म    | सम्पत      | विपत       | क्षेम  | प्रत्यारि | साधक    | वध         | मित्र     | अतिमित्र |
|---------|------------|------------|--------|-----------|---------|------------|-----------|----------|
| अश्विनी | भरणी       | कृतिका     | रोहिणी | मृगशिरा   | आर्द्रा | पुनर्वसु   | पुष्य     | आश्लेषा  |
| मघा     | पूर्वाषाढा | उत्तराषाढा | श्रवण  | धनिष्ठा   | शतभिषा  | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती    |

### चलित कुंडली



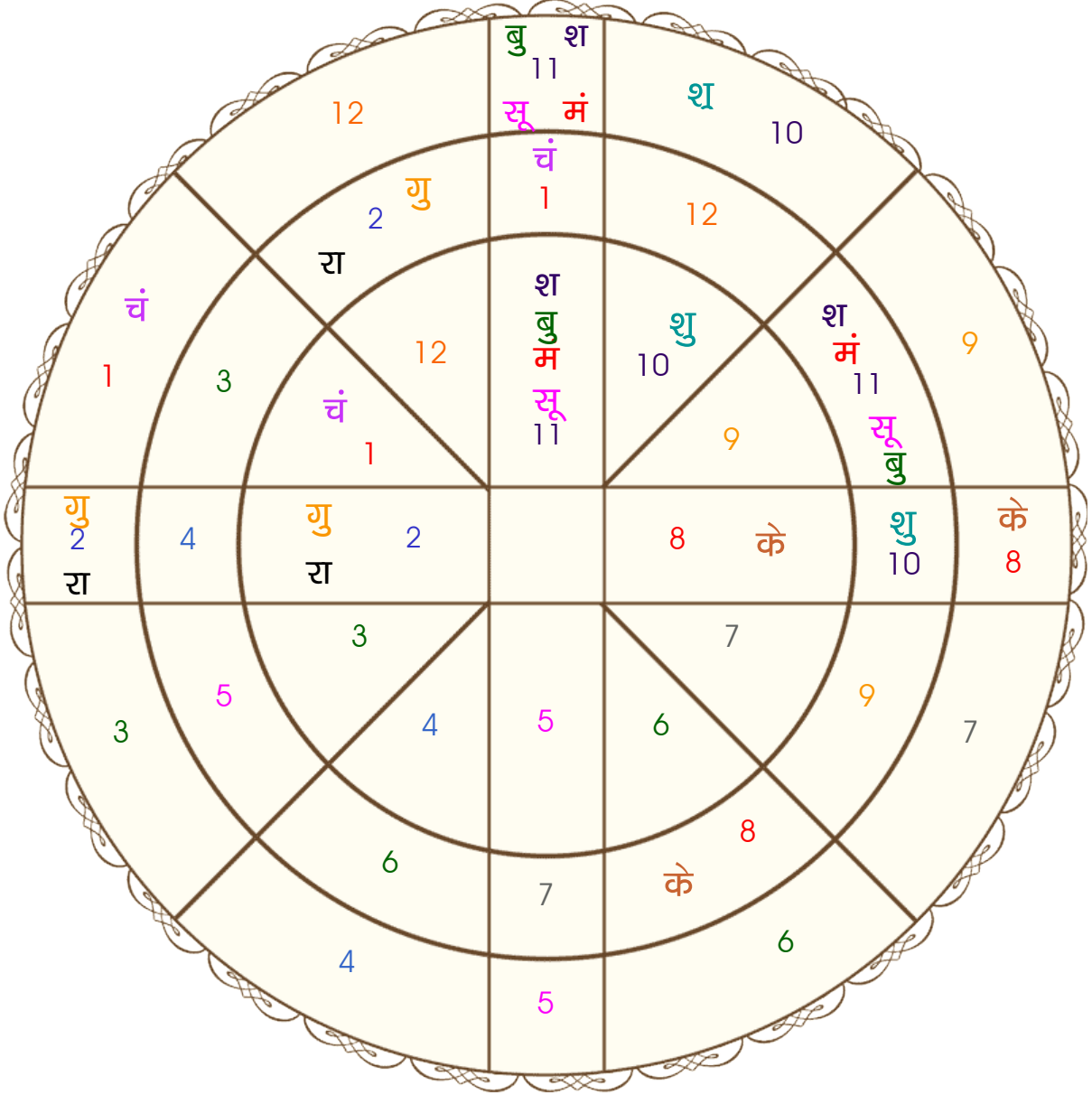
### लग्न-चलित



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

# कृष्णमूर्ति पद्धति

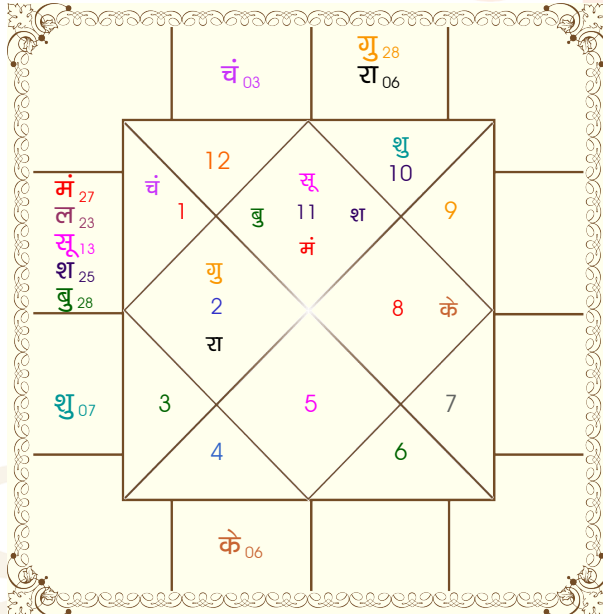
भोग्य दशा काल : केतु 5 वर्ष 2 मास 8 दिन

| ग्रह   | व | राशि   | अंश      | रा    | न     | अं.   | प्र.  | भाव | राशि   | अंश      | रा    | न     | अं.   | प्र.  |
|--------|---|--------|----------|-------|-------|-------|-------|-----|--------|----------|-------|-------|-------|-------|
| सूर्य  |   | कुंभ   | 12:42:50 | शनि   | राहु  | बुध   | बुध   | 1   | कुंभ   | 22:59:33 | शनि   | गुरु  | शनि   | चंद्र |
| चंद्र  |   | मेष    | 03:27:00 | मंगल  | केतु  | सूर्य | बुध   | 2   | मेष    | 01:33:17 | मंगल  | केतु  | शुक्र | मंगल  |
| मंगल   |   | कुंभ   | 26:59:35 | शनि   | गुरु  | शुक्र | सूर्य | 3   | वृष    | 02:08:47 | शुक्र | सूर्य | गुरु  | शुक्र |
| बुध    |   | कुंभ   | 27:45:24 | शनि   | गुरु  | शुक्र | गुरु  | 4   | वृष    | 27:28:28 | शुक्र | मंगल  | गुरु  | चंद्र |
| गुरु   |   | वृष    | 28:07:33 | शुक्र | मंगल  | शनि   | शनि   | 5   | मिथु   | 21:35:54 | बुध   | गुरु  | गुरु  | राहु  |
| शुक्र  |   | मक     | 06:34:59 | शनि   | सूर्य | बुध   | गुरु  | 6   | कर्क   | 18:34:06 | चंद्र | बुध   | केतु  | केतु  |
| शनि    |   | कुंभ   | 24:53:27 | शनि   | गुरु  | बुध   | मंगल  | 7   | सिंह   | 22:59:33 | सूर्य | शुक्र | शनि   | शुक्र |
| राहु   | व | वृष    | 05:39:35 | शुक्र | सूर्य | बुध   | शुक्र | 8   | तुला   | 01:33:17 | शुक्र | मंगल  | बुध   | गुरु  |
| केतु   | व | वृश्चि | 05:39:35 | मंगल  | शनि   | बुध   | बुध   | 9   | वृश्चि | 02:08:47 | मंगल  | गुरु  | राहु  | शनि   |
| हर्ष   | व | सिंह   | 24:48:32 | सूर्य | शुक्र | बुध   | चंद्र | 10  | वृश्चि | 27:28:28 | मंगल  | बुध   | गुरु  | चंद्र |
| नेप    | व | तुला   | 28:53:45 | शुक्र | गुरु  | सूर्य | मंगल  | 11  | धनु    | 21:35:54 | गुरु  | शुक्र | गुरु  | मंगल  |
| प्लूटो | व | सिंह   | 24:10:31 | सूर्य | शुक्र | बुध   | बुध   | 12  | मक     | 18:34:06 | शनि   | चंद्र | बुध   | चंद्र |

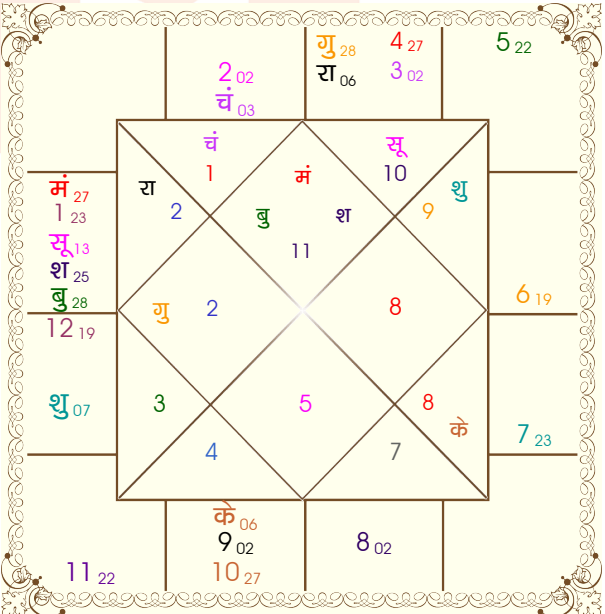
के.पी. अयनांश : 23:16:58

फॉरच्युना : मेष 13:43:43

## लग्न कुंडली



## भाव कुंडली



## कारकत्व एवं स्वामित्व

### भाव कारक

| भाव | ग्रह                           |
|-----|--------------------------------|
| 1   | मंगल, बुध, गुरु, शनि, केतु+    |
| 2   | चंद्र, मंगल- गुरु-             |
| 3   | सूर्य, शुक्र- राहु,            |
| 4   | मंगल, बुध, गुरु, शुक्र- शनि,   |
| 5   | बुध-                           |
| 6   | चंद्र-                         |
| 7   | सूर्य- शुक्र- राहु-            |
| 8   | शुक्र-                         |
| 9   | चंद्र, मंगल- गुरु- केतु,       |
| 10  | मंगल- गुरु-                    |
| 11  | मंगल- बुध- गुरु- शुक्र, शनि-   |
| 12  | सूर्य, शुक्र, शनि- राहु, केतु- |

### ग्रह कारकत्व

| ग्रह  | भाव                 |
|-------|---------------------|
| सूर्य | 3, 7- 12,           |
| चंद्र | 2, 6- 9,            |
| मंगल  | 1, 2- 4, 9- 10- 11- |
| बुध   | 1, 4, 5- 11-        |
| गुरु  | 1, 2- 4, 9- 10- 11- |
| शुक्र | 3- 4- 7- 8- 11, 12, |
| शनि   | 1, 4, 11- 12-       |
| राहु  | 3, 7- 12,           |
| केतु  | 1+ 9, 12-           |

### स्वामित्व

|                     |       |
|---------------------|-------|
| लग्न नक्षत्र स्वामी | गुरु  |
| लग्न राशि स्वामी    | शनि   |
| राशि नक्षत्र स्वामी | केतु  |
| राशि स्वामी         | मंगल  |
| वार स्वामी          | शुक्र |
| लग्न अन्तर स्वामी   | शनि   |
| राशि अन्तर स्वामी   | सूर्य |

### कारकत्व-सारिणी

| भाव | स्थित ग्रह के नक्षत्र में | स्थित ग्रह | स्वामी के नक्षत्र में | स्वामी |
|-----|---------------------------|------------|-----------------------|--------|
| 1   | गु के                     | मं बु श    | के                    | श      |
| 2   | --                        | चं         | गु                    | मं     |
| 3   | सू                        | रा         | --                    | शु     |
| 4   | मं बु श                   | गु         | --                    | शु     |
| 5   | --                        | --         | --                    | बु     |
| 6   | --                        | --         | --                    | चं     |
| 7   | --                        | --         | शु रा                 | सू     |
| 8   | --                        | --         | --                    | शु     |
| 9   | चं                        | के         | गु                    | मं     |
| 10  | --                        | --         | गु                    | मं     |
| 11  | --                        | शु         | मं बु श               | गु     |
| 12  | शु रा                     | सू         | के                    | श      |

### ग्रह कारक सारिणी-1

| ग्रह  | भावाधिपति | नक्षत्राधिपति | स्थित   | भाव |
|-------|-----------|---------------|---------|-----|
| सूर्य | 7         | 3             | कुम्भ   | 12  |
| चंद्र | 6         | 12            | मेष     | 2   |
| मंगल  | 2,9,10    | 4,8           | कुम्भ   | 1   |
| बुध   | 5         | 6,10          | कुम्भ   | 1   |
| गुरु  | 11        | 1,5,9         | वृष     | 4   |
| शुक्र | 3,4,8     | 7,11          | मकर     | 11  |
| शनि   | 1,12      | ---           | कुम्भ   | 1   |
| राहु  | ---       | ---           | वृष     | 3   |
| केतु  | ---       | 2             | वृश्चिक | 9   |

### ग्रह कारक सारिणी-2

| ग्रह  | भावाधि<br>भाव | नक्षत्राधि<br>भाव | स्थित<br>भाव | स्वामित्व | अन्तर<br>स्वामी | स्थित<br>भाव |
|-------|---------------|-------------------|--------------|-----------|-----------------|--------------|
| सूर्य | ---           | ---               | 3            | 5         | 6,10            | 1            |
| चंद्र | ---           | 2                 | 9            | 7         | 3               | 12           |
| मंगल  | 11            | 1,5,9             | 4            | 3,4,8     | 7,11            | 11           |
| बुध   | 11            | 1,5,9             | 4            | 3,4,8     | 7,11            | 11           |
| गुरु  | 2,9,10        | 4,8               | 1            | 1,12      | ---             | 1            |
| शुक्र | 7             | 3                 | 12           | 5         | 6,10            | 1            |
| शनि   | 11            | 1,5,9             | 4            | 5         | 6,10            | 1            |
| राहु  | 7             | 3                 | 12           | 5         | 6,10            | 1            |
| केतु  | 1,12          | ---               | 1            | 5         | 6,10            | 1            |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## ग्रह दृष्टि विचार

### दृश्य ग्रह

|        | सूर्य  | चंद्र | मंगल   | बुध    | गुरु  | शुक्र  | शनि    | राहु  | केतु   | हर्ष   | नेप    | प्लूटो |
|--------|--------|-------|--------|--------|-------|--------|--------|-------|--------|--------|--------|--------|
|        | 312.62 | 3.35  | 326.90 | 327.66 | 58.03 | 276.49 | 324.79 | 35.56 | 215.56 | 144.71 | 208.80 | 144.08 |
| सूर्य  | --     | --    | युति   | --     | --    | --     | युति   | --    | --     | सप्त   | --     | सप्त   |
| 312.62 | 0.00   | 0.00  | 0.75   | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 2.91   | 0.00  | 0.00   | 3.00   | 0.00   | 3.62   |
| चंद्र  | --     | --    | --     | --     | तृती  | --     | --     | --    | --     | --     | --     | --     |
| 3.35   | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.53  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| मंगल   | युति   | --    | --     | युति   | 4था   | --     | युति   | --    | --     | सप्त   | --     | सप्त   |
| 326.90 | 0.75   | 0.00  | 0.00   | 9.97   | 9.93  | 0.00   | 9.76   | 0.00  | 0.00   | 9.74   | 0.00   | 9.57   |
| बुध    | --     | --    | युति   | --     | चतु   | --     | युति   | --    | --     | सप्त   | --     | सप्त   |
| 327.66 | 0.00   | 0.00  | 9.97   | 0.00   | 2.99  | 0.00   | 9.55   | 0.00  | 0.00   | 9.53   | 0.00   | 9.30   |
| गुरु   | 9वां   | --    | --     | --     | --    | --     | --     | --    | --     | चतु    | षष्ठ   | चतु    |
| 58.03  | 0.43   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 1.94   | 0.35   | 1.53   |
| शुक्र  | --     | चतु   | --     | --     | --    | --     | --     | पंच   | --     | --     | --     | --     |
| 276.49 | 0.00   | 2.05  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 2.91  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| शनि    | युति   | --    | युति   | युति   | चतु   | --     | --     | 3रा   | --     | सप्त   | --     | सप्त   |
| 324.79 | 2.91   | 0.00  | 9.76   | 9.55   | 1.99  | 0.00   | 0.00   | 4.29  | 0.00   | 10.00  | 0.00   | 9.97   |
| राहु   | --     | --    | --     | --     | --    | --     | --     | --    | सप्त   | --     | सप्त   | --     |
| 35.56  | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 10.00  | 0.00   | 7.59   | 0.00   |
| केतु   | --     | --    | --     | --     | --    | तृती   | --     | सप्त  | --     | --     | युति   | --     |
| 215.56 | 0.00   | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 2.91   | 0.00   | 10.00 | 0.00   | 0.00   | 7.59   | 0.00   |
| हर्ष   | सप्त   | --    | सप्त   | सप्त   | --    | --     | सप्त   | --    | --     | --     | तृती   | युति   |
| 144.71 | 3.00   | 0.00  | 9.74   | 9.53   | 0.00  | 0.00   | 10.00  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 1.44   | 9.98   |
| नेप    | --     | --    | पंच    | पंच    | --    | --     | पंच    | सप्त  | युति   | --     | --     | --     |
| 208.80 | 0.00   | 0.00  | 2.64   | 2.87   | 0.00  | 0.00   | 1.50   | 7.59  | 7.59   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| प्लूटो | सप्त   | --    | सप्त   | सप्त   | --    | --     | सप्त   | --    | पंचा   | युति   | तृती   | --     |
| 144.08 | 3.62   | 0.00  | 9.57   | 9.30   | 0.00  | 0.00   | 9.97   | 0.00  | 0.69   | 9.98   | 0.99   | 0.00   |

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

| संक्षिप्त - दृष्टि     | अंश | कालांश | अंक | संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक |
|------------------------|-----|--------|-----|--------------------|-----|--------|-----|
| युति - युति            | 0   | 15     | 10  | सप्त - सप्तम       | 180 | 15     | 10  |
| पंच - पंचम             | 120 | 6      | 3   | चतु - चतुर्थ       | 90  | 6      | 3   |
| तृती - तृतीय           | 60  | 6      | 3   | अष्ट - अष्टमांश    | 45  | 1      | 1   |
| नवां - नवमांश          | 40  | 1      | 1   | पंचा - पंचमांश     | 72  | 1      | 1   |
| अष्टां - अष्टचतुर्थांश | 135 | 1      | 1   | षष्ठ - षष्ठ        | 150 | 1      | 1   |

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

## भाव मध्य दृष्टि विचार

### दृष्ट्य भाव

|        | 1      | 2      | 3     | 4     | 5     | 6      | 7      | 8      | 9      | 10     | 11     | 12     |
|--------|--------|--------|-------|-------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
|        | 322.89 | 354.39 | 25.88 | 57.38 | 85.88 | 114.39 | 142.89 | 174.39 | 205.88 | 237.38 | 265.88 | 294.39 |
| सूर्य  | --     | --     | --    | --    | --    | --     | सप्त   | --     | --     | --     | --     | --     |
| 312.62 | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 4.75   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| चंद्र  | --     | --     | --    | तृती  | --    | --     | --     | सप्त   | --     | --     | --     | --     |
| 3.35   | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.02  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 5.91   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| मंगल   | युति   | --     | --    | 4था   | पंच   | --     | सप्त   | 8वां   | --     | --     | --     | --     |
| 326.90 | 9.14   | 0.00   | 0.00  | 9.99  | 2.90  | 0.00   | 9.14   | 9.66   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| बुध    | युति   | --     | तृती  | --    | पंच   | --     | सप्त   | --     | --     | --     | --     | --     |
| 327.66 | 8.78   | 0.00   | 2.68  | 0.00  | 2.68  | 0.00   | 8.78   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| गुरु   | --     | --     | --    | युति  | --    | तृती   | चतु    | 5वां   | --     | सप्त   | --     | 9वां   |
| 58.03  | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 9.98  | 0.00  | 1.74   | 0.67   | 9.28   | 0.00   | 9.98   | 0.00   | 9.28   |
| शुक्र  | --     | --     | --    | --    | सप्त  | --     | --     | --     | --     | --     | युति   | --     |
| 276.49 | 0.00   | 0.00   | 0.00  | 0.00  | 4.44  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 4.44   | 0.00   |
| शनि    | युति   | --     | 3रा   | चतु   | पंच   | षष्ठ   | --     | --     | --     | 10वा   | --     | --     |
| 324.79 | 9.80   | 0.00   | 9.93  | 2.34  | 2.88  | 0.81   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 9.64   | 0.00   | 0.00   |
| राहु   | --     | --     | युति  | --    | --    | --     | --     | --     | सप्त   | --     | --     | --     |
| 35.56  | 0.00   | 0.00   | 5.29  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 5.29   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| केतु   | --     | --     | सप्त  | --    | --    | --     | --     | --     | --     | --     | --     | --     |
| 215.56 | 0.00   | 0.00   | 5.29  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| हर्ष   | सप्त   | --     | --    | --    | --    | --     | युति   | --     | तृती   | --     | पंच    | षष्ठ   |
| 144.71 | 9.82   | 0.00   | 0.00  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 9.82   | 0.00   | 2.86   | 0.00   | 2.86   | 0.87   |
| नेप    | पंच    | --     | सप्त  | --    | --    | --     | --     | --     | युति   | --     | --     | चतु    |
| 208.80 | 0.08   | 0.00   | 9.54  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 9.54   | 0.00   | 0.00   | 1.21   |
| प्लूटो | सप्त   | --     | --    | --    | --    | --     | युति   | --     | तृती   | चतु    | पंच    | --     |
| 144.08 | 9.92   | 0.00   | 0.00  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 9.92   | 0.00   | 2.67   | 1.95   | 2.67   | 0.00   |

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

| संक्षिप्त - दृष्टि     | अंश | कालांश | अंक | संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक |
|------------------------|-----|--------|-----|--------------------|-----|--------|-----|
| युति - युति            | 0   | 15     | 10  | सप्त - सप्तम       | 180 | 15     | 10  |
| पंच - पंचम             | 120 | 6      | 3   | चतु - चतुर्थ       | 90  | 6      | 3   |
| तृती - तृतीय           | 60  | 6      | 3   | अष्ट - अष्टमांश    | 45  | 1      | 1   |
| नवां - नवमांश          | 40  | 1      | 1   | पंचा - पंचमांश     | 72  | 1      | 1   |
| अष्टां - अष्टचतुर्थांश | 135 | 1      | 1   | षष्ठ - षष्ठ        | 150 | 1      | 1   |

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

# भाव दृष्टि विचार

## दृष्ट्य भाव

|        | 1      | 2    | 3     | 4     | 5     | 6      | 7      | 8      | 9      | 10     | 11     | 12     |
|--------|--------|------|-------|-------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
|        | 322.89 | 1.46 | 32.05 | 57.38 | 81.50 | 108.47 | 142.89 | 181.46 | 212.05 | 237.38 | 261.50 | 288.47 |
| सूर्य  | --     | --   | --    | --    | --    | --     | सप्त   | --     | --     | --     | --     | --     |
| 312.62 | 0.00   | 0.00 | 0.00  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 4.75   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| चंद्र  | --     | --   | --    | तृती  | --    | --     | --     | सप्त   | --     | --     | --     | --     |
| 3.35   | 0.00   | 0.00 | 0.00  | 0.02  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 9.80   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| मंगल   | युति   | --   | --    | 4था   | पंच   | --     | सप्त   | 8वां   | --     | --     | --     | --     |
| 326.90 | 9.14   | 0.00 | 0.00  | 9.99  | 0.47  | 0.00   | 9.14   | 8.88   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| बुध    | युति   | --   | तृती  | --    | --    | --     | सप्त   | --     | --     | --     | --     | --     |
| 327.66 | 8.78   | 0.00 | 1.23  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 8.78   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| गुरु   | --     | --   | --    | युति  | --    | --     | चतु    | 5वां   | --     | सप्त   | --     | 9वां   |
| 58.03  | 0.00   | 0.00 | 0.00  | 9.98  | 0.00  | 0.00   | 0.67   | 9.36   | 0.00   | 9.98   | 0.00   | 5.40   |
| शुक्र  | --     | चतु  | पंच   | --    | सप्त  | --     | --     | --     | --     | --     | युति   | युति   |
| 276.49 | 0.00   | 0.75 | 1.19  | 0.00  | 0.02  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.02   | 3.10   |
| शनि    | युति   | --   | 3रा   | चतु   | पंच   | --     | --     | --     | --     | 10वा   | --     | --     |
| 324.79 | 9.80   | 0.00 | 7.25  | 2.34  | 1.95  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 9.64   | 0.00   | 0.00   |
| राहु   | --     | --   | युति  | --    | अष्ट  | पंचा   | --     | --     | सप्त   | --     | --     | --     |
| 35.56  | 0.00   | 0.00 | 9.33  | 0.00  | 0.10  | 0.14   | 0.00   | 0.00   | 9.33   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| केतु   | --     | --   | सप्त  | --    | --    | --     | --     | --     | --     | --     | अष्ट   | पंचा   |
| 215.56 | 0.00   | 0.00 | 9.33  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 0.10   | 0.14   |
| हर्ष   | सप्त   | --   | --    | --    | --    | --     | युति   | --     | --     | --     | पंच    | --     |
| 144.71 | 9.82   | 0.00 | 0.00  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 9.82   | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 2.00   | 0.00   |
| नेप    | पंच    | --   | सप्त  | --    | --    | --     | --     | --     | युति   | --     | --     | --     |
| 208.80 | 0.08   | 0.00 | 9.43  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 0.00   | 0.00   | 9.43   | 0.00   | 0.00   | 0.00   |
| प्लूटो | सप्त   | --   | --    | --    | --    | --     | युति   | --     | --     | चतु    | पंच    | --     |
| 144.08 | 9.92   | 0.00 | 0.00  | 0.00  | 0.00  | 0.00   | 9.92   | 0.00   | 0.00   | 1.95   | 2.34   | 0.00   |

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

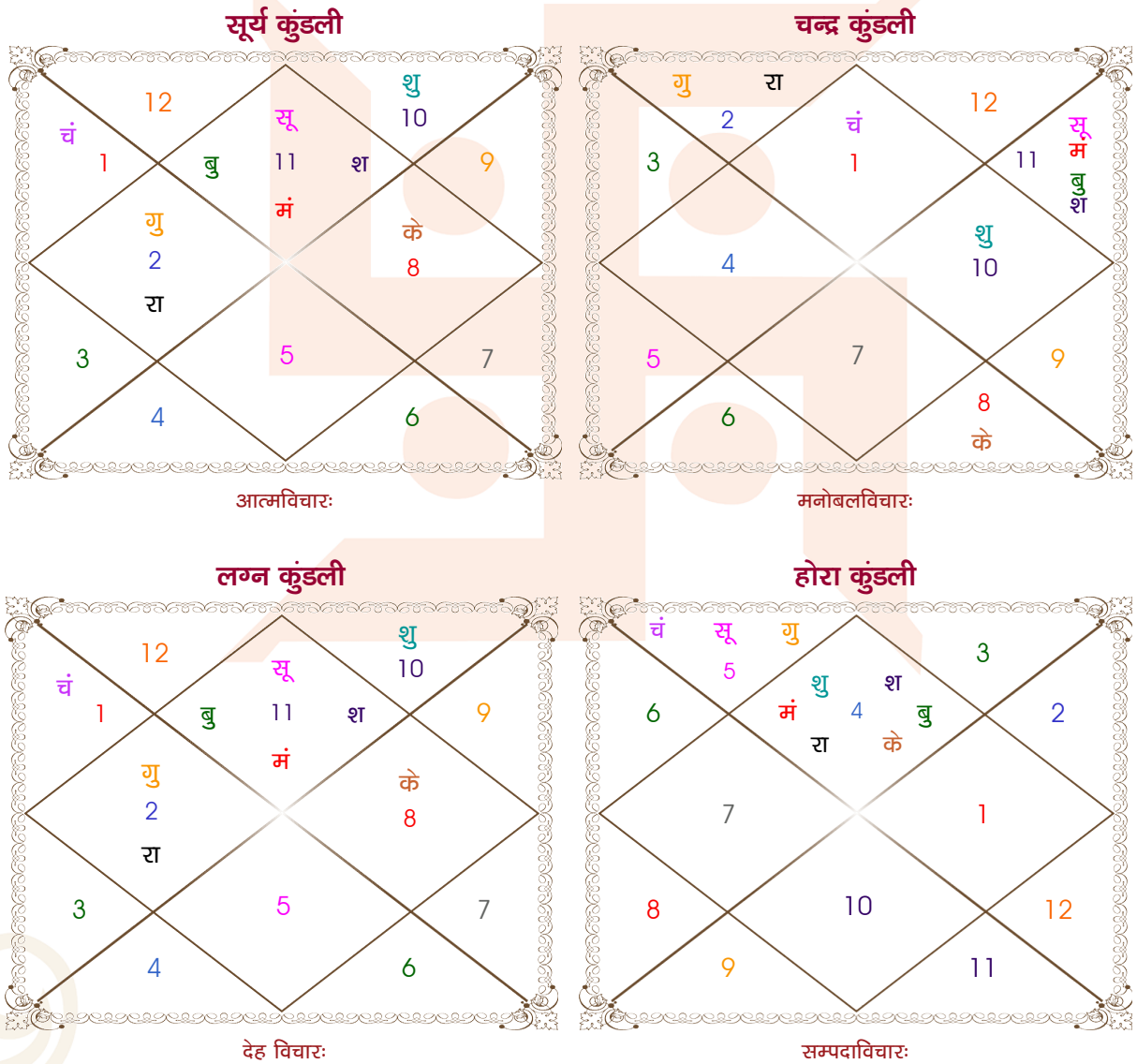
| संक्षिप्त - दृष्टि     | अंश | कालांश | अंक | संक्षिप्त - दृष्टि | अंश | कालांश | अंक |
|------------------------|-----|--------|-----|--------------------|-----|--------|-----|
| युति - युति            | 0   | 15     | 10  | सप्त - सप्तम       | 180 | 15     | 10  |
| पंच - पंचम             | 120 | 6      | 3   | चतु - चतुर्थ       | 90  | 6      | 3   |
| तृती - तृतीय           | 60  | 6      | 3   | अष्ट - अष्टमांश    | 45  | 1      | 1   |
| नवां - नवमांश          | 40  | 1      | 1   | पंचा - पंचमांश     | 72  | 1      | 1   |
| अष्टां - अष्टचतुर्थांश | 135 | 1      | 1   | षष्ठ - षष्ठ        | 150 | 1      | 1   |

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

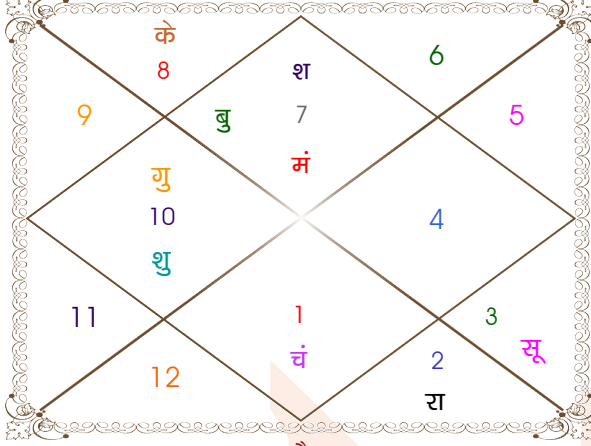
## षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



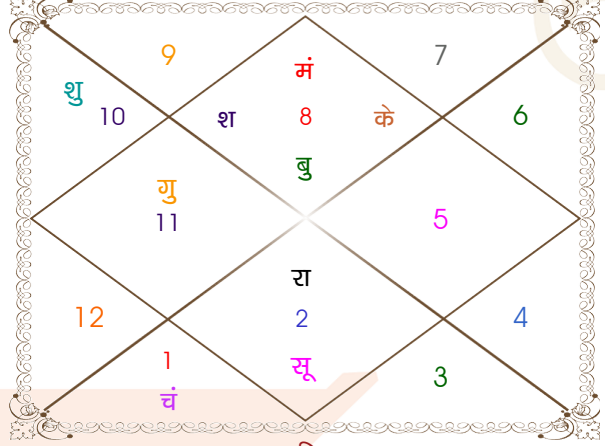
# षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



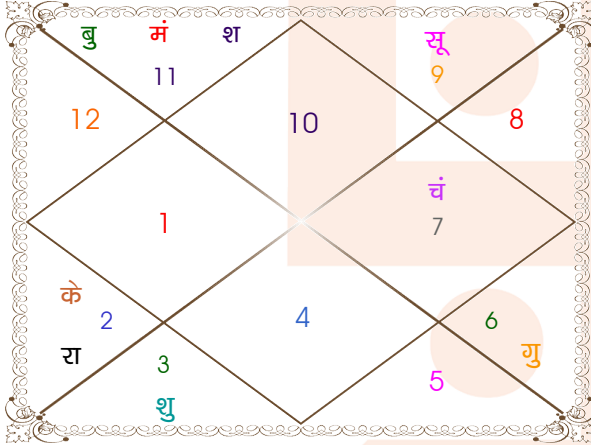
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



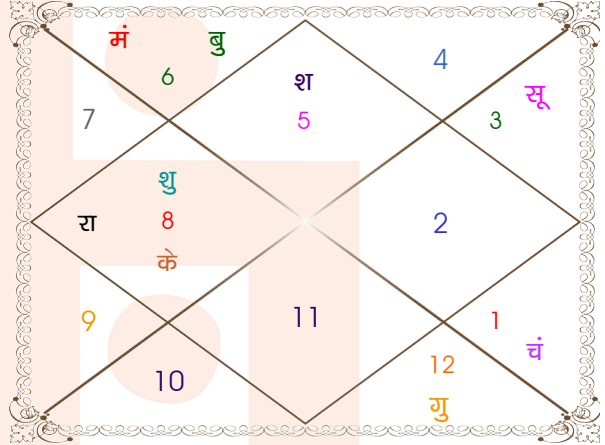
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



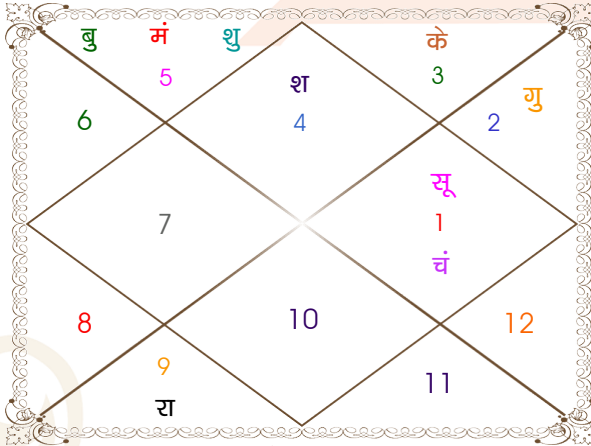
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



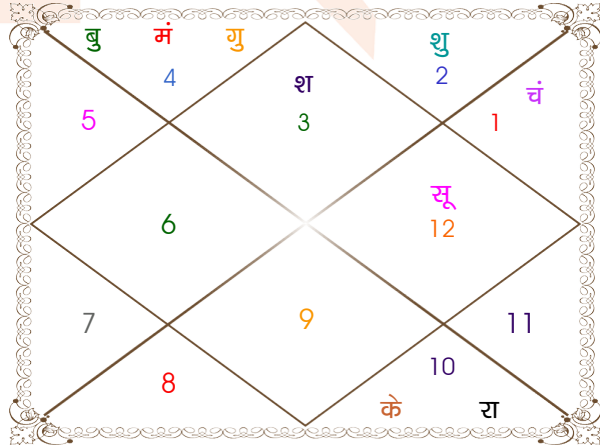
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

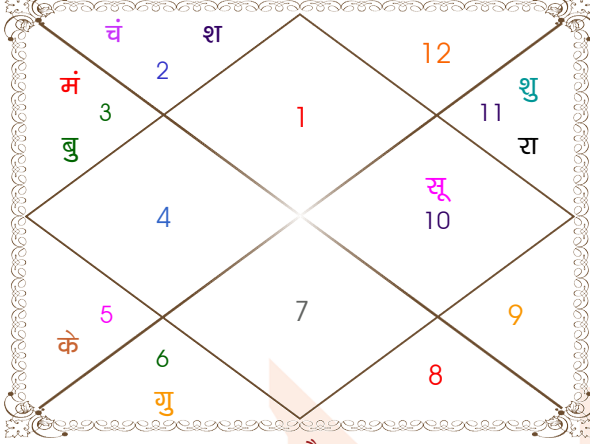


**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



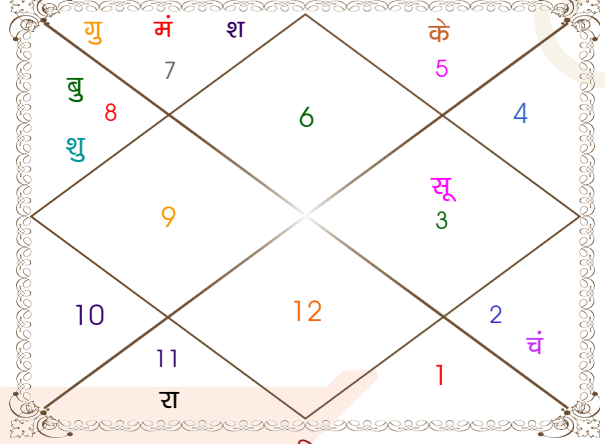
# षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



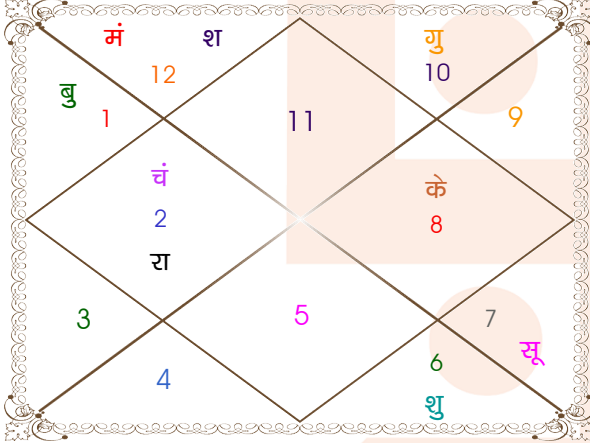
कलत्र सौख्यम्

दशमांश कुंडली



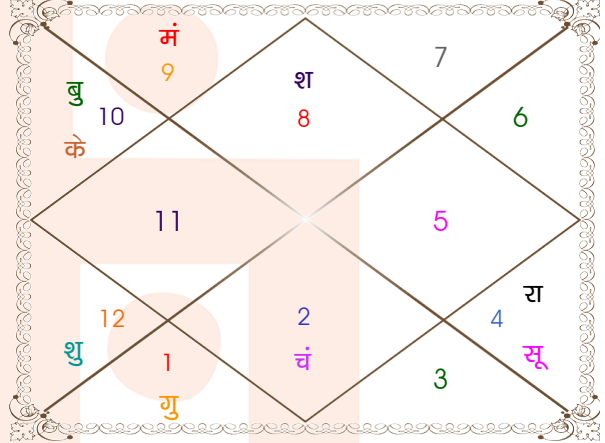
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



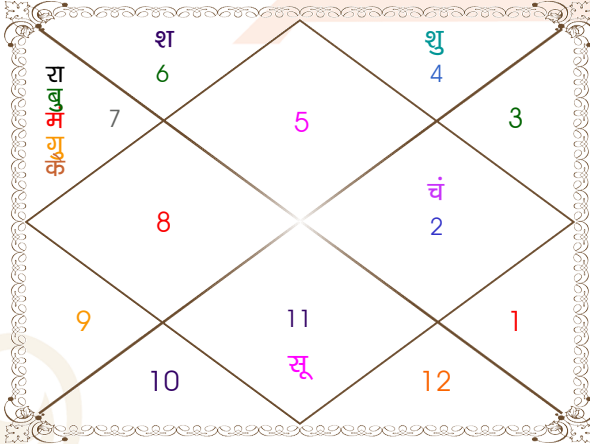
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



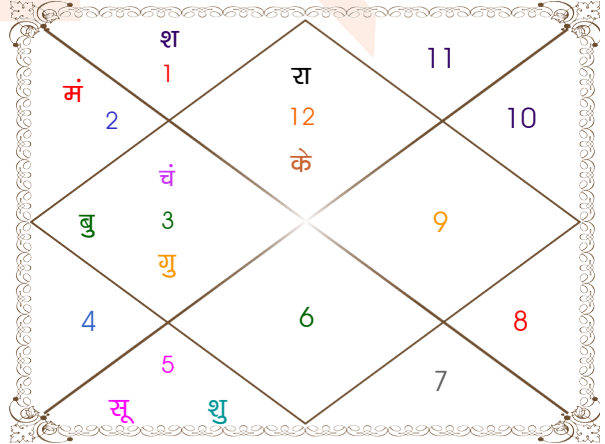
पितृसौख्यम्

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

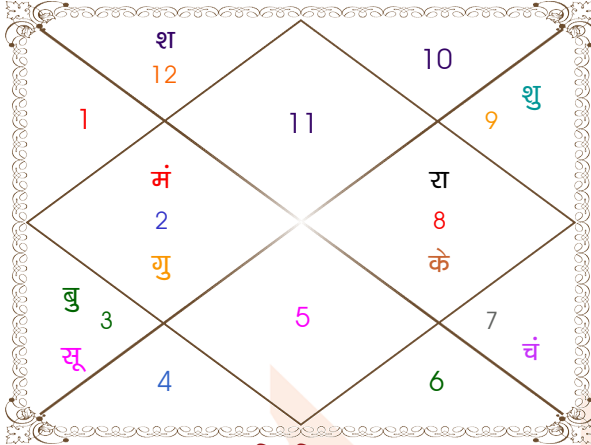


**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



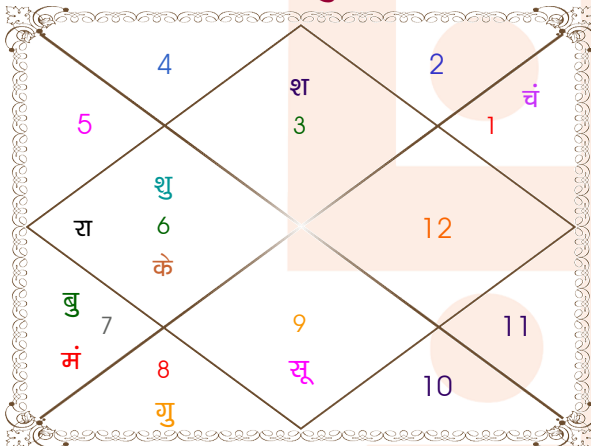
## षोडशवर्ग चक्र

## चतुर्विंशांश कुंडली



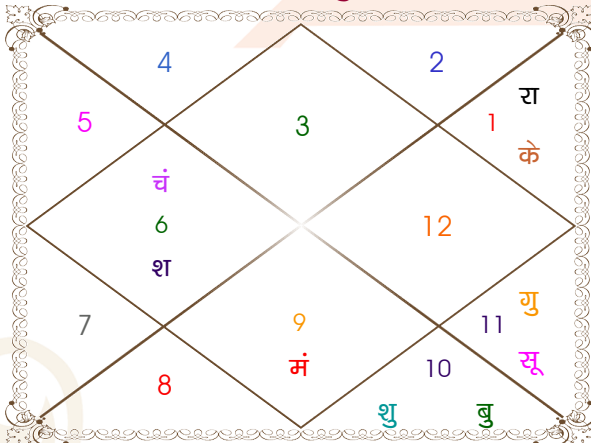
विद्याविचारः

## त्रिंशांश कुंडली



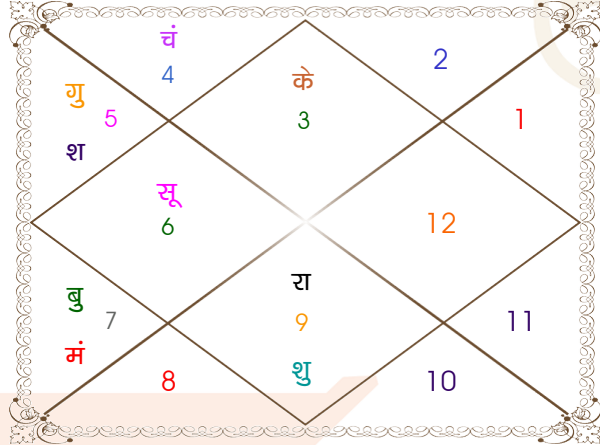
अरिष्टज्ञानम्

## अक्षवेदांश कुंडली



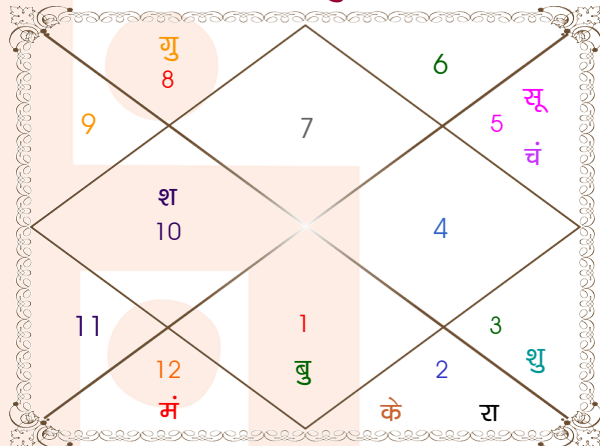
सर्वास्थितिविचारः

## सप्तविंशांश कुंडली



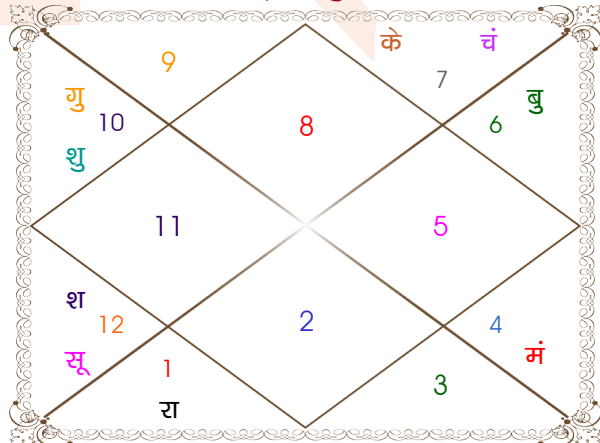
बलाबलज्ञानम्

## खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

## षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः

# षोडशवर्ग सारणियाँ

## षोडशवर्ग सारिणी

|              | लग्न   | सूर्य | चंद्र | मंगल   | बुध    | गुरु   | शुक्र  | शनि    | राहु   | केतु   |
|--------------|--------|-------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| राशि         | कुंभ   | कुंभ  | मेष   | कुंभ   | कुंभ   | वृष    | मक     | कुंभ   | वृष    | वृश्चि |
| होरा         | कर्क   | सिंह  | सिंह  | कर्क   | कर्क   | सिंह   | कर्क   | कर्क   | कर्क   | कर्क   |
| द्रेष्काण    | तुला   | मिथु  | मेष   | तुला   | तुला   | मक     | मक     | तुला   | वृष    | वृश्चि |
| चतुर्थांश    | वृश्चि | वृष   | मेष   | वृश्चि | वृश्चि | कुंभ   | मक     | वृश्चि | वृष    | वृश्चि |
| सप्तमांश     | कर्क   | मेष   | मेष   | सिंह   | सिंह   | वृष    | सिंह   | कर्क   | धनु    | मिथु   |
| नवमांश       | मेष    | मक    | वृष   | मिथु   | मिथु   | कन्या  | कुंभ   | वृष    | कुंभ   | सिंह   |
| दशमांश       | कन्या  | मिथु  | वृष   | तुला   | वृश्चि | तुला   | वृश्चि | तुला   | कुंभ   | सिंह   |
| द्वादशांश    | वृश्चि | कर्क  | वृष   | धनु    | मक     | मेष    | मीन    | वृश्चि | कर्क   | मक     |
| षोडशांश      | सिंह   | कुंभ  | वृष   | तुला   | तुला   | तुला   | कर्क   | कन्या  | तुला   | तुला   |
| विंशांश      | मीन    | सिंह  | मिथु  | वृष    | मिथु   | मिथु   | सिंह   | मेष    | मीन    | मीन    |
| चतुर्विंशांश | कुंभ   | मिथु  | तुला  | वृष    | मिथु   | वृष    | धनु    | मीन    | वृश्चि | वृश्चि |
| सप्तविंशांश  | मिथु   | कन्या | कर्क  | तुला   | तुला   | सिंह   | धनु    | सिंह   | धनु    | मिथु   |
| त्रिंशांश    | मिथु   | धनु   | मेष   | तुला   | तुला   | वृश्चि | कन्या  | मिथु   | कन्या  | कन्या  |
| खवेदांश      | तुला   | सिंह  | सिंह  | मीन    | मेष    | वृश्चि | मिथु   | मक     | वृष    | वृष    |
| अक्षवेदांश   | मिथु   | कुंभ  | कन्या | धनु    | मक     | कुंभ   | मक     | कन्या  | मेष    | मेष    |
| षष्ट्यंश     | वृश्चि | मीन   | तुला  | कर्क   | कन्या  | मक     | मक     | मीन    | मेष    | तुला   |

## वर्ग भेद

|        | षडवर्ग   | सप्तवर्ग | दशवर्ग    | षोडशवर्ग   |
|--------|----------|----------|-----------|------------|
| सूर्य  | 1 ---    | 2 किंसुक | 2 पारिजात | 4 नागपुष्प |
| चन्द्र | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 4 गोपुर   | 5 कन्दुक   |
| मंगल   | 0 ---    | 0 ---    | 0 ---     | 1 ---      |
| बुध    | 1 ---    | 1 ---    | 2 पारिजात | 4 नागपुष्प |
| गुरु   | 0 ---    | 0 ---    | 0 ---     | 0 ---      |
| शुक्र  | 1 ---    | 1 ---    | 1 ---     | 1 ---      |
| शनि    | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 3 उत्तम   | 4 नागपुष्प |
| राहु   | 1 ---    | 1 ---    | 1 ---     | 1 ---      |
| केतु   | 0 ---    | 0 ---    | 0 ---     | 1 ---      |

## विंशोपक बल

|          | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   | राहु  | केतु  |
|----------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| षडवर्ग   | 8.85  | 15.30 | 10.70 | 13.30 | 11.50 | 16.10 | 16.10 | 12.25 | 13.75 |
| सप्तवर्ग | 9.38  | 15.30 | 10.73 | 12.80 | 10.88 | 15.10 | 15.00 | 11.68 | 13.58 |
| दशवर्ग   | 12.00 | 15.23 | 13.88 | 14.15 | 11.55 | 15.15 | 14.18 | 11.35 | 14.78 |
| षोडशवर्ग | 10.58 | 15.50 | 13.08 | 14.90 | 11.15 | 15.50 | 14.43 | 11.43 | 15.18 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## मैत्री सारिणी

### नैसर्गिक मैत्री

| ग्रह  | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   | राहु  | केतु  |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| सूर्य | ---   | मित्र | मित्र | सम    | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| चंद्र | मित्र | ---   | सम    | मित्र | सम    | सम    | सम    | शत्रु | शत्रु |
| मंगल  | मित्र | मित्र | ---   | शत्रु | मित्र | सम    | सम    | शत्रु | मित्र |
| बुध   | मित्र | शत्रु | सम    | ---   | सम    | मित्र | सम    | सम    | सम    |
| गुरु  | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | ---   | शत्रु | सम    | सम    | सम    |
| शुक्र | शत्रु | शत्रु | सम    | मित्र | सम    | ---   | मित्र | मित्र | मित्र |
| शनि   | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम    | मित्र | ---   | मित्र | शत्रु |
| राहु  | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम    | सम    | मित्र | मित्र | ---   | शत्रु |
| केतु  | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम    | सम    | मित्र | शत्रु | शत्रु | ---   |

### तात्कालिक मैत्री

| ग्रह  | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   | राहु  | केतु  |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| सूर्य | ---   | मित्र | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र |
| चंद्र | मित्र | ---   | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु |
| मंगल  | शत्रु | मित्र | ---   | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र |
| बुध   | शत्रु | मित्र | शत्रु | ---   | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र |
| गुरु  | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | ---   | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु |
| शुक्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | ---   | मित्र | शत्रु | मित्र |
| शनि   | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र | ---   | मित्र | मित्र |
| राहु  | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | मित्र | ---   | शत्रु |
| केतु  | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु | ---   |

### पंचधा मैत्री

| ग्रह  | सूर्य    | चंद्र    | मंगल     | बुध      | गुरु     | शुक्र    | शनि      | राहु     | केतु     |
|-------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| सूर्य | ---      | अतिमित्र | सम       | शत्रु    | अतिमित्र | सम       | अधिशत्रु | सम       | सम       |
| चंद्र | अतिमित्र | ---      | मित्र    | अतिमित्र | मित्र    | मित्र    | मित्र    | सम       | अधिशत्रु |
| मंगल  | सम       | अतिमित्र | ---      | अधिशत्रु | अतिमित्र | मित्र    | शत्रु    | सम       | अतिमित्र |
| बुध   | सम       | सम       | शत्रु    | ---      | मित्र    | अतिमित्र | शत्रु    | मित्र    | मित्र    |
| गुरु  | अतिमित्र | अतिमित्र | अतिमित्र | सम       | ---      | अधिशत्रु | मित्र    | शत्रु    | शत्रु    |
| शुक्र | सम       | सम       | मित्र    | अतिमित्र | शत्रु    | ---      | अतिमित्र | सम       | अतिमित्र |
| शनि   | अधिशत्रु | सम       | अधिशत्रु | सम       | मित्र    | अतिमित्र | ---      | अतिमित्र | सम       |
| राहु  | सम       | सम       | सम       | मित्र    | शत्रु    | सम       | अतिमित्र | ---      | अधिशत्रु |
| केतु  | सम       | अधिशत्रु | अतिमित्र | मित्र    | शत्रु    | अतिमित्र | सम       | अधिशत्रु | ---      |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## षट्बल तथा भावबल सारिणी

### षट्बल

|                  | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|------------------|-------|-------|------|-----|------|-------|-----|
| उच्च बल          | 41    | 50    | 50   | 6   | 48   | 33    | 18  |
| सप्तवर्गज बल     | 90    | 113   | 88   | 98  | 94   | 109   | 114 |
| ओजयुग्मक बल      | 15    | 15    | 30   | 30  | 0    | 15    | 15  |
| केन्द्र बल       | 60    | 15    | 60   | 60  | 60   | 15    | 60  |
| द्रेष्काण बल     | 0     | 0     | 0    | 0   | 0    | 0     | 0   |
| कुल स्थान बल     | 206   | 193   | 228  | 193 | 201  | 172   | 208 |
| कुल दिग्बल       | 35    | 42    | 30   | 58  | 28   | 13    | 1   |
| नतोन्नत बल       | 34    | 26    | 26   | 60  | 34   | 34    | 26  |
| पक्ष बल          | 43    | 86    | 43   | 43  | 17   | 17    | 43  |
| त्रिभाग बल       | 0     | 0     | 0    | 60  | 60   | 0     | 0   |
| अब्द बल          | 0     | 0     | 0    | 15  | 0    | 0     | 0   |
| मास बल           | 0     | 0     | 30   | 0   | 0    | 0     | 0   |
| वार बल           | 0     | 0     | 0    | 0   | 0    | 45    | 0   |
| होरा बल          | 0     | 0     | 0    | 0   | 0    | 60    | 0   |
| अयन बल           | 36    | 17    | 25   | 35  | 60   | 4     | 36  |
| युद्ध बल         | 0     | 0     | 29   | -29 | 0    | 0     | 0   |
| कुल कालबल        | 113   | 129   | 153  | 184 | 171  | 160   | 105 |
| कुल चेष्टाबल     | 0     | 0     | 6    | 29  | 37   | 47    | 5   |
| कुल नैसर्गिक बल  | 60    | 51    | 17   | 26  | 34   | 43    | 9   |
| कुल दृग्बल       | 14    | 5     | 14   | 14  | -47  | 7     | 14  |
| कुल षट्बल        | 427   | 420   | 449  | 504 | 424  | 442   | 341 |
| रूप षट्बल        | 7.1   | 7.0   | 7.5  | 8.4 | 7.1  | 7.4   | 5.7 |
| न्यूनतम आवश्यकता | 5     | 6     | 5    | 7   | 7    | 6     | 5   |
| अनुपात           | 1.4   | 1.2   | 1.5  | 1.2 | 1.1  | 1.3   | 1.1 |
| संबंधित पद       | 2     | 5     | 1    | 4   | 7    | 3     | 6   |

### इष्ट फल

|         | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   |
|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| इष्ट फल | 29.99 | 29.11 | 17.20 | 13.04 | 41.78 | 39.47 | 9.89  |
| कष्ट फल | 26.96 | 20.64 | 22.83 | 40.72 | 16.98 | 18.70 | 47.69 |

### भाव बल

|              | 1   | 2   | 3   | 4   | 5   | 6   | 7   | 8   | 9   | 10  | 11  | 12  |
|--------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| भावाधिपति बल | 341 | 424 | 449 | 442 | 504 | 420 | 427 | 504 | 442 | 449 | 424 | 341 |
| भावदिग्बल    | 60  | 40  | 10  | 0   | 20  | 40  | 30  | 10  | 20  | 30  | 50  | 20  |
| भावदृष्टि बल | 50  | 9   | -3  | 9   | 8   | 14  | 56  | 41  | 28  | 45  | 42  | 31  |
| कुल भाव बल   | 451 | 473 | 456 | 450 | 533 | 474 | 514 | 555 | 489 | 524 | 516 | 392 |
| रूप भाव बल   | 7.5 | 7.9 | 7.6 | 7.5 | 8.9 | 7.9 | 8.6 | 9.2 | 8.2 | 8.7 | 8.6 | 6.5 |
| संबंधित पद   | 10  | 8   | 9   | 11  | 2   | 7   | 5   | 1   | 6   | 3   | 4   | 12  |

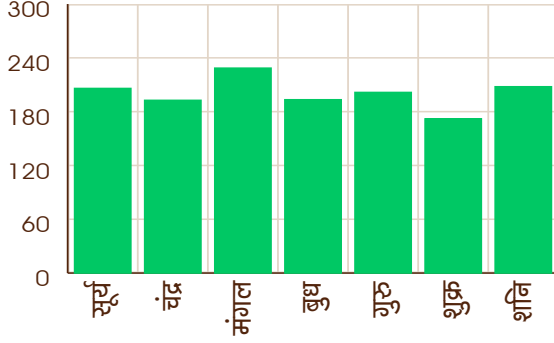


**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

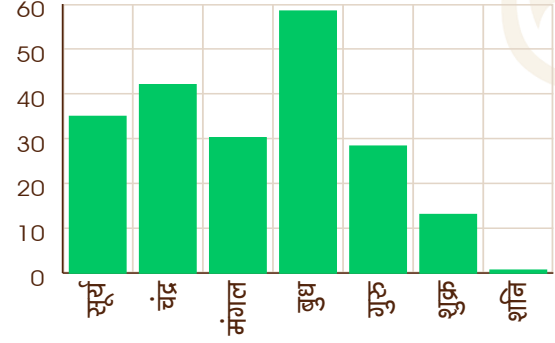


## षट्बल ग्राफ

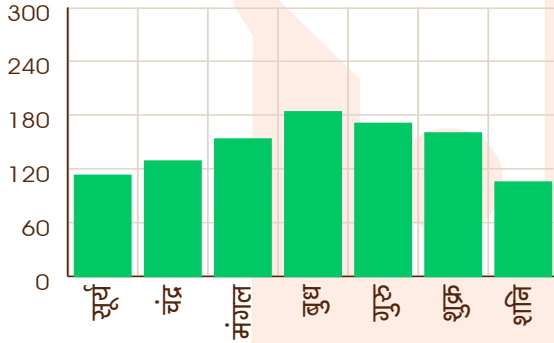
स्थान बल



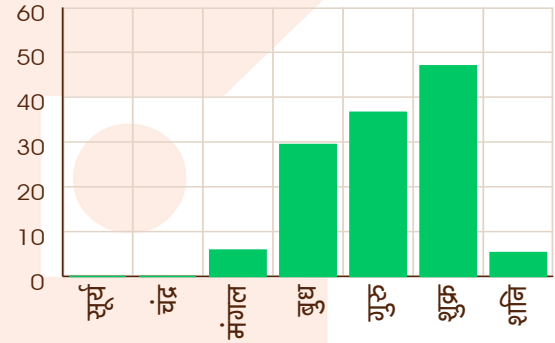
दिग्बल



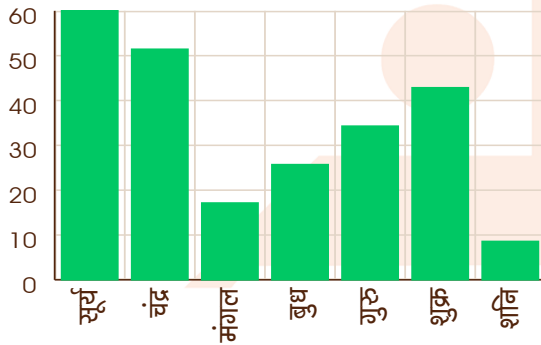
कालबल



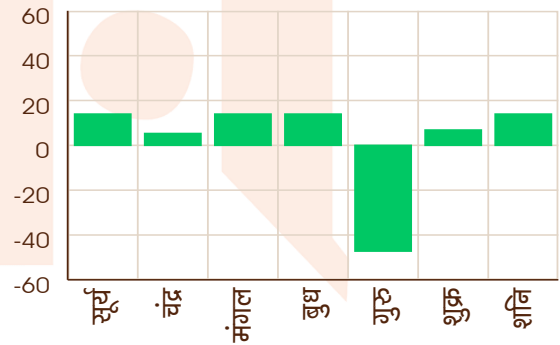
चेष्टाबल



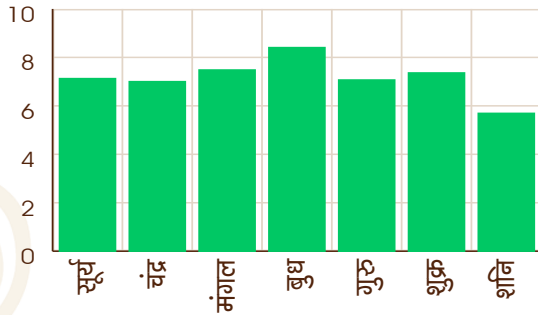
नैसर्गिक बल



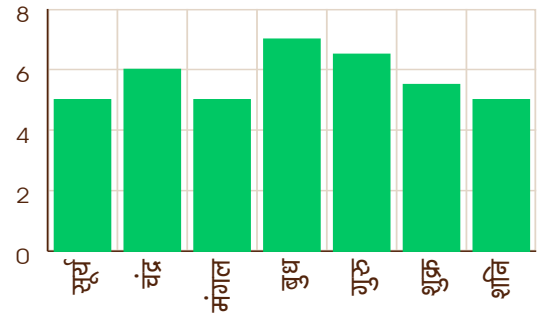
दृग्बल



रूप षट्बल



न्यूनतम षट्बल

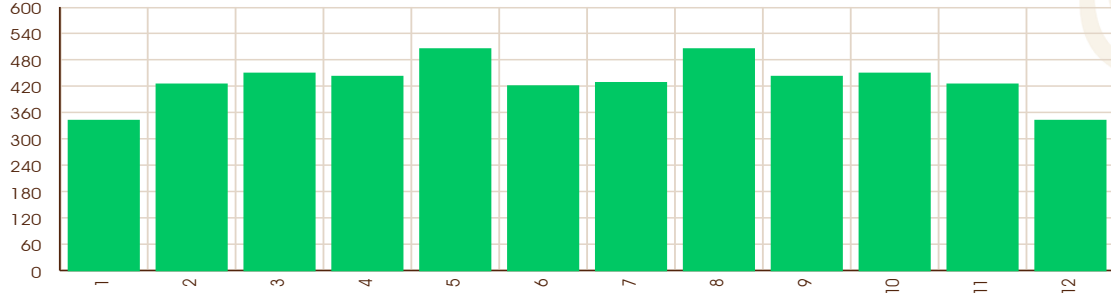


**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

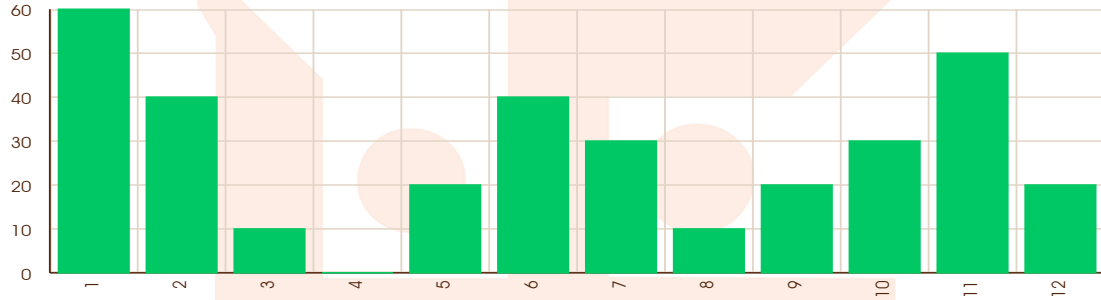


## भाव बल ग्राफ

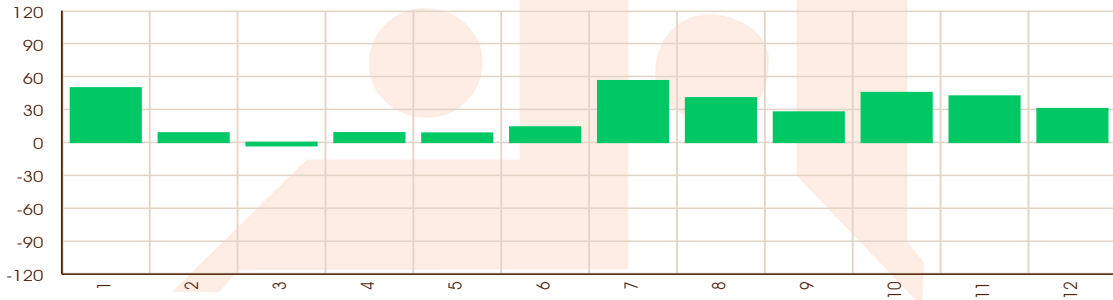
### भावाधिपति बल



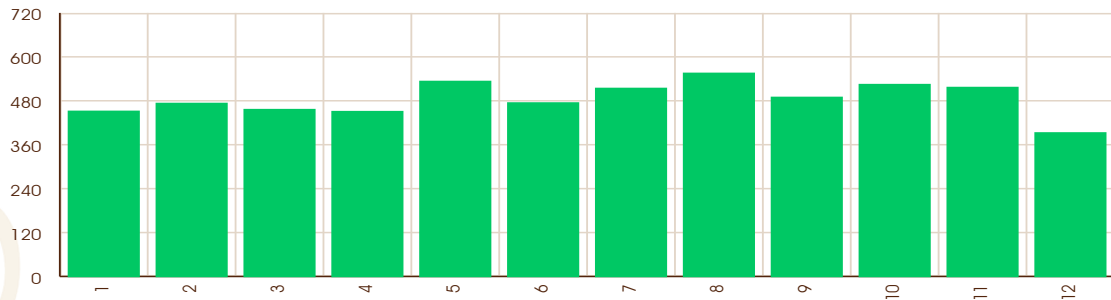
### भावदिग्बल



### भावदृष्टि बल



### भाव बल

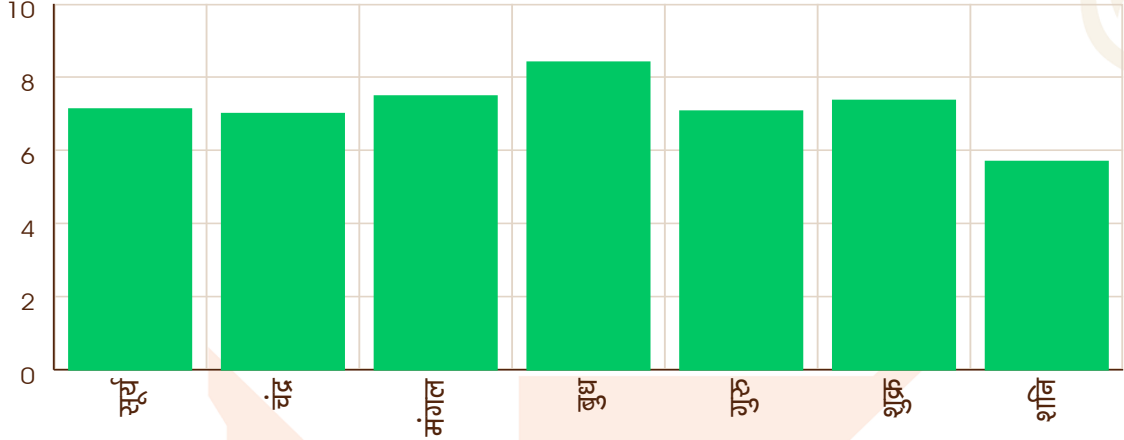


**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

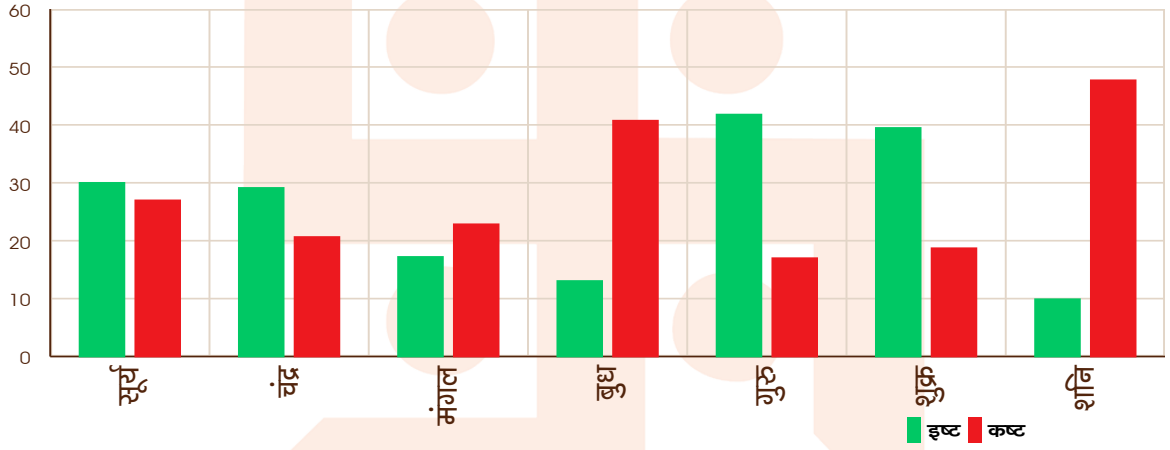


## षट्बल तथा भावबल ग्राफ

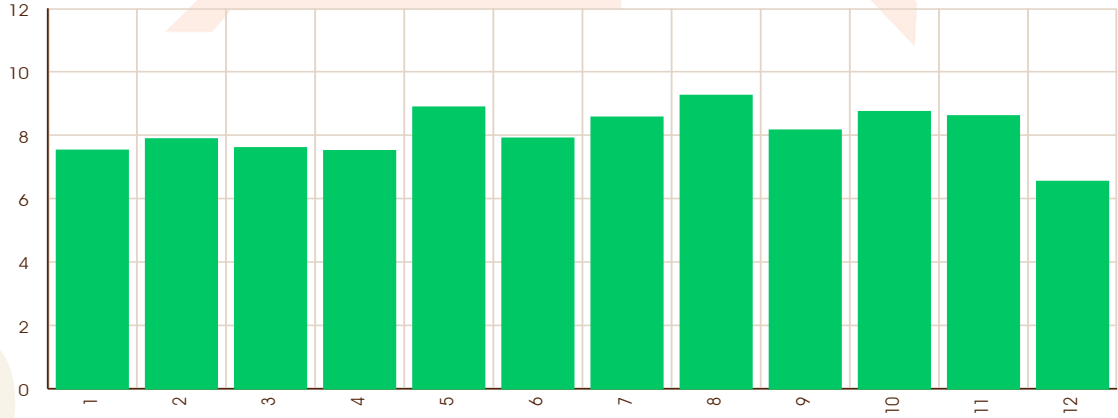
रूप षट्बल



इष्ट - कष्ट फल



रूप भाव बल



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

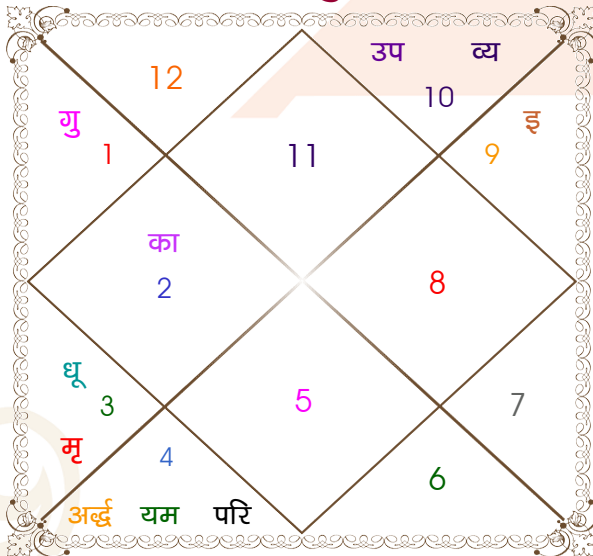


## उपग्रह एवं आरुढ़

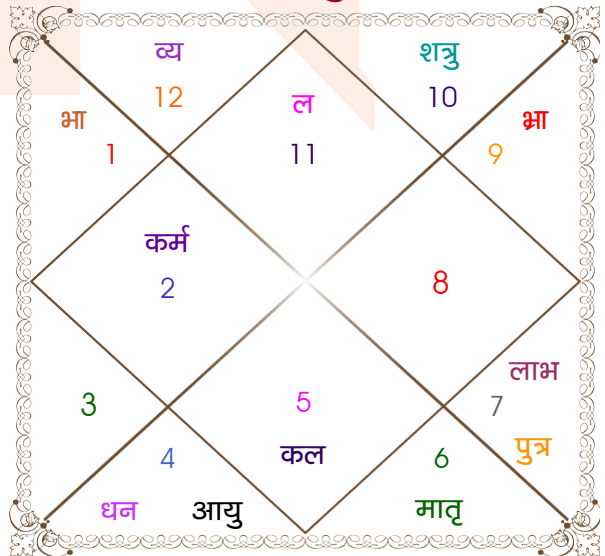
| उपग्रह      | संक्षि | राशि | अंश      | उच्च | स्थिति | नक्षत्र     | पद | नं. |
|-------------|--------|------|----------|------|--------|-------------|----|-----|
| लग्न        | ल      | कुंभ | 22:53:41 | --   | --     | पू०भाद्रपद  | 1  | 25  |
| गुलिक       | गु     | मेष  | 09:29:29 | --   | --     | अश्विनी     | 3  | 1   |
| काल         | का     | वृष  | 05:16:48 | --   | --     | कृतिका      | 3  | 3   |
| मृत्यु      | मृ     | मिथु | 17:13:32 | --   | --     | आर्द्रा     | 4  | 6   |
| यमघंटक      | यम     | कर्क | 24:55:56 | --   | --     | आश्लेषा     | 3  | 9   |
| अर्द्धप्रहर | अर्द्ध | कर्क | 05:54:43 | --   | --     | पुष्य       | 1  | 8   |
| धूम         | धू     | मिथु | 25:56:58 | --   | --     | पुनर्वसु    | 2  | 7   |
| व्यतिपात    | व्य    | मक   | 04:03:02 | --   | --     | उत्तराषाढ़ा | 3  | 21  |
| परिवेश      | परि    | कर्क | 04:03:02 | --   | --     | पुष्य       | 1  | 8   |
| इन्द्रचाप   | इ      | धनु  | 25:56:58 | उच्च | --     | पूर्वाषाढ़ा | 4  | 20  |
| उपकेतु      | उप     | मक   | 12:36:58 | --   | --     | श्रवण       | 1  | 22  |

|          |   |      |          |              |   |       |          |
|----------|---|------|----------|--------------|---|-------|----------|
| प्राणपद  | : | मेष  | 04:50:32 | कारकांश लग्न | : | कन्या | 12:15:10 |
| भाव लग्न | : | कुंभ | 21:13:39 | होरा लग्न    | : | कुंभ  | 29:50:19 |
| घटी लग्न | : | मीन  | 25:40:21 | वर्णद लग्न   | : | मिथु  | 07:15:59 |

### उपग्रह कुंडली



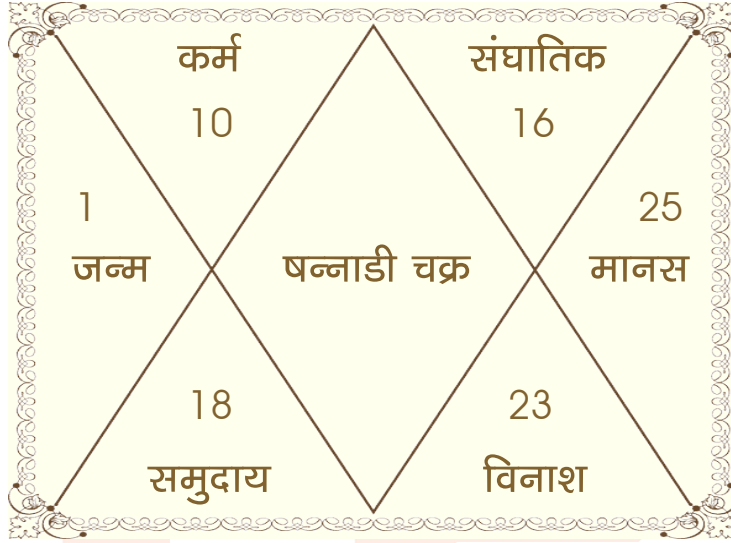
### आरुढ़ कुंडली



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## षन्नाडी चक्र



## त्रिपाप चक्र

|              |       |       |       |       |       |       |       |       |       |       |       |       |
|--------------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| प्रथम चक्र   | 1     | 2     | 3     | 4     | 5     | 6     | 7     | 8     | 9     | 10    | 11    | 12    |
| द्वितीय चक्र | 37    | 38    | 39    | 40    | 41    | 42    | 43    | 44    | 45    | 46    | 47    | 48    |
| तृतीय चक्र   | 73    | 74    | 75    | 76    | 77    | 78    | 79    | 80    | 81    | 82    | 83    | 84    |
| केतु पताकी   | केतु  | शुक्र | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   | शनि   | गुरु  | राहु  | केतु  | शुक्र | सूर्य |
| केतु कुंडली  | सूर्य | केतु  | बुध   | मंगल  | केतु  | गुरु  | चंद्र | केतु  | शुक्र | राहु  | केतु  | शनि   |
| गुरु कुंडली  | केतु  | चंद्र | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   | राहु  | सूर्य | मंगल  | केतु  | चंद्र | बुध   |
| प्रथम चक्र   | 13    | 14    | 15    | 16    | 17    | 18    | 19    | 20    | 21    | 22    | 23    | 24    |
| द्वितीय चक्र | 49    | 50    | 51    | 52    | 53    | 54    | 55    | 56    | 57    | 58    | 59    | 60    |
| तृतीय चक्र   | 85    | 86    | 87    | 88    | 89    | 90    | 91    | 92    | 93    | 94    | 95    | 96    |
| केतु पताकी   | चंद्र | मंगल  | बुध   | शनि   | गुरु  | राहु  | केतु  | शुक्र | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   |
| केतु कुंडली  | सूर्य | केतु  | बुध   | मंगल  | केतु  | गुरु  | चंद्र | केतु  | शुक्र | राहु  | केतु  | शनि   |
| गुरु कुंडली  | गुरु  | शुक्र | शनि   | राहु  | सूर्य | मंगल  | केतु  | चंद्र | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   |
| प्रथम चक्र   | 25    | 26    | 27    | 28    | 29    | 30    | 31    | 32    | 33    | 34    | 35    | 36    |
| द्वितीय चक्र | 61    | 62    | 63    | 64    | 65    | 66    | 67    | 68    | 69    | 70    | 71    | 72    |
| तृतीय चक्र   | 97    | 98    | 99    | 100   | 101   | 102   | 103   | 104   | 105   | 106   | 107   | 108   |
| केतु पताकी   | शनि   | गुरु  | राहु  | केतु  | शुक्र | सूर्य | चंद्र | मंगल  | बुध   | शनि   | गुरु  | राहु  |
| केतु कुंडली  | सूर्य | केतु  | बुध   | मंगल  | केतु  | गुरु  | चंद्र | केतु  | शुक्र | राहु  | केतु  | शनि   |
| गुरु कुंडली  | राहु  | सूर्य | मंगल  | केतु  | चंद्र | बुध   | गुरु  | शुक्र | शनि   | राहु  | सूर्य | मंगल  |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

| सूर्य का अष्टकवर्ग |     |    |    |    |    |   |    |    |    |    |   |      | चंद्र का अष्टकवर्ग |    |    |    |   |    |    |    |    |   |   |     |      |     |
|--------------------|-----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|---|------|--------------------|----|----|----|---|----|----|----|----|---|---|-----|------|-----|
|                    | कुं | मी | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | मकुल |                    | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | म | कुं | मी   | कुल |
| शनि                | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0 8  | शनि                | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 0  | 1 | 0 | 0   | 0 4  |     |
| गुरु               | 0   | 1  | 0  | 0  | 0  | 0 | 0  | 1  | 1  | 0  | 0 | 1 4  | गुरु               | 0  | 1  | 1  | 0 | 1  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0 | 1   | 1 7  |     |
| मंगल               | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0 8  | मंगल               | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0 | 0   | 1 6  |     |
| सूर्य              | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0 8  | सूर्य              | 1  | 0  | 0  | 1 | 1  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0 | 0   | 0 6  |     |
| शुक्र              | 0   | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 0  | 1 | 0 3  | शुक्र              | 1  | 1  | 0  | 1 | 0  | 1  | 1  | 1  | 0 | 0 | 0   | 1 7  |     |
| बुध                | 0   | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 1  | 1  | 1 | 1 7  | बुध                | 1  | 1  | 1  | 0 | 1  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0 | 1   | 0 8  |     |
| चंद्र              | 1   | 0  | 0  | 0  | 1  | 0 | 0  | 1  | 0  | 0  | 0 | 1 4  | चंद्र              | 1  | 0  | 1  | 0 | 0  | 1  | 1  | 0  | 1 | 1 | 1   | 0 7  |     |
| लग्न               | 0   | 0  | 1  | 1  | 0  | 1 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 1 6  | लग्न               | 1  | 0  | 0  | 1 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0 | 0   | 0 4  |     |
| कुल                | 4   | 4  | 2  | 4  | 3  | 3 | 3  | 5  | 5  | 5  | 6 | 4 48 | कुल                | 7  | 3  | 5  | 5 | 3  | 4  | 2  | 6  | 7 | 1 | 3   | 3 49 |     |

| मंगल का अष्टकवर्ग |     |    |    |    |    |   |    |    |    |    |   |      | बुध का अष्टकवर्ग |     |    |    |    |    |   |    |    |    |    |   |      |
|-------------------|-----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|---|------|------------------|-----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|---|------|
|                   | कुं | मी | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | मकुल |                  | कुं | मी | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | मकुल |
| शनि               | 1   | 0  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0 7  | शनि              | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0 8  |
| गुरु              | 1   | 1  | 1  | 0  | 0  | 0 | 0  | 0  | 1  | 0  | 0 | 0 4  | गुरु             | 0   | 1  | 1  | 0  | 0  | 0 | 0  | 0  | 1  | 0  | 1 | 0 4  |
| मंगल              | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0 7  | मंगल             | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0 8  |
| सूर्य             | 0   | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0 5  | सूर्य            | 0   | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 1  | 0  | 1 | 1 5  |
| शुक्र             | 0   | 0  | 0  | 0  | 1  | 0 | 1  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0 4  | शुक्र            | 1   | 1  | 1  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 0  | 1  | 0 | 1 8  |
| बुध               | 0   | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 0  | 1 | 0 4  | बुध              | 1   | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 1  | 1  | 1 | 1 8  |
| चंद्र             | 1   | 0  | 0  | 0  | 1  | 0 | 0  | 1  | 0  | 0  | 0 | 0 3  | चंद्र            | 1   | 0  | 0  | 1  | 0  | 1 | 0  | 1  | 0  | 1  | 0 | 1 6  |
| लग्न              | 1   | 0  | 1  | 0  | 0  | 1 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0 5  | लग्न             | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 1 | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0 7  |
| कुल               | 5   | 2  | 4  | 2  | 4  | 3 | 3  | 3  | 2  | 5  | 6 | 0 39 | कुल              | 6   | 5  | 3  | 5  | 2  | 4 | 3  | 5  | 5  | 6  | 6 | 4 54 |

| गुरु का अष्टकवर्ग |    |    |   |    |    |    |    |   |   |     |    | शुक्र का अष्टकवर्ग |     |       |   |     |    |    |    |    |   |    |    |    |    |   |     |
|-------------------|----|----|---|----|----|----|----|---|---|-----|----|--------------------|-----|-------|---|-----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|---|-----|
|                   | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | म | कुं | मी | मे                 | कुल |       | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | कुल |
| शनि               | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 0  | 0 | 1 | 0   | 0  | 1                  | 4   | शनि   | 0 | 0   | 0  | 1  | 1  | 1  | 0 | 0  | 1  | 1  | 1  | 1 | 7   |
| गुरु              | 1  | 1  | 1 | 1  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0 | 1   | 1  | 0                  | 8   | गुरु  | 1 | 1   | 1  | 0  | 0  | 0  | 0 | 0  | 1  | 0  | 0  | 1 | 5   |
| मंगल              | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0 | 1   | 1  | 0                  | 7   | मंगल  | 1 | 0   | 0  | 1  | 1  | 0  | 1 | 0  | 0  | 1  | 0  | 1 | 6   |
| सूर्य             | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0 | 1   | 1  | 1                  | 9   | सूर्य | 1 | 0   | 0  | 0  | 0  | 0  | 0 | 0  | 1  | 0  | 0  | 1 | 3   |
| शुक्र             | 1  | 1  | 0 | 0  | 1  | 1  | 1  | 0 | 0 | 1   | 0  | 0                  | 6   | शुक्र | 1 | 1   | 1  | 1  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 1  | 1  | 0 | 9   |
| बुध               | 1  | 1  | 1 | 0  | 0  | 1  | 1  | 1 | 0 | 1   | 1  | 0                  | 8   | बुध   | 0 | 0   | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 1  | 0  | 1 | 5   |
| चंद्र             | 1  | 0  | 0 | 1  | 0  | 1  | 0  | 1 | 0 | 1   | 0  | 0                  | 5   | चंद्र | 0 | 1   | 1  | 1  | 1  | 1  | 1 | 1  | 0  | 0  | 1  | 1 | 9   |
| लग्न              | 1  | 1  | 1 | 1  | 0  | 1  | 1  | 1 | 0 | 1   | 1  | 0                  | 9   | लग्न  | 0 | 1   | 1  | 1  | 1  | 1  | 0 | 0  | 1  | 1  | 0  | 1 | 8   |
| कुल               | 7  | 5  | 4 | 5  | 3  | 5  | 6  | 6 | 1 | 7   | 5  | 2                  | 56  | कुल   | 4 | 4   | 4  | 6  | 5  | 4  | 3 | 2  | 5  | 5  | 3  | 7 | 52  |

| शनि का अष्टकवर्ग |     |    |    |    |    |   |    |    |    |    |   |      | लग्न का अष्टकवर्ग |       |    |    |    |    |   |    |    |    |    |   |      |   |    |
|------------------|-----|----|----|----|----|---|----|----|----|----|---|------|-------------------|-------|----|----|----|----|---|----|----|----|----|---|------|---|----|
|                  | कुं | मी | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | मकुल |                   | कुं   | मी | मे | वृ | मि | क | सि | कं | तु | वृ | ध | मकुल |   |    |
| शनि              | 0   | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 0  | 1 | 0    | 4                 | शनि   | 1  | 0  | 1  | 1  | 0 | 1  | 0  | 0  | 0  | 1 | 1    | 0 | 6  |
| गुरु             | 0   | 1  | 1  | 0  | 0  | 0 | 0  | 1  | 1  | 0  | 0 | 0    | 4                 | गुरु  | 1  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 1  | 1  | 1  | 1 | 0    | 1 | 9  |
| मंगल             | 0   | 0  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 1    | 6                 | मंगल  | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 0  | 0  | 0  | 1 | 1    | 0 | 5  |
| सूर्य            | 1   | 1  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 1  | 0  | 1  | 1 | 0    | 7                 | सूर्य | 0  | 0  | 1  | 1  | 0 | 1  | 0  | 0  | 0  | 1 | 1    | 1 | 6  |
| शुक्र            | 0   | 0  | 0  | 0  | 1  | 0 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0    | 3                 | शुक्र | 1  | 1  | 1  | 1  | 0 | 0  | 1  | 1  | 0  | 0 | 0    | 1 | 7  |
| बुध              | 0   | 0  | 0  | 0  | 0  | 1 | 0  | 1  | 1  | 1  | 1 | 1    | 6                 | बुध   | 1  | 1  | 0  | 1  | 0 | 1  | 0  | 1  | 0  | 1 | 1    | 0 | 7  |
| चंद्र            | 1   | 0  | 0  | 0  | 1  | 0 | 0  | 1  | 0  | 0  | 0 | 0    | 3                 | चंद्र | 1  | 1  | 0  | 0  | 1 | 0  | 0  | 1  | 0  | 0 | 0    | 1 | 5  |
| लग्न             | 1   | 0  | 1  | 1  | 0  | 1 | 0  | 0  | 0  | 1  | 1 | 0    | 6                 | लग्न  | 0  | 0  | 1  | 0  | 0 | 1  | 0  | 0  | 0  | 1 | 1    | 0 | 4  |
| कुल              | 3   | 2  | 4  | 2  | 4  | 4 | 1  | 4  | 2  | 5  | 6 | 2    | 39                | कुल   | 6  | 4  | 5  | 5  | 2 | 5  | 2  | 4  | 1  | 6 | 5    | 4 | 49 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## अष्टकवर्ग सारिणी

### सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

|        | मे | वृ | मि | क  | सि | कं | बु | वृशि | ध  | म  | कुं | मी | कुल |
|--------|----|----|----|----|----|----|----|------|----|----|-----|----|-----|
| शनि    | 4  | 2  | 4  | 4  | 1  | 4  | 2  | 5    | 6  | 2  | 3   | 2  | 39  |
| गुरु   | 2  | 7  | 5  | 4  | 5  | 3  | 5  | 6    | 6  | 1  | 7   | 5  | 56  |
| मंगल   | 4  | 2  | 4  | 3  | 3  | 3  | 2  | 5    | 6  | 0  | 5   | 2  | 39  |
| सूर्य  | 2  | 4  | 3  | 3  | 3  | 5  | 5  | 5    | 6  | 4  | 4   | 4  | 48  |
| शुक्र  | 6  | 5  | 4  | 3  | 2  | 5  | 5  | 3    | 7  | 4  | 4   | 4  | 52  |
| बुध    | 3  | 5  | 2  | 4  | 3  | 5  | 5  | 6    | 6  | 4  | 6   | 5  | 54  |
| चंद्र  | 7  | 3  | 5  | 5  | 3  | 4  | 2  | 6    | 7  | 1  | 3   | 3  | 49  |
| बिन्दु | 28 | 28 | 27 | 26 | 20 | 29 | 26 | 36   | 44 | 16 | 32  | 25 | 337 |
| रेखा   | 28 | 28 | 29 | 30 | 36 | 27 | 30 | 20   | 12 | 40 | 24  | 31 | 335 |

### त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

|       | मे | वृ | मि | क | सि | कं | बु | वृशि | ध  | म | कुं | मी | कुल |
|-------|----|----|----|---|----|----|----|------|----|---|-----|----|-----|
| शनि   | 3  | 0  | 2  | 2 | 0  | 2  | 0  | 3    | 5  | 0 | 1   | 0  | 18  |
| गुरु  | 0  | 6  | 0  | 0 | 3  | 2  | 0  | 2    | 4  | 0 | 2   | 1  | 20  |
| मंगल  | 1  | 2  | 2  | 1 | 0  | 3  | 0  | 3    | 3  | 0 | 3   | 0  | 18  |
| सूर्य | 0  | 0  | 0  | 0 | 1  | 1  | 2  | 2    | 4  | 0 | 1   | 1  | 12  |
| शुक्र | 4  | 1  | 0  | 0 | 0  | 1  | 1  | 0    | 5  | 0 | 0   | 1  | 13  |
| बुध   | 0  | 1  | 0  | 0 | 0  | 1  | 3  | 2    | 3  | 0 | 4   | 1  | 15  |
| चंद्र | 4  | 2  | 3  | 2 | 0  | 3  | 0  | 3    | 4  | 0 | 1   | 0  | 22  |
| रेखा  | 12 | 12 | 7  | 5 | 4  | 13 | 6  | 15   | 28 | 0 | 12  | 4  | 118 |

### एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

|       | मे | वृ | मि | क | सि | कं | बु | वृशि | ध  | म | कुं | मी | कुल |
|-------|----|----|----|---|----|----|----|------|----|---|-----|----|-----|
| शनि   | 3  | 0  | 0  | 2 | 0  | 0  | 0  | 0    | 5  | 0 | 1   | 0  | 11  |
| गुरु  | 0  | 6  | 0  | 0 | 3  | 2  | 0  | 2    | 3  | 0 | 2   | 1  | 19  |
| मंगल  | 1  | 2  | 2  | 1 | 0  | 1  | 0  | 2    | 3  | 0 | 3   | 0  | 15  |
| सूर्य | 0  | 0  | 0  | 0 | 1  | 1  | 2  | 2    | 3  | 0 | 1   | 1  | 11  |
| शुक्र | 4  | 1  | 0  | 0 | 0  | 1  | 0  | 0    | 4  | 0 | 0   | 1  | 11  |
| बुध   | 0  | 1  | 0  | 0 | 0  | 1  | 2  | 2    | 2  | 0 | 4   | 1  | 13  |
| चंद्र | 4  | 2  | 0  | 2 | 0  | 0  | 0  | 0    | 4  | 0 | 1   | 0  | 13  |
| रेखा  | 12 | 12 | 2  | 5 | 4  | 6  | 4  | 8    | 24 | 0 | 12  | 4  | 93  |

### शोध्य पिंड

|            | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|------------|-------|-------|------|-----|------|-------|-----|
| राशि पिंड  | 95    | 103   | 128  | 119 | 177  | 91    | 85  |
| ग्रह पिंड  | 23    | 63    | 94   | 102 | 106  | 30    | 38  |
| शोध्य पिंड | 118   | 166   | 222  | 221 | 283  | 121   | 123 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

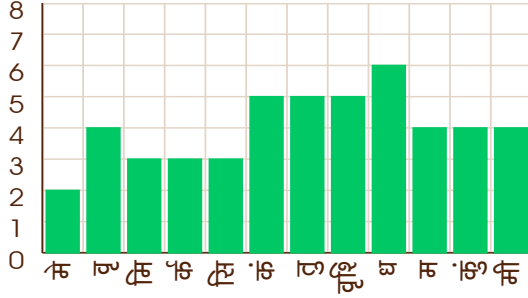


# अष्टकवर्ग सारिणी

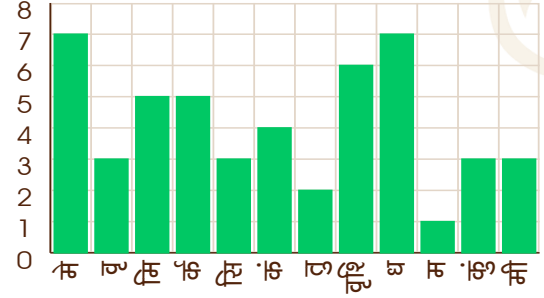
|                                  |                                |                                  |
|----------------------------------|--------------------------------|----------------------------------|
| <p><b>सूर्य का अष्टकवर्ग</b></p> | <p><b>सर्वाष्टकवर्ग</b></p>    | <p><b>चंद्र का अष्टकवर्ग</b></p> |
| <p><b>मंगल का अष्टकवर्ग</b></p>  | <p><b>बुध का अष्टकवर्ग</b></p> | <p><b>गुरु का अष्टकवर्ग</b></p>  |
| <p><b>शुक्र का अष्टकवर्ग</b></p> | <p><b>शनि का अष्टकवर्ग</b></p> | <p><b>लग्न का अष्टकवर्ग</b></p>  |

## भिन्नाष्टक ग्राफ

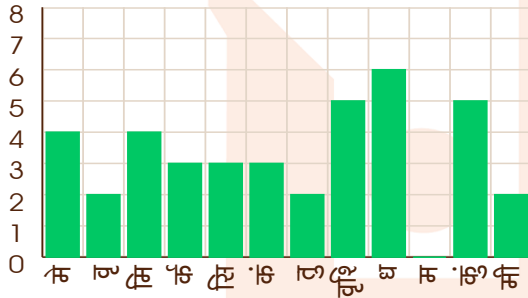
सूर्य



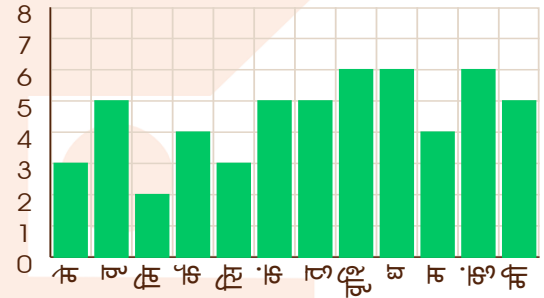
चन्द्र



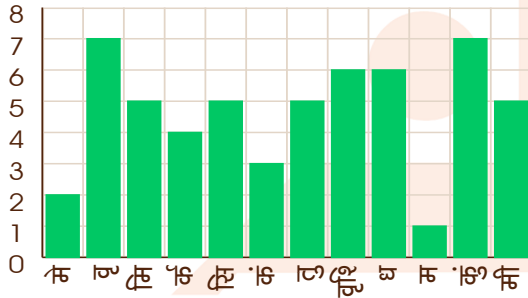
मंगल



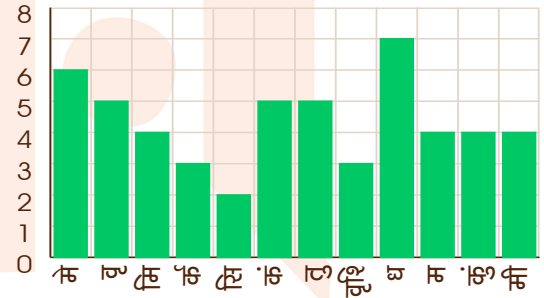
बुध



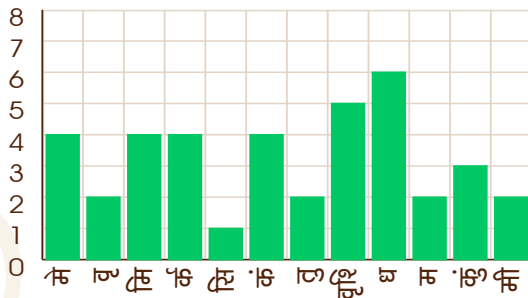
गुरु



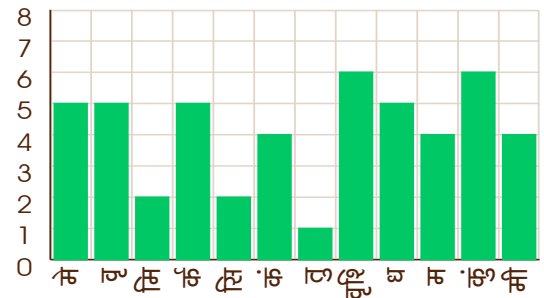
शुक्र



शनि



लग्न



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

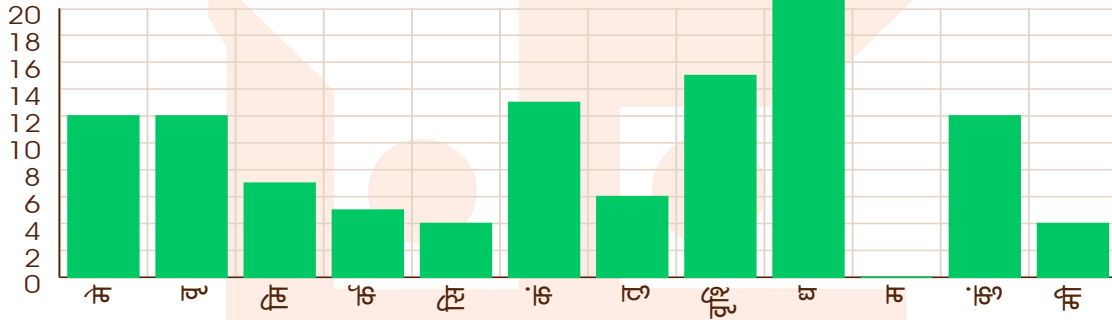


## अष्टकवर्ग ग्राफ

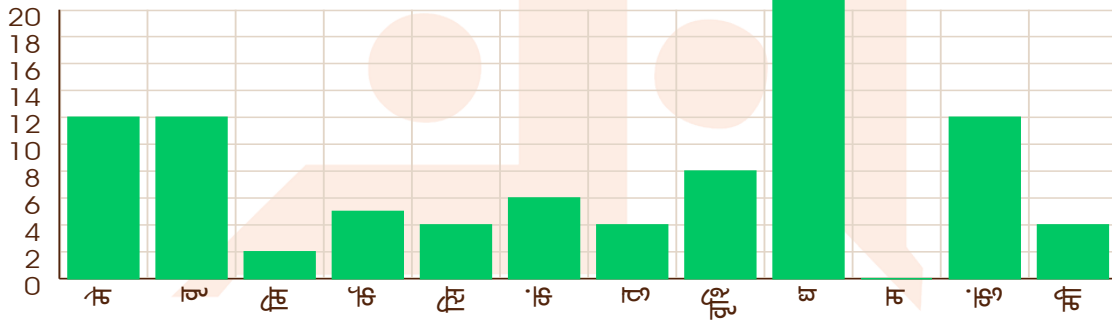
### सर्वाष्टकवर्ग



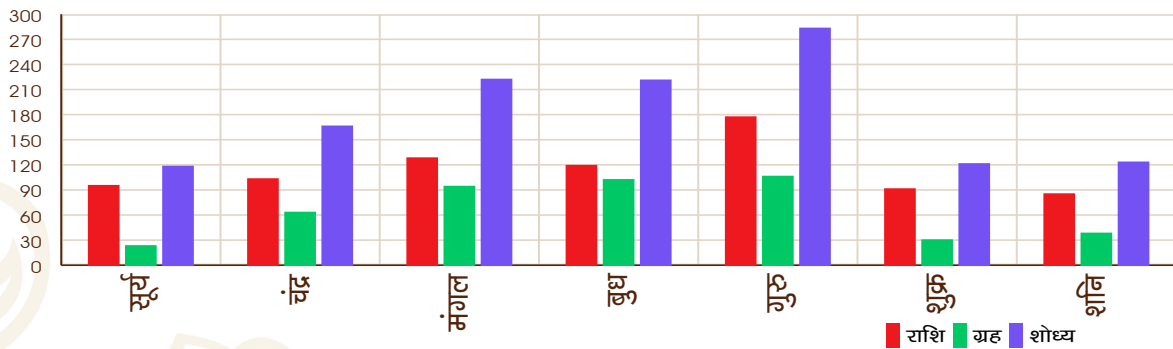
### त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



### एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



### शोध्य पिंड



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## विंशोत्तरी दशा

**भोग्य दशा काल : केतु 5 वर्ष 2 मास 26 दिन**

| केतु 7 वर्ष<br>25/02/1966<br>24/05/1971  | शुक्र 20 वर्ष<br>24/05/1971<br>24/05/1991 | सूर्य 6 वर्ष<br>24/05/1991<br>23/05/1997 | चंद्र 10 वर्ष<br>23/05/1997<br>24/05/2007 | मंगल 7 वर्ष<br>24/05/2007<br>23/05/2014 |
|------------------------------------------|-------------------------------------------|------------------------------------------|-------------------------------------------|-----------------------------------------|
| 00/00/0000                               | शुक्र 22/09/1974                          | सूर्य 10/09/1991                         | चंद्र 24/03/1998                          | मंगल 20/10/2007                         |
| 25/02/1966                               | सूर्य 22/09/1975                          | चंद्र 11/03/1992                         | मंगल 23/10/1998                           | राहु 06/11/2008                         |
| सूर्य 26/04/1966                         | चंद्र 23/05/1977                          | मंगल 17/07/1992                          | राहु 23/04/2000                           | गुरु 13/10/2009                         |
| चंद्र 25/11/1966                         | मंगल 23/07/1978                           | राहु 10/06/1993                          | गुरु 23/08/2001                           | शनि 22/11/2010                          |
| मंगल 23/04/1967                          | राहु 23/07/1981                           | गुरु 30/03/1994                          | शनि 24/03/2003                            | बुध 19/11/2011                          |
| राहु 11/05/1968                          | गुरु 23/03/1984                           | शनि 12/03/1995                           | बुध 22/08/2004                            | केतु 16/04/2012                         |
| गुरु 17/04/1969                          | शनि 24/05/1987                            | बुध 16/01/1996                           | केतु 23/03/2005                           | शुक्र 17/06/2013                        |
| शनि 27/05/1970                           | बुध 24/03/1990                            | केतु 23/05/1996                          | शुक्र 22/11/2006                          | सूर्य 22/10/2013                        |
| बुध 24/05/1971                           | केतु 24/05/1991                           | शुक्र 23/05/1997                         | सूर्य 24/05/2007                          | चंद्र 23/05/2014                        |
| राहु 18 वर्ष<br>23/05/2014<br>23/05/2032 | गुरु 16 वर्ष<br>23/05/2032<br>23/05/2048  | शनि 19 वर्ष<br>23/05/2048<br>24/05/2067  | बुध 17 वर्ष<br>24/05/2067<br>23/05/2084   | केतु 7 वर्ष<br>23/05/2084<br>00/00/0000 |
| राहु 03/02/2017                          | गुरु 11/07/2034                           | शनि 27/05/2051                           | बुध 19/10/2069                            | केतु 19/10/2084                         |
| गुरु 29/06/2019                          | शनि 21/01/2037                            | बुध 03/02/2054                           | केतु 17/10/2070                           | शुक्र 19/12/2085                        |
| शनि 05/05/2022                           | बुध 29/04/2039                            | केतु 15/03/2055                          | शुक्र 16/08/2073                          | सूर्य 25/02/2086                        |
| बुध 22/11/2024                           | केतु 04/04/2040                           | शुक्र 14/05/2058                         | सूर्य 23/06/2074                          | 00/00/0000                              |
| केतु 10/12/2025                          | शुक्र 04/12/2042                          | सूर्य 26/04/2059                         | चंद्र 22/11/2075                          | 00/00/0000                              |
| शुक्र 10/12/2028                         | सूर्य 22/09/2043                          | चंद्र 25/11/2060                         | मंगल 19/11/2076                           | 00/00/0000                              |
| सूर्य 04/11/2029                         | चंद्र 21/01/2045                          | मंगल 03/01/2062                          | राहु 08/06/2079                           | 00/00/0000                              |
| चंद्र 05/05/2031                         | मंगल 28/12/2045                           | राहु 09/11/2064                          | गुरु 13/09/2081                           | 00/00/0000                              |
| मंगल 23/05/2032                          | राहु 23/05/2048                           | गुरु 24/05/2067                          | शनि 23/05/2084                            | 00/00/0000                              |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 5 वर्ष 2 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| केतु - सूर्य     | केतु - चंद्र     | केतु - मंगल      | केतु - राहु      | केतु - गुरु      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966       | 26/04/1966       | 25/11/1966       | 23/04/1967       | 11/05/1968       |
| 26/04/1966       | 25/11/1966       | 23/04/1967       | 11/05/1968       | 17/04/1969       |
| 00/00/0000       | चंद्र 14/05/1966 | मंगल 04/12/1966  | राहु 20/06/1967  | गुरु 25/06/1968  |
| 00/00/0000       | मंगल 26/05/1966  | राहु 26/12/1966  | गुरु 10/08/1967  | शनि 18/08/1968   |
| 00/00/0000       | राहु 27/06/1966  | गुरु 15/01/1967  | शनि 10/10/1967   | बुध 06/10/1968   |
| 00/00/0000       | गुरु 26/07/1966  | शनि 08/02/1967   | बुध 03/12/1967   | केतु 25/10/1968  |
| 25/02/1966       | शनि 28/08/1966   | बुध 01/03/1967   | केतु 25/12/1967  | शुक्र 21/12/1968 |
| शनि 10/03/1966   | बुध 28/09/1966   | केतु 10/03/1967  | शुक्र 27/02/1968 | सूर्य 07/01/1969 |
| बुध 28/03/1966   | केतु 10/10/1966  | शुक्र 03/04/1967 | सूर्य 17/03/1968 | चंद्र 05/02/1969 |
| केतु 05/04/1966  | शुक्र 14/11/1966 | सूर्य 11/04/1967 | चंद्र 18/04/1968 | मंगल 25/02/1969  |
| शुक्र 26/04/1966 | सूर्य 25/11/1966 | चंद्र 23/04/1967 | मंगल 11/05/1968  | राहु 17/04/1969  |
| केतु - शनि       | केतु - बुध       | शुक्र - शुक्र    | शुक्र - सूर्य    | शुक्र - चंद्र    |
| 17/04/1969       | 27/05/1970       | 24/05/1971       | 22/09/1974       | 22/09/1975       |
| 27/05/1970       | 24/05/1971       | 22/09/1974       | 22/09/1975       | 23/05/1977       |
| शनि 20/06/1969   | बुध 17/07/1970   | शुक्र 13/12/1971 | सूर्य 10/10/1974 | चंद्र 12/11/1975 |
| बुध 16/08/1969   | केतु 07/08/1970  | सूर्य 12/02/1972 | चंद्र 10/11/1974 | मंगल 18/12/1975  |
| केतु 09/09/1969  | शुक्र 06/10/1970 | चंद्र 23/05/1972 | मंगल 01/12/1974  | राहु 18/03/1976  |
| शुक्र 15/11/1969 | सूर्य 24/10/1970 | मंगल 02/08/1972  | राहु 25/01/1975  | गुरु 07/06/1976  |
| सूर्य 05/12/1969 | चंद्र 24/11/1970 | राहु 01/02/1973  | गुरु 15/03/1975  | शनि 12/09/1976   |
| चंद्र 08/01/1970 | मंगल 15/12/1970  | गुरु 13/07/1973  | शनि 12/05/1975   | बुध 07/12/1976   |
| मंगल 01/02/1970  | राहु 07/02/1971  | शनि 22/01/1974   | बुध 02/07/1975   | केतु 11/01/1977  |
| राहु 03/04/1970  | गुरु 27/03/1971  | बुध 13/07/1974   | केतु 24/07/1975  | शुक्र 23/04/1977 |
| गुरु 27/05/1970  | शनि 24/05/1971   | केतु 22/09/1974  | शुक्र 22/09/1975 | सूर्य 23/05/1977 |
| शुक्र - मंगल     | शुक्र - राहु     | शुक्र - गुरु     | शुक्र - शनि      | शुक्र - बुध      |
| 23/05/1977       | 23/07/1978       | 23/07/1981       | 23/03/1984       | 24/05/1987       |
| 23/07/1978       | 23/07/1981       | 23/03/1984       | 24/05/1987       | 24/03/1990       |
| मंगल 17/06/1977  | राहु 04/01/1979  | गुरु 30/11/1981  | शनि 22/09/1984   | बुध 17/10/1987   |
| राहु 20/08/1977  | गुरु 30/05/1979  | शनि 03/05/1982   | बुध 05/03/1985   | केतु 17/12/1987  |
| गुरु 16/10/1977  | शनि 19/11/1979   | बुध 18/09/1982   | केतु 12/05/1985  | शुक्र 06/06/1988 |
| शनि 22/12/1977   | बुध 23/04/1980   | केतु 14/11/1982  | शुक्र 20/11/1985 | सूर्य 28/07/1988 |
| बुध 21/02/1978   | केतु 25/06/1980  | शुक्र 25/04/1983 | सूर्य 17/01/1986 | चंद्र 22/10/1988 |
| केतु 18/03/1978  | शुक्र 25/12/1980 | सूर्य 13/06/1983 | चंद्र 24/04/1986 | मंगल 22/12/1988  |
| शुक्र 28/05/1978 | सूर्य 18/02/1981 | चंद्र 02/09/1983 | मंगल 30/06/1986  | राहु 26/05/1989  |
| सूर्य 18/06/1978 | चंद्र 20/05/1981 | मंगल 29/10/1983  | राहु 21/12/1986  | गुरु 11/10/1989  |
| चंद्र 23/07/1978 | मंगल 23/07/1981  | राहु 23/03/1984  | गुरु 24/05/1987  | शनि 24/03/1990   |

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शुक्र - केतु<br>24/03/1990<br>24/05/1991                                                                                                                                 | सूर्य - सूर्य<br>24/05/1991<br>10/09/1991                                                                                                                                | सूर्य - चंद्र<br>10/09/1991<br>11/03/1992                                                                                                                                | सूर्य - मंगल<br>11/03/1992<br>17/07/1992                                                                                                                                 | सूर्य - राहु<br>17/07/1992<br>10/06/1993                                                                                                                                 |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| केतु 17/04/1990<br>शुक्र 27/06/1990<br>सूर्य 19/07/1990<br>चंद्र 23/08/1990<br>मंगल 17/09/1990<br>राहु 20/11/1990<br>गुरु 16/01/1991<br>शनि 24/03/1991<br>बुध 24/05/1991 | सूर्य 29/05/1991<br>चंद्र 07/06/1991<br>मंगल 14/06/1991<br>राहु 30/06/1991<br>गुरु 15/07/1991<br>शनि 01/08/1991<br>बुध 17/08/1991<br>केतु 23/08/1991<br>शुक्र 10/09/1991 | चंद्र 26/09/1991<br>मंगल 06/10/1991<br>राहु 03/11/1991<br>गुरु 27/11/1991<br>शनि 26/12/1991<br>बुध 21/01/1992<br>केतु 31/01/1992<br>शुक्र 02/03/1992<br>सूर्य 11/03/1992 | मंगल 18/03/1992<br>राहु 07/04/1992<br>गुरु 24/04/1992<br>शनि 14/05/1992<br>बुध 01/06/1992<br>केतु 08/06/1992<br>शुक्र 30/06/1992<br>सूर्य 06/07/1992<br>चंद्र 17/07/1992 | राहु 04/09/1992<br>गुरु 18/10/1992<br>शनि 09/12/1992<br>बुध 25/01/1993<br>केतु 13/02/1993<br>शुक्र 08/04/1993<br>सूर्य 25/04/1993<br>चंद्र 22/05/1993<br>मंगल 10/06/1993 |
| सूर्य - गुरु<br>10/06/1993<br>30/03/1994                                                                                                                                 | सूर्य - शनि<br>30/03/1994<br>12/03/1995                                                                                                                                  | सूर्य - बुध<br>12/03/1995<br>16/01/1996                                                                                                                                  | सूर्य - केतु<br>16/01/1996<br>23/05/1996                                                                                                                                 | सूर्य - शुक्र<br>23/05/1996<br>23/05/1997                                                                                                                                |
| गुरु 19/07/1993<br>शनि 04/09/1993<br>बुध 15/10/1993<br>केतु 01/11/1993<br>शुक्र 20/12/1993<br>सूर्य 03/01/1994<br>चंद्र 28/01/1994<br>मंगल 14/02/1994<br>राहु 30/03/1994 | शनि 24/05/1994<br>बुध 12/07/1994<br>केतु 01/08/1994<br>शुक्र 28/09/1994<br>सूर्य 15/10/1994<br>चंद्र 13/11/1994<br>मंगल 03/12/1994<br>राहु 24/01/1995<br>गुरु 12/03/1995 | बुध 25/04/1995<br>केतु 13/05/1995<br>शुक्र 04/07/1995<br>सूर्य 19/07/1995<br>चंद्र 14/08/1995<br>मंगल 01/09/1995<br>राहु 18/10/1995<br>गुरु 28/11/1995<br>शनि 16/01/1996 | केतु 24/01/1996<br>शुक्र 14/02/1996<br>सूर्य 20/02/1996<br>चंद्र 02/03/1996<br>मंगल 09/03/1996<br>राहु 29/03/1996<br>गुरु 15/04/1996<br>शनि 05/05/1996<br>बुध 23/05/1996 | शुक्र 23/07/1996<br>सूर्य 10/08/1996<br>चंद्र 10/09/1996<br>मंगल 01/10/1996<br>राहु 25/11/1996<br>गुरु 12/01/1997<br>शनि 11/03/1997<br>बुध 02/05/1997<br>केतु 23/05/1997 |
| चंद्र - चंद्र<br>23/05/1997<br>24/03/1998                                                                                                                                | चंद्र - मंगल<br>24/03/1998<br>23/10/1998                                                                                                                                 | चंद्र - राहु<br>23/10/1998<br>23/04/2000                                                                                                                                 | चंद्र - गुरु<br>23/04/2000<br>23/08/2001                                                                                                                                 | चंद्र - शनि<br>23/08/2001<br>24/03/2003                                                                                                                                  |
| चंद्र 18/06/1997<br>मंगल 05/07/1997<br>राहु 20/08/1997<br>गुरु 30/09/1997<br>शनि 17/11/1997<br>बुध 30/12/1997<br>केतु 17/01/1998<br>शुक्र 08/03/1998<br>सूर्य 24/03/1998 | मंगल 05/04/1998<br>राहु 07/05/1998<br>गुरु 04/06/1998<br>शनि 08/07/1998<br>बुध 07/08/1998<br>केतु 20/08/1998<br>शुक्र 24/09/1998<br>सूर्य 05/10/1998<br>चंद्र 23/10/1998 | राहु 13/01/1999<br>गुरु 27/03/1999<br>शनि 22/06/1999<br>बुध 07/09/1999<br>केतु 09/10/1999<br>शुक्र 09/01/2000<br>सूर्य 05/02/2000<br>चंद्र 22/03/2000<br>मंगल 23/04/2000 | गुरु 26/06/2000<br>शनि 12/09/2000<br>बुध 20/11/2000<br>केतु 18/12/2000<br>शुक्र 09/03/2001<br>सूर्य 02/04/2001<br>चंद्र 13/05/2001<br>मंगल 10/06/2001<br>राहु 23/08/2001 | शनि 22/11/2001<br>बुध 12/02/2002<br>केतु 18/03/2002<br>शुक्र 22/06/2002<br>सूर्य 21/07/2002<br>चंद्र 07/09/2002<br>मंगल 11/10/2002<br>राहु 06/01/2003<br>गुरु 24/03/2003 |

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| चंद्र - बुध<br>24/03/2003<br>22/08/2004                                                                                                                                  | चंद्र - केतु<br>22/08/2004<br>23/03/2005                                                                                                                                 | चंद्र - शुक्र<br>23/03/2005<br>22/11/2006                                                                                                                                | चंद्र - सूर्य<br>22/11/2006<br>24/05/2007                                                                                                                                | मंगल - मंगल<br>24/05/2007<br>20/10/2007                                                                                                                                  |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| बुध 05/06/2003<br>केतु 05/07/2003<br>शुक्र 30/09/2003<br>सूर्य 25/10/2003<br>चंद्र 08/12/2003<br>मंगल 07/01/2004<br>राहु 24/03/2004<br>गुरु 01/06/2004<br>शनि 22/08/2004 | केतु 04/09/2004<br>शुक्र 09/10/2004<br>सूर्य 20/10/2004<br>चंद्र 07/11/2004<br>मंगल 19/11/2004<br>राहु 21/12/2004<br>गुरु 18/01/2005<br>शनि 21/02/2005<br>बुध 23/03/2005 | शुक्र 03/07/2005<br>सूर्य 02/08/2005<br>चंद्र 22/09/2005<br>मंगल 27/10/2005<br>राहु 27/01/2006<br>गुरु 18/04/2006<br>शनि 23/07/2006<br>बुध 18/10/2006<br>केतु 22/11/2006 | सूर्य 01/12/2006<br>चंद्र 16/12/2006<br>मंगल 27/12/2006<br>राहु 23/01/2007<br>गुरु 17/02/2007<br>शनि 18/03/2007<br>बुध 13/04/2007<br>केतु 23/04/2007<br>शुक्र 24/05/2007 | मंगल 01/06/2007<br>राहु 24/06/2007<br>गुरु 14/07/2007<br>शनि 06/08/2007<br>बुध 27/08/2007<br>केतु 05/09/2007<br>शुक्र 30/09/2007<br>सूर्य 07/10/2007<br>चंद्र 20/10/2007 |
| मंगल - राहु<br>20/10/2007<br>06/11/2008                                                                                                                                  | मंगल - गुरु<br>06/11/2008<br>13/10/2009                                                                                                                                  | मंगल - शनि<br>13/10/2009<br>22/11/2010                                                                                                                                   | मंगल - बुध<br>22/11/2010<br>19/11/2011                                                                                                                                   | मंगल - केतु<br>19/11/2011<br>16/04/2012                                                                                                                                  |
| राहु 16/12/2007<br>गुरु 06/02/2008<br>शनि 06/04/2008<br>बुध 31/05/2008<br>केतु 22/06/2008<br>शुक्र 25/08/2008<br>सूर्य 13/09/2008<br>चंद्र 15/10/2008<br>मंगल 06/11/2008 | गुरु 22/12/2008<br>शनि 14/02/2009<br>बुध 03/04/2009<br>केतु 23/04/2009<br>शुक्र 19/06/2009<br>सूर्य 06/07/2009<br>चंद्र 03/08/2009<br>मंगल 23/08/2009<br>राहु 13/10/2009 | शनि 16/12/2009<br>बुध 12/02/2010<br>केतु 07/03/2010<br>शुक्र 14/05/2010<br>सूर्य 03/06/2010<br>चंद्र 07/07/2010<br>मंगल 30/07/2010<br>राहु 29/09/2010<br>गुरु 22/11/2010 | बुध 12/01/2011<br>केतु 03/02/2011<br>शुक्र 04/04/2011<br>सूर्य 22/04/2011<br>चंद्र 22/05/2011<br>मंगल 12/06/2011<br>राहु 06/08/2011<br>गुरु 23/09/2011<br>शनि 19/11/2011 | केतु 28/11/2011<br>शुक्र 23/12/2011<br>सूर्य 30/12/2011<br>चंद्र 12/01/2012<br>मंगल 20/01/2012<br>राहु 12/02/2012<br>गुरु 03/03/2012<br>शनि 26/03/2012<br>बुध 16/04/2012 |
| मंगल - शुक्र<br>16/04/2012<br>17/06/2013                                                                                                                                 | मंगल - सूर्य<br>17/06/2013<br>22/10/2013                                                                                                                                 | मंगल - चंद्र<br>22/10/2013<br>23/05/2014                                                                                                                                 | राहु - राहु<br>23/05/2014<br>03/02/2017                                                                                                                                  | राहु - गुरु<br>03/02/2017<br>29/06/2019                                                                                                                                  |
| शुक्र 26/06/2012<br>सूर्य 18/07/2012<br>चंद्र 22/08/2012<br>मंगल 16/09/2012<br>राहु 19/11/2012<br>गुरु 15/01/2013<br>शनि 23/03/2013<br>बुध 23/05/2013<br>केतु 17/06/2013 | सूर्य 23/06/2013<br>चंद्र 04/07/2013<br>मंगल 11/07/2013<br>राहु 30/07/2013<br>गुरु 16/08/2013<br>शनि 06/09/2013<br>बुध 24/09/2013<br>केतु 01/10/2013<br>शुक्र 22/10/2013 | चंद्र 09/11/2013<br>मंगल 22/11/2013<br>राहु 24/12/2013<br>गुरु 21/01/2014<br>शनि 24/02/2014<br>बुध 26/03/2014<br>केतु 07/04/2014<br>शुक्र 13/05/2014<br>सूर्य 23/05/2014 | राहु 18/10/2014<br>गुरु 27/02/2015<br>शनि 02/08/2015<br>बुध 20/12/2015<br>केतु 15/02/2016<br>शुक्र 29/07/2016<br>सूर्य 16/09/2016<br>चंद्र 07/12/2016<br>मंगल 03/02/2017 | गुरु 31/05/2017<br>शनि 16/10/2017<br>बुध 18/02/2018<br>केतु 10/04/2018<br>शुक्र 03/09/2018<br>सूर्य 17/10/2018<br>चंद्र 29/12/2018<br>मंगल 18/02/2019<br>राहु 29/06/2019 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

|                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>राहु - शनि</b><br><b>29/06/2019</b><br><b>05/05/2022</b>                                                                                                              | <b>राहु - बुध</b><br><b>05/05/2022</b><br><b>22/11/2024</b>                                                                                                              | <b>राहु - केतु</b><br><b>22/11/2024</b><br><b>10/12/2025</b>                                                                                                             | <b>राहु - शुक्र</b><br><b>10/12/2025</b><br><b>10/12/2028</b>                                                                                                            | <b>राहु - सूर्य</b><br><b>10/12/2028</b><br><b>04/11/2029</b>                                                                                                            |
| शनि 11/12/2019<br>बुध 07/05/2020<br>केतु 06/07/2020<br>शुक्र 27/12/2020<br>सूर्य 17/02/2021<br>चंद्र 15/05/2021<br>मंगल 14/07/2021<br>राहु 17/12/2021<br>गुरु 05/05/2022 | बुध 14/09/2022<br>केतु 07/11/2022<br>शुक्र 12/04/2023<br>सूर्य 28/05/2023<br>चंद्र 14/08/2023<br>मंगल 07/10/2023<br>राहु 24/02/2024<br>गुरु 27/06/2024<br>शनि 22/11/2024 | केतु 14/12/2024<br>शुक्र 16/02/2025<br>सूर्य 07/03/2025<br>चंद्र 08/04/2025<br>मंगल 30/04/2025<br>राहु 27/06/2025<br>गुरु 17/08/2025<br>शनि 17/10/2025<br>बुध 10/12/2025 | शुक्र 11/06/2026<br>सूर्य 05/08/2026<br>चंद्र 04/11/2026<br>मंगल 07/01/2027<br>राहु 20/06/2027<br>गुरु 13/11/2027<br>शनि 05/05/2028<br>बुध 07/10/2028<br>केतु 10/12/2028 | सूर्य 26/12/2028<br>चंद्र 23/01/2029<br>मंगल 11/02/2029<br>राहु 01/04/2029<br>गुरु 15/05/2029<br>शनि 06/07/2029<br>बुध 22/08/2029<br>केतु 10/09/2029<br>शुक्र 04/11/2029 |
| <b>राहु - चंद्र</b><br><b>04/11/2029</b><br><b>05/05/2031</b>                                                                                                            | <b>राहु - मंगल</b><br><b>05/05/2031</b><br><b>23/05/2032</b>                                                                                                             | <b>गुरु - गुरु</b><br><b>23/05/2032</b><br><b>11/07/2034</b>                                                                                                             | <b>गुरु - शनि</b><br><b>11/07/2034</b><br><b>21/01/2037</b>                                                                                                              | <b>गुरु - बुध</b><br><b>21/01/2037</b><br><b>29/04/2039</b>                                                                                                              |
| चंद्र 19/12/2029<br>मंगल 20/01/2030<br>राहु 12/04/2030<br>गुरु 24/06/2030<br>शनि 19/09/2030<br>बुध 06/12/2030<br>केतु 07/01/2031<br>शुक्र 08/04/2031<br>सूर्य 05/05/2031 | मंगल 28/05/2031<br>राहु 24/07/2031<br>गुरु 13/09/2031<br>शनि 13/11/2031<br>बुध 07/01/2032<br>केतु 29/01/2032<br>शुक्र 02/04/2032<br>सूर्य 21/04/2032<br>चंद्र 23/05/2032 | गुरु 04/09/2032<br>शनि 05/01/2033<br>बुध 26/04/2033<br>केतु 10/06/2033<br>शुक्र 18/10/2033<br>सूर्य 26/11/2033<br>चंद्र 30/01/2034<br>मंगल 16/03/2034<br>राहु 11/07/2034 | शनि 05/12/2034<br>बुध 15/04/2035<br>केतु 08/06/2035<br>शुक्र 09/11/2035<br>सूर्य 25/12/2035<br>चंद्र 11/03/2036<br>मंगल 04/05/2036<br>राहु 20/09/2036<br>गुरु 21/01/2037 | बुध 19/05/2037<br>केतु 06/07/2037<br>शुक्र 21/11/2037<br>सूर्य 01/01/2038<br>चंद्र 11/03/2038<br>मंगल 29/04/2038<br>राहु 31/08/2038<br>गुरु 19/12/2038<br>शनि 29/04/2039 |
| <b>गुरु - केतु</b><br><b>29/04/2039</b><br><b>04/04/2040</b>                                                                                                             | <b>गुरु - शुक्र</b><br><b>04/04/2040</b><br><b>04/12/2042</b>                                                                                                            | <b>गुरु - सूर्य</b><br><b>04/12/2042</b><br><b>22/09/2043</b>                                                                                                            | <b>गुरु - चंद्र</b><br><b>22/09/2043</b><br><b>21/01/2045</b>                                                                                                            | <b>गुरु - मंगल</b><br><b>21/01/2045</b><br><b>28/12/2045</b>                                                                                                             |
| केतु 19/05/2039<br>शुक्र 15/07/2039<br>सूर्य 01/08/2039<br>चंद्र 30/08/2039<br>मंगल 18/09/2039<br>राहु 09/11/2039<br>गुरु 24/12/2039<br>शनि 16/02/2040<br>बुध 04/04/2040 | शुक्र 14/09/2040<br>सूर्य 01/11/2040<br>चंद्र 21/01/2041<br>मंगल 19/03/2041<br>राहु 12/08/2041<br>गुरु 20/12/2041<br>शनि 23/05/2042<br>बुध 08/10/2042<br>केतु 04/12/2042 | सूर्य 19/12/2042<br>चंद्र 12/01/2043<br>मंगल 29/01/2043<br>राहु 14/03/2043<br>गुरु 22/04/2043<br>शनि 07/06/2043<br>बुध 19/07/2043<br>केतु 05/08/2043<br>शुक्र 22/09/2043 | चंद्र 02/11/2043<br>मंगल 30/11/2043<br>राहु 12/02/2044<br>गुरु 16/04/2044<br>शनि 03/07/2044<br>बुध 10/09/2044<br>केतु 08/10/2044<br>शुक्र 28/12/2044<br>सूर्य 21/01/2045 | मंगल 10/02/2045<br>राहु 02/04/2045<br>गुरु 18/05/2045<br>शनि 11/07/2045<br>बुध 28/08/2045<br>केतु 17/09/2045<br>शुक्र 13/11/2045<br>सूर्य 30/11/2045<br>चंद्र 28/12/2045 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

|                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>गुरु - राहु</b><br><b>28/12/2045</b><br><b>23/05/2048</b>                                                                                                             | <b>शनि - शनि</b><br><b>23/05/2048</b><br><b>27/05/2051</b>                                                                                                               | <b>शनि - बुध</b><br><b>27/05/2051</b><br><b>03/02/2054</b>                                                                                                               | <b>शनि - केतु</b><br><b>03/02/2054</b><br><b>15/03/2055</b>                                                                                                              | <b>शनि - शुक्र</b><br><b>15/03/2055</b><br><b>14/05/2058</b>                                                                                                             |
| राहु 09/05/2046<br>गुरु 03/09/2046<br>शनि 20/01/2047<br>बुध 24/05/2047<br>केतु 14/07/2047<br>शुक्र 07/12/2047<br>सूर्य 20/01/2048<br>चंद्र 02/04/2048<br>मंगल 23/05/2048 | शनि 13/11/2048<br>बुध 18/04/2049<br>केतु 21/06/2049<br>शुक्र 21/12/2049<br>सूर्य 14/02/2050<br>चंद्र 16/05/2050<br>मंगल 19/07/2050<br>राहु 31/12/2050<br>गुरु 27/05/2051 | बुध 13/10/2051<br>केतु 09/12/2051<br>शुक्र 21/05/2052<br>सूर्य 09/07/2052<br>चंद्र 29/09/2052<br>मंगल 26/11/2052<br>राहु 22/04/2053<br>गुरु 31/08/2053<br>शनि 03/02/2054 | केतु 27/02/2054<br>शुक्र 05/05/2054<br>सूर्य 25/05/2054<br>चंद्र 28/06/2054<br>मंगल 22/07/2054<br>राहु 20/09/2054<br>गुरु 13/11/2054<br>शनि 16/01/2055<br>बुध 15/03/2055 | शुक्र 23/09/2055<br>सूर्य 20/11/2055<br>चंद्र 25/02/2056<br>मंगल 02/05/2056<br>राहु 23/10/2056<br>गुरु 26/03/2057<br>शनि 25/09/2057<br>बुध 08/03/2058<br>केतु 14/05/2058 |
| <b>शनि - सूर्य</b><br><b>14/05/2058</b><br><b>26/04/2059</b>                                                                                                             | <b>शनि - चंद्र</b><br><b>26/04/2059</b><br><b>25/11/2060</b>                                                                                                             | <b>शनि - मंगल</b><br><b>25/11/2060</b><br><b>03/01/2062</b>                                                                                                              | <b>शनि - राहु</b><br><b>03/01/2062</b><br><b>09/11/2064</b>                                                                                                              | <b>शनि - गुरु</b><br><b>09/11/2064</b><br><b>24/05/2067</b>                                                                                                              |
| सूर्य 01/06/2058<br>चंद्र 30/06/2058<br>मंगल 20/07/2058<br>राहु 10/09/2058<br>गुरु 26/10/2058<br>शनि 20/12/2058<br>बुध 07/02/2059<br>केतु 27/02/2059<br>शुक्र 26/04/2059 | चंद्र 14/06/2059<br>मंगल 17/07/2059<br>राहु 12/10/2059<br>गुरु 28/12/2059<br>शनि 29/03/2060<br>बुध 19/06/2060<br>केतु 22/07/2060<br>शुक्र 27/10/2060<br>सूर्य 25/11/2060 | मंगल 18/12/2060<br>राहु 17/02/2061<br>गुरु 12/04/2061<br>शनि 15/06/2061<br>बुध 11/08/2061<br>केतु 04/09/2061<br>शुक्र 10/11/2061<br>सूर्य 01/12/2061<br>चंद्र 03/01/2062 | राहु 09/06/2062<br>गुरु 25/10/2062<br>शनि 08/04/2063<br>बुध 03/09/2063<br>केतु 02/11/2063<br>शुक्र 24/04/2064<br>सूर्य 15/06/2064<br>चंद्र 10/09/2064<br>मंगल 09/11/2064 | गुरु 13/03/2065<br>शनि 06/08/2065<br>बुध 15/12/2065<br>केतु 07/02/2066<br>शुक्र 12/07/2066<br>सूर्य 27/08/2066<br>चंद्र 12/11/2066<br>मंगल 05/01/2067<br>राहु 24/05/2067 |
| <b>बुध - बुध</b><br><b>24/05/2067</b><br><b>19/10/2069</b>                                                                                                               | <b>बुध - केतु</b><br><b>19/10/2069</b><br><b>17/10/2070</b>                                                                                                              | <b>बुध - शुक्र</b><br><b>17/10/2070</b><br><b>16/08/2073</b>                                                                                                             | <b>बुध - सूर्य</b><br><b>16/08/2073</b><br><b>23/06/2074</b>                                                                                                             | <b>बुध - चंद्र</b><br><b>23/06/2074</b><br><b>22/11/2075</b>                                                                                                             |
| बुध 25/09/2067<br>केतु 16/11/2067<br>शुक्र 10/04/2068<br>सूर्य 24/05/2068<br>चंद्र 06/08/2068<br>मंगल 26/09/2068<br>राहु 05/02/2069<br>गुरु 02/06/2069<br>शनि 19/10/2069 | केतु 09/11/2069<br>शुक्र 09/01/2070<br>सूर्य 27/01/2070<br>चंद्र 26/02/2070<br>मंगल 19/03/2070<br>राहु 13/05/2070<br>गुरु 30/06/2070<br>शनि 26/08/2070<br>बुध 17/10/2070 | शुक्र 07/04/2071<br>सूर्य 29/05/2071<br>चंद्र 23/08/2071<br>मंगल 22/10/2071<br>राहु 26/03/2072<br>गुरु 11/08/2072<br>शनि 21/01/2073<br>बुध 17/06/2073<br>केतु 16/08/2073 | सूर्य 01/09/2073<br>चंद्र 27/09/2073<br>मंगल 15/10/2073<br>राहु 01/12/2073<br>गुरु 11/01/2074<br>शनि 01/03/2074<br>बुध 14/04/2074<br>केतु 02/05/2074<br>शुक्र 23/06/2074 | चंद्र 05/08/2074<br>मंगल 04/09/2074<br>राहु 21/11/2074<br>गुरु 29/01/2075<br>शनि 21/04/2075<br>बुध 03/07/2075<br>केतु 02/08/2075<br>शुक्र 27/10/2075<br>सूर्य 22/11/2075 |

## विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| राहु - केतु - शनि      | राहु - केतु - बुध      | राहु - शुक्र - शुक्र   | राहु - शुक्र - सूर्य   |
|------------------------|------------------------|------------------------|------------------------|
| 17/08/2025 13:14       | 17/10/2025 06:35       | 10/12/2025 14:32       | 11/06/2026 05:32       |
| 17/10/2025 06:35       | 10/12/2025 14:32       | 11/06/2026 05:32       | 05/08/2026 00:26       |
| शनि 27/08/2025 03:59   | बुध 24/10/2025 23:19   | शुक्र 10/01/2026 01:02 | सूर्य 13/06/2026 23:16 |
| बुध 04/09/2025 18:27   | केतु 28/10/2025 03:22  | सूर्य 19/01/2026 04:11 | चंद्र 18/06/2026 12:51 |
| केतु 08/09/2025 07:27  | शुक्र 06/11/2025 04:42 | चंद्र 03/02/2026 09:26 | मंगल 21/06/2026 17:33  |
| शुक्र 18/09/2025 10:21 | सूर्य 08/11/2025 21:54 | मंगल 14/02/2026 01:06  | राहु 29/06/2026 22:47  |
| सूर्य 21/09/2025 11:13 | चंद्र 13/11/2025 10:33 | राहु 13/03/2026 10:33  | गुरु 07/07/2026 06:06  |
| चंद्र 26/09/2025 12:40 | मंगल 16/11/2025 14:37  | गुरु 06/04/2026 18:57  | शनि 15/07/2026 22:18   |
| मंगल 30/09/2025 01:40  | राहु 24/11/2025 18:13  | शनि 05/05/2026 16:56   | बुध 23/07/2026 16:35   |
| राहु 09/10/2025 04:16  | गुरु 02/12/2025 00:04  | बुध 31/05/2026 13:51   | केतु 26/07/2026 21:17  |
| गुरु 17/10/2025 06:35  | शनि 10/12/2025 14:32   | केतु 11/06/2026 05:32  | शुक्र 05/08/2026 00:26 |
| राहु - शुक्र - चंद्र   | राहु - शुक्र - मंगल    | राहु - शुक्र - राहु    | राहु - शुक्र - गुरु    |
| 05/08/2026 00:26       | 04/11/2026 07:56       | 07/01/2027 05:59       | 20/06/2027 14:41       |
| 04/11/2026 07:56       | 07/01/2027 05:59       | 20/06/2027 14:41       | 13/11/2027 17:05       |
| चंद्र 12/08/2026 15:03 | मंगल 08/11/2026 01:25  | राहु 31/01/2027 21:41  | गुरु 10/07/2027 02:12  |
| मंगल 17/08/2026 22:53  | राहु 17/11/2026 15:31  | गुरु 22/02/2027 19:39  | शनि 02/08/2027 05:23   |
| राहु 31/08/2026 15:37  | गुरु 26/11/2026 04:04  | शनि 20/03/2027 20:13   | बुध 22/08/2027 22:07   |
| गुरु 12/09/2026 19:49  | शनि 06/12/2026 06:57   | बुध 13/04/2027 03:03   | केतु 31/08/2027 10:40  |
| शनि 27/09/2026 06:48   | बुध 15/12/2026 08:17   | केतु 22/04/2027 17:10  | शुक्र 24/09/2027 19:04 |
| बुध 10/10/2026 05:16   | केतु 19/12/2026 01:46  | शुक्र 20/05/2027 02:37 | सूर्य 02/10/2027 02:23 |
| केतु 15/10/2026 13:06  | शुक्र 29/12/2026 17:26 | सूर्य 28/05/2027 07:51 | चंद्र 14/10/2027 06:35 |
| शुक्र 30/10/2026 18:21 | सूर्य 01/01/2027 22:08 | चंद्र 11/06/2027 00:34 | मंगल 22/10/2027 19:07  |
| सूर्य 04/11/2026 07:56 | चंद्र 07/01/2027 05:59 | मंगल 20/06/2027 14:41  | राहु 13/11/2027 17:05  |
| राहु - शुक्र - शनि     | राहु - शुक्र - बुध     | राहु - शुक्र - केतु    | राहु - सूर्य - सूर्य   |
| 13/11/2027 17:05       | 05/05/2028 04:56       | 07/10/2028 10:29       | 10/12/2028 08:32       |
| 05/05/2028 04:56       | 07/10/2028 10:29       | 10/12/2028 08:32       | 26/12/2028 19:00       |
| शनि 11/12/2027 04:21   | बुध 27/05/2028 04:43   | केतु 11/10/2028 03:58  | सूर्य 11/12/2028 04:15 |
| बुध 04/01/2028 18:14   | केतु 05/06/2028 06:02  | शुक्र 21/10/2028 19:38 | चंद्र 12/12/2028 13:07 |
| केतु 14/01/2028 21:08  | शुक्र 01/07/2028 02:58 | सूर्य 25/10/2028 00:21 | मंगल 13/12/2028 12:08  |
| शुक्र 12/02/2028 19:06 | सूर्य 08/07/2028 21:14 | चंद्र 30/10/2028 08:11 | राहु 15/12/2028 23:18  |
| सूर्य 21/02/2028 11:18 | चंद्र 21/07/2028 19:42 | मंगल 03/11/2028 01:40  | गुरु 18/12/2028 03:54  |
| चंद्र 06/03/2028 22:17 | मंगल 30/07/2028 21:02  | राहु 12/11/2028 15:46  | शनि 20/12/2028 18:22   |
| मंगल 17/03/2028 01:10  | राहु 23/08/2028 03:52  | गुरु 21/11/2028 04:19  | बुध 23/12/2028 02:15   |
| राहु 12/04/2028 01:45  | गुरु 12/09/2028 20:36  | शनि 01/12/2028 07:12   | केतु 24/12/2028 01:15  |
| गुरु 05/05/2028 04:56  | शनि 07/10/2028 10:29   | बुध 10/12/2028 08:32   | शुक्र 26/12/2028 19:00 |

## विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| राहु - सूर्य - चंद्र   | राहु - सूर्य - मंगल    | राहु - सूर्य - राहु    | राहु - सूर्य - गुरु    |
|------------------------|------------------------|------------------------|------------------------|
| 26/12/2028 19:00       | 23/01/2029 04:27       | 11/02/2029 08:40       | 01/04/2029 16:04       |
| 23/01/2029 04:27       | 11/02/2029 08:40       | 01/04/2029 16:04       | 15/05/2029 12:00       |
| चंद्र 29/12/2028 01:47 | मंगल 24/01/2029 07:18  | राहु 18/02/2029 18:11  | गुरु 07/04/2029 12:20  |
| मंगल 30/12/2028 16:08  | राहु 27/01/2029 04:20  | गुरु 25/02/2029 07:58  | शनि 14/04/2029 10:53   |
| राहु 03/01/2029 18:45  | गुरु 29/01/2029 17:41  | शनि 05/03/2029 03:20   | बुध 20/04/2029 15:54   |
| गुरु 07/01/2029 10:25  | शनि 01/02/2029 18:33   | बुध 12/03/2029 02:59   | केतु 23/04/2029 05:16  |
| शनि 11/01/2029 18:31   | बुध 04/02/2029 11:45   | केतु 15/03/2029 00:01  | शुक्र 30/04/2029 12:35 |
| बुध 15/01/2029 15:39   | केतु 05/02/2029 14:36  | शुक्र 23/03/2029 05:15 | सूर्य 02/05/2029 17:11 |
| केतु 17/01/2029 06:00  | शुक्र 08/02/2029 19:18 | सूर्य 25/03/2029 16:25 | चंद्र 06/05/2029 08:51 |
| शुक्र 21/01/2029 19:35 | सूर्य 09/02/2029 18:19 | चंद्र 29/03/2029 19:02 | मंगल 08/05/2029 22:12  |
| सूर्य 23/01/2029 04:27 | चंद्र 11/02/2029 08:40 | मंगल 01/04/2029 16:04  | राहु 15/05/2029 12:00  |
| राहु - सूर्य - शनि     | राहु - सूर्य - बुध     | राहु - सूर्य - केतु    | राहु - सूर्य - शुक्र   |
| 15/05/2029 12:00       | 06/07/2029 13:09       | 22/08/2029 02:49       | 10/09/2029 07:02       |
| 06/07/2029 13:09       | 22/08/2029 02:49       | 10/09/2029 07:02       | 04/11/2029 01:56       |
| शनि 23/05/2029 17:47   | बुध 13/07/2029 03:29   | केतु 23/08/2029 05:40  | शुक्र 19/09/2029 10:11 |
| बुध 31/05/2029 02:44   | केतु 15/07/2029 20:41  | शुक्र 26/08/2029 10:22 | सूर्य 22/09/2029 03:55 |
| केतु 03/06/2029 03:36  | शुक्र 23/07/2029 14:58 | सूर्य 27/08/2029 09:22 | चंद्र 26/09/2029 17:30 |
| शुक्र 11/06/2029 19:48 | सूर्य 25/07/2029 22:51 | चंद्र 28/08/2029 23:43 | मंगल 29/09/2029 22:12  |
| सूर्य 14/06/2029 10:15 | चंद्र 29/07/2029 19:59 | मंगल 30/08/2029 02:34  | राहु 08/10/2029 03:26  |
| चंद्र 18/06/2029 18:21 | मंगल 01/08/2029 13:11  | राहु 01/09/2029 23:36  | गुरु 15/10/2029 10:45  |
| मंगल 21/06/2029 19:13  | राहु 08/08/2029 12:50  | गुरु 04/09/2029 12:58  | शनि 24/10/2029 02:57   |
| राहु 29/06/2029 14:36  | गुरु 14/08/2029 17:51  | शनि 07/09/2029 13:50   | बुध 31/10/2029 21:14   |
| गुरु 06/07/2029 13:09  | शनि 22/08/2029 02:49   | बुध 10/09/2029 07:02   | केतु 04/11/2029 01:56  |
| राहु - चंद्र - चंद्र   | राहु - चंद्र - मंगल    | राहु - चंद्र - राहु    | राहु - चंद्र - गुरु    |
| 04/11/2029 01:56       | 19/12/2029 17:41       | 20/01/2030 16:42       | 12/04/2030 21:03       |
| 19/12/2029 17:41       | 20/01/2030 16:42       | 12/04/2030 21:03       | 24/06/2030 22:15       |
| चंद्र 07/11/2029 21:14 | मंगल 21/12/2029 14:25  | राहु 02/02/2030 00:33  | गुरु 22/04/2030 14:49  |
| मंगल 10/11/2029 13:10  | राहु 26/12/2029 09:29  | गुरु 12/02/2030 23:32  | शनि 04/05/2030 04:24   |
| राहु 17/11/2029 09:31  | गुरु 30/12/2029 15:45  | शनि 25/02/2030 23:50   | बुध 14/05/2030 12:46   |
| गुरु 23/11/2029 11:37  | शनि 04/01/2030 17:11   | बुध 09/03/2030 15:14   | केतु 18/05/2030 19:03  |
| शनि 30/11/2029 17:07   | बुध 09/01/2030 05:51   | केतु 14/03/2030 10:18  | शुक्र 30/05/2030 23:15 |
| बुध 07/12/2029 04:21   | केतु 11/01/2030 02:36  | शुक्र 28/03/2030 03:01 | सूर्य 03/06/2030 14:54 |
| केतु 09/12/2029 20:16  | शुक्र 16/01/2030 10:26 | सूर्य 01/04/2030 05:38 | चंद्र 09/06/2030 17:00 |
| शुक्र 17/12/2029 10:53 | सूर्य 18/01/2030 00:47 | चंद्र 08/04/2030 02:00 | मंगल 13/06/2030 23:16  |
| सूर्य 19/12/2029 17:41 | चंद्र 20/01/2030 16:42 | मंगल 12/04/2030 21:03  | राहु 24/06/2030 22:15  |

## विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

| राहु - चंद्र - शनि     | राहु - चंद्र - बुध     | राहु - चंद्र - केतु    | राहु - चंद्र - शुक्र   |
|------------------------|------------------------|------------------------|------------------------|
| 24/06/2030 22:15       | 19/09/2030 16:11       | 06/12/2030 06:57       | 07/01/2031 05:59       |
| 19/09/2030 16:11       | 06/12/2030 06:57       | 07/01/2031 05:59       | 08/04/2031 13:29       |
| शनि 08/07/2030 15:54   | बुध 30/09/2030 16:04   | केतु 08/12/2030 03:42  | शुक्र 22/01/2031 11:14 |
| बुध 20/07/2030 22:50   | केतु 05/10/2030 04:44  | शुक्र 13/12/2030 11:32 | सूर्य 27/01/2031 00:48 |
| केतु 26/07/2030 00:17  | शुक्र 18/10/2030 03:12 | सूर्य 15/12/2030 01:53 | चंद्र 03/02/2031 15:26 |
| शुक्र 09/08/2030 11:16 | सूर्य 22/10/2030 00:20 | चंद्र 17/12/2030 17:48 | मंगल 08/02/2031 23:16  |
| सूर्य 13/08/2030 19:22 | चंद्र 28/10/2030 11:34 | मंगल 19/12/2030 14:33  | राहु 22/02/2031 15:59  |
| चंद्र 21/08/2030 00:51 | मंगल 02/11/2030 00:14  | राहु 24/12/2030 09:36  | गुरु 06/03/2031 20:11  |
| मंगल 26/08/2030 02:18  | राहु 13/11/2030 15:39  | गुरु 28/12/2030 15:52  | शनि 21/03/2031 07:11   |
| राहु 08/09/2030 02:35  | गुरु 24/11/2030 00:01  | शनि 02/01/2031 17:19   | बुध 03/04/2031 05:38   |
| गुरु 19/09/2030 16:11  | शनि 06/12/2030 06:57   | बुध 07/01/2031 05:59   | केतु 08/04/2031 13:29  |
| राहु - चंद्र - सूर्य   | राहु - मंगल - मंगल     | राहु - मंगल - राहु     | राहु - मंगल - गुरु     |
| 08/04/2031 13:29       | 05/05/2031 22:56       | 28/05/2031 07:51       | 24/07/2031 20:29       |
| 05/05/2031 22:56       | 28/05/2031 07:51       | 24/07/2031 20:29       | 13/09/2031 23:44       |
| सूर्य 09/04/2031 22:21 | मंगल 07/05/2031 06:15  | राहु 05/06/2031 22:57  | गुरु 31/07/2031 16:07  |
| चंद्र 12/04/2031 05:08 | राहु 10/05/2031 14:47  | गुरु 13/06/2031 15:02  | शनि 08/08/2031 18:26   |
| मंगल 13/04/2031 19:29  | गुरु 13/05/2031 14:23  | शनि 22/06/2031 17:38   | बुध 16/08/2031 00:18   |
| राहु 17/04/2031 22:06  | शनि 17/05/2031 03:23   | बुध 30/06/2031 21:13   | केतु 18/08/2031 23:53  |
| गुरु 21/04/2031 13:46  | बुध 20/05/2031 07:27   | केतु 04/07/2031 05:46  | शुक्र 27/08/2031 12:25 |
| शनि 25/04/2031 21:52   | केतु 21/05/2031 14:46  | शुक्र 13/07/2031 19:52 | सूर्य 30/08/2031 01:47 |
| बुध 29/04/2031 19:00   | शुक्र 25/05/2031 08:15 | सूर्य 16/07/2031 16:54 | चंद्र 03/09/2031 08:03 |
| केतु 01/05/2031 09:21  | सूर्य 26/05/2031 11:06 | चंद्र 21/07/2031 11:57 | मंगल 06/09/2031 07:39  |
| शुक्र 05/05/2031 22:56 | चंद्र 28/05/2031 07:51 | मंगल 24/07/2031 20:29  | राहु 13/09/2031 23:44  |
| राहु - मंगल - शनि      | राहु - मंगल - बुध      | राहु - मंगल - केतु     | राहु - मंगल - शुक्र    |
| 13/09/2031 23:44       | 13/11/2031 17:05       | 07/01/2032 01:01       | 29/01/2032 09:56       |
| 13/11/2031 17:05       | 07/01/2032 01:01       | 29/01/2032 09:56       | 02/04/2032 07:59       |
| शनि 23/09/2031 14:29   | बुध 21/11/2031 09:48   | केतु 08/01/2032 08:20  | शुक्र 09/02/2032 01:37 |
| बुध 02/10/2031 04:56   | केतु 24/11/2031 13:52  | शुक्र 12/01/2032 01:50 | सूर्य 12/02/2032 06:19 |
| केतु 05/10/2031 17:57  | शुक्र 03/12/2031 15:11 | सूर्य 13/01/2032 04:40 | चंद्र 17/02/2032 14:09 |
| शुक्र 15/10/2031 20:50 | सूर्य 06/12/2031 08:23 | चंद्र 15/01/2032 01:25 | मंगल 21/02/2032 07:38  |
| सूर्य 18/10/2031 21:42 | चंद्र 10/12/2031 21:03 | मंगल 16/01/2032 08:44  | राहु 01/03/2032 21:45  |
| चंद्र 23/10/2031 23:09 | मंगल 14/12/2031 01:07  | राहु 19/01/2032 17:16  | गुरु 10/03/2032 10:17  |
| मंगल 27/10/2031 12:10  | राहु 22/12/2031 04:42  | गुरु 22/01/2032 16:52  | शनि 20/03/2032 13:11   |
| राहु 05/11/2031 14:46  | गुरु 29/12/2031 10:34  | शनि 26/01/2032 05:53   | बुध 29/03/2032 14:30   |
| गुरु 13/11/2031 17:05  | शनि 07/01/2032 01:01   | बुध 29/01/2032 09:56   | केतु 02/04/2032 07:59  |

## विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

|                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>राहु - मंगल - सूर्य</b><br><b>02/04/2032 07:59</b><br><b>21/04/2032 12:12</b>                                                                                                                                               | <b>राहु - मंगल - चंद्र</b><br><b>21/04/2032 12:12</b><br><b>23/05/2032 11:14</b>                                                                                                                                               | <b>गुरु - गुरु - गुरु</b><br><b>23/05/2032 11:14</b><br><b>04/09/2032 08:40</b>                                                                                                                                                | <b>गुरु - गुरु - शनि</b><br><b>04/09/2032 08:40</b><br><b>05/01/2033 17:38</b>                                                                                                                                                 |
| सूर्य 03/04/2032 07:00<br>चंद्र 04/04/2032 21:21<br>मंगल 06/04/2032 00:12<br>राहु 08/04/2032 21:14<br>गुरु 11/04/2032 10:35<br>शनि 14/04/2032 11:27<br>बुध 17/04/2032 04:39<br>केतु 18/04/2032 07:30<br>शुक्र 21/04/2032 12:12 | चंद्र 24/04/2032 04:07<br>मंगल 26/04/2032 00:52<br>राहु 30/04/2032 19:55<br>गुरु 05/05/2032 02:11<br>शनि 10/05/2032 03:38<br>बुध 14/05/2032 16:18<br>केतु 16/05/2032 13:02<br>शुक्र 21/05/2032 20:53<br>सूर्य 23/05/2032 11:14 | गुरु 06/06/2032 07:41<br>शनि 22/06/2032 18:29<br>बुध 07/07/2032 11:43<br>केतु 13/07/2032 13:10<br>शुक्र 30/07/2032 20:45<br>सूर्य 05/08/2032 01:25<br>चंद्र 13/08/2032 17:12<br>मंगल 19/08/2032 18:39<br>राहु 04/09/2032 08:40 | शनि 23/09/2032 21:29<br>बुध 11/10/2032 08:57<br>केतु 18/10/2032 13:41<br>शुक्र 08/11/2032 03:10<br>सूर्य 14/11/2032 07:13<br>चंद्र 24/11/2032 13:58<br>मंगल 01/12/2032 18:41<br>राहु 20/12/2032 06:50<br>गुरु 05/01/2033 17:38 |
| <b>गुरु - गुरु - बुध</b><br><b>05/01/2033 17:38</b><br><b>26/04/2033 02:55</b>                                                                                                                                                 | <b>गुरु - गुरु - केतु</b><br><b>26/04/2033 02:55</b><br><b>10/06/2033 13:47</b>                                                                                                                                                | <b>गुरु - गुरु - शुक्र</b><br><b>10/06/2033 13:47</b><br><b>18/10/2033 10:35</b>                                                                                                                                               | <b>गुरु - गुरु - सूर्य</b><br><b>18/10/2033 10:35</b><br><b>26/11/2033 09:38</b>                                                                                                                                               |
| बुध 21/01/2033 08:57<br>केतु 27/01/2033 19:29<br>शुक्र 15/02/2033 05:02<br>सूर्य 20/02/2033 17:30<br>चंद्र 01/03/2033 22:16<br>मंगल 08/03/2033 08:49<br>राहु 24/03/2033 22:12<br>गुरु 08/04/2033 15:26<br>शनि 26/04/2033 02:55 | केतु 28/04/2033 18:33<br>शुक्र 06/05/2033 08:21<br>सूर्य 08/05/2033 14:54<br>चंद्र 12/05/2033 09:48<br>मंगल 15/05/2033 01:27<br>राहु 21/05/2033 21:04<br>गुरु 27/05/2033 22:31<br>शनि 04/06/2033 03:15<br>बुध 10/06/2033 13:47 | शुक्र 02/07/2033 05:15<br>सूर्य 08/07/2033 17:06<br>चंद्र 19/07/2033 12:50<br>मंगल 27/07/2033 02:39<br>राहु 15/08/2033 14:10<br>गुरु 01/09/2033 21:44<br>शनि 22/09/2033 11:14<br>बुध 10/10/2033 20:47<br>केतु 18/10/2033 10:35 | सूर्य 20/10/2033 09:20<br>चंद्र 23/10/2033 15:16<br>मंगल 25/10/2033 21:48<br>राहु 31/10/2033 18:04<br>गुरु 05/11/2033 22:44<br>शनि 12/11/2033 02:47<br>बुध 17/11/2033 15:15<br>केतु 19/11/2033 21:47<br>शुक्र 26/11/2033 09:38 |
| <b>गुरु - गुरु - चंद्र</b><br><b>26/11/2033 09:38</b><br><b>30/01/2034 08:02</b>                                                                                                                                               | <b>गुरु - गुरु - मंगल</b><br><b>30/01/2034 08:02</b><br><b>16/03/2034 18:55</b>                                                                                                                                                | <b>गुरु - गुरु - राहु</b><br><b>16/03/2034 18:55</b><br><b>11/07/2034 16:02</b>                                                                                                                                                | <b>गुरु - शनि - शनि</b><br><b>11/07/2034 16:02</b><br><b>05/12/2034 04:10</b>                                                                                                                                                  |
| चंद्र 01/12/2033 19:30<br>मंगल 05/12/2033 14:24<br>राहु 15/12/2033 08:10<br>गुरु 23/12/2033 23:57<br>शनि 03/01/2034 06:42<br>बुध 12/01/2034 11:28<br>केतु 16/01/2034 06:23<br>शुक्र 27/01/2034 02:07<br>सूर्य 30/01/2034 08:02 | मंगल 01/02/2034 23:40<br>राहु 08/02/2034 19:18<br>गुरु 14/02/2034 20:45<br>शनि 22/02/2034 01:28<br>बुध 28/02/2034 12:01<br>केतु 03/03/2034 03:39<br>शुक्र 10/03/2034 17:27<br>सूर्य 13/03/2034 00:00<br>चंद्र 16/03/2034 18:55 | राहु 03/04/2034 07:41<br>गुरु 18/04/2034 21:42<br>शनि 07/05/2034 09:50<br>बुध 23/05/2034 23:14<br>केतु 30/05/2034 18:52<br>शुक्र 19/06/2034 06:23<br>सूर्य 25/06/2034 02:38<br>चंद्र 04/07/2034 20:24<br>मंगल 11/07/2034 16:02 | शनि 03/08/2034 20:45<br>बुध 24/08/2034 14:52<br>केतु 02/09/2034 03:59<br>शुक्र 26/09/2034 14:00<br>सूर्य 03/10/2034 21:49<br>चंद्र 16/10/2034 02:49<br>मंगल 24/10/2034 15:56<br>राहु 15/11/2034 15:21<br>गुरु 05/12/2034 04:10 |

## विंशोत्तरी दशा - प्राण

| राहु - केतु - शनि - गुरु  |                  | राहु - केतु - बुध - बुध   |                  | राहु - केतु - बुध - केतु     |                  | राहु - केतु - बुध - शुक्र    |                  |
|---------------------------|------------------|---------------------------|------------------|------------------------------|------------------|------------------------------|------------------|
| 09/10/2025 04:16          |                  | 17/10/2025 06:35          |                  | 24/10/2025 23:19             |                  | 28/10/2025 03:22             |                  |
| 17/10/2025 06:35          |                  | 24/10/2025 23:19          |                  | 28/10/2025 03:22             |                  | 06/11/2025 04:42             |                  |
| गुरु                      | 10/10/2025 06:11 | बुध                       | 18/10/2025 08:45 | केतु                         | 25/10/2025 03:45 | शुक्र                        | 29/10/2025 15:36 |
| शनि                       | 11/10/2025 12:57 | केतु                      | 18/10/2025 19:32 | शुक्र                        | 25/10/2025 16:26 | सूर्य                        | 30/10/2025 02:28 |
| बुध                       | 12/10/2025 16:29 | शुक्र                     | 20/10/2025 02:19 | सूर्य                        | 25/10/2025 20:14 | चंद्र                        | 30/10/2025 20:34 |
| केतु                      | 13/10/2025 03:49 | सूर्य                     | 20/10/2025 11:33 | चंद्र                        | 26/10/2025 02:34 | मंगल                         | 31/10/2025 09:15 |
| शुक्र                     | 14/10/2025 12:12 | चंद्र                     | 21/10/2025 02:57 | मंगल                         | 26/10/2025 07:00 | राहु                         | 01/11/2025 17:51 |
| सूर्य                     | 14/10/2025 21:55 | मंगल                      | 21/10/2025 13:43 | राहु                         | 26/10/2025 18:25 | गुरु                         | 02/11/2025 22:49 |
| चंद्र                     | 15/10/2025 14:06 | राहु                      | 22/10/2025 17:26 | गुरु                         | 27/10/2025 04:33 | शनि                          | 04/11/2025 09:14 |
| मंगल                      | 16/10/2025 01:26 | गुरु                      | 23/10/2025 18:04 | शनि                          | 27/10/2025 16:36 | बुध                          | 05/11/2025 16:01 |
| राहु                      | 17/10/2025 06:35 | शनि                       | 24/10/2025 23:19 | बुध                          | 28/10/2025 03:22 | केतु                         | 06/11/2025 04:42 |
| राहु - केतु - बुध - सूर्य |                  | राहु - केतु - बुध - चंद्र |                  | राहु - केतु - बुध - मंगल     |                  | राहु - केतु - बुध - राहु     |                  |
| 06/11/2025 04:42          |                  | 08/11/2025 21:54          |                  | 13/11/2025 10:33             |                  | 16/11/2025 14:37             |                  |
| 08/11/2025 21:54          |                  | 13/11/2025 10:33          |                  | 16/11/2025 14:37             |                  | 24/11/2025 18:13             |                  |
| सूर्य                     | 06/11/2025 07:58 | चंद्र                     | 09/11/2025 06:57 | मंगल                         | 13/11/2025 15:00 | राहु                         | 17/11/2025 19:58 |
| चंद्र                     | 06/11/2025 13:23 | मंगल                      | 09/11/2025 13:17 | राहु                         | 14/11/2025 02:24 | गुरु                         | 18/11/2025 22:02 |
| मंगल                      | 06/11/2025 17:12 | राहु                      | 10/11/2025 05:35 | गुरु                         | 14/11/2025 12:33 | शनि                          | 20/11/2025 05:00 |
| राहु                      | 07/11/2025 02:58 | गुरु                      | 10/11/2025 20:05 | शनि                          | 15/11/2025 00:35 | बुध                          | 21/11/2025 08:43 |
| गुरु                      | 07/11/2025 11:40 | शनि                       | 11/11/2025 13:17 | बुध                          | 15/11/2025 11:22 | केतु                         | 21/11/2025 20:08 |
| शनि                       | 07/11/2025 21:59 | बुध                       | 12/11/2025 04:41 | केतु                         | 15/11/2025 15:48 | शुक्र                        | 23/11/2025 04:43 |
| बुध                       | 08/11/2025 07:14 | केतु                      | 12/11/2025 11:01 | शुक्र                        | 16/11/2025 04:29 | सूर्य                        | 23/11/2025 14:30 |
| केतु                      | 08/11/2025 11:02 | शुक्र                     | 13/11/2025 05:07 | सूर्य                        | 16/11/2025 08:17 | चंद्र                        | 24/11/2025 06:48 |
| शुक्र                     | 08/11/2025 21:54 | सूर्य                     | 13/11/2025 10:33 | चंद्र                        | 16/11/2025 14:37 | मंगल                         | 24/11/2025 18:13 |
| राहु - केतु - बुध - गुरु  |                  | राहु - केतु - बुध - शनि   |                  | राहु - शुक्र - शुक्र - शुक्र |                  | राहु - शुक्र - शुक्र - सूर्य |                  |
| 24/11/2025 18:13          |                  | 02/12/2025 00:04          |                  | 10/12/2025 14:32             |                  | 10/01/2026 01:02             |                  |
| 02/12/2025 00:04          |                  | 10/12/2025 14:32          |                  | 10/01/2026 01:02             |                  | 19/01/2026 04:11             |                  |
| गुरु                      | 25/11/2025 17:24 | शनि                       | 03/12/2025 08:46 | शुक्र                        | 15/12/2025 16:17 | सूर्य                        | 10/01/2026 11:59 |
| शनि                       | 26/11/2025 20:55 | बुध                       | 04/12/2025 14:01 | सूर्य                        | 17/12/2025 04:48 | चंद्र                        | 11/01/2026 06:15 |
| बुध                       | 27/11/2025 21:33 | केतु                      | 05/12/2025 02:03 | चंद्र                        | 19/12/2025 17:41 | मंगल                         | 11/01/2026 19:02 |
| केतु                      | 28/11/2025 07:42 | शुक्र                     | 06/12/2025 12:28 | मंगल                         | 21/12/2025 12:17 | राहु                         | 13/01/2026 03:54 |
| शुक्र                     | 29/11/2025 12:40 | सूर्य                     | 06/12/2025 22:47 | राहु                         | 26/12/2025 01:52 | गुरु                         | 14/01/2026 09:08 |
| सूर्य                     | 29/11/2025 21:22 | चंद्र                     | 07/12/2025 15:59 | गुरु                         | 30/12/2025 03:16 | शनि                          | 15/01/2026 19:49 |
| चंद्र                     | 30/11/2025 11:51 | मंगल                      | 08/12/2025 04:02 | शनि                          | 03/01/2026 22:56 | बुध                          | 17/01/2026 02:52 |
| मंगल                      | 30/11/2025 22:00 | राहु                      | 09/12/2025 11:00 | बुध                          | 08/01/2026 06:25 | केतु                         | 17/01/2026 15:39 |
| राहु                      | 02/12/2025 00:04 | गुरु                      | 10/12/2025 14:32 | केतु                         | 10/01/2026 01:02 | शुक्र                        | 19/01/2026 04:11 |

## विंशोत्तरी दशा - प्राण

| राहु - शुक्र - शुक्र - चंद्र |                  | राहु - शुक्र - शुक्र - मंगल |                  | राहु - शुक्र - शुक्र - राहु |                  | राहु - शुक्र - शुक्र - गुरु  |                  |
|------------------------------|------------------|-----------------------------|------------------|-----------------------------|------------------|------------------------------|------------------|
| 19/01/2026 04:11             |                  | 03/02/2026 09:26            |                  | 14/02/2026 01:06            |                  | 13/03/2026 10:33             |                  |
| 03/02/2026 09:26             |                  | 14/02/2026 01:06            |                  | 13/03/2026 10:33            |                  | 06/04/2026 18:57             |                  |
| चंद्र                        | 20/01/2026 10:37 | मंगल                        | 04/02/2026 00:21 | राहु                        | 18/02/2026 03:43 | गुरु                         | 16/03/2026 16:28 |
| मंगल                         | 21/01/2026 07:55 | राहु                        | 05/02/2026 14:42 | गुरु                        | 21/02/2026 19:23 | शनि                          | 20/03/2026 13:00 |
| राहु                         | 23/01/2026 14:43 | गुरु                        | 07/02/2026 00:47 | शनि                         | 26/02/2026 03:29 | बुध                          | 23/03/2026 23:48 |
| गुरु                         | 25/01/2026 15:25 | शनि                         | 08/02/2026 17:16 | बुध                         | 02/03/2026 00:37 | केतु                         | 25/03/2026 09:53 |
| शनि                          | 28/01/2026 01:14 | बुध                         | 10/02/2026 05:29 | केतु                        | 03/03/2026 14:58 | शुक्र                        | 29/03/2026 11:17 |
| बुध                          | 30/01/2026 04:59 | केतु                        | 10/02/2026 20:24 | शुक्र                       | 08/03/2026 04:33 | सूर्य                        | 30/03/2026 16:30 |
| केतु                         | 31/01/2026 02:17 | शुक्र                       | 12/02/2026 15:01 | सूर्य                       | 09/03/2026 13:25 | चंद्र                        | 01/04/2026 17:12 |
| शुक्र                        | 02/02/2026 15:10 | सूर्य                       | 13/02/2026 03:48 | चंद्र                       | 11/03/2026 20:12 | मंगल                         | 03/04/2026 03:18 |
| सूर्य                        | 03/02/2026 09:26 | चंद्र                       | 14/02/2026 01:06 | मंगल                        | 13/03/2026 10:33 | राहु                         | 06/04/2026 18:57 |
| राहु - शुक्र - शुक्र - शनि   |                  | राहु - शुक्र - शुक्र - बुध  |                  | राहु - शुक्र - शुक्र - केतु |                  | राहु - शुक्र - सूर्य - सूर्य |                  |
| 06/04/2026 18:57             |                  | 05/05/2026 16:56            |                  | 31/05/2026 13:51            |                  | 11/06/2026 05:32             |                  |
| 05/05/2026 16:56             |                  | 31/05/2026 13:51            |                  | 11/06/2026 05:32            |                  | 13/06/2026 23:16             |                  |
| शनि                          | 11/04/2026 08:50 | बुध                         | 09/05/2026 08:54 | केतु                        | 01/06/2026 04:46 | सूर्य                        | 11/06/2026 08:49 |
| बुध                          | 15/04/2026 11:09 | केतु                        | 10/05/2026 21:07 | शुक्र                       | 02/06/2026 23:23 | चंद्र                        | 11/06/2026 14:18 |
| केतु                         | 17/04/2026 03:38 | शुक्र                       | 15/05/2026 04:36 | सूर्य                       | 03/06/2026 12:10 | मंगल                         | 11/06/2026 18:08 |
| शुक्र                        | 21/04/2026 23:17 | सूर्य                       | 16/05/2026 11:39 | चंद्र                       | 04/06/2026 09:28 | राहु                         | 12/06/2026 04:00 |
| सूर्य                        | 23/04/2026 09:59 | चंद्र                       | 18/05/2026 15:23 | मंगल                        | 05/06/2026 00:23 | गुरु                         | 12/06/2026 12:45 |
| चंद्र                        | 25/04/2026 19:49 | मंगल                        | 20/05/2026 03:37 | राहु                        | 06/06/2026 14:44 | शनि                          | 12/06/2026 23:10 |
| मंगल                         | 27/04/2026 12:18 | राहु                        | 24/05/2026 00:45 | गुरु                        | 08/06/2026 00:50 | बुध                          | 13/06/2026 08:29 |
| राहु                         | 01/05/2026 20:24 | गुरु                        | 27/05/2026 11:32 | शनि                         | 09/06/2026 17:18 | केतु                         | 13/06/2026 12:19 |
| गुरु                         | 05/05/2026 16:56 | शनि                         | 31/05/2026 13:51 | बुध                         | 11/06/2026 05:32 | शुक्र                        | 13/06/2026 23:16 |
| राहु - शुक्र - सूर्य - चंद्र |                  | राहु - शुक्र - सूर्य - मंगल |                  | राहु - शुक्र - सूर्य - राहु |                  | राहु - शुक्र - सूर्य - गुरु  |                  |
| 13/06/2026 23:16             |                  | 18/06/2026 12:51            |                  | 21/06/2026 17:33            |                  | 29/06/2026 22:47             |                  |
| 18/06/2026 12:51             |                  | 21/06/2026 17:33            |                  | 29/06/2026 22:47            |                  | 07/07/2026 06:06             |                  |
| चंद्र                        | 14/06/2026 08:24 | मंगल                        | 18/06/2026 17:19 | राहु                        | 22/06/2026 23:08 | गुरु                         | 30/06/2026 22:10 |
| मंगल                         | 14/06/2026 14:48 | राहु                        | 19/06/2026 04:50 | गुरु                        | 24/06/2026 01:26 | शनि                          | 02/07/2026 01:55 |
| राहु                         | 15/06/2026 07:14 | गुरु                        | 19/06/2026 15:03 | शनि                         | 25/06/2026 08:40 | बुध                          | 03/07/2026 02:45 |
| गुरु                         | 15/06/2026 21:51 | शनि                         | 20/06/2026 03:12 | बुध                         | 26/06/2026 12:36 | केतु                         | 03/07/2026 12:59 |
| शनि                          | 16/06/2026 15:12 | बुध                         | 20/06/2026 14:04 | केतु                        | 27/06/2026 00:07 | शुक्र                        | 04/07/2026 18:12 |
| बुध                          | 17/06/2026 06:43 | केतु                        | 20/06/2026 18:32 | शुक्र                       | 28/06/2026 08:59 | सूर्य                        | 05/07/2026 02:58 |
| केतु                         | 17/06/2026 13:06 | शुक्र                       | 21/06/2026 07:19 | सूर्य                       | 28/06/2026 18:51 | चंद्र                        | 05/07/2026 17:35 |
| शुक्र                        | 18/06/2026 07:22 | सूर्य                       | 21/06/2026 11:10 | चंद्र                       | 29/06/2026 11:17 | मंगल                         | 06/07/2026 03:48 |
| सूर्य                        | 18/06/2026 12:51 | चंद्र                       | 21/06/2026 17:33 | मंगल                        | 29/06/2026 22:47 | राहु                         | 07/07/2026 06:06 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## षोडशोत्तरी दशा

**भोग्य दशा काल : मंगल 8 वर्ष 11 मास 24 दिन**

| मंगल 12 वर्ष     | गुरु 13 वर्ष     | शनि 14 वर्ष      | केतु 15 वर्ष     | चंद्र 16 वर्ष    |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966       | 19/02/1975       | 19/02/1988       | 19/02/2002       | 18/02/2017       |
| 19/02/1975       | 19/02/1988       | 19/02/2002       | 18/02/2017       | 18/02/2033       |
| 00/00/0000       | गुरु 04/08/1976  | शनि 28/10/1989   | केतु 28/01/2004  | चंद्र 05/05/2019 |
| 25/02/1966       | शनि 28/02/1978   | केतु 20/08/1991  | चंद्र 22/02/2006 | बुध 08/09/2021   |
| शनि 03/03/1967   | केतु 04/11/1979  | चंद्र 26/07/1993 | बुध 05/05/2008   | शुक्र 03/03/2024 |
| केतु 20/09/1968  | चंद्र 20/08/1981 | बुध 14/08/1995   | शुक्र 02/09/2010 | सूर्य 08/09/2025 |
| चंद्र 18/05/1970 | बुध 17/07/1983   | शुक्र 16/10/1997 | सूर्य 03/02/2012 | मंगल 05/05/2027  |
| बुध 19/02/1972   | शुक्र 23/07/1985 | सूर्य 13/02/1999 | मंगल 23/08/2013  | गुरु 18/02/2029  |
| शुक्र 30/12/1973 | सूर्य 16/10/1986 | मंगल 25/07/2000  | गुरु 29/04/2015  | शनि 25/01/2031   |
| सूर्य 19/02/1975 | मंगल 19/02/1988  | गुरु 19/02/2002  | शनि 18/02/2017   | केतु 18/02/2033  |

| बुध 17 वर्ष      | शुक्र 18 वर्ष    | सूर्य 11 वर्ष    | मंगल 12 वर्ष    |
|------------------|------------------|------------------|-----------------|
| 18/02/2033       | 19/02/2050       | 19/02/2068       | 19/02/2079      |
| 19/02/2050       | 19/02/2068       | 19/02/2079       | 00/00/0000      |
| बुध 17/08/2035   | शुक्र 05/12/2052 | सूर्य 06/03/2069 | मंगल 17/05/2080 |
| शुक्र 07/04/2038 | सूर्य 20/08/2054 | मंगल 26/04/2070  | गुरु 20/09/2081 |
| सूर्य 17/11/2039 | मंगल 30/06/2056  | गुरु 20/07/2071  | शनि 25/02/2082  |
| मंगल 20/08/2041  | गुरु 07/07/2058  | शनि 16/11/2072   | 00/00/0000      |
| गुरु 17/07/2043  | शनि 08/09/2060   | केतु 19/04/2074  | 00/00/0000      |
| शनि 04/08/2045   | केतु 06/01/2063  | चंद्र 26/10/2075 | 00/00/0000      |
| केतु 16/10/2047  | चंद्र 01/07/2065 | बुध 05/06/2077   | 00/00/0000      |
| चंद्र 19/02/2050 | बुध 19/02/2068   | शुक्र 19/02/2079 | 00/00/0000      |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।  
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| मंगल - शनि       | मंगल - केतु      | मंगल - चंद्र     | मंगल - बुध       | मंगल - शुक्र     |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966       | 03/03/1967       | 20/09/1968       | 18/05/1970       | 19/02/1972       |
| 03/03/1967       | 20/09/1968       | 18/05/1970       | 19/02/1972       | 30/12/1973       |
| 00/00/0000       | केतु 16/05/1967  | चंद्र 13/12/1968 | बुध 20/08/1970   | शुक्र 04/06/1972 |
| 25/02/1966       | चंद्र 02/08/1967 | बुध 11/03/1969   | शुक्र 28/11/1970 | सूर्य 07/08/1972 |
| चंद्र 14/04/1966 | बुध 24/10/1967   | शुक्र 13/06/1969 | सूर्य 27/01/1971 | मंगल 16/10/1972  |
| बुध 30/06/1966   | शुक्र 20/01/1968 | सूर्य 09/08/1969 | मंगल 04/04/1971  | गुरु 01/01/1973  |
| शुक्र 20/09/1966 | सूर्य 14/03/1968 | मंगल 11/10/1969  | गुरु 15/06/1971  | शनि 24/03/1973   |
| सूर्य 09/11/1966 | मंगल 11/05/1968  | गुरु 18/12/1969  | शनि 31/08/1971   | केतु 20/06/1973  |
| मंगल 03/01/1967  | गुरु 14/07/1968  | शनि 01/03/1970   | केतु 22/11/1971  | चंद्र 22/09/1973 |
| गुरु 03/03/1967  | शनि 20/09/1968   | केतु 18/05/1970  | चंद्र 19/02/1972 | बुध 30/12/1973   |
| मंगल - सूर्य     | गुरु - गुरु      | गुरु - शनि       | गुरु - केतु      | गुरु - चंद्र     |
| 30/12/1973       | 19/02/1975       | 04/08/1976       | 28/02/1978       | 04/11/1979       |
| 19/02/1975       | 04/08/1976       | 28/02/1978       | 04/11/1979       | 20/08/1981       |
| सूर्य 08/02/1974 | गुरु 19/04/1975  | शनि 12/10/1976   | केतु 18/05/1978  | चंद्र 02/02/1980 |
| मंगल 23/03/1974  | शनि 23/06/1975   | केतु 25/12/1976  | चंद्र 11/08/1978 | बुध 08/05/1980   |
| गुरु 08/05/1974  | केतु 30/08/1975  | चंद्र 14/03/1977 | बुध 09/11/1978   | शुक्र 18/08/1980 |
| शनि 27/06/1974   | चंद्र 12/11/1975 | बुध 06/06/1977   | शुक्र 12/02/1979 | सूर्य 19/10/1980 |
| केतु 20/08/1974  | बुध 29/01/1976   | शुक्र 03/09/1977 | सूर्य 12/04/1979 | मंगल 26/12/1980  |
| चंद्र 16/10/1974 | शुक्र 20/04/1976 | सूर्य 27/10/1977 | मंगल 14/06/1979  | गुरु 09/03/1981  |
| बुध 16/12/1974   | सूर्य 10/06/1976 | मंगल 26/12/1977  | गुरु 22/08/1979  | शनि 27/05/1981   |
| शुक्र 19/02/1975 | मंगल 04/08/1976  | गुरु 28/02/1978  | शनि 04/11/1979   | केतु 20/08/1981  |
| गुरु - बुध       | गुरु - शुक्र     | गुरु - सूर्य     | गुरु - मंगल      | शनि - शनि        |
| 20/08/1981       | 17/07/1983       | 23/07/1985       | 16/10/1986       | 19/02/1988       |
| 17/07/1983       | 23/07/1985       | 16/10/1986       | 19/02/1988       | 28/10/1989       |
| बुध 30/11/1981   | शुक्र 08/11/1983 | सूर्य 03/09/1985 | मंगल 06/12/1986  | शनि 04/05/1988   |
| शुक्र 18/03/1982 | सूर्य 17/01/1984 | मंगल 20/10/1985  | गुरु 30/01/1987  | केतु 22/07/1988  |
| सूर्य 23/05/1982 | मंगल 02/04/1984  | गुरु 09/12/1985  | शनि 30/03/1987   | चंद्र 15/10/1988 |
| मंगल 03/08/1982  | गुरु 24/06/1984  | शनि 02/02/1986   | केतु 02/06/1987  | बुध 14/01/1989   |
| गुरु 20/10/1982  | शनि 21/09/1984   | केतु 01/04/1986  | चंद्र 08/08/1987 | शुक्र 20/04/1989 |
| शनि 12/01/1983   | केतु 25/12/1984  | चंद्र 02/06/1986 | बुध 19/10/1987   | सूर्य 17/06/1989 |
| केतु 12/04/1983  | चंद्र 06/04/1985 | बुध 07/08/1986   | शुक्र 03/01/1988 | मंगल 20/08/1989  |
| चंद्र 17/07/1983 | बुध 23/07/1985   | शुक्र 16/10/1986 | सूर्य 19/02/1988 | गुरु 28/10/1989  |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शनि - केतु<br>28/10/1989<br>20/08/1991                                                                                                                | शनि - चंद्र<br>20/08/1991<br>26/07/1993                                                                                                               | शनि - बुध<br>26/07/1993<br>14/08/1995                                                                                                                 | शनि - शुक्र<br>14/08/1995<br>16/10/1997                                                                                                               | शनि - सूर्य<br>16/10/1997<br>13/02/1999                                                                                                               |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| केतु 22/01/1990<br>चंद्र 23/04/1990<br>बुध 29/07/1990<br>शुक्र 08/11/1990<br>सूर्य 10/01/1991<br>मंगल 20/03/1991<br>गुरु 02/06/1991<br>शनि 20/08/1991 | चंद्र 26/11/1991<br>बुध 08/03/1992<br>शुक्र 26/06/1992<br>सूर्य 31/08/1992<br>मंगल 12/11/1992<br>गुरु 30/01/1993<br>शनि 26/04/1993<br>केतु 26/07/1993 | बुध 13/11/1993<br>शुक्र 09/03/1994<br>सूर्य 19/05/1994<br>मंगल 04/08/1994<br>गुरु 27/10/1994<br>शनि 26/01/1995<br>केतु 03/05/1995<br>चंद्र 14/08/1995 | शुक्र 15/12/1995<br>सूर्य 29/02/1996<br>मंगल 21/05/1996<br>गुरु 18/08/1996<br>शनि 21/11/1996<br>केतु 04/03/1997<br>चंद्र 21/06/1997<br>बुध 16/10/1997 | सूर्य 01/12/1997<br>मंगल 20/01/1998<br>गुरु 15/03/1998<br>शनि 13/05/1998<br>केतु 14/07/1998<br>चंद्र 19/09/1998<br>बुध 29/11/1998<br>शुक्र 13/02/1999 |
| शनि - मंगल<br>13/02/1999<br>25/07/2000                                                                                                                | शनि - गुरु<br>25/07/2000<br>19/02/2002                                                                                                                | केतु - केतु<br>19/02/2002<br>28/01/2004                                                                                                               | केतु - चंद्र<br>28/01/2004<br>22/02/2006                                                                                                              | केतु - बुध<br>22/02/2006<br>05/05/2008                                                                                                                |
| मंगल 08/04/1999<br>गुरु 07/06/1999<br>शनि 09/08/1999<br>केतु 17/10/1999<br>चंद्र 29/12/1999<br>बुध 15/03/2000<br>शुक्र 05/06/2000<br>सूर्य 25/07/2000 | गुरु 28/09/2000<br>शनि 06/12/2000<br>केतु 18/02/2001<br>चंद्र 08/05/2001<br>बुध 31/07/2001<br>शुक्र 28/10/2001<br>सूर्य 21/12/2001<br>मंगल 19/02/2002 | केतु 21/05/2002<br>चंद्र 27/08/2002<br>बुध 09/12/2002<br>शुक्र 29/03/2003<br>सूर्य 04/06/2003<br>मंगल 16/08/2003<br>गुरु 04/11/2003<br>शनि 28/01/2004 | चंद्र 11/05/2004<br>बुध 30/08/2004<br>शुक्र 25/12/2004<br>सूर्य 07/03/2005<br>मंगल 24/05/2005<br>गुरु 17/08/2005<br>शनि 16/11/2005<br>केतु 22/02/2006 | बुध 19/06/2006<br>शुक्र 22/10/2006<br>सूर्य 06/01/2007<br>मंगल 30/03/2007<br>गुरु 28/06/2007<br>शनि 03/10/2007<br>केतु 15/01/2008<br>चंद्र 05/05/2008 |
| केतु - शुक्र<br>05/05/2008<br>02/09/2010                                                                                                              | केतु - सूर्य<br>02/09/2010<br>03/02/2012                                                                                                              | केतु - मंगल<br>03/02/2012<br>23/08/2013                                                                                                               | केतु - गुरु<br>23/08/2013<br>29/04/2015                                                                                                               | केतु - शनि<br>29/04/2015<br>18/02/2017                                                                                                                |
| शुक्र 14/09/2008<br>सूर्य 03/12/2008<br>मंगल 01/03/2009<br>गुरु 04/06/2009<br>शनि 15/09/2009<br>केतु 03/01/2010<br>चंद्र 30/04/2010<br>बुध 02/09/2010 | सूर्य 21/10/2010<br>मंगल 14/12/2010<br>गुरु 10/02/2011<br>शनि 14/04/2011<br>केतु 20/06/2011<br>चंद्र 31/08/2011<br>बुध 15/11/2011<br>शुक्र 03/02/2012 | मंगल 02/04/2012<br>गुरु 04/06/2012<br>शनि 12/08/2012<br>केतु 24/10/2012<br>चंद्र 10/01/2013<br>बुध 03/04/2013<br>शुक्र 30/06/2013<br>सूर्य 23/08/2013 | गुरु 31/10/2013<br>शनि 13/01/2014<br>केतु 02/04/2014<br>चंद्र 26/06/2014<br>बुध 24/09/2014<br>शुक्र 28/12/2014<br>सूर्य 25/02/2015<br>मंगल 29/04/2015 | शनि 18/07/2015<br>केतु 11/10/2015<br>चंद्र 11/01/2016<br>बुध 16/04/2016<br>शुक्र 28/07/2016<br>सूर्य 29/09/2016<br>मंगल 06/12/2016<br>गुरु 18/02/2017 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| चंद्र - चंद्र            | चंद्र - बुध              | चंद्र - शुक्र            | चंद्र - सूर्य            | चंद्र - मंगल             |
|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|--------------------------|
| 18/02/2017<br>05/05/2019 | 05/05/2019<br>08/09/2021 | 08/09/2021<br>03/03/2024 | 03/03/2024<br>08/09/2025 | 08/09/2025<br>05/05/2027 |
| चंद्र 09/06/2017         | बुध 08/09/2019           | शुक्र 27/01/2022         | सूर्य 24/04/2024         | मंगल 09/11/2025          |
| बुध 06/10/2017           | शुक्र 19/01/2020         | सूर्य 23/04/2022         | मंगल 21/06/2024          | गुरु 16/01/2026          |
| शुक्र 08/02/2018         | सूर्य 09/04/2020         | मंगल 25/07/2022          | गुरु 22/08/2024          | शनि 30/03/2026           |
| सूर्य 25/04/2018         | मंगल 07/07/2020          | गुरु 04/11/2022          | शनि 28/10/2024           | केतु 16/06/2026          |
| मंगल 18/07/2018          | गुरु 11/10/2020          | शनि 21/02/2023           | केतु 07/01/2025          | चंद्र 08/09/2026         |
| गुरु 16/10/2018          | शनि 22/01/2021           | केतु 19/06/2023          | चंद्र 25/03/2025         | बुध 05/12/2026           |
| शनि 21/01/2019           | केतु 13/05/2021          | चंद्र 22/10/2023         | बुध 14/06/2025           | शुक्र 09/03/2027         |
| केतु 05/05/2019          | चंद्र 08/09/2021         | बुध 03/03/2024           | शुक्र 08/09/2025         | सूर्य 05/05/2027         |
| चंद्र - गुरु             | चंद्र - शनि              | चंद्र - केतु             | बुध - बुध                | बुध - शुक्र              |
| 05/05/2027<br>18/02/2029 | 18/02/2029<br>25/01/2031 | 25/01/2031<br>18/02/2033 | 18/02/2033<br>17/08/2035 | 17/08/2035<br>07/04/2038 |
| गुरु 18/07/2027          | शनि 14/05/2029           | केतु 02/05/2031          | बुध 02/07/2033           | शुक्र 14/01/2036         |
| शनि 05/10/2027           | केतु 14/08/2029          | चंद्र 15/08/2031         | शुक्र 20/11/2033         | सूर्य 14/04/2036         |
| केतु 29/12/2027          | चंद्र 19/11/2029         | बुध 03/12/2031           | सूर्य 14/02/2034         | मंगल 23/07/2036          |
| चंद्र 28/03/2028         | बुध 02/03/2030           | शुक्र 30/03/2032         | मंगल 19/05/2034          | गुरु 08/11/2036          |
| बुध 02/07/2028           | शुक्र 20/06/2030         | सूर्य 09/06/2032         | गुरु 29/08/2034          | शनि 04/03/2037           |
| शुक्र 11/10/2028         | सूर्य 26/08/2030         | मंगल 26/08/2032          | शनि 17/12/2034           | केतु 07/07/2037          |
| सूर्य 13/12/2028         | मंगल 07/11/2030          | गुरु 19/11/2032          | केतु 14/04/2035          | चंद्र 17/11/2037         |
| मंगल 18/02/2029          | गुरु 25/01/2031          | शनि 18/02/2033           | चंद्र 17/08/2035         | बुध 07/04/2038           |
| बुध - सूर्य              | बुध - मंगल               | बुध - गुरु               | बुध - शनि                | बुध - केतु               |
| 07/04/2038<br>17/11/2039 | 17/11/2039<br>20/08/2041 | 20/08/2041<br>17/07/2043 | 17/07/2043<br>04/08/2045 | 04/08/2045<br>16/10/2047 |
| सूर्य 02/06/2038         | मंगल 22/01/2040          | गुरु 06/11/2041          | शनि 15/10/2043           | केतु 16/11/2045          |
| मंगल 02/08/2038          | गुरु 03/04/2040          | शनि 29/01/2042           | केतु 20/01/2044          | चंद्र 07/03/2046         |
| गुरु 07/10/2038          | शनि 20/06/2040           | केतु 29/04/2042          | चंद्र 03/05/2044         | बुध 02/07/2046           |
| शनि 17/12/2038           | केतु 11/09/2040          | चंद्र 03/08/2042         | बुध 20/08/2044           | शुक्र 04/11/2046         |
| केतु 03/03/2039          | चंद्र 08/12/2040         | बुध 13/11/2042           | शुक्र 15/12/2044         | सूर्य 19/01/2047         |
| चंद्र 23/05/2039         | बुध 12/03/2041           | शुक्र 01/03/2043         | सूर्य 24/02/2045         | मंगल 12/04/2047          |
| बुध 17/08/2039           | शुक्र 20/06/2041         | सूर्य 06/05/2043         | मंगल 12/05/2045          | गुरु 11/07/2047          |
| शुक्र 17/11/2039         | सूर्य 20/08/2041         | मंगल 17/07/2043          | गुरु 04/08/2045          | शनि 16/10/2047           |

## षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| बुध - चंद्र<br>16/10/2047<br>19/02/2050                                                                                                               | शुक्र - शुक्र<br>19/02/2050<br>05/12/2052                                                                                                             | शुक्र - सूर्य<br>05/12/2052<br>20/08/2054                                                                                                             | शुक्र - मंगल<br>20/08/2054<br>30/06/2056                                                                                                              | शुक्र - गुरु<br>30/06/2056<br>07/07/2058                                                                                                              |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| चंद्र 11/02/2048<br>बुध 16/06/2048<br>शुक्र 27/10/2048<br>सूर्य 16/01/2049<br>मंगल 14/04/2049<br>गुरु 19/07/2049<br>शनि 31/10/2049<br>केतु 19/02/2050 | शुक्र 27/07/2050<br>सूर्य 01/11/2050<br>मंगल 14/02/2051<br>गुरु 08/06/2051<br>शनि 10/10/2051<br>केतु 19/02/2052<br>चंद्र 08/07/2052<br>बुध 05/12/2052 | सूर्य 02/02/2053<br>मंगल 07/04/2053<br>गुरु 16/06/2053<br>शनि 30/08/2053<br>केतु 19/11/2053<br>चंद्र 13/02/2054<br>बुध 15/05/2054<br>शुक्र 20/08/2054 | मंगल 30/10/2054<br>गुरु 14/01/2055<br>शनि 06/04/2055<br>केतु 03/07/2055<br>चंद्र 05/10/2055<br>बुध 12/01/2056<br>शुक्र 27/04/2056<br>सूर्य 30/06/2056 | गुरु 21/09/2056<br>शनि 19/12/2056<br>केतु 24/03/2057<br>चंद्र 04/07/2057<br>बुध 20/10/2057<br>शुक्र 11/02/2058<br>सूर्य 22/04/2058<br>मंगल 07/07/2058 |
| शुक्र - शनि<br>07/07/2058<br>08/09/2060                                                                                                               | शुक्र - केतु<br>08/09/2060<br>06/01/2063                                                                                                              | शुक्र - चंद्र<br>06/01/2063<br>01/07/2065                                                                                                             | शुक्र - बुध<br>01/07/2065<br>19/02/2068                                                                                                               | सूर्य - सूर्य<br>19/02/2068<br>06/03/2069                                                                                                             |
| शनि 11/10/2058<br>केतु 21/01/2059<br>चंद्र 11/05/2059<br>बुध 04/09/2059<br>शुक्र 05/01/2060<br>सूर्य 21/03/2060<br>मंगल 11/06/2060<br>गुरु 08/09/2060 | केतु 27/12/2060<br>चंद्र 23/04/2061<br>बुध 25/08/2061<br>शुक्र 04/01/2062<br>सूर्य 26/03/2062<br>मंगल 22/06/2062<br>गुरु 25/09/2062<br>शनि 06/01/2063 | चंद्र 11/05/2063<br>बुध 21/09/2063<br>शुक्र 08/02/2064<br>सूर्य 04/05/2064<br>मंगल 06/08/2064<br>गुरु 16/11/2064<br>शनि 05/03/2065<br>केतु 01/07/2065 | बुध 19/11/2065<br>शुक्र 17/04/2066<br>सूर्य 18/07/2066<br>मंगल 25/10/2066<br>गुरु 10/02/2067<br>शनि 07/06/2067<br>केतु 09/10/2067<br>चंद्र 19/02/2068 | सूर्य 26/03/2068<br>मंगल 05/05/2068<br>गुरु 16/06/2068<br>शनि 01/08/2068<br>केतु 20/09/2068<br>चंद्र 11/11/2068<br>बुध 06/01/2069<br>शुक्र 06/03/2069 |
| सूर्य - मंगल<br>06/03/2069<br>26/04/2070                                                                                                              | सूर्य - गुरु<br>26/04/2070<br>20/07/2071                                                                                                              | सूर्य - शनि<br>20/07/2071<br>16/11/2072                                                                                                               | सूर्य - केतु<br>16/11/2072<br>19/04/2074                                                                                                              | सूर्य - चंद्र<br>19/04/2074<br>26/10/2075                                                                                                             |
| मंगल 18/04/2069<br>गुरु 04/06/2069<br>शनि 24/07/2069<br>केतु 16/09/2069<br>चंद्र 12/11/2069<br>बुध 12/01/2070<br>शुक्र 17/03/2070<br>सूर्य 26/04/2070 | गुरु 15/06/2070<br>शनि 08/08/2070<br>केतु 06/10/2070<br>चंद्र 07/12/2070<br>बुध 11/02/2071<br>शुक्र 22/04/2071<br>सूर्य 03/06/2071<br>मंगल 20/07/2071 | शनि 16/09/2071<br>केतु 18/11/2071<br>चंद्र 24/01/2072<br>बुध 04/04/2072<br>शुक्र 18/06/2072<br>सूर्य 03/08/2072<br>मंगल 23/09/2072<br>गुरु 16/11/2072 | केतु 22/01/2073<br>चंद्र 04/04/2073<br>बुध 19/06/2073<br>शुक्र 07/09/2073<br>सूर्य 27/10/2073<br>मंगल 19/12/2073<br>गुरु 16/02/2074<br>शनि 19/04/2074 | चंद्र 05/07/2074<br>बुध 24/09/2074<br>शुक्र 19/12/2074<br>सूर्य 10/02/2075<br>मंगल 08/04/2075<br>गुरु 09/06/2075<br>शनि 15/08/2075<br>केतु 26/10/2075 |

## त्रिभगी दशा

**भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 5 मास 28 दिन**

| केतु 5 वर्ष      | शुक्र 13 वर्ष    | सूर्य 4 वर्ष     | चंद्र 7 वर्ष     | मंगल 5 वर्ष      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966       | 24/08/1969       | 24/12/1982       | 24/12/1986       | 24/08/1993       |
| 24/08/1969       | 24/12/1982       | 24/12/1986       | 24/08/1993       | 24/04/1998       |
| 00/00/0000       | शुक्र 13/11/1971 | सूर्य 07/03/1983 | चंद्र 15/07/1987 | मंगल 01/12/1993  |
| 25/02/1966       | सूर्य 14/07/1972 | चंद्र 07/07/1983 | मंगल 04/12/1987  | राहु 14/08/1994  |
| सूर्य 06/04/1966 | चंद्र 24/08/1973 | मंगल 30/09/1983  | राहु 03/12/1988  | गुरु 29/03/1995  |
| चंद्र 26/08/1966 | मंगल 04/06/1974  | राहु 06/05/1984  | गुरु 24/10/1989  | शनि 24/12/1995   |
| मंगल 03/12/1966  | राहु 03/06/1976  | गुरु 17/11/1984  | शनि 13/11/1990   | बुध 21/08/1996   |
| राहु 16/08/1967  | गुरु 15/03/1978  | शनि 06/07/1985   | बुध 24/10/1991   | केतु 29/11/1996  |
| गुरु 30/03/1968  | शनि 24/04/1980   | बुध 29/01/1986   | केतु 14/03/1992  | शुक्र 09/09/1997 |
| शनि 25/12/1968   | बुध 15/03/1982   | केतु 24/04/1986  | शुक्र 24/04/1993 | सूर्य 03/12/1997 |
| बुध 24/08/1969   | केतु 24/12/1982  | शुक्र 24/12/1986 | सूर्य 24/08/1993 | चंद्र 24/04/1998 |
| राहु 12 वर्ष     | गुरु 11 वर्ष     | शनि 13 वर्ष      | बुध 11 वर्ष      | केतु 5 वर्ष      |
| 24/04/1998       | 24/04/2010       | 23/12/2020       | 24/08/2033       | 23/12/2044       |
| 24/04/2010       | 23/12/2020       | 24/08/2033       | 23/12/2044       | 00/00/0000       |
| राहु 11/02/2000  | गुरु 26/09/2011  | शनि 26/12/2022   | बुध 02/04/2035   | केतु 02/04/2045  |
| गुरु 17/09/2001  | शनि 04/06/2013   | बुध 11/10/2024   | केतु 30/11/2035  | शुक्र 11/01/2046 |
| शनि 12/08/2003   | बुध 08/12/2014   | केतु 08/07/2025  | शुक्र 20/10/2037 | सूर्य 25/02/2046 |
| बुध 24/04/2005   | केतु 23/07/2015  | शुक्र 18/08/2027 | सूर्य 15/05/2038 | 00/00/0000       |
| केतु 05/01/2006  | शुक्र 02/05/2017 | सूर्य 05/04/2028 | चंद्र 24/04/2039 | 00/00/0000       |
| शुक्र 05/01/2008 | सूर्य 13/11/2017 | चंद्र 26/04/2029 | मंगल 22/12/2039  | 00/00/0000       |
| सूर्य 11/08/2008 | चंद्र 04/10/2018 | मंगल 21/01/2030  | राहु 03/09/2041  | 00/00/0000       |
| चंद्र 12/08/2009 | मंगल 19/05/2019  | राहु 16/12/2031  | गुरु 09/03/2043  | 00/00/0000       |
| मंगल 24/04/2010  | राहु 23/12/2020  | गुरु 24/08/2033  | शनि 23/12/2044   | 00/00/0000       |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।  
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| केतु - सूर्य     | केतु - चंद्र     | केतु - मंगल      | केतु - राहु      | केतु - गुरु      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966       | 06/04/1966       | 26/08/1966       | 03/12/1966       | 16/08/1967       |
| 06/04/1966       | 26/08/1966       | 03/12/1966       | 16/08/1967       | 30/03/1968       |
| 00/00/0000       | चंद्र 18/04/1966 | मंगल 01/09/1966  | राहु 11/01/1967  | गुरु 15/09/1967  |
| 00/00/0000       | मंगल 26/04/1966  | राहु 16/09/1966  | गुरु 14/02/1967  | शनि 21/10/1967   |
| 00/00/0000       | राहु 17/05/1966  | गुरु 29/09/1966  | शनि 26/03/1967   | बुध 23/11/1967   |
| 00/00/0000       | गुरु 05/06/1966  | शनि 15/10/1966   | बुध 02/05/1967   | केतु 06/12/1967  |
| 25/02/1966       | शनि 28/06/1966   | बुध 29/10/1966   | केतु 17/05/1967  | शुक्र 13/01/1968 |
| शनि 06/03/1966   | बुध 18/07/1966   | केतु 04/11/1966  | शुक्र 28/06/1967 | सूर्य 24/01/1968 |
| बुध 18/03/1966   | केतु 26/07/1966  | शुक्र 20/11/1966 | सूर्य 11/07/1967 | चंद्र 12/02/1968 |
| केतु 23/03/1966  | शुक्र 19/08/1966 | सूर्य 25/11/1966 | चंद्र 01/08/1967 | मंगल 25/02/1968  |
| शुक्र 06/04/1966 | सूर्य 26/08/1966 | चंद्र 03/12/1966 | मंगल 16/08/1967  | राहु 30/03/1968  |
| केतु - शनि       | केतु - बुध       | शुक्र - शुक्र    | शुक्र - सूर्य    | शुक्र - चंद्र    |
| 30/03/1968       | 25/12/1968       | 24/08/1969       | 13/11/1971       | 14/07/1972       |
| 25/12/1968       | 24/08/1969       | 13/11/1971       | 14/07/1972       | 24/08/1973       |
| शनि 12/05/1968   | बुध 28/01/1969   | शुक्र 06/01/1970 | सूर्य 26/11/1971 | चंद्र 17/08/1972 |
| बुध 19/06/1968   | केतु 12/02/1969  | सूर्य 16/02/1970 | चंद्र 16/12/1971 | मंगल 09/09/1972  |
| केतु 05/07/1968  | शुक्र 24/03/1969 | चंद्र 24/04/1970 | मंगल 30/12/1971  | राहु 09/11/1972  |
| शुक्र 19/08/1968 | सूर्य 05/04/1969 | मंगल 11/06/1970  | राहु 05/02/1972  | गुरु 02/01/1973  |
| सूर्य 02/09/1968 | चंद्र 25/04/1969 | राहु 10/10/1970  | गुरु 08/03/1972  | शनि 08/03/1973   |
| चंद्र 24/09/1968 | मंगल 09/05/1969  | गुरु 27/01/1971  | शनि 16/04/1972   | बुध 04/05/1973   |
| मंगल 10/10/1968  | राहु 14/06/1969  | शनि 04/06/1971   | बुध 20/05/1972   | केतु 28/05/1973  |
| राहु 19/11/1968  | गुरु 17/07/1969  | बुध 27/09/1971   | केतु 03/06/1972  | शुक्र 03/08/1973 |
| गुरु 25/12/1968  | शनि 24/08/1969   | केतु 13/11/1971  | शुक्र 14/07/1972 | सूर्य 24/08/1973 |
| शुक्र - मंगल     | शुक्र - राहु     | शुक्र - गुरु     | शुक्र - शनि      | शुक्र - बुध      |
| 24/08/1973       | 04/06/1974       | 03/06/1976       | 15/03/1978       | 24/04/1980       |
| 04/06/1974       | 03/06/1976       | 15/03/1978       | 24/04/1980       | 15/03/1982       |
| मंगल 09/09/1973  | राहु 21/09/1974  | गुरु 29/08/1976  | शनि 15/07/1978   | बुध 30/07/1980   |
| राहु 22/10/1973  | गुरु 28/12/1974  | शनि 10/12/1976   | बुध 01/11/1978   | केतु 09/09/1980  |
| गुरु 29/11/1973  | शनि 22/04/1975   | बुध 12/03/1977   | केतु 16/12/1978  | शुक्र 02/01/1981 |
| शनि 13/01/1974   | बुध 04/08/1975   | केतु 19/04/1977  | शुक्र 23/04/1979 | सूर्य 05/02/1981 |
| बुध 22/02/1974   | केतु 16/09/1975  | शुक्र 05/08/1977 | सूर्य 01/06/1979 | चंद्र 04/04/1981 |
| केतु 11/03/1974  | शुक्र 15/01/1976 | सूर्य 06/09/1977 | चंद्र 04/08/1979 | मंगल 14/05/1981  |
| शुक्र 27/04/1974 | सूर्य 21/02/1976 | चंद्र 30/10/1977 | मंगल 18/09/1979  | राहु 25/08/1981  |
| सूर्य 11/05/1974 | चंद्र 22/04/1976 | मंगल 07/12/1977  | राहु 12/01/1980  | गुरु 25/11/1981  |
| चंद्र 04/06/1974 | मंगल 03/06/1976  | राहु 15/03/1978  | गुरु 24/04/1980  | शनि 15/03/1982   |

## त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| शुक्र - केतु     | सूर्य - सूर्य    | सूर्य - चंद्र    | सूर्य - मंगल     | सूर्य - राहु     |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 15/03/1982       | 24/12/1982       | 07/03/1983       | 07/07/1983       | 30/09/1983       |
| 24/12/1982       | 07/03/1983       | 07/07/1983       | 30/09/1983       | 06/05/1984       |
| केतु 31/03/1982  | सूर्य 27/12/1982 | चंद्र 17/03/1983 | मंगल 12/07/1983  | राहु 02/11/1983  |
| शुक्र 18/05/1982 | चंद्र 02/01/1983 | मंगल 24/03/1983  | राहु 24/07/1983  | गुरु 01/12/1983  |
| सूर्य 01/06/1982 | मंगल 07/01/1983  | राहु 11/04/1983  | गुरु 05/08/1983  | शनि 05/01/1984   |
| चंद्र 24/06/1982 | राहु 18/01/1983  | गुरु 28/04/1983  | शनि 18/08/1983   | बुध 05/02/1984   |
| मंगल 11/07/1982  | गुरु 27/01/1983  | शनि 17/05/1983   | बुध 30/08/1983   | केतु 17/02/1984  |
| राहु 23/08/1982  | शनि 08/02/1983   | बुध 03/06/1983   | केतु 04/09/1983  | शुक्र 25/03/1984 |
| गुरु 30/09/1982  | बुध 18/02/1983   | केतु 10/06/1983  | शुक्र 18/09/1983 | सूर्य 05/04/1984 |
| शनि 13/11/1982   | केतु 23/02/1983  | शुक्र 30/06/1983 | सूर्य 23/09/1983 | चंद्र 23/04/1984 |
| बुध 24/12/1982   | शुक्र 07/03/1983 | सूर्य 07/07/1983 | चंद्र 30/09/1983 | मंगल 06/05/1984  |
| सूर्य - गुरु     | सूर्य - शनि      | सूर्य - बुध      | सूर्य - केतु     | सूर्य - शुक्र    |
| 06/05/1984       | 17/11/1984       | 06/07/1985       | 29/01/1986       | 24/04/1986       |
| 17/11/1984       | 06/07/1985       | 29/01/1986       | 24/04/1986       | 24/12/1986       |
| गुरु 01/06/1984  | शनि 23/12/1984   | बुध 04/08/1985   | केतु 03/02/1986  | शुक्र 04/06/1986 |
| शनि 02/07/1984   | बुध 25/01/1985   | केतु 16/08/1985  | शुक्र 17/02/1986 | सूर्य 16/06/1986 |
| बुध 29/07/1984   | केतु 08/02/1985  | शुक्र 20/09/1985 | सूर्य 21/02/1986 | चंद्र 06/07/1986 |
| केतु 10/08/1984  | शुक्र 18/03/1985 | सूर्य 30/09/1985 | चंद्र 01/03/1986 | मंगल 20/07/1986  |
| शुक्र 11/09/1984 | सूर्य 30/03/1985 | चंद्र 18/10/1985 | मंगल 06/03/1986  | राहु 26/08/1986  |
| सूर्य 21/09/1984 | चंद्र 18/04/1985 | मंगल 30/10/1985  | राहु 18/03/1986  | गुरु 27/09/1986  |
| चंद्र 07/10/1984 | मंगल 02/05/1985  | राहु 30/11/1985  | गुरु 30/03/1986  | शनि 05/11/1986   |
| मंगल 18/10/1984  | राहु 05/06/1985  | गुरु 27/12/1985  | शनि 12/04/1986   | बुध 10/12/1986   |
| राहु 17/11/1984  | गुरु 06/07/1985  | शनि 29/01/1986   | बुध 24/04/1986   | केतु 24/12/1986  |
| चंद्र - चंद्र    | चंद्र - मंगल     | चंद्र - राहु     | चंद्र - गुरु     | चंद्र - शनि      |
| 24/12/1986       | 15/07/1987       | 04/12/1987       | 03/12/1988       | 24/10/1989       |
| 15/07/1987       | 04/12/1987       | 03/12/1988       | 24/10/1989       | 13/11/1990       |
| चंद्र 10/01/1987 | मंगल 23/07/1987  | राहु 27/01/1988  | गुरु 15/01/1989  | शनि 24/12/1989   |
| मंगल 21/01/1987  | राहु 13/08/1987  | गुरु 16/03/1988  | शनि 08/03/1989   | बुध 16/02/1990   |
| राहु 21/02/1987  | गुरु 01/09/1987  | शनि 13/05/1988   | बुध 23/04/1989   | केतु 11/03/1990  |
| गुरु 20/03/1987  | शनि 24/09/1987   | बुध 04/07/1988   | केतु 12/05/1989  | शुक्र 14/05/1990 |
| शनि 21/04/1987   | बुध 14/10/1987   | केतु 25/07/1988  | शुक्र 05/07/1989 | सूर्य 02/06/1990 |
| बुध 20/05/1987   | केतु 22/10/1987  | शुक्र 24/09/1988 | सूर्य 21/07/1989 | चंद्र 04/07/1990 |
| केतु 01/06/1987  | शुक्र 15/11/1987 | सूर्य 12/10/1988 | चंद्र 17/08/1989 | मंगल 27/07/1990  |
| शुक्र 05/07/1987 | सूर्य 22/11/1987 | चंद्र 12/11/1988 | मंगल 05/09/1989  | राहु 23/09/1990  |
| सूर्य 15/07/1987 | चंद्र 04/12/1987 | मंगल 03/12/1988  | राहु 24/10/1989  | गुरु 13/11/1990  |

## त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| चंद्र - बुध                                                                                                                                                              | चंद्र - केतु                                                                                                                                                             | चंद्र - शुक्र                                                                                                                                                            | चंद्र - सूर्य                                                                                                                                                            | मंगल - मंगल                                                                                                                                                              |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 13/11/1990<br>24/10/1991                                                                                                                                                 | 24/10/1991<br>14/03/1992                                                                                                                                                 | 14/03/1992<br>24/04/1993                                                                                                                                                 | 24/04/1993<br>24/08/1993                                                                                                                                                 | 24/08/1993<br>01/12/1993                                                                                                                                                 |
| बुध 01/01/1991<br>केतु 21/01/1991<br>शुक्र 20/03/1991<br>सूर्य 06/04/1991<br>चंद्र 05/05/1991<br>मंगल 25/05/1991<br>राहु 16/07/1991<br>गुरु 30/08/1991<br>शनि 24/10/1991 | केतु 01/11/1991<br>शुक्र 25/11/1991<br>सूर्य 02/12/1991<br>चंद्र 14/12/1991<br>मंगल 22/12/1991<br>राहु 13/01/1992<br>गुरु 01/02/1992<br>शनि 23/02/1992<br>बुध 14/03/1992 | शुक्र 21/05/1992<br>सूर्य 10/06/1992<br>चंद्र 14/07/1992<br>मंगल 07/08/1992<br>राहु 06/10/1992<br>गुरु 30/11/1992<br>शनि 02/02/1993<br>बुध 31/03/1993<br>केतु 24/04/1993 | सूर्य 30/04/1993<br>चंद्र 10/05/1993<br>मंगल 17/05/1993<br>राहु 05/06/1993<br>गुरु 21/06/1993<br>शनि 10/07/1993<br>बुध 27/07/1993<br>केतु 03/08/1993<br>शुक्र 24/08/1993 | मंगल 30/08/1993<br>राहु 13/09/1993<br>गुरु 27/09/1993<br>शनि 12/10/1993<br>बुध 27/10/1993<br>केतु 01/11/1993<br>शुक्र 18/11/1993<br>सूर्य 23/11/1993<br>चंद्र 01/12/1993 |
| मंगल - राहु                                                                                                                                                              | मंगल - गुरु                                                                                                                                                              | मंगल - शनि                                                                                                                                                               | मंगल - बुध                                                                                                                                                               | मंगल - केतु                                                                                                                                                              |
| 01/12/1993<br>14/08/1994                                                                                                                                                 | 14/08/1994<br>29/03/1995                                                                                                                                                 | 29/03/1995<br>24/12/1995                                                                                                                                                 | 24/12/1995<br>21/08/1996                                                                                                                                                 | 21/08/1996<br>29/11/1996                                                                                                                                                 |
| राहु 09/01/1994<br>गुरु 12/02/1994<br>शनि 24/03/1994<br>बुध 29/04/1994<br>केतु 14/05/1994<br>शुक्र 26/06/1994<br>सूर्य 09/07/1994<br>चंद्र 30/07/1994<br>मंगल 14/08/1994 | गुरु 13/09/1994<br>शनि 19/10/1994<br>बुध 20/11/1994<br>केतु 04/12/1994<br>शुक्र 10/01/1995<br>सूर्य 22/01/1995<br>चंद्र 10/02/1995<br>मंगल 23/02/1995<br>राहु 29/03/1995 | शनि 11/05/1995<br>बुध 18/06/1995<br>केतु 04/07/1995<br>शुक्र 18/08/1995<br>सूर्य 31/08/1995<br>चंद्र 23/09/1995<br>मंगल 09/10/1995<br>राहु 18/11/1995<br>गुरु 24/12/1995 | बुध 27/01/1996<br>केतु 10/02/1996<br>शुक्र 22/03/1996<br>सूर्य 03/04/1996<br>चंद्र 23/04/1996<br>मंगल 07/05/1996<br>राहु 12/06/1996<br>गुरु 14/07/1996<br>शनि 21/08/1996 | केतु 27/08/1996<br>शुक्र 13/09/1996<br>सूर्य 18/09/1996<br>चंद्र 26/09/1996<br>मंगल 02/10/1996<br>राहु 17/10/1996<br>गुरु 30/10/1996<br>शनि 15/11/1996<br>बुध 29/11/1996 |
| मंगल - शुक्र                                                                                                                                                             | मंगल - सूर्य                                                                                                                                                             | मंगल - चंद्र                                                                                                                                                             | राहु - राहु                                                                                                                                                              | राहु - गुरु                                                                                                                                                              |
| 29/11/1996<br>09/09/1997                                                                                                                                                 | 09/09/1997<br>03/12/1997                                                                                                                                                 | 03/12/1997<br>24/04/1998                                                                                                                                                 | 24/04/1998<br>11/02/2000                                                                                                                                                 | 11/02/2000<br>17/09/2001                                                                                                                                                 |
| शुक्र 15/01/1997<br>सूर्य 29/01/1997<br>चंद्र 22/02/1997<br>मंगल 11/03/1997<br>राहु 22/04/1997<br>गुरु 30/05/1997<br>शनि 14/07/1997<br>बुध 23/08/1997<br>केतु 09/09/1997 | सूर्य 13/09/1997<br>चंद्र 20/09/1997<br>मंगल 25/09/1997<br>राहु 08/10/1997<br>गुरु 19/10/1997<br>शनि 02/11/1997<br>बुध 14/11/1997<br>केतु 19/11/1997<br>शुक्र 03/12/1997 | चंद्र 15/12/1997<br>मंगल 23/12/1997<br>राहु 14/01/1998<br>गुरु 02/02/1998<br>शनि 24/02/1998<br>बुध 16/03/1998<br>केतु 24/03/1998<br>शुक्र 17/04/1998<br>सूर्य 24/04/1998 | राहु 01/08/1998<br>गुरु 28/10/1998<br>शनि 09/02/1999<br>बुध 13/05/1999<br>केतु 20/06/1999<br>शुक्र 08/10/1999<br>सूर्य 10/11/1999<br>चंद्र 03/01/2000<br>मंगल 11/02/2000 | गुरु 29/04/2000<br>शनि 30/07/2000<br>बुध 21/10/2000<br>केतु 24/11/2000<br>शुक्र 01/03/2001<br>सूर्य 31/03/2001<br>चंद्र 18/05/2001<br>मंगल 21/06/2001<br>राहु 17/09/2001 |

## त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

|                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>राहु - शनि</b><br>17/09/2001<br>12/08/2003                                                                                                                            | <b>राहु - बुध</b><br>12/08/2003<br>24/04/2005                                                                                                                            | <b>राहु - केतु</b><br>24/04/2005<br>05/01/2006                                                                                                                           | <b>राहु - शुक्र</b><br>05/01/2006<br>05/01/2008                                                                                                                          | <b>राहु - सूर्य</b><br>05/01/2008<br>11/08/2008                                                                                                                          |
| शनि 05/01/2002<br>बुध 13/04/2002<br>केतु 24/05/2002<br>शुक्र 16/09/2002<br>सूर्य 21/10/2002<br>चंद्र 18/12/2002<br>मंगल 27/01/2003<br>राहु 12/05/2003<br>गुरु 12/08/2003 | बुध 08/11/2003<br>केतु 14/12/2003<br>शुक्र 27/03/2004<br>सूर्य 27/04/2004<br>चंद्र 18/06/2004<br>मंगल 24/07/2004<br>राहु 25/10/2004<br>गुरु 16/01/2005<br>शनि 24/04/2005 | केतु 09/05/2005<br>शुक्र 21/06/2005<br>सूर्य 03/07/2005<br>चंद्र 25/07/2005<br>मंगल 09/08/2005<br>राहु 16/09/2005<br>गुरु 20/10/2005<br>शनि 29/11/2005<br>बुध 05/01/2006 | शुक्र 06/05/2006<br>सूर्य 12/06/2006<br>चंद्र 12/08/2006<br>मंगल 23/09/2006<br>राहु 11/01/2007<br>गुरु 18/04/2007<br>शनि 12/08/2007<br>बुध 24/11/2007<br>केतु 05/01/2008 | सूर्य 16/01/2008<br>चंद्र 03/02/2008<br>मंगल 16/02/2008<br>राहु 20/03/2008<br>गुरु 18/04/2008<br>शनि 23/05/2008<br>बुध 23/06/2008<br>केतु 06/07/2008<br>शुक्र 11/08/2008 |
| <b>राहु - चंद्र</b><br>11/08/2008<br>12/08/2009                                                                                                                          | <b>राहु - मंगल</b><br>12/08/2009<br>24/04/2010                                                                                                                           | <b>गुरु - गुरु</b><br>24/04/2010<br>26/09/2011                                                                                                                           | <b>गुरु - शनि</b><br>26/09/2011<br>04/06/2013                                                                                                                            | <b>गुरु - बुध</b><br>04/06/2013<br>08/12/2014                                                                                                                            |
| चंद्र 11/09/2008<br>मंगल 02/10/2008<br>राहु 26/11/2008<br>गुरु 14/01/2009<br>शनि 12/03/2009<br>बुध 03/05/2009<br>केतु 24/05/2009<br>शुक्र 24/07/2009<br>सूर्य 12/08/2009 | मंगल 26/08/2009<br>राहु 04/10/2009<br>गुरु 07/11/2009<br>शनि 17/12/2009<br>बुध 23/01/2010<br>केतु 07/02/2010<br>शुक्र 21/03/2010<br>सूर्य 03/04/2010<br>चंद्र 24/04/2010 | गुरु 03/07/2010<br>शनि 23/09/2010<br>बुध 05/12/2010<br>केतु 05/01/2011<br>शुक्र 01/04/2011<br>सूर्य 27/04/2011<br>चंद्र 09/06/2011<br>मंगल 10/07/2011<br>राहु 26/09/2011 | शनि 01/01/2012<br>बुध 29/03/2012<br>केतु 04/05/2012<br>शुक्र 15/08/2012<br>सूर्य 14/09/2012<br>चंद्र 05/11/2012<br>मंगल 11/12/2012<br>राहु 13/03/2013<br>गुरु 04/06/2013 | बुध 21/08/2013<br>केतु 22/09/2013<br>शुक्र 23/12/2013<br>सूर्य 20/01/2014<br>चंद्र 07/03/2014<br>मंगल 08/04/2014<br>राहु 30/06/2014<br>गुरु 11/09/2014<br>शनि 08/12/2014 |
| <b>गुरु - केतु</b><br>08/12/2014<br>23/07/2015                                                                                                                           | <b>गुरु - शुक्र</b><br>23/07/2015<br>02/05/2017                                                                                                                          | <b>गुरु - सूर्य</b><br>02/05/2017<br>13/11/2017                                                                                                                          | <b>गुरु - चंद्र</b><br>13/11/2017<br>04/10/2018                                                                                                                          | <b>गुरु - मंगल</b><br>04/10/2018<br>19/05/2019                                                                                                                           |
| केतु 21/12/2014<br>शुक्र 28/01/2015<br>सूर्य 08/02/2015<br>चंद्र 27/02/2015<br>मंगल 12/03/2015<br>राहु 15/04/2015<br>गुरु 16/05/2015<br>शनि 21/06/2015<br>बुध 23/07/2015 | शुक्र 08/11/2015<br>सूर्य 10/12/2015<br>चंद्र 03/02/2016<br>मंगल 11/03/2016<br>राहु 17/06/2016<br>गुरु 11/09/2016<br>शनि 23/12/2016<br>बुध 25/03/2017<br>केतु 02/05/2017 | सूर्य 12/05/2017<br>चंद्र 28/05/2017<br>मंगल 08/06/2017<br>राहु 08/07/2017<br>गुरु 03/08/2017<br>शनि 02/09/2017<br>बुध 30/09/2017<br>केतु 11/10/2017<br>शुक्र 13/11/2017 | चंद्र 10/12/2017<br>मंगल 29/12/2017<br>राहु 16/02/2018<br>गुरु 31/03/2018<br>शनि 21/05/2018<br>बुध 06/07/2018<br>केतु 25/07/2018<br>शुक्र 17/09/2018<br>सूर्य 04/10/2018 | मंगल 17/10/2018<br>राहु 20/11/2018<br>गुरु 20/12/2018<br>शनि 25/01/2019<br>बुध 26/02/2019<br>केतु 12/03/2019<br>शुक्र 19/04/2019<br>सूर्य 30/04/2019<br>चंद्र 19/05/2019 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

| गुरु - राहु<br>19/05/2019<br>23/12/2020                                                                                                                                  | शनि - शनि<br>23/12/2020<br>26/12/2022                                                                                                                                    | शनि - बुध<br>26/12/2022<br>11/10/2024                                                                                                                                    | शनि - केतु<br>11/10/2024<br>08/07/2025                                                                                                                                   | शनि - शुक्र<br>08/07/2025<br>18/08/2027                                                                                                                                  |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| राहु 15/08/2019<br>गुरु 31/10/2019<br>शनि 01/02/2020<br>बुध 24/04/2020<br>केतु 28/05/2020<br>शुक्र 02/09/2020<br>सूर्य 01/10/2020<br>चंद्र 19/11/2020<br>मंगल 23/12/2020 | शनि 18/04/2021<br>बुध 31/07/2021<br>केतु 12/09/2021<br>शुक्र 12/01/2022<br>सूर्य 17/02/2022<br>चंद्र 19/04/2022<br>मंगल 01/06/2022<br>राहु 19/09/2022<br>गुरु 26/12/2022 | बुध 29/03/2023<br>केतु 06/05/2023<br>शुक्र 23/08/2023<br>सूर्य 25/09/2023<br>चंद्र 18/11/2023<br>मंगल 27/12/2023<br>राहु 03/04/2024<br>गुरु 29/06/2024<br>शनि 11/10/2024 | केतु 27/10/2024<br>शुक्र 11/12/2024<br>सूर्य 24/12/2024<br>चंद्र 16/01/2025<br>मंगल 01/02/2025<br>राहु 13/03/2025<br>गुरु 18/04/2025<br>शनि 31/05/2025<br>बुध 08/07/2025 | शुक्र 14/11/2025<br>सूर्य 22/12/2025<br>चंद्र 24/02/2026<br>मंगल 10/04/2026<br>राहु 04/08/2026<br>गुरु 15/11/2026<br>शनि 17/03/2027<br>बुध 04/07/2027<br>केतु 18/08/2027 |
| शनि - सूर्य<br>18/08/2027<br>05/04/2028                                                                                                                                  | शनि - चंद्र<br>05/04/2028<br>26/04/2029                                                                                                                                  | शनि - मंगल<br>26/04/2029<br>21/01/2030                                                                                                                                   | शनि - राहु<br>21/01/2030<br>16/12/2031                                                                                                                                   | शनि - गुरु<br>16/12/2031<br>24/08/2033                                                                                                                                   |
| सूर्य 30/08/2027<br>चंद्र 18/09/2027<br>मंगल 01/10/2027<br>राहु 05/11/2027<br>गुरु 06/12/2027<br>शनि 12/01/2028<br>बुध 13/02/2028<br>केतु 27/02/2028<br>शुक्र 05/04/2028 | चंद्र 08/05/2028<br>मंगल 30/05/2028<br>राहु 27/07/2028<br>गुरु 16/09/2028<br>शनि 16/11/2028<br>बुध 10/01/2029<br>केतु 01/02/2029<br>शुक्र 07/04/2029<br>सूर्य 26/04/2029 | मंगल 12/05/2029<br>राहु 21/06/2029<br>गुरु 27/07/2029<br>शनि 08/09/2029<br>बुध 16/10/2029<br>केतु 01/11/2029<br>शुक्र 16/12/2029<br>सूर्य 29/12/2029<br>चंद्र 21/01/2030 | राहु 05/05/2030<br>गुरु 06/08/2030<br>शनि 23/11/2030<br>बुध 02/03/2031<br>केतु 11/04/2031<br>शुक्र 05/08/2031<br>सूर्य 09/09/2031<br>चंद्र 05/11/2031<br>मंगल 16/12/2031 | गुरु 07/03/2032<br>शनि 13/06/2032<br>बुध 08/09/2032<br>केतु 14/10/2032<br>शुक्र 25/01/2033<br>सूर्य 25/02/2033<br>चंद्र 17/04/2033<br>मंगल 23/05/2033<br>राहु 24/08/2033 |
| बुध - बुध<br>24/08/2033<br>02/04/2035                                                                                                                                    | बुध - केतु<br>02/04/2035<br>30/11/2035                                                                                                                                   | बुध - शुक्र<br>30/11/2035<br>20/10/2037                                                                                                                                  | बुध - सूर्य<br>20/10/2037<br>15/05/2038                                                                                                                                  | बुध - चंद्र<br>15/05/2038<br>24/04/2039                                                                                                                                  |
| बुध 15/11/2033<br>केतु 19/12/2033<br>शुक्र 27/03/2034<br>सूर्य 25/04/2034<br>चंद्र 13/06/2034<br>मंगल 17/07/2034<br>राहु 13/10/2034<br>गुरु 30/12/2034<br>शनि 02/04/2035 | केतु 16/04/2035<br>शुक्र 27/05/2035<br>सूर्य 08/06/2035<br>चंद्र 28/06/2035<br>मंगल 12/07/2035<br>राहु 17/08/2035<br>गुरु 18/09/2035<br>शनि 26/10/2035<br>बुध 30/11/2035 | शुक्र 24/03/2036<br>सूर्य 27/04/2036<br>चंद्र 24/06/2036<br>मंगल 03/08/2036<br>राहु 14/11/2036<br>गुरु 14/02/2037<br>शनि 04/06/2037<br>बुध 09/09/2037<br>केतु 20/10/2037 | सूर्य 30/10/2037<br>चंद्र 16/11/2037<br>मंगल 28/11/2037<br>राहु 29/12/2037<br>गुरु 26/01/2038<br>शनि 28/02/2038<br>बुध 29/03/2038<br>केतु 10/04/2038<br>शुक्र 15/05/2038 | चंद्र 12/06/2038<br>मंगल 02/07/2038<br>राहु 23/08/2038<br>गुरु 08/10/2038<br>शनि 02/12/2038<br>बुध 20/01/2039<br>केतु 09/02/2039<br>शुक्र 07/04/2039<br>सूर्य 24/04/2039 |

## अष्टोत्तरी दशा

**भोग्य दशा काल : राहु 2 वर्ष 11 मास 28 दिन**

| राहु 12 वर्ष    | शुक्र 21 वर्ष    | सूर्य 6 वर्ष     | चंद्र 15 वर्ष    | मंगल 8 वर्ष      |
|-----------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966      | 22/02/1969       | 23/02/1990       | 23/02/1996       | 23/02/2011       |
| 22/02/1969      | 23/02/1990       | 23/02/1996       | 23/02/2011       | 23/02/2019       |
| 00/00/0000      | शुक्र 25/03/1973 | सूर्य 24/06/1990 | चंद्र 25/03/1998 | मंगल 27/09/2011  |
| 00/00/0000      | सूर्य 25/05/1974 | चंद्र 25/04/1991 | मंगल 05/05/1999  | बुध 30/12/2012   |
| 00/00/0000      | चंद्र 24/04/1977 | मंगल 04/10/1991  | बुध 13/09/2001   | शनि 27/09/2013   |
| 00/00/0000      | मंगल 14/11/1978  | बुध 13/09/1992   | शनि 03/02/2003   | गुरु 23/02/2015  |
| 00/00/0000      | बुध 05/03/1982   | शनि 04/04/1993   | गुरु 24/09/2005  | राहु 14/01/2016  |
| 25/02/1966      | शनि 13/02/1984   | गुरु 25/04/1994  | राहु 25/05/2007  | शुक्र 04/08/2017 |
| शनि 13/01/1967  | गुरु 24/10/1987  | राहु 24/12/1994  | शुक्र 25/04/2010 | सूर्य 13/01/2018 |
| गुरु 22/02/1969 | राहु 23/02/1990  | शुक्र 23/02/1996 | सूर्य 23/02/2011 | चंद्र 23/02/2019 |

| बुध 17 वर्ष      | शनि 10 वर्ष      | गुरु 19 वर्ष     | राहु 12 वर्ष     |
|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 23/02/2019       | 23/02/2036       | 23/02/2046       | 22/02/2065       |
| 23/02/2036       | 23/02/2046       | 22/02/2065       | 00/00/0000       |
| बुध 27/10/2021   | शनि 26/01/2037   | गुरु 28/06/2049  | राहु 24/06/2066  |
| शनि 25/05/2023   | गुरु 31/10/2038  | राहु 08/08/2051  | शुक्र 24/10/2068 |
| गुरु 22/05/2026  | राहु 11/12/2039  | शुक्र 18/04/2055 | सूर्य 24/06/2069 |
| राहु 11/04/2028  | शुक्र 20/11/2041 | सूर्य 08/05/2056 | चंद्र 23/02/2071 |
| शुक्र 01/08/2031 | सूर्य 11/06/2042 | चंद्र 27/12/2058 | मंगल 14/01/2072  |
| सूर्य 11/07/2032 | चंद्र 31/10/2043 | मंगल 25/05/2060  | बुध 04/12/2073   |
| चंद्र 20/11/2034 | मंगल 28/07/2044  | बुध 22/05/2063   | शनि 25/02/2074   |
| मंगल 23/02/2036  | बुध 23/02/2046   | शनि 22/02/2065   | 00/00/0000       |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।  
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| राहु - शनि       | राहु - गुरु      | शुक्र - शुक्र    | शुक्र - सूर्य    | शुक्र - चंद्र    |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966       | 13/01/1967       | 22/02/1969       | 25/03/1973       | 25/05/1974       |
| 13/01/1967       | 22/02/1969       | 25/03/1973       | 25/05/1974       | 24/04/1977       |
| 25/02/1966       | गुरु 29/05/1967  | शुक्र 09/12/1969 | सूर्य 18/04/1973 | चंद्र 20/10/1974 |
| गुरु 23/03/1966  | राहु 23/08/1967  | सूर्य 02/03/1970 | चंद्र 16/06/1973 | मंगल 07/01/1975  |
| राहु 07/05/1966  | शुक्र 20/01/1968 | चंद्र 25/09/1970 | मंगल 17/07/1973  | बुध 24/06/1975   |
| शुक्र 25/07/1966 | सूर्य 02/03/1968 | मंगल 14/01/1971  | बुध 22/09/1973   | शनि 30/09/1975   |
| सूर्य 16/08/1966 | चंद्र 18/06/1968 | बुध 06/09/1971   | शनि 01/11/1973   | गुरु 05/04/1976  |
| चंद्र 11/10/1966 | मंगल 14/08/1968  | शनि 22/01/1972   | गुरु 15/01/1974  | राहु 01/08/1976  |
| मंगल 10/11/1966  | बुध 13/12/1968   | गुरु 10/10/1972  | राहु 03/03/1974  | शुक्र 24/02/1977 |
| बुध 13/01/1967   | शनि 22/02/1969   | राहु 25/03/1973  | शुक्र 25/05/1974 | सूर्य 24/04/1977 |
| शुक्र - मंगल     | शुक्र - बुध      | शुक्र - शनि      | शुक्र - गुरु     | शुक्र - राहु     |
| 24/04/1977       | 14/11/1978       | 05/03/1982       | 13/02/1984       | 24/10/1987       |
| 14/11/1978       | 05/03/1982       | 13/02/1984       | 24/10/1987       | 23/02/1990       |
| मंगल 05/06/1977  | बुध 23/05/1979   | शनि 10/05/1982   | गुरु 07/10/1984  | राहु 27/01/1988  |
| बुध 03/09/1977   | शनि 11/09/1979   | गुरु 12/09/1982  | राहु 06/03/1985  | शुक्र 11/07/1988 |
| शनि 25/10/1977   | गुरु 11/04/1980  | राहु 29/11/1982  | शुक्र 24/11/1985 | सूर्य 27/08/1988 |
| गुरु 02/02/1978  | राहु 23/08/1980  | शुक्र 17/04/1983 | सूर्य 07/02/1986 | चंद्र 24/12/1988 |
| राहु 07/04/1978  | शुक्र 15/04/1981 | सूर्य 26/05/1983 | चंद्र 13/08/1986 | मंगल 25/02/1989  |
| शुक्र 26/07/1978 | सूर्य 21/06/1981 | चंद्र 02/09/1983 | मंगल 21/11/1986  | बुध 09/07/1989   |
| सूर्य 27/08/1978 | चंद्र 05/12/1981 | मंगल 24/10/1983  | बुध 22/06/1987   | शनि 26/09/1989   |
| चंद्र 14/11/1978 | मंगल 05/03/1982  | बुध 13/02/1984   | शनि 24/10/1987   | गुरु 23/02/1990  |
| सूर्य - सूर्य    | सूर्य - चंद्र    | सूर्य - मंगल     | सूर्य - बुध      | सूर्य - शनि      |
| 23/02/1990       | 24/06/1990       | 25/04/1991       | 04/10/1991       | 13/09/1992       |
| 24/06/1990       | 25/04/1991       | 04/10/1991       | 13/09/1992       | 04/04/1993       |
| सूर्य 01/03/1990 | चंद्र 06/08/1990 | मंगल 07/05/1991  | बुध 27/11/1991   | शनि 02/10/1992   |
| चंद्र 18/03/1990 | मंगल 28/08/1990  | बुध 01/06/1991   | शनि 29/12/1991   | गुरु 07/11/1992  |
| मंगल 27/03/1990  | बुध 15/10/1990   | शनि 16/06/1991   | गुरु 28/02/1992  | राहु 29/11/1992  |
| बुध 16/04/1990   | शनि 12/11/1990   | गुरु 15/07/1991  | राहु 06/04/1992  | शुक्र 08/01/1993 |
| शनि 27/04/1990   | गुरु 05/01/1991  | राहु 02/08/1991  | शुक्र 13/06/1992 | सूर्य 19/01/1993 |
| गुरु 18/05/1990  | राहु 08/02/1991  | शुक्र 03/09/1991 | सूर्य 02/07/1992 | चंद्र 16/02/1993 |
| राहु 01/06/1990  | शुक्र 08/04/1991 | सूर्य 12/09/1991 | चंद्र 19/08/1992 | मंगल 03/03/1993  |
| शुक्र 24/06/1990 | सूर्य 25/04/1991 | चंद्र 04/10/1991 | मंगल 13/09/1992  | बुध 04/04/1993   |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - गुरु     | सूर्य - राहु     | सूर्य - शुक्र    | चंद्र - चंद्र    | चंद्र - मंगल     |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 04/04/1993       | 25/04/1994       | 24/12/1994       | 23/02/1996       | 25/03/1998       |
| 25/04/1994       | 24/12/1994       | 23/02/1996       | 25/03/1998       | 05/05/1999       |
| गुरु 11/06/1993  | राहु 22/05/1994  | शुक्र 17/03/1995 | चंद्र 08/06/1996 | मंगल 24/04/1998  |
| राहु 24/07/1993  | शुक्र 08/07/1994 | सूर्य 10/04/1995 | मंगल 03/08/1996  | बुध 27/06/1998   |
| शुक्र 07/10/1993 | सूर्य 22/07/1994 | चंद्र 08/06/1995 | बुध 01/12/1996   | शनि 04/08/1998   |
| सूर्य 28/10/1993 | चंद्र 24/08/1994 | मंगल 09/07/1995  | शनि 09/02/1997   | गुरु 14/10/1998  |
| चंद्र 21/12/1993 | मंगल 11/09/1994  | बुध 14/09/1995   | गुरु 23/06/1997  | राहु 28/11/1998  |
| मंगल 18/01/1994  | बुध 20/10/1994   | शनि 24/10/1995   | राहु 16/09/1997  | शुक्र 15/02/1999 |
| बुध 20/03/1994   | शनि 11/11/1994   | गुरु 07/01/1996  | शुक्र 11/02/1998 | सूर्य 10/03/1999 |
| शनि 25/04/1994   | गुरु 24/12/1994  | राहु 23/02/1996  | सूर्य 25/03/1998 | चंद्र 05/05/1999 |
| चंद्र - बुध      | चंद्र - शनि      | चंद्र - गुरु     | चंद्र - राहु     | चंद्र - शुक्र    |
| 05/05/1999       | 13/09/2001       | 03/02/2003       | 24/09/2005       | 25/05/2007       |
| 13/09/2001       | 03/02/2003       | 24/09/2005       | 25/05/2007       | 25/04/2010       |
| बुध 18/09/1999   | शनि 30/10/2001   | गुरु 22/07/2003  | राहु 30/11/2005  | शुक्र 18/12/2007 |
| शनि 07/12/1999   | गुरु 28/01/2002  | राहु 06/11/2003  | शुक्र 29/03/2006 | सूर्य 16/02/2008 |
| गुरु 06/05/2000  | राहु 25/03/2002  | शुक्र 12/05/2004 | सूर्य 01/05/2006 | चंद्र 13/07/2008 |
| राहु 10/08/2000  | शुक्र 02/07/2002 | सूर्य 04/07/2004 | चंद्र 25/07/2006 | मंगल 29/09/2008  |
| शुक्र 25/01/2001 | सूर्य 30/07/2002 | चंद्र 15/11/2004 | मंगल 08/09/2006  | बुध 16/03/2009   |
| सूर्य 14/03/2001 | चंद्र 08/10/2002 | मंगल 26/01/2005  | बुध 13/12/2006   | शनि 23/06/2009   |
| चंद्र 11/07/2001 | मंगल 15/11/2002  | बुध 26/06/2005   | शनि 07/02/2007   | गुरु 27/12/2009  |
| मंगल 13/09/2001  | बुध 03/02/2003   | शनि 24/09/2005   | गुरु 25/05/2007  | राहु 25/04/2010  |
| चंद्र - सूर्य    | मंगल - मंगल      | मंगल - बुध       | मंगल - शनि       | मंगल - गुरु      |
| 25/04/2010       | 23/02/2011       | 27/09/2011       | 30/12/2012       | 27/09/2013       |
| 23/02/2011       | 27/09/2011       | 30/12/2012       | 27/09/2013       | 23/02/2015       |
| सूर्य 11/05/2010 | मंगल 11/03/2011  | बुध 09/12/2011   | शनि 24/01/2013   | गुरु 26/12/2013  |
| चंद्र 23/06/2010 | बुध 14/04/2011   | शनि 20/01/2012   | गुरु 13/03/2013  | राहु 21/02/2014  |
| मंगल 15/07/2010  | शनि 04/05/2011   | गुरु 10/04/2012  | राहु 12/04/2013  | शुक्र 01/06/2014 |
| बुध 01/09/2010   | गुरु 11/06/2011  | राहु 31/05/2012  | शुक्र 04/06/2013 | सूर्य 30/06/2014 |
| शनि 29/09/2010   | राहु 05/07/2011  | शुक्र 29/08/2012 | सूर्य 19/06/2013 | चंद्र 09/09/2014 |
| गुरु 22/11/2010  | शुक्र 16/08/2011 | सूर्य 23/09/2012 | चंद्र 26/07/2013 | मंगल 17/10/2014  |
| राहु 26/12/2010  | सूर्य 28/08/2011 | चंद्र 26/11/2012 | मंगल 15/08/2013  | बुध 06/01/2015   |
| शुक्र 23/02/2011 | चंद्र 27/09/2011 | मंगल 30/12/2012  | बुध 27/09/2013   | शनि 23/02/2015   |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| मंगल - राहु      | मंगल - शुक्र     | मंगल - सूर्य     | मंगल - चंद्र     | बुध - बुध        |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 23/02/2015       | 14/01/2016       | 04/08/2017       | 13/01/2018       | 23/02/2019       |
| 14/01/2016       | 04/08/2017       | 13/01/2018       | 23/02/2019       | 27/10/2021       |
| राहु 31/03/2015  | शुक्र 03/05/2016 | सूर्य 13/08/2017 | चंद्र 10/03/2018 | बुध 27/07/2019   |
| शुक्र 02/06/2015 | सूर्य 04/06/2016 | चंद्र 04/09/2017 | मंगल 10/04/2018  | शनि 25/10/2019   |
| सूर्य 20/06/2015 | चंद्र 22/08/2016 | मंगल 16/09/2017  | बुध 12/06/2018   | गुरु 14/04/2020  |
| चंद्र 04/08/2015 | मंगल 03/10/2016  | बुध 12/10/2017   | शनि 20/07/2018   | राहु 01/08/2020  |
| मंगल 28/08/2015  | बुध 31/12/2016   | शनि 27/10/2017   | गुरु 29/09/2018  | शुक्र 07/02/2021 |
| बुध 18/10/2015   | शनि 22/02/2017   | गुरु 25/11/2017  | राहु 14/11/2018  | सूर्य 02/04/2021 |
| शनि 18/11/2015   | गुरु 02/06/2017  | राहु 13/12/2017  | शुक्र 31/01/2019 | चंद्र 16/08/2021 |
| गुरु 14/01/2016  | राहु 04/08/2017  | शुक्र 13/01/2018 | सूर्य 23/02/2019 | मंगल 27/10/2021  |
| बुध - शनि        | बुध - गुरु       | बुध - राहु       | बुध - शुक्र      | बुध - सूर्य      |
| 27/10/2021       | 25/05/2023       | 22/05/2026       | 11/04/2028       | 01/08/2031       |
| 25/05/2023       | 22/05/2026       | 11/04/2028       | 01/08/2031       | 11/07/2032       |
| शनि 20/12/2021   | गुरु 03/12/2023  | राहु 06/08/2026  | शुक्र 01/12/2028 | सूर्य 20/08/2031 |
| गुरु 31/03/2022  | राहु 03/04/2024  | शुक्र 18/12/2026 | सूर्य 06/02/2029 | चंद्र 07/10/2031 |
| राहु 03/06/2022  | शुक्र 01/11/2024 | सूर्य 26/01/2027 | चंद्र 24/07/2029 | मंगल 02/11/2031  |
| शुक्र 22/09/2022 | सूर्य 01/01/2025 | चंद्र 02/05/2027 | मंगल 22/10/2029  | बुध 26/12/2031   |
| सूर्य 24/10/2022 | चंद्र 02/06/2025 | मंगल 22/06/2027  | बुध 30/04/2030   | शनि 27/01/2032   |
| चंद्र 12/01/2023 | मंगल 22/08/2025  | बुध 08/10/2027   | शनि 19/08/2030   | गुरु 27/03/2032  |
| मंगल 24/02/2023  | बुध 09/02/2026   | शनि 11/12/2027   | गुरु 20/03/2031  | राहु 05/05/2032  |
| बुध 25/05/2023   | शनि 22/05/2026   | गुरु 11/04/2028  | राहु 01/08/2031  | शुक्र 11/07/2032 |
| बुध - चंद्र      | बुध - मंगल       | शनि - शनि        | शनि - गुरु       | शनि - राहु       |
| 11/07/2032       | 20/11/2034       | 23/02/2036       | 26/01/2037       | 31/10/2038       |
| 20/11/2034       | 23/02/2036       | 26/01/2037       | 31/10/2038       | 11/12/2039       |
| चंद्र 08/11/2032 | मंगल 24/12/2034  | शनि 26/03/2036   | गुरु 19/05/2037  | राहु 15/12/2038  |
| मंगल 11/01/2033  | बुध 07/03/2035   | गुरु 24/05/2036  | राहु 30/07/2037  | शुक्र 04/03/2039 |
| बुध 26/05/2033   | शनि 18/04/2035   | राहु 01/07/2036  | शुक्र 02/12/2037 | सूर्य 27/03/2039 |
| शनि 14/08/2033   | गुरु 08/07/2035  | शुक्र 04/09/2036 | सूर्य 06/01/2038 | चंद्र 22/05/2039 |
| गुरु 13/01/2034  | राहु 28/08/2035  | सूर्य 23/09/2036 | चंद्र 06/04/2038 | मंगल 21/06/2039  |
| राहु 19/04/2034  | शुक्र 26/11/2035 | चंद्र 09/11/2036 | मंगल 23/05/2038  | बुध 24/08/2039   |
| शुक्र 03/10/2034 | सूर्य 21/12/2035 | मंगल 04/12/2036  | बुध 01/09/2038   | शनि 30/09/2039   |
| सूर्य 20/11/2034 | चंद्र 23/02/2036 | बुध 26/01/2037   | शनि 31/10/2038   | गुरु 11/12/2039  |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शनि - शुक्र      | शनि - सूर्य      | शनि - चंद्र      | शनि - मंगल       | शनि - बुध        |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 11/12/2039       | 20/11/2041       | 11/06/2042       | 31/10/2043       | 28/07/2044       |
| 20/11/2041       | 11/06/2042       | 31/10/2043       | 28/07/2044       | 23/02/2046       |
| शुक्र 27/04/2040 | सूर्य 01/12/2041 | चंद्र 20/08/2042 | मंगल 20/11/2043  | बुध 26/10/2044   |
| सूर्य 05/06/2040 | चंद्र 29/12/2041 | मंगल 27/09/2042  | बुध 02/01/2044   | शनि 19/12/2044   |
| चंद्र 12/09/2040 | मंगल 14/01/2042  | बुध 16/12/2042   | शनि 27/01/2044   | गुरु 30/03/2045  |
| मंगल 04/11/2040  | बुध 14/02/2042   | शनि 01/02/2043   | गुरु 15/03/2044  | राहु 02/06/2045  |
| बुध 23/02/2041   | शनि 05/03/2042   | गुरु 01/05/2043  | राहु 14/04/2044  | शुक्र 21/09/2045 |
| शनि 30/04/2041   | गुरु 10/04/2042  | राहु 26/06/2043  | शुक्र 05/06/2044 | सूर्य 23/10/2045 |
| गुरु 02/09/2041  | राहु 02/05/2042  | शुक्र 03/10/2043 | सूर्य 20/06/2044 | चंद्र 11/01/2046 |
| राहु 20/11/2041  | शुक्र 11/06/2042 | सूर्य 31/10/2043 | चंद्र 28/07/2044 | मंगल 23/02/2046  |
| गुरु - गुरु      | गुरु - राहु      | गुरु - शुक्र     | गुरु - सूर्य     | गुरु - चंद्र     |
| 23/02/2046       | 28/06/2049       | 08/08/2051       | 18/04/2055       | 08/05/2056       |
| 28/06/2049       | 08/08/2051       | 18/04/2055       | 08/05/2056       | 27/12/2058       |
| गुरु 25/09/2046  | राहु 21/09/2049  | शुक्र 26/04/2052 | सूर्य 09/05/2055 | चंद्र 18/09/2056 |
| राहु 08/02/2047  | शुक्र 18/02/2050 | सूर्य 10/07/2052 | चंद्र 02/07/2055 | मंगल 29/11/2056  |
| शुक्र 04/10/2047 | सूर्य 02/04/2050 | चंद्र 13/01/2053 | मंगल 31/07/2055  | बुध 30/04/2057   |
| सूर्य 10/12/2047 | चंद्र 18/07/2050 | मंगल 23/04/2053  | बुध 29/09/2055   | शनि 28/07/2057   |
| चंद्र 28/05/2048 | मंगल 13/09/2050  | बुध 22/11/2053   | शनि 04/11/2055   | गुरु 13/01/2058  |
| मंगल 26/08/2048  | बुध 13/01/2051   | शनि 27/03/2054   | गुरु 11/01/2056  | राहु 01/05/2058  |
| बुध 07/03/2049   | शनि 25/03/2051   | गुरु 19/11/2054  | राहु 23/02/2056  | शुक्र 04/11/2058 |
| शनि 28/06/2049   | गुरु 08/08/2051  | राहु 18/04/2055  | शुक्र 08/05/2056 | सूर्य 27/12/2058 |
| गुरु - मंगल      | गुरु - बुध       | गुरु - शनि       | राहु - राहु      | राहु - शुक्र     |
| 27/12/2058       | 25/05/2060       | 22/05/2063       | 22/02/2065       | 24/06/2066       |
| 25/05/2060       | 22/05/2063       | 22/02/2065       | 24/06/2066       | 24/10/2068       |
| मंगल 04/02/2059  | बुध 12/11/2060   | शनि 20/07/2063   | राहु 18/04/2065  | शुक्र 07/12/2066 |
| बुध 25/04/2059   | शनि 22/02/2061   | गुरु 10/11/2063  | शुक्र 21/07/2065 | सूर्य 24/01/2067 |
| शनि 12/06/2059   | गुरु 02/09/2061  | राहु 21/01/2064  | सूर्य 17/08/2065 | चंद्र 22/05/2067 |
| गुरु 10/09/2059  | राहु 01/01/2062  | शुक्र 25/05/2064 | चंद्र 24/10/2065 | मंगल 24/07/2067  |
| राहु 07/11/2059  | शुक्र 02/08/2062 | सूर्य 29/06/2064 | मंगल 29/11/2065  | बुध 05/12/2067   |
| शुक्र 15/02/2060 | सूर्य 01/10/2062 | चंद्र 27/09/2064 | बुध 14/02/2066   | शनि 22/02/2068   |
| सूर्य 14/03/2060 | चंद्र 02/03/2063 | मंगल 13/11/2064  | शनि 31/03/2066   | गुरु 21/07/2068  |
| चंद्र 25/05/2060 | मंगल 22/05/2063  | बुध 22/02/2065   | गुरु 24/06/2066  | राहु 24/10/2068  |

## योगिनी दशा

**भोग्य दशा काल : भामरी 2 वर्ष 11 मास 28 दिन**

| भामरी 4 वर्ष     | भद्रिका 5 वर्ष   | उल्का 6 वर्ष     | सिद्धा 7 वर्ष    | संकटा 8 वर्ष     |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 25/02/1966       | 22/02/1969       | 23/02/1974       | 23/02/1980       | 23/02/1987       |
| 22/02/1969       | 23/02/1974       | 23/02/1980       | 23/02/1987       | 23/02/1995       |
| 00/00/0000       | भद्रि 03/11/1969 | उल्क 23/02/1975  | सिद्ध 04/07/1981 | संक 03/12/1988   |
| 25/02/1966       | उल्क 03/09/1970  | सिद्ध 24/04/1976 | संक 24/01/1983   | मंग 22/02/1989   |
| उल्क 24/10/1966  | सिद्ध 25/08/1971 | संक 24/08/1977   | मंग 05/04/1983   | पिंग 04/08/1989  |
| सिद्ध 04/08/1967 | संक 03/10/1972   | मंग 24/10/1977   | पिंग 25/08/1983  | धांय 04/04/1990  |
| संक 24/06/1968   | मंग 23/11/1972   | पिंग 23/02/1978  | धांय 25/03/1984  | भाम 23/02/1991   |
| मंग 04/08/1968   | पिंग 05/03/1973  | धांय 24/08/1978  | भाम 03/01/1985   | भद्रि 04/04/1992 |
| पिंग 24/10/1968  | धांय 04/08/1973  | भाम 25/04/1979   | भद्रि 24/12/1985 | उल्क 04/08/1993  |
| धांय 22/02/1969  | भाम 23/02/1974   | भद्रि 23/02/1980 | उल्क 23/02/1987  | सिद्ध 23/02/1995 |

| मंगला 1 वर्ष     | पिंगला 2 वर्ष    | धान्या 3 वर्ष    | भामरी 4 वर्ष     | भद्रिका 5 वर्ष   |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 23/02/1995       | 23/02/1996       | 23/02/1998       | 22/02/2001       | 22/02/2005       |
| 23/02/1996       | 23/02/1998       | 22/02/2001       | 22/02/2005       | 23/02/2010       |
| मंग 05/03/1995   | पिंग 04/04/1996  | धांय 25/05/1998  | भाम 04/08/2001   | भद्रि 03/11/2005 |
| पिंग 25/03/1995  | धांय 04/06/1996  | भाम 24/09/1998   | भद्रि 23/02/2002 | उल्क 03/09/2006  |
| धांय 25/04/1995  | भाम 24/08/1996   | भद्रि 23/02/1999 | उल्क 24/10/2002  | सिद्ध 25/08/2007 |
| भाम 04/06/1995   | भद्रि 03/12/1996 | उल्क 25/08/1999  | सिद्ध 04/08/2003 | संक 03/10/2008   |
| भद्रि 25/07/1995 | उल्क 04/04/1997  | सिद्ध 25/03/2000 | संक 24/06/2004   | मंग 23/11/2008   |
| उल्क 24/09/1995  | सिद्ध 24/08/1997 | संक 23/11/2000   | मंग 04/08/2004   | पिंग 05/03/2009  |
| सिद्ध 04/12/1995 | संक 02/02/1998   | मंग 24/12/2000   | पिंग 24/10/2004  | धांय 04/08/2009  |
| संक 23/02/1996   | मंग 23/02/1998   | पिंग 22/02/2001  | धांय 22/02/2005  | भाम 23/02/2010   |

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

|         |          |        |         |        |         |       |             |
|---------|----------|--------|---------|--------|---------|-------|-------------|
| मंगला   | : चन्द्र | पिंगला | : सूर्य | धान्या | : गुरु  | भामरी | : मंगल      |
| भद्रिका | : बुध    | उल्का  | : शनि   | सिद्धा | : शुक्र | संकटा | : राहु/केतु |

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।  
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## योगिनी दशा

| उल्का 6 वर्ष<br>23/02/2010<br>23/02/2016  | सिद्धा 7 वर्ष<br>23/02/2016<br>23/02/2023  | संकटा 8 वर्ष<br>23/02/2023<br>23/02/2031   | मंगला 1 वर्ष<br>23/02/2031<br>23/02/2032  | पिंगला 2 वर्ष<br>23/02/2032<br>23/02/2034  |
|-------------------------------------------|--------------------------------------------|--------------------------------------------|-------------------------------------------|--------------------------------------------|
| उल्क 23/02/2011                           | सिद्ध 04/07/2017                           | संक 03/12/2024                             | मंग 05/03/2031                            | पिंग 04/04/2032                            |
| सिद्ध 24/04/2012                          | संक 24/01/2019                             | मंग 22/02/2025                             | पिंग 25/03/2031                           | धांय 04/06/2032                            |
| संक 24/08/2013                            | मंग 05/04/2019                             | पिंग 04/08/2025                            | धांय 25/04/2031                           | भ्राम 24/08/2032                           |
| मंग 24/10/2013                            | पिंग 25/08/2019                            | धांय 04/04/2026                            | भ्राम 04/06/2031                          | भद्रि 03/12/2032                           |
| पिंग 23/02/2014                           | धांय 25/03/2020                            | भ्राम 23/02/2027                           | भद्रि 25/07/2031                          | उल्क 04/04/2033                            |
| धांय 24/08/2014                           | भ्राम 03/01/2021                           | भद्रि 04/04/2028                           | उल्क 24/09/2031                           | सिद्ध 24/08/2033                           |
| भ्राम 25/04/2015                          | भद्रि 24/12/2021                           | उल्क 04/08/2029                            | सिद्ध 04/12/2031                          | संक 02/02/2034                             |
| भद्रि 23/02/2016                          | उल्क 23/02/2023                            | सिद्ध 23/02/2031                           | संक 23/02/2032                            | मंग 23/02/2034                             |
| धान्या 3 वर्ष<br>23/02/2034<br>22/02/2037 | भ्रामरी 4 वर्ष<br>22/02/2037<br>22/02/2041 | भद्रिका 5 वर्ष<br>22/02/2041<br>23/02/2046 | उल्का 6 वर्ष<br>23/02/2046<br>23/02/2052  | सिद्धा 7 वर्ष<br>23/02/2052<br>23/02/2059  |
| धांय 25/05/2034                           | भ्राम 04/08/2037                           | भद्रि 03/11/2041                           | उल्क 23/02/2047                           | सिद्ध 04/07/2053                           |
| भ्राम 24/09/2034                          | भद्रि 23/02/2038                           | उल्क 03/09/2042                            | सिद्ध 24/04/2048                          | संक 24/01/2055                             |
| भद्रि 23/02/2035                          | उल्क 24/10/2038                            | सिद्ध 25/08/2043                           | संक 24/08/2049                            | मंग 05/04/2055                             |
| उल्क 25/08/2035                           | सिद्ध 04/08/2039                           | संक 03/10/2044                             | मंग 24/10/2049                            | पिंग 25/08/2055                            |
| सिद्ध 25/03/2036                          | संक 24/06/2040                             | मंग 23/11/2044                             | पिंग 23/02/2050                           | धांय 25/03/2056                            |
| संक 23/11/2036                            | मंग 04/08/2040                             | पिंग 05/03/2045                            | धांय 24/08/2050                           | भ्राम 03/01/2057                           |
| मंग 24/12/2036                            | पिंग 24/10/2040                            | धांय 04/08/2045                            | भ्राम 25/04/2051                          | भद्रि 24/12/2057                           |
| पिंग 22/02/2037                           | धांय 22/02/2041                            | भ्राम 23/02/2046                           | भद्रि 23/02/2052                          | उल्क 23/02/2059                            |
| संकटा 8 वर्ष<br>23/02/2059<br>23/02/2067  | मंगला 1 वर्ष<br>23/02/2067<br>23/02/2068   | पिंगला 2 वर्ष<br>23/02/2068<br>23/02/2070  | धान्या 3 वर्ष<br>23/02/2070<br>22/02/2073 | भ्रामरी 4 वर्ष<br>22/02/2073<br>00/00/0000 |
| संक 03/12/2060                            | मंग 05/03/2067                             | पिंग 04/04/2068                            | धांय 25/05/2070                           | भ्राम 04/08/2073                           |
| मंग 22/02/2061                            | पिंग 25/03/2067                            | धांय 04/06/2068                            | भ्राम 24/09/2070                          | भद्रि 23/02/2074                           |
| पिंग 04/08/2061                           | धांय 25/04/2067                            | भ्राम 24/08/2068                           | भद्रि 23/02/2071                          | उल्क 25/02/2074                            |
| धांय 04/04/2062                           | भ्राम 04/06/2067                           | भद्रि 03/12/2068                           | उल्क 25/08/2071                           | 00/00/0000                                 |
| भ्राम 23/02/2063                          | भद्रि 25/07/2067                           | उल्क 04/04/2069                            | सिद्ध 25/03/2072                          | 00/00/0000                                 |
| भद्रि 04/04/2064                          | उल्क 24/09/2067                            | सिद्ध 24/08/2069                           | संक 23/11/2072                            | 00/00/0000                                 |
| उल्क 04/08/2065                           | सिद्ध 04/12/2067                           | संक 02/02/2070                             | मंग 24/12/2072                            | 00/00/0000                                 |
| सिद्ध 23/02/2067                          | संक 23/02/2068                             | मंग 23/02/2070                             | पिंग 22/02/2073                           | 00/00/0000                                 |

## योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

| संक - धांय       | संक - भ्राम      | संक - भद्रि      | संक - उल्क       | संक - सिद्ध      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 04/08/2025       | 04/04/2026       | 23/02/2027       | 04/04/2028       | 04/08/2029       |
| 04/04/2026       | 23/02/2027       | 04/04/2028       | 04/08/2029       | 23/02/2031       |
| धांय 24/08/2025  | भ्राम 10/05/2026 | भद्रि 20/04/2027 | उल्क 24/06/2028  | सिद्ध 22/11/2029 |
| भ्राम 20/09/2025 | भद्रि 24/06/2026 | उल्क 27/06/2027  | सिद्ध 27/09/2028 | संक 29/03/2030   |
| भद्रि 24/10/2025 | उल्क 18/08/2026  | सिद्ध 14/09/2027 | संक 13/01/2029   | मंग 13/04/2030   |
| उल्क 04/12/2025  | सिद्ध 20/10/2026 | संक 13/12/2027   | मंग 26/01/2029   | पिंग 15/05/2030  |
| सिद्ध 20/01/2026 | संक 31/12/2026   | मंग 24/12/2027   | पिंग 22/02/2029  | धांय 01/07/2030  |
| संक 15/03/2026   | मंग 09/01/2027   | पिंग 16/01/2028  | धांय 04/04/2029  | भ्राम 02/09/2030 |
| मंग 22/03/2026   | पिंग 27/01/2027  | धांय 19/02/2028  | भ्राम 28/05/2029 | भद्रि 20/11/2030 |
| पिंग 04/04/2026  | धांय 23/02/2027  | भ्राम 04/04/2028 | भद्रि 04/08/2029 | उल्क 23/02/2031  |
| मंग - मंग        | मंग - पिंग       | मंग - धांय       | मंग - भ्राम      | मंग - भद्रि      |
| 23/02/2031       | 05/03/2031       | 25/03/2031       | 25/04/2031       | 04/06/2031       |
| 05/03/2031       | 25/03/2031       | 25/04/2031       | 04/06/2031       | 25/07/2031       |
| मंग 23/02/2031   | पिंग 06/03/2031  | धांय 28/03/2031  | भ्राम 29/04/2031 | भद्रि 11/06/2031 |
| पिंग 24/02/2031  | धांय 08/03/2031  | भ्राम 31/03/2031 | भद्रि 05/05/2031 | उल्क 20/06/2031  |
| धांय 25/02/2031  | भ्राम 10/03/2031 | भद्रि 05/04/2031 | उल्क 12/05/2031  | सिद्ध 30/06/2031 |
| भ्राम 26/02/2031 | भद्रि 13/03/2031 | उल्क 10/04/2031  | सिद्ध 20/05/2031 | संक 11/07/2031   |
| भद्रि 27/02/2031 | उल्क 16/03/2031  | सिद्ध 16/04/2031 | संक 29/05/2031   | मंग 12/07/2031   |
| उल्क 01/03/2031  | सिद्ध 20/03/2031 | संक 22/04/2031   | मंग 30/05/2031   | पिंग 15/07/2031  |
| सिद्ध 03/03/2031 | संक 25/03/2031   | मंग 23/04/2031   | पिंग 01/06/2031  | धांय 20/07/2031  |
| संक 05/03/2031   | मंग 25/03/2031   | पिंग 25/04/2031  | धांय 04/06/2031  | भ्राम 25/07/2031 |
| मंग - उल्क       | मंग - सिद्ध      | मंग - संक        | पिंग - पिंग      | पिंग - धांय      |
| 25/07/2031       | 24/09/2031       | 04/12/2031       | 23/02/2032       | 04/04/2032       |
| 24/09/2031       | 04/12/2031       | 23/02/2032       | 04/04/2032       | 04/06/2032       |
| उल्क 04/08/2031  | सिद्ध 08/10/2031 | संक 22/12/2031   | पिंग 25/02/2032  | धांय 09/04/2032  |
| सिद्ध 16/08/2031 | संक 24/10/2031   | मंग 24/12/2031   | धांय 29/02/2032  | भ्राम 16/04/2032 |
| संक 30/08/2031   | मंग 26/10/2031   | पिंग 29/12/2031  | भ्राम 04/03/2032 | भद्रि 24/04/2032 |
| मंग 31/08/2031   | पिंग 30/10/2031  | धांय 05/01/2032  | भद्रि 10/03/2032 | उल्क 04/05/2032  |
| पिंग 04/09/2031  | धांय 04/11/2031  | भ्राम 14/01/2032 | उल्क 17/03/2032  | सिद्ध 16/05/2032 |
| धांय 09/09/2031  | भ्राम 12/11/2031 | भद्रि 25/01/2032 | सिद्ध 25/03/2032 | संक 30/05/2032   |
| भ्राम 16/09/2031 | भद्रि 22/11/2031 | उल्क 07/02/2032  | संक 03/04/2032   | मंग 31/05/2032   |
| भद्रि 24/09/2031 | उल्क 04/12/2031  | सिद्ध 23/02/2032 | मंग 04/04/2032   | पिंग 04/06/2032  |

## योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

| पिंग - भ्राम     | पिंग - भद्रि     | पिंग - उल्क      | पिंग - सिद्ध     | पिंग - संक       |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 04/06/2032       | 24/08/2032       | 03/12/2032       | 04/04/2033       | 24/08/2033       |
| 24/08/2032       | 03/12/2032       | 04/04/2033       | 24/08/2033       | 02/02/2034       |
| भ्राम 13/06/2032 | भद्रि 07/09/2032 | उल्क 24/12/2032  | सिद्ध 02/05/2033 | संक 29/09/2033   |
| भद्रि 24/06/2032 | उल्क 24/09/2032  | सिद्ध 16/01/2033 | संक 02/06/2033   | मंग 04/10/2033   |
| उल्क 07/07/2032  | सिद्ध 14/10/2032 | संक 12/02/2033   | मंग 06/06/2033   | पिंग 13/10/2033  |
| सिद्ध 23/07/2032 | संक 05/11/2032   | मंग 16/02/2033   | पिंग 14/06/2033  | धांय 26/10/2033  |
| संक 10/08/2032   | मंग 08/11/2032   | पिंग 22/02/2033  | धांय 26/06/2033  | भ्राम 13/11/2033 |
| मंग 13/08/2032   | पिंग 14/11/2032  | धांय 05/03/2033  | भ्राम 12/07/2033 | भद्रि 06/12/2033 |
| पिंग 17/08/2032  | धांय 22/11/2032  | भ्राम 18/03/2033 | भद्रि 31/07/2033 | उल्क 02/01/2034  |
| धांय 24/08/2032  | भ्राम 03/12/2032 | भद्रि 04/04/2033 | उल्क 24/08/2033  | सिद्ध 02/02/2034 |
| पिंग - मंग       | धांय - धांय      | धांय - भ्राम     | धांय - भद्रि     | धांय - उल्क      |
| 02/02/2034       | 23/02/2034       | 25/05/2034       | 24/09/2034       | 23/02/2035       |
| 23/02/2034       | 25/05/2034       | 24/09/2034       | 23/02/2035       | 25/08/2035       |
| मंग 03/02/2034   | धांय 02/03/2034  | भ्राम 08/06/2034 | भद्रि 15/10/2034 | उल्क 25/03/2035  |
| पिंग 04/02/2034  | भ्राम 12/03/2034 | भद्रि 24/06/2034 | उल्क 09/11/2034  | सिद्ध 30/04/2035 |
| धांय 06/02/2034  | भद्रि 25/03/2034 | उल्क 15/07/2034  | सिद्ध 09/12/2034 | संक 09/06/2035   |
| भ्राम 08/02/2034 | उल्क 09/04/2034  | सिद्ध 07/08/2034 | संक 12/01/2035   | मंग 15/06/2035   |
| भद्रि 11/02/2034 | सिद्ध 27/04/2034 | संक 03/09/2034   | मंग 16/01/2035   | पिंग 25/06/2035  |
| उल्क 14/02/2034  | संक 17/05/2034   | मंग 07/09/2034   | पिंग 24/01/2035  | धांय 10/07/2035  |
| सिद्ध 18/02/2034 | मंग 20/05/2034   | पिंग 14/09/2034  | धांय 06/02/2035  | भ्राम 30/07/2035 |
| संक 23/02/2034   | पिंग 25/05/2034  | धांय 24/09/2034  | भ्राम 23/02/2035 | भद्रि 25/08/2035 |
| धांय - सिद्ध     | धांय - संक       | धांय - मंग       | धांय - पिंग      | भ्राम - भ्राम    |
| 25/08/2035       | 25/03/2036       | 23/11/2036       | 24/12/2036       | 22/02/2037       |
| 25/03/2036       | 23/11/2036       | 24/12/2036       | 22/02/2037       | 04/08/2037       |
| सिद्ध 05/10/2035 | संक 18/05/2036   | मंग 24/11/2036   | पिंग 27/12/2036  | भ्राम 13/03/2037 |
| संक 21/11/2035   | मंग 25/05/2036   | पिंग 26/11/2036  | धांय 01/01/2037  | भद्रि 04/04/2037 |
| मंग 27/11/2035   | पिंग 07/06/2036  | धांय 28/11/2036  | भ्राम 08/01/2037 | उल्क 01/05/2037  |
| पिंग 09/12/2035  | धांय 27/06/2036  | भ्राम 02/12/2036 | भद्रि 16/01/2037 | सिद्ध 02/06/2037 |
| धांय 27/12/2035  | भ्राम 24/07/2036 | भद्रि 06/12/2036 | उल्क 26/01/2037  | संक 08/07/2037   |
| भ्राम 20/01/2036 | भद्रि 27/08/2036 | उल्क 11/12/2036  | सिद्ध 07/02/2037 | मंग 12/07/2037   |
| भद्रि 18/02/2036 | उल्क 07/10/2036  | सिद्ध 17/12/2036 | संक 21/02/2037   | पिंग 21/07/2037  |
| उल्क 25/03/2036  | सिद्ध 23/11/2036 | संक 24/12/2036   | मंग 22/02/2037   | धांय 04/08/2037  |

## कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मकर 3 वर्ष 6 मास 6 दिन

कुल दशाकाल : 85 वर्ष

तिथि : अश्विनी - 2 सव्य

देह : मकर जीव : मिथुन

| मकर 4 वर्ष         | कुम्भ 4 वर्ष       | मीन 10 वर्ष        | वृश्चिक 7 वर्ष     | तुला 16 वर्ष       |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 25/02/1966         | 01/09/1969         | 01/09/1973         | 02/09/1983         | 01/09/1990         |
| 01/09/1969         | 01/09/1973         | 02/09/1983         | 01/09/1990         | 01/09/2006         |
| 00/00/0000         | कुंभ 09/11/1969    | मीन 05/11/1974     | वृश्चिक 30/03/1984 | तुला 05/09/1993    |
| 25/02/1966         | मीन 30/04/1970     | वृश्चिक 02/09/1975 | तुला 24/07/1985    | कन्या 17/05/1995   |
| मीन 08/07/1966     | वृश्चिक 28/08/1970 | तुला 20/07/1977    | कन्या 21/04/1986   | कर्क 30/04/1999    |
| वृश्चिक 05/11/1966 | तुला 30/05/1971    | कन्या 11/08/1978   | कर्क 13/01/1988    | सिंह 08/04/2000    |
| तुला 07/08/1967    | कन्या 01/11/1971   | कर्क 29/01/1981    | सिंह 11/06/1988    | मिथु 18/12/2001    |
| कन्या 09/01/1968   | कर्क 27/10/1972    | सिंह 01/09/1981    | मिथु 09/03/1989    | मक 19/09/2002      |
| कर्क 04/01/1969    | सिंह 21/01/1973    | मिथु 23/09/1982    | मक 07/07/1989      | कुंभ 21/06/2003    |
| सिंह 30/03/1969    | मिथु 24/06/1973    | मक 14/03/1983      | कुंभ 05/11/1989    | मीन 08/05/2005     |
| मिथु 01/09/1969    | मक 01/09/1973      | कुंभ 02/09/1983    | मीन 01/09/1990     | वृश्चिक 01/09/2006 |
| कन्या 9 वर्ष       | कर्क 21 वर्ष       | सिंह 5 वर्ष        | मिथुन 9 वर्ष       | मकर 4 वर्ष         |
| 01/09/2006         | 02/09/2015         | 01/09/2036         | 01/09/2041         | 01/09/2050         |
| 02/09/2015         | 01/09/2036         | 01/09/2041         | 01/09/2050         | 00/00/0000         |
| कन्या 15/08/2007   | कर्क 09/11/2020    | सिंह 17/12/2036    | मिथु 15/08/2042    | मक 09/11/2050      |
| कर्क 05/11/2009    | सिंह 03/02/2022    | मिथु 29/06/2037    | मक 17/01/2043      | कुंभ 17/01/2051    |
| सिंह 17/05/2010    | मिथु 25/04/2024    | मक 23/09/2037      | कुंभ 21/06/2043    | मीन 25/02/2051     |
| मिथु 30/04/2011    | मक 21/04/2025      | कुंभ 18/12/2037    | मीन 11/07/2044     | 00/00/0000         |
| मक 02/10/2011      | कुंभ 17/04/2026    | मीन 20/07/2038     | वृश्चिक 08/04/2045 | 00/00/0000         |
| कुंभ 04/03/2012    | मीन 05/10/2028     | वृश्चिक 18/12/2038 | तुला 18/12/2046    | 00/00/0000         |
| मीन 26/03/2013     | वृश्चिक 29/06/2030 | तुला 27/11/2039    | कन्या 01/12/2047   | 00/00/0000         |
| वृश्चिक 22/12/2013 | तुला 12/06/2034    | कन्या 07/06/2040   | कर्क 20/02/2050    | 00/00/0000         |
| तुला 02/09/2015    | कन्या 01/09/2036   | कर्क 01/09/2041    | सिंह 01/09/2050    | 00/00/0000         |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

|                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>कर्क - कुंभ</b><br><b>21/04/2025</b><br><b>17/04/2026</b>                                                                                                            | <b>कर्क - मीन</b><br><b>17/04/2026</b><br><b>05/10/2028</b>                                                                                                             | <b>कर्क - वृश्चि</b><br><b>05/10/2028</b><br><b>29/06/2030</b>                                                                                                          | <b>कर्क - तुला</b><br><b>29/06/2030</b><br><b>12/06/2034</b>                                                                                                            | <b>कर्क - कन्या</b><br><b>12/06/2034</b><br><b>01/09/2036</b>                                                                                                           |
| कुंभ 08/05/2025<br>मीन 19/06/2025<br>वृश्चि 19/07/2025<br>तुला 25/09/2025<br>कन्या 02/11/2025<br>कर्क 30/01/2026<br>सिंह 21/02/2026<br>मिथु 31/03/2026<br>मक 17/04/2026 | मीन 01/08/2026<br>वृश्चि 14/10/2026<br>तुला 02/04/2027<br>कन्या 07/07/2027<br>कर्क 15/02/2028<br>सिंह 08/04/2028<br>मिथु 12/07/2028<br>मक 24/08/2028<br>कुंभ 05/10/2028 | वृश्चि 26/11/2028<br>तुला 25/03/2029<br>कन्या 31/05/2029<br>कर्क 03/11/2029<br>सिंह 10/12/2029<br>मिथु 15/02/2030<br>मक 17/03/2030<br>कुंभ 16/04/2030<br>मीन 29/06/2030 | तुला 28/03/2031<br>कन्या 28/08/2031<br>कर्क 18/08/2032<br>सिंह 11/11/2032<br>मिथु 13/04/2033<br>मक 20/06/2033<br>कुंभ 27/08/2033<br>मीन 13/02/2034<br>वृश्चि 12/06/2034 | कन्या 06/09/2034<br>कर्क 25/03/2035<br>सिंह 12/05/2035<br>मिथु 06/08/2035<br>मक 13/09/2035<br>कुंभ 22/10/2035<br>मीन 25/01/2036<br>वृश्चि 01/04/2036<br>तुला 01/09/2036 |
| <b>सिंह - सिंह</b><br><b>01/09/2036</b><br><b>17/12/2036</b>                                                                                                            | <b>सिंह - मिथु</b><br><b>17/12/2036</b><br><b>29/06/2037</b>                                                                                                            | <b>सिंह - मक</b><br><b>29/06/2037</b><br><b>23/09/2037</b>                                                                                                              | <b>सिंह - कुंभ</b><br><b>23/09/2037</b><br><b>18/12/2037</b>                                                                                                            | <b>सिंह - मीन</b><br><b>18/12/2037</b><br><b>20/07/2038</b>                                                                                                             |
| सिंह 07/09/2036<br>मिथु 19/09/2036<br>मक 24/09/2036<br>कुंभ 29/09/2036<br>मीन 11/10/2036<br>वृश्चि 20/10/2036<br>तुला 09/11/2036<br>कन्या 21/11/2036<br>कर्क 17/12/2036 | मिथु 07/01/2037<br>मक 16/01/2037<br>कुंभ 25/01/2037<br>मीन 17/02/2037<br>वृश्चि 05/03/2037<br>तुला 10/04/2037<br>कन्या 01/05/2037<br>कर्क 17/06/2037<br>सिंह 29/06/2037 | मक 03/07/2037<br>कुंभ 07/07/2037<br>मीन 17/07/2037<br>वृश्चि 24/07/2037<br>तुला 09/08/2037<br>कन्या 18/08/2037<br>कर्क 09/09/2037<br>सिंह 14/09/2037<br>मिथु 23/09/2037 | कुंभ 27/09/2037<br>मीन 07/10/2037<br>वृश्चि 14/10/2037<br>तुला 30/10/2037<br>कन्या 08/11/2037<br>कर्क 29/11/2037<br>सिंह 04/12/2037<br>मिथु 14/12/2037<br>मक 18/12/2037 | मीन 12/01/2038<br>वृश्चि 30/01/2038<br>तुला 11/03/2038<br>कन्या 03/04/2038<br>कर्क 26/05/2038<br>सिंह 07/06/2038<br>मिथु 30/06/2038<br>मक 10/07/2038<br>कुंभ 20/07/2038 |
| <b>सिंह - वृश्चि</b><br><b>20/07/2038</b><br><b>18/12/2038</b>                                                                                                          | <b>सिंह - तुला</b><br><b>18/12/2038</b><br><b>27/11/2039</b>                                                                                                            | <b>सिंह - कन्या</b><br><b>27/11/2039</b><br><b>07/06/2040</b>                                                                                                           | <b>सिंह - कर्क</b><br><b>07/06/2040</b><br><b>01/09/2041</b>                                                                                                            | <b>मिथु - मिथु</b><br><b>01/09/2041</b><br><b>15/08/2042</b>                                                                                                            |
| वृश्चि 02/08/2038<br>तुला 30/08/2038<br>कन्या 15/09/2038<br>कर्क 22/10/2038<br>सिंह 31/10/2038<br>मिथु 16/11/2038<br>मक 23/11/2038<br>कुंभ 30/11/2038<br>मीन 18/12/2038 | तुला 21/02/2039<br>कन्या 29/03/2039<br>कर्क 22/06/2039<br>सिंह 12/07/2039<br>मिथु 18/08/2039<br>मक 03/09/2039<br>कुंभ 19/09/2039<br>मीन 29/10/2039<br>वृश्चि 27/11/2039 | कन्या 17/12/2039<br>कर्क 03/02/2040<br>सिंह 14/02/2040<br>मिथु 06/03/2040<br>मक 15/03/2040<br>कुंभ 24/03/2040<br>मीन 16/04/2040<br>वृश्चि 02/05/2040<br>तुला 07/06/2040 | कर्क 26/09/2040<br>सिंह 23/10/2040<br>मिथु 10/12/2040<br>मक 31/12/2040<br>कुंभ 21/01/2041<br>मीन 15/03/2041<br>वृश्चि 21/04/2041<br>तुला 15/07/2041<br>कन्या 01/09/2041 | मिथु 08/10/2041<br>मक 24/10/2041<br>कुंभ 10/11/2041<br>मीन 21/12/2041<br>वृश्चि 18/01/2042<br>तुला 25/03/2042<br>कन्या 01/05/2042<br>कर्क 26/07/2042<br>सिंह 15/08/2042 |

## कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

| मिथु - मक<br>15/08/2042<br>17/01/2043                                                                                                                                   | मिथु - कुंभ<br>17/01/2043<br>21/06/2043                                                                                                                                 | मिथु - मीन<br>21/06/2043<br>11/07/2044                                                                                                                                  | मिथु - वृश्चि<br>11/07/2044<br>08/04/2045                                                                                                                               | मिथु - तुला<br>08/04/2045<br>18/12/2046                                                                                                                                 |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| मक 23/08/2042<br>कुंभ 30/08/2042<br>मीन 17/09/2042<br>वृश्चि 30/09/2042<br>तुला 29/10/2042<br>कन्या 14/11/2042<br>कर्क 22/12/2042<br>सिंह 01/01/2043<br>मिथु 17/01/2043 | कुंभ 24/01/2043<br>मीन 11/02/2043<br>वृश्चि 24/02/2043<br>तुला 25/03/2043<br>कन्या 11/04/2043<br>कर्क 19/05/2043<br>सिंह 28/05/2043<br>मिथु 13/06/2043<br>मक 21/06/2043 | मीन 05/08/2043<br>वृश्चि 06/09/2043<br>तुला 18/11/2043<br>कन्या 29/12/2043<br>कर्क 02/04/2044<br>सिंह 25/04/2044<br>मिथु 05/06/2044<br>मक 23/06/2044<br>कुंभ 11/07/2044 | वृश्चि 03/08/2044<br>तुला 23/09/2044<br>कन्या 21/10/2044<br>कर्क 27/12/2044<br>सिंह 12/01/2045<br>मिथु 10/02/2045<br>मक 22/02/2045<br>कुंभ 07/03/2045<br>मीन 08/04/2045 | तुला 03/08/2045<br>कन्या 07/10/2045<br>कर्क 09/03/2046<br>सिंह 14/04/2046<br>मिथु 19/06/2046<br>मक 18/07/2046<br>कुंभ 16/08/2046<br>मीन 28/10/2046<br>वृश्चि 18/12/2046 |
| मिथु - कन्या<br>18/12/2046<br>01/12/2047                                                                                                                                | मिथु - कर्क<br>01/12/2047<br>20/02/2050                                                                                                                                 | मिथु - सिंह<br>20/02/2050<br>01/09/2050                                                                                                                                 | मक - मक<br>01/09/2050<br>09/11/2050                                                                                                                                     | मक - कुंभ<br>09/11/2050<br>17/01/2051                                                                                                                                   |
| कन्या 24/01/2047<br>कर्क 20/04/2047<br>सिंह 10/05/2047<br>मिथु 16/06/2047<br>मक 02/07/2047<br>कुंभ 19/07/2047<br>मीन 29/08/2047<br>वृश्चि 26/09/2047<br>तुला 01/12/2047 | कर्क 19/06/2048<br>सिंह 05/08/2048<br>मिथु 30/10/2048<br>मक 08/12/2048<br>कुंभ 15/01/2049<br>मीन 20/04/2049<br>वृश्चि 26/06/2049<br>तुला 26/11/2049<br>कन्या 20/02/2050 | सिंह 03/03/2050<br>मिथु 24/03/2050<br>मक 02/04/2050<br>कुंभ 11/04/2050<br>मीन 04/05/2050<br>वृश्चि 20/05/2050<br>तुला 25/06/2050<br>कन्या 16/07/2050<br>कर्क 01/09/2050 | मक 05/09/2050<br>कुंभ 08/09/2050<br>मीन 16/09/2050<br>वृश्चि 22/09/2050<br>तुला 05/10/2050<br>कन्या 12/10/2050<br>कर्क 29/10/2050<br>सिंह 02/11/2050<br>मिथु 09/11/2050 | कुंभ 12/11/2050<br>मीन 20/11/2050<br>वृश्चि 26/11/2050<br>तुला 09/12/2050<br>कन्या 16/12/2050<br>कर्क 02/01/2051<br>सिंह 06/01/2051<br>मिथु 14/01/2051<br>मक 17/01/2051 |
| मक - मीन<br>17/01/2051<br>00/00/0000                                                                                                                                    |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |
| मीन 06/02/2051<br>वृश्चि 20/02/2051<br>तुला 25/02/2051<br>00/00/0000<br>00/00/0000<br>00/00/0000<br>00/00/0000<br>00/00/0000<br>00/00/0000                              |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                                                         |

## चर दशा

### भोग्य दशा काल : कुम्भ 9 वर्ष 0 मास 0 दिन

| कुम्भ 9 वर्ष |            |
|--------------|------------|
| 25/02/1966   | 25/02/1975 |
| मीन          | 26/11/1966 |
| मेष          | 27/08/1967 |
| वृष          | 27/05/1968 |
| मिथु         | 25/02/1969 |
| कर्क         | 25/11/1969 |
| सिंह         | 26/08/1970 |
| कन्या        | 27/05/1971 |
| तुला         | 25/02/1972 |
| वृश्चि       | 25/11/1972 |
| धनु          | 26/08/1973 |
| मक           | 27/05/1974 |
| कुंभ         | 25/02/1975 |

| मिथुन 8 वर्ष |            |
|--------------|------------|
| 25/02/2003   | 25/02/2011 |
| वृष          | 27/10/2003 |
| मेष          | 26/06/2004 |
| मीन          | 25/02/2005 |
| कुंभ         | 26/10/2005 |
| मक           | 27/06/2006 |
| धनु          | 25/02/2007 |
| वृश्चि       | 27/10/2007 |
| तुला         | 26/06/2008 |
| कन्या        | 25/02/2009 |
| सिंह         | 26/10/2009 |
| कर्क         | 27/06/2010 |
| मिथु         | 25/02/2011 |

| तुला 3 वर्ष |            |
|-------------|------------|
| 25/02/2027  | 25/02/2030 |
| वृश्चि      | 27/05/2027 |
| धनु         | 27/08/2027 |
| मक          | 26/11/2027 |
| कुंभ        | 25/02/2028 |
| मीन         | 27/05/2028 |
| मेष         | 26/08/2028 |
| वृष         | 25/11/2028 |
| मिथु        | 25/02/2029 |
| कर्क        | 27/05/2029 |
| सिंह        | 26/08/2029 |
| कन्या       | 25/11/2029 |
| तुला        | 25/02/2030 |

| मीन 10 वर्ष |            |
|-------------|------------|
| 25/02/1975  | 25/02/1985 |
| मेष         | 26/12/1975 |
| वृष         | 26/10/1976 |
| मिथु        | 26/08/1977 |
| कर्क        | 27/06/1978 |
| सिंह        | 27/04/1979 |
| कन्या       | 25/02/1980 |
| तुला        | 26/12/1980 |
| वृश्चि      | 26/10/1981 |
| धनु         | 26/08/1982 |
| मक          | 27/06/1983 |
| कुंभ        | 26/04/1984 |
| मीन         | 25/02/1985 |

| कर्क 3 वर्ष |            |
|-------------|------------|
| 25/02/2011  | 25/02/2014 |
| मिथु        | 27/05/2011 |
| वृष         | 27/08/2011 |
| मेष         | 26/11/2011 |
| मीन         | 25/02/2012 |
| कुंभ        | 27/05/2012 |
| मक          | 26/08/2012 |
| धनु         | 25/11/2012 |
| वृश्चि      | 25/02/2013 |
| तुला        | 27/05/2013 |
| कन्या       | 26/08/2013 |
| सिंह        | 25/11/2013 |
| कर्क        | 25/02/2014 |

| वृश्चिक 3 वर्ष |            |
|----------------|------------|
| 25/02/2030     | 25/02/2033 |
| तुला           | 27/05/2030 |
| कन्या          | 26/08/2030 |
| सिंह           | 26/11/2030 |
| कर्क           | 25/02/2031 |
| मिथु           | 27/05/2031 |
| वृष            | 27/08/2031 |
| मेष            | 26/11/2031 |
| मीन            | 25/02/2032 |
| कुंभ           | 27/05/2032 |
| मक             | 26/08/2032 |
| धनु            | 25/11/2032 |
| वृश्चि         | 25/02/2033 |

| मेष 10 वर्ष |            |
|-------------|------------|
| 25/02/1985  | 25/02/1995 |
| वृष         | 26/12/1985 |
| मिथु        | 26/10/1986 |
| कर्क        | 27/08/1987 |
| सिंह        | 26/06/1988 |
| कन्या       | 26/04/1989 |
| तुला        | 25/02/1990 |
| वृश्चि      | 26/12/1990 |
| धनु         | 27/10/1991 |
| मक          | 26/08/1992 |
| कुंभ        | 26/06/1993 |
| मीन         | 27/04/1994 |
| मेष         | 25/02/1995 |

| सिंह 6 वर्ष |            |
|-------------|------------|
| 25/02/2014  | 25/02/2020 |
| कन्या       | 26/08/2014 |
| तुला        | 25/02/2015 |
| वृश्चि      | 27/08/2015 |
| धनु         | 25/02/2016 |
| मक          | 26/08/2016 |
| कुंभ        | 25/02/2017 |
| मीन         | 26/08/2017 |
| मेष         | 25/02/2018 |
| वृष         | 26/08/2018 |
| मिथु        | 25/02/2019 |
| कर्क        | 27/08/2019 |
| सिंह        | 25/02/2020 |

| धनु 5 वर्ष |            |
|------------|------------|
| 25/02/2033 | 25/02/2038 |
| वृश्चि     | 27/07/2033 |
| तुला       | 26/12/2033 |
| कन्या      | 27/05/2034 |
| सिंह       | 26/10/2034 |
| कर्क       | 27/03/2035 |
| मिथु       | 27/08/2035 |
| वृष        | 26/01/2036 |
| मेष        | 26/06/2036 |
| मीन        | 25/11/2036 |
| कुंभ       | 26/04/2037 |
| मक         | 26/09/2037 |
| धनु        | 25/02/2038 |

| वृष 8 वर्ष |            |
|------------|------------|
| 25/02/1995 | 25/02/2003 |
| मेष        | 27/10/1995 |
| मीन        | 26/06/1996 |
| कुंभ       | 25/02/1997 |
| मक         | 26/10/1997 |
| धनु        | 27/06/1998 |
| वृश्चि     | 25/02/1999 |
| तुला       | 27/10/1999 |
| कन्या      | 26/06/2000 |
| सिंह       | 25/02/2001 |
| कर्क       | 26/10/2001 |
| मिथु       | 27/06/2002 |
| वृष        | 25/02/2003 |

| कन्या 7 वर्ष |            |
|--------------|------------|
| 25/02/2020   | 25/02/2027 |
| तुला         | 25/09/2020 |
| वृश्चि       | 26/04/2021 |
| धनु          | 25/11/2021 |
| मक           | 27/06/2022 |
| कुंभ         | 26/01/2023 |
| मीन          | 27/08/2023 |
| मेष          | 27/03/2024 |
| वृष          | 26/10/2024 |
| मिथु         | 27/05/2025 |
| कर्क         | 26/12/2025 |
| सिंह         | 27/07/2026 |
| कन्या        | 25/02/2027 |

| मकर 11 वर्ष |            |
|-------------|------------|
| 25/02/2038  | 25/02/2049 |
| धनु         | 26/01/2039 |
| वृश्चि      | 26/12/2039 |
| तुला        | 25/11/2040 |
| कन्या       | 26/10/2041 |
| सिंह        | 26/09/2042 |
| कर्क        | 27/08/2043 |
| मिथु        | 26/07/2044 |
| वृष         | 26/06/2045 |
| मेष         | 27/05/2046 |
| मीन         | 27/04/2047 |
| कुंभ        | 27/03/2048 |
| मक          | 25/02/2049 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

## चर दशा - प्रत्यन्तर

| कन्या - कर्क      | कन्या - सिंह      | कन्या - कन्या     | तुला - वृश्चि     | तुला - धनु        |
|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|
| 27/05/2025        | 26/12/2025        | 27/07/2026        | 25/02/2027        | 27/05/2027        |
| 26/12/2025        | 27/07/2026        | 25/02/2027        | 27/05/2027        | 27/08/2027        |
| मिथु 14/06/2025   | कन्या 13/01/2026  | तुला 14/08/2026   | तुला 05/03/2027   | वृश्चि 04/06/2027 |
| वृष 01/07/2025    | तुला 30/01/2026   | वृश्चि 31/08/2026 | कन्या 12/03/2027  | तुला 12/06/2027   |
| मेष 19/07/2025    | वृश्चि 17/02/2026 | धनु 18/09/2026    | सिंह 20/03/2027   | कन्या 19/06/2027  |
| मीन 06/08/2025    | धनु 07/03/2026    | मक 06/10/2026     | कर्क 27/03/2027   | सिंह 27/06/2027   |
| कुंभ 24/08/2025   | मक 25/03/2026     | कुंभ 24/10/2026   | मिथु 04/04/2027   | कर्क 04/07/2027   |
| मक 10/09/2025     | कुंभ 11/04/2026   | मीन 11/11/2026    | वृष 12/04/2027    | मिथु 12/07/2027   |
| धनु 28/09/2025    | मीन 29/04/2026    | मेष 28/11/2026    | मेष 19/04/2027    | वृष 20/07/2027    |
| वृश्चि 16/10/2025 | मेष 17/05/2026    | वृष 16/12/2026    | मीन 27/04/2027    | मेष 27/07/2027    |
| तुला 03/11/2025   | वृष 04/06/2026    | मिथु 03/01/2027   | कुंभ 05/05/2027   | मीन 04/08/2027    |
| कन्या 20/11/2025  | मिथु 21/06/2026   | कर्क 21/01/2027   | मक 12/05/2027     | कुंभ 11/08/2027   |
| सिंह 08/12/2025   | कर्क 09/07/2026   | सिंह 07/02/2027   | धनु 20/05/2027    | मक 19/08/2027     |
| कर्क 26/12/2025   | सिंह 27/07/2026   | कन्या 25/02/2027  | वृश्चि 27/05/2027 | धनु 27/08/2027    |
| तुला - मक         | तुला - कुंभ       | तुला - मीन        | तुला - मेष        | तुला - वृष        |
| 27/08/2027        | 26/11/2027        | 25/02/2028        | 27/05/2028        | 26/08/2028        |
| 26/11/2027        | 25/02/2028        | 27/05/2028        | 26/08/2028        | 25/11/2028        |
| धनु 03/09/2027    | मीन 04/12/2027    | मेष 04/03/2028    | वृष 03/06/2028    | मेष 03/09/2028    |
| वृश्चि 11/09/2027 | मेष 11/12/2027    | वृष 12/03/2028    | मिथु 11/06/2028   | मीन 10/09/2028    |
| तुला 18/09/2027   | वृष 19/12/2027    | मिथु 19/03/2028   | कर्क 18/06/2028   | कुंभ 18/09/2028   |
| कन्या 26/09/2027  | मिथु 26/12/2027   | कर्क 27/03/2028   | सिंह 26/06/2028   | मक 25/09/2028     |
| सिंह 04/10/2027   | कर्क 03/01/2028   | सिंह 03/04/2028   | कन्या 04/07/2028  | धनु 03/10/2028    |
| कर्क 11/10/2027   | सिंह 11/01/2028   | कन्या 11/04/2028  | तुला 11/07/2028   | वृश्चि 11/10/2028 |
| मिथु 19/10/2027   | कन्या 18/01/2028  | तुला 19/04/2028   | वृश्चि 19/07/2028 | तुला 18/10/2028   |
| वृष 27/10/2027    | तुला 26/01/2028   | वृश्चि 26/04/2028 | धनु 26/07/2028    | कन्या 26/10/2028  |
| मेष 03/11/2027    | वृश्चि 02/02/2028 | धनु 04/05/2028    | मक 03/08/2028     | सिंह 02/11/2028   |
| मीन 11/11/2027    | धनु 10/02/2028    | मक 11/05/2028     | कुंभ 11/08/2028   | कर्क 10/11/2028   |
| कुंभ 18/11/2027   | मक 18/02/2028     | कुंभ 19/05/2028   | मीन 18/08/2028    | मिथु 18/11/2028   |
| मक 26/11/2027     | कुंभ 25/02/2028   | मीन 27/05/2028    | मेष 26/08/2028    | वृष 25/11/2028    |
| तुला - मिथु       | तुला - कर्क       | तुला - सिंह       | तुला - कन्या      | तुला - तुला       |
| 25/11/2028        | 25/02/2029        | 27/05/2029        | 26/08/2029        | 25/11/2029        |
| 25/02/2029        | 27/05/2029        | 26/08/2029        | 25/11/2029        | 25/02/2030        |
| वृष 03/12/2028    | मिथु 04/03/2029   | कन्या 03/06/2029  | तुला 03/09/2029   | वृश्चि 03/12/2029 |
| मेष 10/12/2028    | वृष 12/03/2029    | तुला 11/06/2029   | वृश्चि 10/09/2029 | धनु 11/12/2029    |
| मीन 18/12/2028    | मेष 19/03/2029    | वृश्चि 19/06/2029 | धनु 18/09/2029    | मक 18/12/2029     |
| कुंभ 26/12/2028   | मीन 27/03/2029    | धनु 26/06/2029    | मक 26/09/2029     | कुंभ 26/12/2029   |
| मक 02/01/2029     | कुंभ 04/04/2029   | मक 04/07/2029     | कुंभ 03/10/2029   | मीन 03/01/2030    |
| धनु 10/01/2029    | मक 11/04/2029     | कुंभ 12/07/2029   | मीन 11/10/2029    | मेष 10/01/2030    |
| वृश्चि 17/01/2029 | धनु 19/04/2029    | मीन 19/07/2029    | मेष 18/10/2029    | वृष 18/01/2030    |
| तुला 25/01/2029   | वृश्चि 26/04/2029 | मेष 27/07/2029    | वृष 26/10/2029    | मिथु 25/01/2030   |
| कन्या 02/02/2029  | तुला 04/05/2029   | वृष 03/08/2029    | मिथु 03/11/2029   | कर्क 02/02/2030   |
| सिंह 09/02/2029   | कन्या 12/05/2029  | मिथु 11/08/2029   | कर्क 10/11/2029   | सिंह 10/02/2030   |
| कर्क 17/02/2029   | सिंह 19/05/2029   | कर्क 19/08/2029   | सिंह 18/11/2029   | कन्या 17/02/2030  |
| मिथु 25/02/2029   | कर्क 27/05/2029   | सिंह 26/08/2029   | कन्या 25/11/2029  | तुला 25/02/2030   |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## चर दशा - प्रत्यन्तर

|                                                                                                                                                                                                                               |                                                                                                                                                                                                                               |                                                                                                                                                                                                                               |                                                                                                                                                                                                                               |                                                                                                                                                                                                                               |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>वृश्चि - तुला</b><br><b>25/02/2030</b><br><b>27/05/2030</b>                                                                                                                                                                | <b>वृश्चि - कन्या</b><br><b>27/05/2030</b><br><b>26/08/2030</b>                                                                                                                                                               | <b>वृश्चि - सिंह</b><br><b>26/08/2030</b><br><b>26/11/2030</b>                                                                                                                                                                | <b>वृश्चि - कर्क</b><br><b>26/11/2030</b><br><b>25/02/2031</b>                                                                                                                                                                | <b>वृश्चि - मिथु</b><br><b>25/02/2031</b><br><b>27/05/2031</b>                                                                                                                                                                |
| वृश्चि 04/03/2030<br>धनु 12/03/2030<br>मक 20/03/2030<br>कुंभ 27/03/2030<br>मीन 04/04/2030<br>मेष 11/04/2030<br>वृष 19/04/2030<br>मिथु 27/04/2030<br>कर्क 04/05/2030<br>सिंह 12/05/2030<br>कन्या 19/05/2030<br>तुला 27/05/2030 | तुला 04/06/2030<br>वृश्चि 11/06/2030<br>धनु 19/06/2030<br>मक 27/06/2030<br>कुंभ 04/07/2030<br>मीन 12/07/2030<br>मेष 19/07/2030<br>वृष 27/07/2030<br>मिथु 04/08/2030<br>कर्क 11/08/2030<br>सिंह 19/08/2030<br>कन्या 26/08/2030 | कन्या 03/09/2030<br>तुला 11/09/2030<br>वृश्चि 18/09/2030<br>धनु 26/09/2030<br>मक 03/10/2030<br>कुंभ 11/10/2030<br>मीन 19/10/2030<br>मेष 26/10/2030<br>वृष 03/11/2030<br>मिथु 11/11/2030<br>कर्क 18/11/2030<br>सिंह 26/11/2030 | मिथु 03/12/2030<br>वृष 11/12/2030<br>मेष 19/12/2030<br>मीन 26/12/2030<br>कुंभ 03/01/2031<br>मक 10/01/2031<br>धनु 18/01/2031<br>वृश्चि 26/01/2031<br>तुला 02/02/2031<br>कन्या 10/02/2031<br>सिंह 17/02/2031<br>कर्क 25/02/2031 | वृष 05/03/2031<br>मेष 12/03/2031<br>मीन 20/03/2031<br>कुंभ 27/03/2031<br>मक 04/04/2031<br>धनु 12/04/2031<br>वृश्चि 19/04/2031<br>तुला 27/04/2031<br>कन्या 05/05/2031<br>सिंह 12/05/2031<br>कर्क 20/05/2031<br>मिथु 27/05/2031 |
| <b>वृश्चि - वृष</b><br><b>27/05/2031</b><br><b>27/08/2031</b>                                                                                                                                                                 | <b>वृश्चि - मेष</b><br><b>27/08/2031</b><br><b>26/11/2031</b>                                                                                                                                                                 | <b>वृश्चि - मीन</b><br><b>26/11/2031</b><br><b>25/02/2032</b>                                                                                                                                                                 | <b>वृश्चि - कुंभ</b><br><b>25/02/2032</b><br><b>27/05/2032</b>                                                                                                                                                                | <b>वृश्चि - मक</b><br><b>27/05/2032</b><br><b>26/08/2032</b>                                                                                                                                                                  |
| मेष 04/06/2031<br>मीन 12/06/2031<br>कुंभ 19/06/2031<br>मक 27/06/2031<br>धनु 04/07/2031<br>वृश्चि 12/07/2031<br>तुला 20/07/2031<br>कन्या 27/07/2031<br>सिंह 04/08/2031<br>कर्क 11/08/2031<br>मिथु 19/08/2031<br>वृष 27/08/2031 | वृष 03/09/2031<br>मिथु 11/09/2031<br>कर्क 18/09/2031<br>सिंह 26/09/2031<br>कन्या 04/10/2031<br>तुला 11/10/2031<br>वृश्चि 19/10/2031<br>धनु 27/10/2031<br>मक 03/11/2031<br>कुंभ 11/11/2031<br>मीन 18/11/2031<br>मेष 26/11/2031 | मेष 04/12/2031<br>वृष 11/12/2031<br>मिथु 19/12/2031<br>कर्क 26/12/2031<br>सिंह 03/01/2032<br>कन्या 11/01/2032<br>तुला 18/01/2032<br>वृश्चि 26/01/2032<br>धनु 02/02/2032<br>मक 10/02/2032<br>कुंभ 18/02/2032<br>मीन 25/02/2032 | मीन 04/03/2032<br>मेष 12/03/2032<br>वृष 19/03/2032<br>मिथु 27/03/2032<br>कर्क 03/04/2032<br>सिंह 11/04/2032<br>कन्या 19/04/2032<br>तुला 26/04/2032<br>वृश्चि 04/05/2032<br>धनु 11/05/2032<br>मक 19/05/2032<br>कुंभ 27/05/2032 | धनु 03/06/2032<br>वृश्चि 11/06/2032<br>तुला 18/06/2032<br>कन्या 26/06/2032<br>सिंह 04/07/2032<br>कर्क 11/07/2032<br>मिथु 19/07/2032<br>वृष 26/07/2032<br>मेष 03/08/2032<br>मीन 11/08/2032<br>कुंभ 18/08/2032<br>मक 26/08/2032 |
| <b>वृश्चि - धनु</b><br><b>26/08/2032</b><br><b>25/11/2032</b>                                                                                                                                                                 | <b>वृश्चि - वृश्चि</b><br><b>25/11/2032</b><br><b>25/02/2033</b>                                                                                                                                                              | <b>धनु - वृश्चि</b><br><b>25/02/2033</b><br><b>27/07/2033</b>                                                                                                                                                                 | <b>धनु - तुला</b><br><b>27/07/2033</b><br><b>26/12/2033</b>                                                                                                                                                                   | <b>धनु - कन्या</b><br><b>26/12/2033</b><br><b>27/05/2034</b>                                                                                                                                                                  |
| वृश्चि 03/09/2032<br>तुला 10/09/2032<br>कन्या 18/09/2032<br>सिंह 25/09/2032<br>कर्क 03/10/2032<br>मिथु 11/10/2032<br>वृष 18/10/2032<br>मेष 26/10/2032<br>मीन 02/11/2032<br>कुंभ 10/11/2032<br>मक 18/11/2032<br>धनु 25/11/2032 | तुला 03/12/2032<br>कन्या 10/12/2032<br>सिंह 18/12/2032<br>कर्क 26/12/2032<br>मिथु 02/01/2033<br>वृष 10/01/2033<br>मेष 17/01/2033<br>मीन 25/01/2033<br>कुंभ 02/02/2033<br>मक 09/02/2033<br>धनु 17/02/2033<br>वृश्चि 25/02/2033 | तुला 09/03/2033<br>कन्या 22/03/2033<br>सिंह 04/04/2033<br>कर्क 16/04/2033<br>मिथु 29/04/2033<br>वृष 12/05/2033<br>मेष 24/05/2033<br>मीन 06/06/2033<br>कुंभ 19/06/2033<br>मक 01/07/2033<br>धनु 14/07/2033<br>वृश्चि 27/07/2033 | वृश्चि 08/08/2033<br>धनु 21/08/2033<br>मक 03/09/2033<br>कुंभ 15/09/2033<br>मीन 28/09/2033<br>मेष 11/10/2033<br>वृष 24/10/2033<br>मिथु 05/11/2033<br>कर्क 18/11/2033<br>सिंह 01/12/2033<br>कन्या 13/12/2033<br>तुला 26/12/2033 | तुला 08/01/2034<br>वृश्चि 20/01/2034<br>धनु 02/02/2034<br>मक 15/02/2034<br>कुंभ 27/02/2034<br>मीन 12/03/2034<br>मेष 25/03/2034<br>वृष 06/04/2034<br>मिथु 19/04/2034<br>कर्क 02/05/2034<br>सिंह 14/05/2034<br>कन्या 27/05/2034 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

|              |                          |
|--------------|--------------------------|
| मूलांक       | 7                        |
| भाग्यांक     | 4                        |
| मित्र अंक    | 2, 3, 6, 7, 4            |
| शत्रु अंक    | 5, 8                     |
| शुभ वर्ष     | 25,34,43,52,61           |
| शुभ दिन      | शुक्र, शनि, मंगल         |
| शुभ ग्रह     | शुक्र, शनि, मंगल         |
| मित्र राशि   | कर्क, धनु                |
| मित्र लग्न   | वृष, तुला, धनु           |
| अनुकूल देवता | हनुमान                   |
| शुभ रत्न     | नीलम                     |
| शुभ उपरत्न   | जमुनिया, बिलौर           |
| भाग्य रत्न   | हीरा                     |
| शुभ धातु     | लौह                      |
| शुभ रंग      | काला                     |
| शुभ दिशा     | पश्चिम                   |
| शुभ समय      | संध्या                   |
| दान पदार्थ   | कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह |
| दान अन्न     | उड़द                     |
| दान द्रव्य   | तेल                      |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

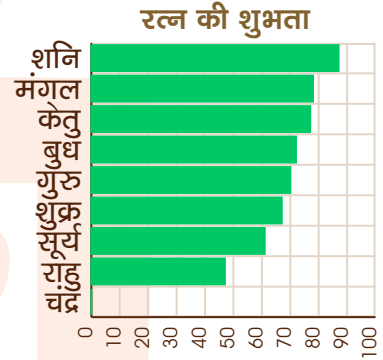


## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न     | ग्रह  | शुभता | क्षेत्र                                 |
|----------|-------|-------|-----------------------------------------|
| नीलम     | शनि   | 87%   | स्वास्थ्य, कम खर्च                      |
| मूंगा    | मंगल  | 78%   | स्वास्थ्य, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति   |
| लहसुनिया | केतु  | 77%   | व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य            |
| पन्ना    | बुध   | 72%   | स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव |
| पुखराज   | गुरु  | 70%   | सुख, धनार्जन, धन                        |
| हीरा     | शुक्र | 67%   | कम खर्च, सुख, भाग्योदय                  |
| माणिक्य  | सूर्य | 61%   | स्वास्थ्य, दम्पति                       |
| गोमेद    | राहु  | 47%   | ग्रह कलेश, व्यय                         |
| मोती     | चंद्र | 0%    | पराक्रम हानि, शत्रु व रोग               |



### दशानुसार रत्न विचार

| दशा   | समाप्ति    | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| केतु  | 24/05/1971 | 47%     | 0%   | 84%   | 72%   | 70%    | 73%  | 75%  | 22%   | 89%      |
| शुक्र | 24/05/1991 | 47%     | 0%   | 78%   | 78%   | 70%    | 80%  | 93%  | 55%   | 83%      |
| सूर्य | 23/05/1997 | 73%     | 12%  | 84%   | 72%   | 77%    | 55%  | 75%  | 22%   | 64%      |
| चंद्र | 24/05/2007 | 67%     | 25%  | 78%   | 78%   | 70%    | 67%  | 87%  | 22%   | 64%      |
| मंगल  | 23/05/2014 | 67%     | 12%  | 91%   | 59%   | 77%    | 67%  | 87%  | 22%   | 83%      |
| राहु  | 23/05/2032 | 47%     | 0%   | 66%   | 72%   | 70%    | 73%  | 93%  | 61%   | 64%      |
| गुरु  | 23/05/2048 | 67%     | 12%  | 84%   | 59%   | 83%    | 55%  | 87%  | 47%   | 77%      |
| शनि   | 24/05/2067 | 47%     | 0%   | 66%   | 78%   | 70%    | 73%  | 100% | 55%   | 64%      |
| बुध   | 23/05/2084 | 67%     | 0%   | 78%   | 84%   | 70%    | 73%  | 87%  | 47%   | 77%      |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।  
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

### आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम, मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा व लहसुनिया रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, पुखराज, हीरा एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

### नीलम

आपकी कुंडली में शनि लग्न भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। शनि रत्न नीलम आपकी परिश्रम क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करेगा। सरकारी पक्ष व पिता से सहयोग प्राप्त होगा। प्रथम भाव में स्थित शनि की दृष्टि तृतीय, सप्तम एवं दशम भाव पर आ रही है। शनि रत्न नीलम की शुभता से भाग्योदय, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा। भाई-बंधुओं से सुख-स्नेह प्राप्ति में भी यह रत्न सहयोग करेगा। नीलम रत्न आपके पुरुषार्थ भाव में वृद्धि कर रहे हैं।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात् शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

### मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रख सकते हैं। यह रत्न आपको पराक्रमी बनाये रखेगा और आपके साहस भाव को भी बढ़ायेगा। मूंगा रत्न आपके आत्मबल को ऊंच रख आपको कठिन से कठिन कार्य करने का सामर्थ्य देगा। समाज में आपको सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मंगल अपनी पूर्ण दृष्टि से चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। इसलिए मूंगा रत्न आपके लिए भूमि एवं वाहन सुख प्राप्त करने में सहयोगी होगा। इस रत्न को धारण करने से आपके आत्मविश्वास भाव में वृद्धि होगी। भूमि, भवन क्रय-विक्रय में सहयोग लाभ प्राप्त होगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न

मूंगा धारण कर सकते हैं। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते हैं।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

### लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु ग्रह कर्म भाव में स्थित है। आपके लिए केतु रत्न लहसुनिया धारण करना शुभफलदायक रहेगा। लहसुनिया रत्न आपको आत्मज्ञानी और शिल्पकला का जानकार बना सकता है। रत्न शुभता से आप प्रतियोगियों को शांत रखने में सफल रहेंगे। इस रत्न को धारण करने के बाद आपका स्वभाव मिलनसार, प्रभावशाली और प्रशंसनीय बनेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपको अत्यधिक यात्राएं देकर, यात्राओं से लाभ देगा। व्यर्थ के कार्यों में आपके श्रम को बचाएगा। रत्न शुभता से आप अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल प्रथम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं

का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

### पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते हैं। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप शिक्षा क्षेत्र में योग्यता से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते हैं। रत्न शुभता से आपके बुद्धिबल का विकास हो सकता है। आप की स्मरण शक्ति प्रबल हो सकती है। यह रत्न आपकी विद्या ग्रहण शक्ति का विकास कर सकता है। बुध रत्न आपके लिए शुभ रत्न है तथा इसकी शुभता से आपके संतान सुख में भी वृद्धि होगी। पन्ना रत्न आपके आत्मविश्वास को प्रबल, प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता उत्तम, नियोजन कुशलता श्रेष्ठ रख सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूठी में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का 9 माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

### पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण से आप बुद्धिमान्नी से संपत्ति की प्राप्ति करेंगे। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठजनों का सहयोग प्राप्त होगा। यह रत्न आपको महत्वाकांक्षी और शुभकर्म करने वाला

बनायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आप यशस्वी और अपने समाज के माननीय व्यक्तियों में गिने जायेंगे। पुखराज आपको उद्यमी कार्यरत और उद्योगी बनायेगा। आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। आपको राजकीय या सरकार द्वारा प्रदत्त घर की प्राप्ति होगी। आप गुरु भक्ति को महत्व देंगे। माता का सुख-स्नेह मिलेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी हैं। आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते हैं। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बड़ी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

### हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। हीरा रत्न धारण करने से विदेश स्थानों की आय से आपके वैभव और आय में बढ़ोतरी होगी। यह रत्न आपको श्रेष्ठकर्मी से जोड़ेगा। आपको अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त होगा। शुक्र रत्न हीरा आपको विरोधियों से आत्मीयता दे सकता है। हीरा रत्न शुभता से आप वैभव, सुख सामग्री और भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। इस रत्न को धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकते हैं।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात

स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

### माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित हैं। अतः आपको शुक्र रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण करने से आपको उत्तम मित्र व उच्च पद की प्राप्ति होगी। सरकार से आपके अच्छे संबंध होंगे। सत्ता से जुड़े लोगों से आपके संबंध करीबी और मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आत्मविश्वास भाव में वृद्धि करेगा। तथा इसके प्रभाव से आपकी व्यक्तित्व में भी तेज आयेगा। आपके व्यक्तित्व का विकास होगा। आपका चहुंमुखी विकास होगा। धन-धान्य बढ़ेगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते हैं। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते हैं। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

## गोमेद

आपकी कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण करने से आपके अपनी माता से वैचारिक मतभेद सामने आ सकते हैं। किसी प्राशासनिक व्यक्ति के द्वारा आपका अहित हो सकता है। चित्त में अस्थिरता और भ्रम की स्थिति बढ़ सकती है। गोमेद रत्न आपको देश की अपेक्षा प्रवास में अधिक रख सकता है। सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी आपका मन दुःखी हो सकता है। रत्न प्रभाव से आप मानसिक अशांति का अनुभव करने लगेंगे। यह भी संभावित है कि विपरीत समय में जीवन साथी का सहयोग प्राप्त न हो पायें। गोमेद रत्न आपकी उन्नति की राहों में रुकावटें ला सकता है। समाज में आपको यथायोग्य सम्मान न मिलने से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

## मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको अपने आजीविका क्षेत्र में कई परिवर्तन करने पड़ सकते हैं। यात्रा से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। आपमें शौक, रुचियां और मित्रता में शीघ्र बदलाव करने की आदत आ सकती है। आपके पिता को कई बार अपने व्यापारिक साझेदार में बदलाव करने पड़ सकते हैं साथ ही उन्हें बहुत सारी यात्राएं करने का अवसर मिलेंगे। रत्न धारण से आप प्रसिद्धि पाने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते हैं। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

## दशानुसार रत्न विचार

राहु

(23/05/2014 - 23/05/2032)

राहु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पन्ना, पुखराज, मूंगा, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(23/05/2032 - 23/05/2048)

गुरु की दशा में आपका नीलम, मूंगा, पुखराज व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(23/05/2048 - 24/05/2067)

शनि की दशा में आपका नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पुखराज, मूंगा, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(24/05/2067 - 23/05/2084)

बुध की दशा में आपका नीलम, पन्ना, मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



हीरा, पुखराज व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



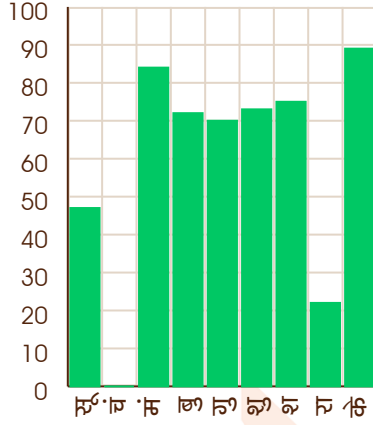
**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



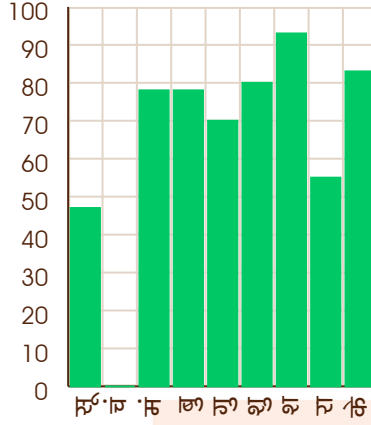
एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## दशा ग्राफ

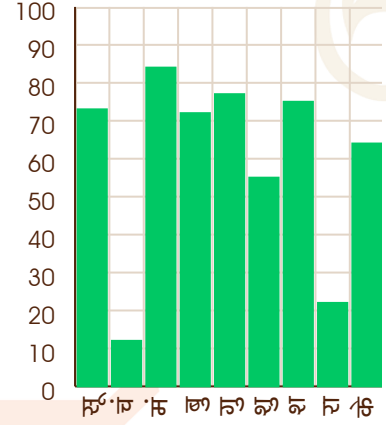
केतु - 24/05/1971



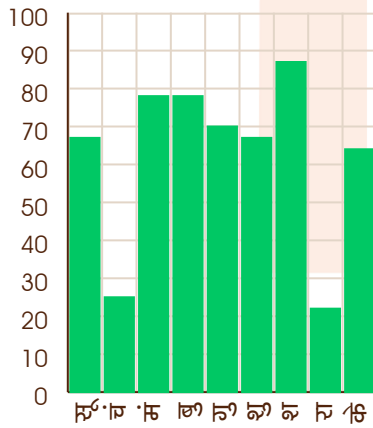
शुक्र - 24/05/1991



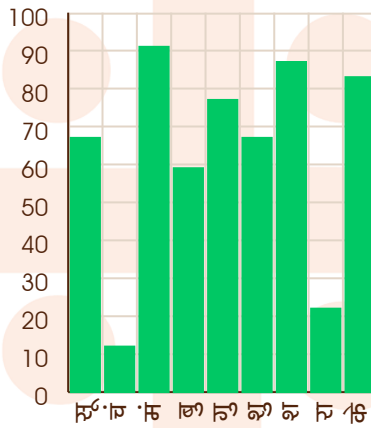
सूर्य - 23/05/1997



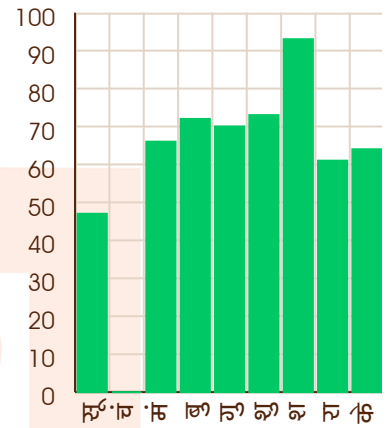
चन्द्र - 24/05/2007



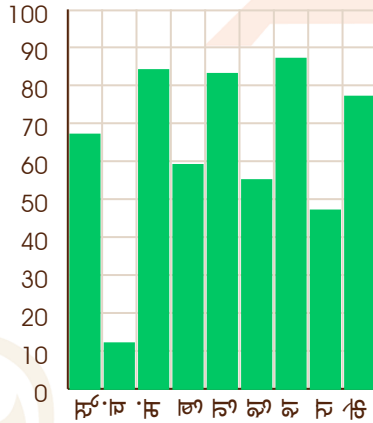
मंगल - 23/05/2014



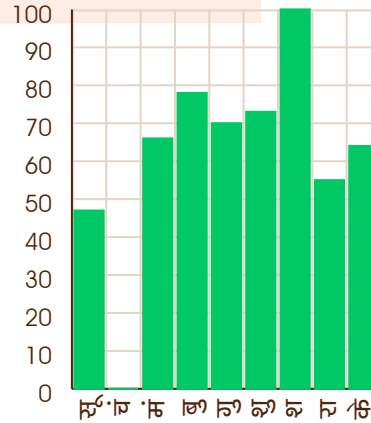
राहु - 23/05/2032



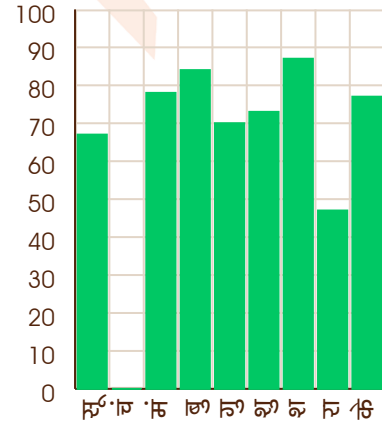
गुरु - 23/05/2048



शनि - 24/05/2067



बुध - 23/05/2084



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये ऐमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा

मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता है। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई में जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता है। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते हैं, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता है। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता है। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते हैं, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखें। जीवन साथी की भावनाओं को आहत करने से बचें। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रुचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करें। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

|                        |                                                                   |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 09/04/1966-03/11/1966 20/12/1966-17/06/1968 17/06/1968-07/03/1969 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 17/06/1968-17/06/1968 07/03/1969-28/04/1971 -----                 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 28/04/1971-10/06/1973 -----                                       |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 23/07/1975-07/09/1977 -----                                       |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987 -----                 |

### द्वितीय चक्र:

|                        |                                                                   |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 17/04/1998-07/06/2000 -----                                       |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003 -----                 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 -----                 |

### तृतीय चक्र:

|                        |                                                                   |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----                 |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030 |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----                 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 13/07/2034-27/08/2036 -----                                       |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 -----                 |

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया  
अष्टम स्थानस्थ ढैया

#### फल

सम  
सम  
शुभ  
सम  
सम

#### क्षेत्र

धन  
पराक्रम हानि  
सुख  
शत्रु से कष्ट  
व्यावसायिक परेशानी



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखपाल नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। माता-पिता एवं पारिवारिक सदस्य से कभी-कभी जातक नुकसान प्राप्त करता है। विद्याध्ययन में थोड़ी बहुत बाधा आती है। नौकर चाकर सवारी आदि से भी जातक को कोई न कोई चिन्ता परेशानी घेरे रहती है।

इस योग के कारण जमीन-जायदाद, चल-अचल, घर-द्वार सम्बन्धी वस्तुओं पर कभी-कभी थोड़ा बहुत परेशानी आती रहती है। जातक अनेक कामों को एक साथ करता है। पर कोई भी काम प्रायः पूरा नहीं होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी कोई रोग व्याधि घेर लेती है। जिसमें सामान्य से थोड़ा विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। अर्थात् नाजुक हो जाती है और कालान्तर में पुनः आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इसके प्रभाव से जातक को बेवजह चिन्ता-परेशानी ग्रसित कर लेती है। कार्यारम्भ में अनेक प्रकार के व्यवधान उपस्थित हो जाते हैं। जो कालान्तर में वे व्यवधान स्वतः नष्ट हो जाते हैं। जातक कितना भी परिश्रम कर ले पर सुख प्राप्ति में बाधा व संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। इस योग के प्रभाव से व्यवसाय के क्षेत्र में जातक को सफलता मिलती है और राजनीति एवं नौकरी में सफलता प्राप्त होती है और सामाजिक मान सम्मान भी प्राप्त होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

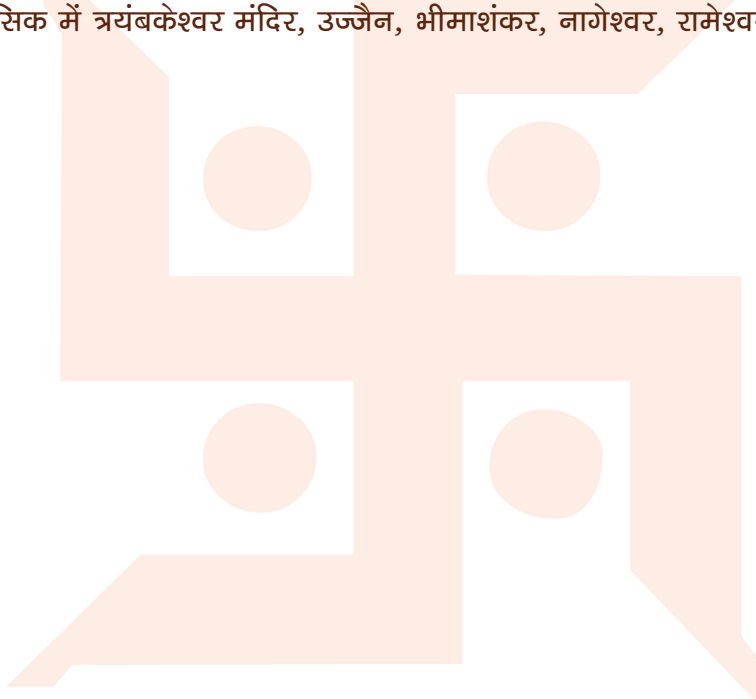
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।

14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 25 है। दो और पाँच के योग से 7 आपका मूलांक होता है। मूलांक 7 का स्वामी भारतीय ज्योतिष में केतु को तथा पाश्चात्य विद्वानों ने नेपच्यून को माना है। अंक दो का स्वामी चन्द्र तथा अंक पाँच का स्वामी बुध ग्रह है। आपके जीवन पर इन तीनों ग्रहों का संयुक्त प्रभाव अंक ज्योतिषानुसार आयेगा।

मूलांक सात के प्रभाव से कल्पना शक्ति आपके अन्दर उच्चकोटि की रहेगी। आपकी रुचियों में गीत संगीत गद्य-पद्य, नाच-गान, ललित कलाएं, साहित्य, लेखन इत्यादि रहेगा। धनसंग्रह की ओर आप विशेष ध्यान नहीं देंगे। इससे कई बार आपको आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ेगा। घूमना-फिरना, दूरस्थ देशों की यात्रा करना आपको आनन्दित करेगा।

आपकी विचारधारा परिवर्तन शील, आधुनिक होगी एवं प्राचीन रीति-रिवाजों की आप विशेष परवाह नहीं करेंगे। अतीन्द्रिय ज्ञान आपमें अच्छा होने से आप सामने वाले व्यक्ति के मनोभावों को बड़ी आसानी से समझ जाया करेंगे। दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट करने का गुण आपमें अच्छा रहेगा। यात्राएं आपके लिए लाभप्रद रहेंगी एवं ऐसा क्षेत्र जिसमें यात्राएं अधिक रहती हों आपके लिये भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

देश-विदेश, भूमि-वाहन आपको विशेष लाभ देंगे। अंक दो चन्द्र का ऋणात्मक अंक होने से आपके अन्दर आशंका, असफलता के अवगुण आयेंगे। आपका जीवन चक्र ऊँचाईयों-निचाईयों से ओत-प्रोत रहेगा। अंक पांच के प्रभाव से आप एक बौद्धिक स्तर के व्यक्ति रहेंगे तथा शारीरिक श्रम की अपेक्षा बौद्धिक स्तर के कार्य करना अधिक पसन्द करेंगे। आपका भाग्योदय जन्म स्थान से अन्यत्र होगा।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 7 है तथा भाग्यांक 4 है। मूलांक 7 का स्वामी नेपच्यून है तथा भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल है। मूलांक 7 एवं भाग्यांक 4 के बीच सम संबंध है। इससे

प्रभाववश आपकी कल्पना शक्ति बहुत अच्छी रहेगी तथा धारा प्रवाह विचार आपके मस्तिष्क में चलते रहेंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में, आप एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे और अपनी स्वयं की मेहनत के द्वारा आपका भाग्योदय होगा। आर्थिक स्थिति आपकी बहुत उच्च स्तर की नहीं रहेगी तथा जीवन के विभिन्न मोड़ों पर आपको यह भाव खटकता रहेगा। एकाध बार धन की तंगी के कारण मानसिक तनावों में वृद्धि हो जाया करेगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में रुकावटों और असुविधाओं को धैर्य एवं संघर्ष के साथ पार करते हुए आप उच्चता प्राप्त करेंगे। आपको चाहिए की आप जो भी कार्य करें उसे सोच-समझ कर धैर्य के साथ अंजाम दें। तभी सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी सामाजिक स्थिति मध्यम श्रेणी की रहेगी एवं अपनी मेहनत के द्वारा आप समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। यात्राओं से आपको लाभ होगा और नये-नये परिवर्तन करते रहना आपकी प्रकृति में होगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 34 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 43 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 7 की 2 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 6, 7, 8 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन की कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त के माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन, प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें। मूलांक 7 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 6, 7, 8 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

- 1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
- 2 . 11, 29, 38, 47, 56, 65, 74

- 4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67  
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69  
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70  
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनशील रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।



## अंक ज्योतिष उपाय विचार

### अनुकूल समय

नेपच्यून (केतु) 21 जून से 25 जुलाई तक पाश्चात्य मत से, सूर्य कर्क राशि में रहता है तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक, भारतीय मत से सूर्य कर्क राशि में रहता है। इस समय जल तत्व की वृद्धि होती है। अतः उपयुक्त समय मूलांक सात के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

### अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिवस में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, अपने किसी अधिकारी से मिलना, पत्र व्यवहार आदि के कार्य प्रारंभ करना आपके लिए अनुकूल हैं। आप अपना कोई भी कार्य इन्हीं दिवसों में प्रारंभ करें।

### शुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 आपके लिए विशेष महत्वपूर्ण होंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, रोजगार-व्यापार, पत्र लेखन या उच्च अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य संपन्न करेंगे तो वह अधिक सुविधाजनक एवं फलदायक रहेगा।

### अशुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 1, 9, 10, 18, 19, 27 एवं 28 तारीखें प्रतिकूल हैं। इन तारीखों में रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार या कोई भी महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करना आपके लिए अनुकूल नहीं हैं। अतः आप इन तिथियों के दुष्प्रभाव से बचें।

### मित्रता या साझेदारी

आप अपनी मित्रता ऐसे व्यक्तियों से रखें जिनका जन्म 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता घनिष्ठ रहेगी तथा वे रोजगार, साझेदारी के क्षेत्र में सहायक सिद्ध होंगे। ऐसे व्यक्ति आपके लिए विश्वसनीय रहेंगे।

### प्रेम संबंध एवं विवाह

यदि आपको प्रेम अथवा विवाह संबंधी संबंध स्थापित करना है तो आपके लिए ऐसी महिलाएं शुभ रहेंगी जिनका मूलांक 2, 6, 7 हो तथा जिनका जन्म किसी भी माह की 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों में हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगी।

### अनुकूल रंग

आपके मूलांक को देखते हुए आपके लिए हरा काफूरी, सफेद, हल्का तिल रंग शुभ फलदायक होंगे। इसलिए आप वस्त्रों के चयन के समय इन रंगों का ध्यान रखें। ये रंग आपके रोजगार-व्यवसाय तथा स्वास्थ्य के लिए भी अनुकूल रहेंगे। इन्हीं रंगों के तकिये, चादर आदि आपके लिए ठीक रहेंगे। आप इन रंगों का रुमाल अपने पास रखें, जो आपके स्वास्थ्य तथा आपके लिए मंगलमय रहेगा।

### वास्तु एवं निवास

आपको ऐसा भवन जिसका मूलांक या नामांक 7 हो तथा वह नैऋत्य कोण दिशा में स्थित हो शुभ रहेगा। यदि आप मकान बनवाते हैं या खरीदने के इच्छुक हैं तो आपके लिए नैऋत्य कोण दिशा उपयुक्त रहेगी तथा आप अपने सभी आवश्यक कार्य इसी दिशा की ओर करें। अपने घर का फर्नीचर काफूरी सफेद, हल्के नीले रंग का खरीदेंगे तो पूर्ण फलदायी रहेगा।

### शुभ वाहन नं

आप यदि स्वयं का वाहन आदि खरीदने के इच्छुक हैं तो उसके पंजीकरण के लिए आपके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंक ही अच्छे रहेंगे। आपका मूलांक 7 है, तब आपके लिए शुभ अंक 2, 6, 7 हो तो अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5236 = 7 इत्यादि। यात्रा के वाहन, सीट क्रमांक के अंक भी यही होंगे तो आपकी यात्रा सफल रहेगी। यदि आप होटल में कमरा बुक करते हैं तब नंबर 106 = 7 आदि अंकों का चयन ही करें। यही आपके लिए हितकर रहेगा।

### स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तब आपको पेट दर्द, छूत के रोग, पसीने की अधिकता तथा दुर्गंध, आमाशय दोष, कब्जियत, नींद न आना, भूख न लगना, गुप्तांग संबंधित रोग, वात तथा गठिया इत्यादि रोग होते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय आपको नृसिंह भगवान की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए।

### व्यवसाय

तैराकी, अभिनय, फिल्म व्यवसाय, वायु सेवा, पर्यटन, ड्राइवर का कार्य, बाबूगिरी, जल जहाज के कार्य, पत्रकारिता, संपादन कार्य, खबर, टायर, ट्यूब, प्लास्टिक वर्क, ललित कला संबंधी कार्य, राज्याधिकारी, जासूसी, तरल पदार्थों का क्रय-विक्रय, जादू के कार्य, कूटनीतिक कार्य, नियंत्रक, भूमिगत पदार्थों का व्यवसाय एवं ट्रांसमीटर, रेडियो, अनुवादक आदि के कार्य।

### व्रतोपवास

शनिवार को नेपच्यून अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर, इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

### अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए लहसुनिया प्रमुख रत्न है। इसके न मिलने पर आप पीला हकीक भी धारण कर सकते हैं। इसे आप शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, चौघड़िया मुहूर्त में, चांदी की अंगूठी में तीन से पांच रत्ती के लगभग, दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

### अनुकूल देवता

आप केतु ग्रह की उपासना करें अथवा नृसिंह भगवान की आराधना करें। नृसिंह भगवान के मंत्र 'ओम् ह्रीं उग्रं वीरं महा विष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखं नृसिंह भीषणं भद्र मृत्यु मृत्युं नमाम्यहं ह्रीं' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो आप विभिन्न रोंगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो नृसिंह भगवान के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

### ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए केतु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, केतु गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

केतु गायत्री मंत्र - ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात् ॥

### ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप केतु का ध्यान करें, मन में केतु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।  
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

### ग्रह जप मंत्र

अशुभ केतु को अनुकूल बनाने हेतु केतु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ सत्तर माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ सां सीं सौं सः केतवे नमः ॥ जप संख्या 17000 ॥

### वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन एक इंच लंबी असंगंध की जड़ ला कर आसमानी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे नेपच्यून/केतु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

### वनस्पति स्नान

आपको प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में सहदेई, लज्जालु (लोबान), बला, मोथा, प्रियंगु और हिंगोठ आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ केतु/नेपच्यून के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आप कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

### दान पदार्थ

केतु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को केतु के पदार्थ कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कंबल, उड़द, वैदुर्य मणि, काले पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

### यंत्र

केतु को अनुकूल बनाए रखने हेतु केतु यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## लग्न फल

आपका जन्म पूर्वा भाद्रपद के प्रथम चरण में कुंभ लग्न, मेष नवमांश एवं तुला के द्रेष्काण में हुआ था। समन्वित जन्म लग्नादि आकृति से यह निर्दिष्ट हो रहा है कि आपका जीवन सुखद रहेगा। ऐसी आशा है कि आप पर जन्म लग्न का प्रभाव उत्तम प्रकार पड़ेगा तथा आप प्रभावित होकर प्रतिरक्षा की सेवा में उच्च स्तर तक उन्नति कर सकते हैं।

आप में सभी प्रकार के नेतृत्व करने के गुण-विद्यमान हैं। परंतु आपका हृदय अर्थात् आपका स्वभाव गर्म नहीं है। आपका आचरण प्रतिकूल नहीं है। आप में मानवता है तथा आप सदैव दूसरों के लिए सहायक हैं। आप स्वभाव से वाचाल हैं। आप अपने शिष्यों पर अच्छा प्रभाव रखते हो एवं आप अपने सगे संबंधियों एवं मित्र से युक्त रह कर प्रसन्न रहते हो।

आप एक विश्वासी और आलस्य से मुक्त रहते हो। आप अत्यंत संवेदनशील एवं शीघ्रता पूर्वक किसी भी कार्य को संपन्न करने वाले हो। आप अपना दायित्व सुव्यवस्थित ढंग से शीघ्रता पूर्वक निभाते हैं। आप सपत्नीक अपना अधिकार एवं संपत्ति को ध्यान में रख कर धन उर्पाजन हेतु प्रयत्नशील रहते हो। आप धनी बनने में सफल हो जाओगे।

आप संवेदनशील विषयों के प्रति रुचिवान रहते हो। प्रस्तुत छवि के अनुसार आप स्वभाव से एक दम परम्परागत प्राणी लगते हो। आप विवेकशील एवं स्वच्छ हृदय के प्राणी हों। आप किसी भी तथ्य की भली प्रकार गहराई से अध्ययन करते हो एवं नवीनतम प्रक्रिया तथा प्रभावशाली ढंग से उस कार्य को संचालित करते हो। आप में एक अच्छे नेतृत्व के गुण विद्यमान हैं। आप इस स्रोत से क्या लाभ या हानि होगा। इसका परीक्षण कर सकते हैं।

आप अपनी पत्नी के साथ मात्र संभोगात्मक भावना से ही व्यवहार नहीं करते परंतु सर्वथा अपनी पत्नी की अभिव्यक्ति को समझने एवं उसकी राय को महत्त्व देने के लिए तत्पर रहते हो।

आप एक सुव्यवस्थित पारिवारिक जीवन बिताना चाहते हैं तथा पत्नी एवं बच्चों के सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए बहुत अधिक मात्रा में सुव्यवस्था करते हो।

आप अपने कार्य व्यवसाय हेतु संबंधित कार्य यथा भाषा कार्य, धर्म दर्शन शास्त्र, ज्योतिषीय, शिक्षण कार्य, वकालत एवं राजनीति कार्य में से किसी कार्य को अपनी इच्छानुसार चयन कर सकते हो।

किसी भी प्रकार से आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा तथा आप इससे किसी भी प्रकार से आपत्तिजनक नहीं समझते हो। आप उत्तम स्वास्थ्य बनाए रखेंगे। परंतु जब आपकी आयु अधिक हो जाएगी तब ऐसा हो सकता है कि जॉनडिस, रक्तचाप, हृदय संबंधी दिक्कतों से आप अद्योगति को प्राप्त हो जाएं। इन रोगादिक कारणों से यह सुनिश्चित नहीं है कि आप प्रभावित हो जाएं। परंतु यह विचारणीय है कि इन संभावनाओं के प्रति सुरक्षात्मक कदम समय से पूर्व उठाना चाहिए।

अतएव कुंभ राशीय प्रभाव के अनुसार बार-बार सर्दी जुकाम, अथवा शीत जनित प्रभाव के रोगादि से संभलकर रहना चाहिए तथा इन बिंदुओं पर चिकित्सक की राय सदैव लेते रहना चाहिए। आपको सर्वथा विश्रान्ति ग्रहण भी करते रहना चाहिए।

आप उत्तेजनात्मक प्रवृत्ति के उच्च स्तरीय साहसी व्यक्ति हैं। आप अनेक मित्रों से भली प्रकार संबंधित रहते हैं तथा आपके लिए उनका संबंध उत्तम है। अतएव आपमें ऐसी आदत नहीं है कि आप अन्यो के साथ किसी भी प्रकार का भ्रामक आचरण करें। आप सुविख्यात हैं। परंतु आपको सतर्कता बरतनी चाहिए, क्योंकि कुछ व्यक्ति आपको जन सामान्य के साथ अधिक संलग्न समझकर आपको विरुद्ध अविश्वासनीयता का प्रदर्शन कर सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल एवं अत्यधिक लाभकारी दिन बुधवार शनिवार एवं शुक्रवार का दिन हैं। शेष रविवार, मंगलवार, एवं सोमवार का दिन आपके लिए बाधित एवं प्रतिकूल दिन हैं।

आपके लिए अंकों में अनुकूल अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक प्रमाणित हैं। परंतु अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंक सर्वथा प्रतिकूल हैं।

आपके लिए रंगों में उत्तम एवं महत्वपूर्ण रंग पीला, लाल, सफेद एवं क्रीम रंग भाग्यशाली प्रमाणित हैं। परंतु हर दशा में नारंगी रंग, हरा एवं ब्लू रंग अव्यवहारणीय है।

## ग्रह फल

### सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर

रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

### मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

### बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

### गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



### शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्वयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

### शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

### राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

### केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आप सूक्ष्म दृष्टि के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगे। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रुचिशील दौरान आपकी- उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। अतः ऐसी प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे।

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृत्ति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभावित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उद्देश्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्टियों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पत्ति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

## पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति भी होंगे। जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि उनका स्वभाव तेज होगा परन्तु बुद्धिमता से युक्त दौरान आपकी- प्रति वे आज्ञाकारी एवं कर्तव्य परायण रहेंगे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। यदा कदा आप लोगों के मध्य वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप हृदय से विशाल होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति की भावना विद्यमान रहेगी। इसके साथ ही आप अपने ही तरीके से सोचेंगे तथा उसी को कार्य रूप में परिणित करेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप आधुनिक संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन , वाहन, दूरदर्शन आदि उपकरणों से भी युक्त रहेंगे। संगीत या कला आदि के प्रति भी आपके मन में रुचि रहेगी तथा समयानुसार आप इससे मनोरंजन करेंगे। दूर समीप की यात्राओं से आपको समय समय पर लाभ होगा तथा इससे आपकी ख्याति में वृद्धि होगी। अच्छी एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों को पढ़ने में आपकी रुचि रहेगी साथ ही लेखन कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सज्जनों से मित्रता करने वाले परोपकारी तथा विद्वान होंगे एवं सरकार से समय समय पर सम्मान प्राप्त करते रहेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में बृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा बृहस्पति भी चतुर्थ भाव में ही स्थित हैं। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका यथोचित स्तर बना रहेगा। यहां सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यवान व्यक्ति होंगे तथा जीवन में वांछित चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति से भी आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसके अतिरिक्त आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः इस पर आप समयानुसार निवेश करके वांछित लाभ अर्जित कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा तथा भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षण को बनाए रखने के लिए आप अन्य जनों को भी प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे लेकिन संबंधों में औपचारिकता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशिक्षित, बुद्धिमान एवं आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी तथा उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान होगा। अपनी व्यवहार कुशलता एवं उत्तम कार्य कलापों से परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि बनाएं रखेंगी तथा सभी पारिवारिक जनों का पूर्ण ध्यान रखेंगी जिससे सभी लोग उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में प्रबल स्नेह का भाव होगा तथा आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। समयानुसार उनसे आपको वांछित सहयोग भी मिलता रहेगा। आपका भी उनके प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता का भाव होगा तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे जिससे आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही आप पूर्ण रुचि रखेंगे तथा छोटी कक्षाओं से ही आपको अच्छे अंको में सफलता मिलेगी। स्नातक परीक्षा में भी आपको अच्छे अंको से सफलता मिलेगी जिससे भविष्य के लिए उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे एवं मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप तकनीकी या न्याय संबंधी पाठ्यक्रम में उच्चस्तर की शिक्षा भी अर्जित कर सकते हैं।

द्वितीयेश बृहस्पति की चतुर्थभाव में स्थिति के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप अल्प मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं यदि खान-पान पर विशेष ध्यान दिया जाय तो ऐसी समस्याओं में न्यूनता आ सकती है जिससे आपका समय सुख- पूर्वक

व्यतीत होगा।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी जिससे आप अवसरानुकूल वांछित लाभ एवं सफलता प्राप्त करेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से शीघ्र एवं सुगमता से सम्पन्न करेंगे फलतः अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे तथा आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मिथुन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा आपका प्रेम भावनात्मक आकर्षण से युक्त होगा। इस क्षेत्र में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी यत्नपूर्वक पालन करेंगे एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है जिससे आपका दाम्पत्य जवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर पुत्र एवं कन्या दोनों की प्राप्ति होगी आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में समान्यतया तत्पर होंगे परन्तु उनकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द एवं स्वतन्त्र होगी। अतः यदा-कदा वे बिना माता-पिता की सलाह से भी कोई कार्य सम्पन्न कर सकते हैं लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूरी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं परिश्रमी होगी तथा प्रारंभ से ही वांछित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे एवं आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे जिससे वे आपकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने में नित्य योग्य सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त वे विनम्र सक्रिय, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य-कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। इससे आपके सम्मान में भी वृद्धि होगी।

## रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से आपको यदा कदा विरोध या शत्रुता का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभवता को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करना चाहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता, विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित तथा उत्पन्न समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में सफल होंगे।

आपके सेवक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे साथ ही आपके लिए वे आज्ञाकारी तथा विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते हैं अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को भी वे अपनी बातूनी प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों से कह सकते हैं। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करते रहें।

आप अपने व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे क्योंकि आप धन संग्रह के प्रति विशेष रुचि रखेंगे। यही कारण है कि आप सबसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने में प्रायः असफल से रहेंगे। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण ऋण आदि की भी स्थिति आ सकती है तथा ऋण दाता द्वारा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मामा मामी प्रवृत्ति से अच्छे व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमे से सम्बन्धित रहेंगे तथा इन पर आपका काफी समय एवं धन बर्बाद होगा परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा अन्य गुप्त सूत्रों के द्वारा अन्त में विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक खान पान में सावधानी रखें तथा मानसिक चिन्ताओं से भी दूर ही रहें अन्यथा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त कर सकते हैं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है तथा उसमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके स्वभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्य कलाओं को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा अपने साहसिक कार्यों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। वे अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी जिससे परिवार एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी तथा शरीर के अन्य अंग पुष्टता से युक्त रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण आएगा। पाश्चात्य समाज एवं संस्कृति के प्रति भी उनका रुझान रहेगा। भौतिकता के प्रति भी उनका आकर्षण होगा एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुएं प्रिय होंगी तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में सिंह राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी प्रेम विवाह कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम की भावना भी होगी आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा एक दूसरे के सहयोग से सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगे। इससे आपस में प्रेम विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय दहेज के रूप में आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे से सम्मान एवं सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा की भावना होगी तथा उनका सुख दुख में पूरा ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें वांछित सम्मान देंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

## आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां सत्य होंगी अध्यात्म, ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन व्यवहारिक के ज्ञान की अपेक्षा अंतर्प्रज्ञा शक्ति ही अधिक सहायक सिद्ध होगी। आपके अधिकांश कार्य अध्यात्म के अनुसार ही सम्पन्न होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगे। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी परन्तु बाद में आपको छोड़नी पड़ेगी जिससे आपको काफी मानसिक कष्ट होगा तथा इसके कारण वातावरण अशान्त होगा। साथ ही पुनः जायदाद जोड़ने के लिए आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। बन्धु एवं सम्बन्धियों से भी जायदाद के बारे में विवाद रहेगा जिससे परस्पर बन्धुत्व के भाव की अपेक्षा वैमनस्य का भाव ही उत्पन्न होगा।

शादी के समय आपको किंचित धन आभूषण या अन्य चीजें दहेज के रूप में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु आपके ससुराल वाले बार बार इस दहेज के बारे में आपको याद दिलाएंगे जिससे आपकी आधी खुशी उनके इस व्यवहार से खत्म हो जाएगी। बीमे के रूप में आपको विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होगी यह केवल जितनी हानि या नुकसान हुआ है उसी के लिए पर्याप्त होगी। आपके जीवन में कोई विशेष दुर्घटना या चोरी आदि का योग नहीं है यदि ये भी घटित भी होती है तो इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आदर्श एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में काफी श्रद्धा रहेगी। आप दिखावे में विश्वास नहीं करते तथा जो कुछ भी करेंगे हृदय से सच्ची भावना से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मनुष्य मात्र की भलाई के लिए भी कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। दैनिक जीवन में आप पूजा तथा योग एवं धर्मानिष्ठ कार्य नित्य करते रहेंगे। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे। धार्मिक उत्सवों के प्रति आपकी आदर की भावना रहेगी तथा अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों का भी पूर्ण सम्मान करेंगे साथ ही पारिवारिक परम्परा, रीति रिवाजों के अनुसार धर्म का अनुपालन करेंगे।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगे तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान या आध्यात्म संबन्धी महत्वपूर्ण ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से सही भविष्यवाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे।

आप धार्मिक तथा व्यावसायिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीवन में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न करेंगे तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा साथ ही सामाजिक जनों के परोपकार संबन्धी कार्य भी सम्पन्न करेंगे लेकिन कभी कभी स्वार्थ वश कंजूसी का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन यह अल्प मात्रा में होगा। आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा आपके अनुयायी या सहायक भी रहेंगे पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से इस जीवन को ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी मंगल हैं। साथ ही केतु भी दशमभाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि जलतत्व एवं केतु वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक क्रिया के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा इससे आप स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही समयानुसार इसमें आप परिवर्तन भी करेंगे जिससे आपको तात्कालिक लाभ मिलेगा लेकिन अनावश्यक परिवर्तनों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

दशमभाव में वृश्चिक राशिस्थ केतु के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र, वायुसेना, एयरलाइंस, विद्युत इंजीनियरी रासायनिक क्षेत्र उर्जा एवं शक्ति विभाग, होटल, प्रबंधक या कर्मचारी, तथा राजनीति शुभ एवं अनुकूल रहेगी। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा इसमें आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्र में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए लोहे का कार्य खनिज पदार्थ, विद्युत उपकरणों का उत्पादन, जमीन जायदाद संबंधी व्यापार या क्रय विक्रय, ड्रैवल एजेंसी, खेती बागवानी, पेट्रोल पम्प एवं शराब का व्यापार शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही इन क्षेत्रों या वस्तुओं का व्यापार करके आप नवीन आयाम भी स्थापित कर सकते हैं। अतः व्यापारिक दृष्टि से उपरोक्त क्षेत्रों में ही चुनाव करना श्रेय कर रहेगा।

दशमभाव में केतु के प्रभाव से जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप किसी सम्मानित या अधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में भी आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि रहेगी। साथ ही किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी पदाधिकारी या सदस्य हो सकते हैं जिससे आपको मान सम्मान की प्राप्ति होगी लेकिन उपरोक्त मान सम्मान एवं प्रसिद्धि जीवन में आपको विलम्ब से प्राप्त होगी लेकिन इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए तथा परिश्रम पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी, परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे एवं उसमें उन्हें वांछित सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा दीक्षा का वे पूर्ण प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र की प्रारंभिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी एक परिश्रमी एवं योग्य व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे जिससे पिता के सम्मान में भी वृद्धि होगी लेकिन आपके परस्पर संबंधों में मधुरता कम ही होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यों में एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः आपको आपस में

सामंजस्य स्थापित करके रहना चाहिए।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि स्थित है जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराक्रमी स्वस्थ तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से इच्छाओं तथा आकाक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप जीवन में समस्त सुख साधनों से युक्त होंगे तथा निरन्तर रूप से आय एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज या प्रशासनिक कार्यों से इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे या तो आप इन क्षेत्रों में कार्यरत होंगे अथवा आपको इनसे संबंधित विभागों एवं लोगों से समय समय पर इच्छित लाभ प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इनके द्वारा आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

आपका बड़े भाई से पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे आपको इच्छित सुख सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा वे आपका पुत्रवत् पालन करेंगे। जीवन में आपको वे आर्थिक रूप से निर्भर बनाएंगे तथा समय समय पर आपका मार्ग निर्देशन भी करते रहेंगे। आप भी उनका पितृवत मान सम्मान करेंगे। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी जो जीवन दर्शन के विषय में आपका मार्ग दर्शन कर सकें अतः विद्वान एवं शिक्षित लोग ही अधिक रूप से आपके मित्र होंगे। साथ ही अवस्था के साथ साथ आप युवावस्था के लोगों को उपदेश भी प्रदान करेंगे। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र एवं समाज में प्रसिद्ध तथा आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको अपना मित्र समझेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे।

## विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फलस्वरूप किसी भी माध्यम के द्वारा इच्छित उन्नति सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरुष होंगे तथा आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र की उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं झिझकेंगे जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी ही रहेगी तथा आर्थिक सुदृढ़ता के कारण आप उन्मुक्त भाव से जीवन में आनन्द, सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्ययशील रहेंगे।

आप पारिवारिक जनों के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे साथ ही अपने सामाजिक स्तर की वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं रहेगी अतः आप उपरोक्त क्षेत्र में आनन्द प्राप्त करेंगे। साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं अवसरानुसार उन्हें उचित आर्थिक सहयोग देंगे जिससे लोग आपकी दानशीलता से प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी संगठन शक्ति से जीवन में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे।

आप व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित दूर समीप की यात्राएं करेंगे। इसी संदर्भ में आप विदेश की यात्रा भी करेंगे। यद्यपि इसमें व्यय अधिक परन्तु भविष्य में आपको उचित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

## नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण आपकी जन्म राशि मेष तथा राशिस्वामी मंगल होगा। आपकी अश्वयोनि, देवगण आद्यनाडी तथा सिंह वर्ग होगा। द्वितीय चरण में पैदा होने के कारण आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "चे" होगा यथा चेताराम।

अश्विनी नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों के अन्तर्गत की जाती है। यद्यपि द्वितीय चरण में उत्पन्न जातकों को इसका दोष अल्प मात्रा में होता है। अतः जन्मसमय में इसकी शान्ति अवश्य करवा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 2800 जप करवाने चाहिए तथा शान्ति के दिन दशौंश का हवन करवाना चाहिए। इससे शुभ फलों में वृद्धि होगी। यह कार्य योग्य आचार्य द्वारा सम्पन्न होना चाहिए।

**मंत्र - ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।**

**वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॐ अश्विनी कुमारभ्याम् नमः।।**

अश्विनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रकृति श्रृंगार प्रिय होगी तथा आभूषणों से विशेष लगाव रहेगा। आप देखने में अत्यन्त रूपवान होंगे तथा कार्य शैली चतुराई एवं बुद्धिमत्ता पूर्ण ढंग की होगी जिसे देख कर लोग अनायास ही आपकी तरफ आकर्षित होंगे। साथ ही आप सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे।

**प्रियभूषणः सुरुपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।**

**बृहज्जातकम्**

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहेंगे। आपके विनयशील व्यवहार से सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार आपका यश दूर दूर तक फैलेगा। जीवन में अधिकांशतः आप सुख एवं आनन्द की अनुभूति करेंगे तथा धन एवं अन्य भौतिक सुखों का आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा।

**अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।**

**जातक परिजातः**

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

आप हमेशा सत्य का पालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। बाल्यकाल से ही दूसरों के प्रति सेवा भाव से भी आपका अन्तर्मन ओत प्रोत रहेगा। सभी सांसारिक भौतिक सुख सुविधाएं आपको प्राप्त होंगी। आप भाग्यवान पुरुष होंगे क्योंकि आप एक सुशील पत्नी के पति तथा सदगुणों से युक्त पुत्रों के पिता होंगे। जो नित्य आपके यश की अभिवृद्धि करेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



**सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत् ।  
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य ।।  
जातकाभरणम्**

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पत्ति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

आप अपने दैनिक अथवा व्यापारिक कार्यों में अत्यन्त व्यस्त रहेंगे। इससे आपके शरीर तथा उचित खानपान की उपेक्षा होगी जिससे शरीर में मोटापा आ सकता है। आप अपने परिश्रम तथा कौशल से धनार्जन करेंगे तथा अपने सद्व्यवहार से जनता के विभिन्न वर्गों में समान लोकप्रियता को प्राप्त करने में सफल होंगे।

**सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी ।  
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः ।।  
जातक दीपिका**

अर्थात् अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान्, चतुर, स्थूलकाय, धनवान् तथा जनता का प्यारा होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा आपको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रुचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरुष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान् एवं सौभाग्यशाली पुरुष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी मेष राशि है अतः आप कम भोजन करने वाले होंगे। आप अपने माता पिता की इकलौती सन्तान हो सकते हैं। तथा अन्य भाई बहन होने पर आप ही सर्वश्रेष्ठ होंगे।

**मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो ।।  
जातकपरिजातः**

आपका वर्ण ताम्र के समान गौर वर्ण से युक्त होगा तथा गोलाकार नेत्रों में लाली होगी। आपके सिर पर चोट या घाव का निशान हो सकता है। भविष्य में आप गंजे भी हो सकते हैं। आपके हाथ तथा पैर कोमल कान्ति से सुशोभित होंगे। जल से भयभीत होना आप का स्वाभाविक गुण होगा। आप एक साहसी पुरुष होंगे तथा कठिन से कठिन परिस्थितियों का

डटकर प्रतिरोध करेंगे। सामाजिक मान सम्मान आपको स्वतः प्राप्त होगा। बुद्धि आपकी चंचल होगी तथा धन को आप सम्मान से अधिक प्राथमिकता देंगे। जिससे आप कभी-कभी अपने लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे। आप बहुत से मित्रों के मित्र तथा सहयोगियों के शुभचिन्तक होंगे। आपके पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक रहेगी। सभी से स्नेह करना आपकी प्रवृत्ति का एक मुख्य अंग होगा। अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण समाज के विशिष्ट तथा सामान्य दोनों वर्गों से आप सहानुभूति तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

**सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः ।**

**कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः ।।**

**पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः ।**

**सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ ।।**

**सारावली**

आप उन लोगों में से होंगे जो शीघ्र ही क्रोधित होकर शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं। आपका स्वभाव भ्रमण प्रिय होगा तथा अगम्य स्थान अर्थात् जहाँ आसानी से न पहुँचा जा सके उसकी सैर आपको विशेष प्रिय होगी। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। महिला वर्ग में आप प्रिय तथा आदरणीय समझे जाएंगे। दूसरे लोगों की सेवा तथा उन्हें सहयोग प्रदान करना आप अपना परमपुनीत कर्तव्य समझेंगे चाहे आप स्वयं परेशानी का सामना ही क्यों न कर रहे होंगे।

**वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोदनः ।**

**कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः ।।**

**कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः ।**

**शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः क्रिये ।।**

**बृहज्जातकम्**

धन को अनावश्यक प्राथमिकता देना तथा महिला वर्ग की तरफ विशेष आकर्षित होना आप के इस स्वभाव से आपके सम्मानीय बुजुर्ग तथा संबंधीगण असन्तुष्ट रहेंगे। जिससे उनका आपसे या आपका उनसे अलगाव हो सकता है। आप अपनी पत्नी के कहे अनुसार ही अधिकांश कार्य सम्पन्न करेंगे तथा स्वविवेक से कम ही करेंगे। इससे भी संबंधियों तथा बुजुर्गों से तनाव बढ़ सकता है। धनार्जन आप अपने बाहुबल तथा बुद्धिबल से स्वयं करेंगे तथा धन एवं पुत्र से युक्त होकर समाज में कीर्ति प्राप्त करेंगे।

**स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत् ।**

**अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ।।**

**जातकाभरणम्**

सांसारिक कार्यों में व्यस्तता के कारण आपके सामाजिक अथवा व्यापारिक संबंध विस्तृत होंगे अतः मौका पड़ने पर आप मांस मदिरा इत्यादि अभक्ष्य पदार्थों का उपभोग भी करेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



**मेघे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः ।**

**बृहत्पाराशर होराशास्त्र**

आपके स्वभाव में कभी-कभी उग्रता की झलक देखने को मिलेगी। इस उग्रता से आप परेशानियों में भी फंस सकते हैं। चंचल प्रवृत्ति होने के कारण यदा कदा आप मिथ्या भाषण का भी आश्रय लेंगे।

**वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरुर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी ।**

**संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः कियमे प्रजातः ।।**

**फलदीपिका**

आप यौगिक क्रियाओं के प्रति भी श्रद्धा रखेंगे। आयु के साथ-साथ बाल भी कम हो सकते हैं अर्थात् खल्वाट योग बनता है। पित्तकारक या गर्मी प्रदान करने वाले पदार्थों की यथाशक्ति उपेक्षा करें गर्मी के प्रभाव से मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो सकता है।

**भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो ।**

**न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्र्य युक्तः ।।**

**व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी ।**

**संभवति पुरुषोऽयं मेष राशौ ।।**

**जातक दीपिका**

आप देवगण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी वाणी मधुर तथा सच बोलने वाली होगी। वाणी के द्वारा कभी भी अन्य लोग आपसे किसी भी प्रकार कोई कष्ट नहीं पाएंगे। आप प्रतिभाशाली होंगे तथा सब कुछ आसानी से आत्मसात करने की प्रतिभा आप में विद्यमान रहेगी। शुद्ध सात्विक एवं अल्प भोजन करना आपका मन पसन्द कार्य होगा। गुणों के आप ज्ञाता होंगे तथा विद्वान एवं महान लोगों ने जिन गुणों का वर्णन किया है उन समस्त गुणों से आप युक्त रहेंगे। वैभव तथा ऐश्वर्य का आप कभी भी अभाव प्रतीत नहीं करेंगे क्योंकि आप अपार धन एवं सम्पत्ति के स्वामी होंगे।

**लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः ।**

**पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः ।।**

**कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।**

**चण्डकर्म मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः ।।**

**मानसागरी**

देखने में आपका शरीर सुन्दर और स्वस्थ होगा। दान देना आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होगी तथा जरूरत मन्द लोग तथा संस्थाएं आपकी हृदय से आभारी रहेंगे। आप सादगी पसन्द व्यक्ति होंगे। छल, कपट तथा प्रपंच का नाम मात्र का भी आपके अन्दर समावेश नहीं होगा। तथा विद्वान योग्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे।

**सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च ।**



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



जायते सुरगणे ङणङ्गः सुङ्गवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः । ।

जातकाभरणम्

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है ।

अश्व योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वच्छन्दता प्रिय व्यक्ति होंगे तथा स्वतंत्रतापूर्वक विना किसी रोक टोक या सलाह के आपको कार्य करना अच्छा लगेगा । सद्गुण आपके अन्दर नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेंगे एवं साहस तथा बहादुरी का अभाव नहीं होगा । प्रत्येक कार्य को अपने साहस और बाहुबल से सम्पन्न करने में आप समर्थ रहेंगे । जिससे समाज में यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी । आप जहाँ भी कार्य करेंगे आप पर पूरा विश्वास किया जायेगा ।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः ।

स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः ।

मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृत्ति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है ।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है । अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा । आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी । साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी । इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी ।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे । साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा । इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे । इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे ।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है । अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्णता का अभाव रहेगा । साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी । जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे । साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी ।



FUTUREPOINT  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020

Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी (1,6.11) शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा हमेशा आपके लिए अनिष्ट फलदायी रहेगा। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 दोनों पक्षों की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, लेन-देन, साझेदारी आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें। कार्य पूर्ण नहीं होंगे तथा अशुभ फल मिलेंगे। इसके अतिरिक्त मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बव करण, रविवार तथा प्रथम प्रहर एवं जब चन्द्रमा मेष राशि में स्थित हो तब भी शुभ कार्यों को न करें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। उपरोक्त महीने, दिन तिथि, वार तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखा जाना चाहिए।

जब समय आपके लिए प्रतिकूल चल रहा हो अर्थात् आपको मानसिक कष्ट हो रहा हो अथवा व्यवसाय में लगातार हानि हो रही हो या हानि होने की संभावना लग रही हो उस समय आपको अपने इष्ट हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए! तथा सोना, तौबा, गुड़, घी, रक्त कनेर के फूलों का दान करना चाहिए। साथ ही मंगलवार के उपवास भी करने चाहिए। एतदतिरिक्त मंगल के तांत्रिय मंत्र के कम से कम 7 हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव भी शनैः शनैः न्यून होता जाएगा।

**ॐ क्रां क्रीं क्रो सः भौमाय नमः।**

**मंत्र- ॐ ह्रूं श्रीं भौमाय नमः।**

## लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उद्धृत किए जाते हैं।

### स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

### मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

### पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

### कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्य आदि काम करना।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौड़ियां लेकर उसी दिन एक जगह इकट्ठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

### पितृ ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती हैं।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृ ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

### स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से मुक्त है।

### निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिद्धियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से मुक्त है।

### आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

### निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) हैं सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

### ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बीमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## लाल किताब ग्रह फल

### सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में सूर्य है। इसकी वजह से बाहर से मधुर स्वभाव परंतु अंदर से आग का शोला होंगे। आपका चाल-चलन अच्छा होगा। आप तेजस्वी, प्रतापी, शत्रुहंता होंगे। आप में आत्मसिद्धि, मानसिक रूप से चिन्तित, मान-सम्मान से युक्त होंगे। सत्ता से लगाव, लेखा-जोखा के कार्य में संलग्न, सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्ति होगी। आप विचारों के पक्के शराब-नशे से दूर रहने वाले, हर बात में पहल करने वाले, आक्रामक, मुंह तोड़ जवाब देने वाले तथा परिश्रमी होंगे। आप पुरुषार्थ से धन कमा कर धनी होंगे। आप दूसरों की सहायता करेंगे। आप ठोकरें खा-खाकर चमकेंगे। आपको सताने वाला नष्ट हो जाएगा। आपकी प्रसिद्धि और बढ़ेगी। धार्मिक कार्य और परोपकार में धन लगाने से उन्नति होगी। 24 वर्ष की आयु में विवाह शुभ, संतान एवं पत्नी का सुख मिलेगा, अच्छे कार्य में अगुवा रहेंगे। गरीबों के मदद्गार एवं क्रोधी होंगे। आप किसी बात को सुन कर फिर देख कर विश्वास करेंगे। सिर गंज पड़े तो धनवान होने का समय आयेगा, आपके स्वतंत्र विचार रहेंगे और यात्रा से लाभ मिलेगा। सरकारी विभाग में उच्चाधिकारी या सरकारी अधिकारियों से अच्छे संबंध होंगे और उनसे लाभ पा सकते हैं। आप जनता के लाभार्थ कार्य करेंगे।

यदि आपने जनता से दुर्व्यवहार किया या परिवार-कल्याण के कामों में विघ्न पैदा किये या मकान के अंत में अंधेरा कमरा रोशनी में बदला तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर शारीरिक व हड्डी रोग, दिल की धड़कन तेज आदि प्रतिकूल फल मिलते हैं। क्रोध करने और दुर्वचन बोलने से रक्तचाप का रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मांस-मदिरा का प्रयोग न करें।
2. दिन के समय चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी/कमरा बनायें।

### चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से मैदाने जंग में हार या हानि न होगी। आप मधुरभाषी, परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्युरक्षक एवं भातृ सुख से पूर्ण रहेंगे। चंद्रमा आपके सहायक हैं। चोरी से बचाव होगा। भाई से धन-दौलत प्राप्त होगी। जन्मदिन के बाद का हर तीसरा महीना श्रेष्ठ रहेगा। आप साहसी होंगे। हर प्रकार की शरारत का जवाब

देने की आप में क्षमता होगी। आपके मन में शांति रहेगी। सांसारिक जीवन में भी आप योगी जैसे स्वभाव के होंगे। यदि आप साधू हो जाएं तो ऋद्धि-सिद्धि की साधना के मालिक होंगे। गृहस्थी, धन-दौलत के भंडारी होंगे। आपके परिवार में मर्दों की संख्या अधिक होगी। आपके घर में स्त्रियों में इज्जत होगी तो आपका भाग्योदय होगा। आपका पत्नी से प्रेम और सेवा उत्तम फल देगी। कुदरत लंबे हाथों से आपकी मदद करेगी। गरीबों पर तरस खाएंगे। आपके पिता को कम और माता को अधिक सुख मिलेगा। माता या पिता में से एक की लंबी आयु होगी। दिमागी शक्ति अच्छी रहेगी। लड़की की शादी में उसके ससुराल वालों से पैसा लेना जहर जैसा असर देगा। आप सरकार या विद्यापीठ से सम्मानित होंगे। आपको शतरंज-तैराकी का शौक हो सकता है।

यदि आप होस्टल वार्डनर हैं और विद्यार्थियों का सामान खुर्द-बुर्द किया, रिश्तेदारों का विरोध किया, भाई-बहन का हिस्सा दबाया या ब्याही बहन का धन लेकर वापिस न किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से भाई-बहन को अपमानित किया या भाई-बहन को दुःखी किया तो आपके घर में चोरी का भय और यात्रा में हानि हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन-भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों का सामान हड़प न करें।

उपाय :

1. लड़की/बहन के विवाह में कन्या दान करें।
2. दुर्गापाठ या कन्याओं की सेवा करें।
3. लड़के जन्म पर गुड़-गेहूं-तांबा दान करें।
4. लड़की के जन्म पर दूध-चावल-चांदी का दान करें।

### मंगल

आपकी जन्मकुंडली में पहले खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप अंदर-बाहर एक जैसे, संतान सुख से युक्त, और प्रसन्न रहेंगे। आप विद्वान, शूरवीर, एवं साहसी हैं। आप बुरे के साथ भी नेकी करेंगे। आप नेकी छोड़ने से कलंकी बन जाएंगे। आप परिवार के भाग्य को जगाने वाले हैं। आप साधू-सन्यासी की सेवा करेंगे। 18 वर्ष के बाद सरकारी सेवा में या सलाहकार के कामों में रुचि लेंगे। शत्रु से आप बचते रहेंगे। आप अगर नौकरी करते हैं तो 35-40 वर्ष की आयु तक ही नौकरी करेंगे। राज्य सरकार से लाभ मिलेगा। आप पलट कर आक्रमण करने वाले हैं। आपको छोटे बहन-भाई का सुख मिलेगा। आप 28 साल के बाद जीवन में उन्नति करेंगे। आप किसी की सच्चाई या नेकी को सदा याद रखेंगे। आपके उच्च पदाधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे। लोहा, लकड़ी तथा मकान के कामों में लाभ

पाएंगे। परिवार के लोगों के साथ मिल कर काम करें तो बहुत अच्छा रहेगा। आपके मुंह से निकली बुरी बात का दूसरों पर बुरा असर होगा। आपका आशीर्वाद लोगों को फलेगा।

यदि आपने मुफ्त माल या दान लिया, जूठन खाया और झूठ बोला, माता को कष्ट दिया या माता का विरोध किया, अपशब्द बोलने की आदत हो तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से शारीरिक कष्ट की आशंका है। मुफ्त की चीजें नहीं फलेंगी। आलस्य से कई बार आप अपने बने-बनाये काम बिगाड़ सकते हैं। मानसिक रोग या तनाव हो सकता है। दुर्घटना का भय है, अतः वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। आपकी माता को आप्रेशन का भय है। भाई को परेशानी या आपको बहन के सुख का अभाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त का माल या दान न लेवें।
2. हाथी दांत घर में न रखें।

उपाय :

1. बड़ा भाई जीवित हो तो लाल रुमाल रखें।
2. भाई और साले की सेवा करें।

### बुध

आपकी जन्म कुंडली के पहले खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको ज्योतिष विद्या से लगाव रहेगा और आप पूर्णरूपेण इस विषय के ज्ञाता भी होंगे। आपका संबंध व्यवसाय, व्यापार से रहेगा। शिल्पकला, दस्तकारी से भी लगाव रहेगा। आपकी बुद्धि भी तेज होगी। आप द्विस्वभावात्मक प्राणी हैं। आप पर दूसरों का असर तेजी से पड़ता है। दो शत्रुओं के मध्य रह कर भी सुरक्षित रहेंगे। फलस्वरूप आप अच्छे कार्य एवं अच्छी बुद्धि से प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं। आप सामर्थ्य और शक्तिशाली व्यक्ति के पक्षधर हो कर उसे शक्ति प्रदान करते हैं। भयातुर धीरे-धीरे चलने वाले, मधुरभाषी, आकर्षक व्यक्तित्व के, अनेक रूपों वाले हैं। आप बातचीत करना पसंद करते हैं। आप कल्पना जगत के प्राणी हैं। हर व्यक्ति को अपना बना लेने की कला विद्यमान है। आपकी ऊंची बातें भाग्य बनाने में सहायक हैं। आपके मुंह से निकली बुरी बात का असर पड़ता है। आप के अंदर आन्तरिक शक्ति है एवं काम कला में प्रवीण हैं। आप दूसरों की परवाह नहीं करते हैं, स्वार्थपरायण, अपनी प्रशंसा चाहने वाले हैं।

यदि आपने नेकी का रास्ता छोड़ बदी का रास्ता अपनाया, अण्डे खाये, राग गाने का शौक रखा, शराब पी और मांस-मछली खायी, अधर्म के काम किये या जादू-टोना वशीकरण आदि विद्या में रुचि रखी तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी कुछ आदतें बुरी हैं। धीरे-धीरे सोच-समझ कर बोलने की आदत से बुद्धिमानी का प्रतीक बनेंगे। आप चलते-चलते या काम करते-करते बातें करना



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



पसंद करते हैं। अकारण कंजूसी बरतना प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। संतान सुख में बाधा की आशंका है। चमड़ी का रोग या पेट में खराबी रहेगी। जादू-टोना विद्या में रुचि रखने से धन-परिवार की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अंडा या अंडे से बनी चीजें न खावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।

उपाय :

1. धर्म-कर्म करें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा जरूर करें।

### गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से वकील-जज या उच्च पद प्राप्त होगा। आपके दिमाग में उपजी बातें अवश्य पूरी होगी। आप दूसरों का भला करते समय अपने नुकसान का ख्याल नहीं रखेंगे। आपको लॉटरी से या अचानक धन की प्राप्ति हो ऐसी उम्मीद है। आपको सरकार द्वारा भी लाभ प्राप्त होगा। आपको उत्तम भवन एवं सवारी का सुख मिलेगा। 24वें वर्ष की उम्र तक शिक्षा प्राप्त करेंगे। आप बहुत ही चालाक और भाग्यवान होंगे। आप सभी के मददगार होंगे। आपका स्तर अपने पिता के स्तर से ऊंचा होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करेंगे तो आप अच्छे अफसर हो सकते हैं। सरकारी यात्रा का शुभ परिणाम मिलेगा। आपके माता-पिता की दीर्घायु, चाचा-ताऊ सुखी होंगे। आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे आपको मानसिक शांति तथा मन को प्रसन्नता मिलेगी। आप भूमि के स्वामी होंगे तथा आपका मकान आलीशान होगा। लक्ष्मी आपके घर में निवास करेगी। आपको स्त्री-औलाद और माता-पिता का अच्छा सुख मिलेगा। भूमि में गड़े धन की प्राप्ति हो सकती है। लोहा आदि, मशीनरी के काम से बहुत लाभ उठाएंगे।

यदि आपका निर्धन व्यक्ति से संबंध रहा, टूटा सामान या टूटे हुए खिलौने चिपकाने या जोड़ने वाले पदार्थों आदि से जोड़ कर रखे होंगे, परस्त्री संबंध हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अपनी बेड़ी डोव मल्लाह की तरह आपका हाल होगा। आपके जीवन का 23, 34, 48 एवं 55वां वर्ष अच्छा होगा परंतु इन वर्षों में माता पर बुरा असर पड़ेगा। आप पर कुछ लांछन लग जाएं या सम्मान को खतरा पहुंचे ऐसी आशंका है। आप पर कोई भयानक मुसीबत नहीं आएगी। एक से अधिक औरतों से संबंध रखने का फल अच्छा नहीं होगा। राजा होते हुए भी फकीरी लेने का विचार दिमाग में आता रहेगा। आपकी पत्नी के वक्षस्थल या गर्भाशय में कैंसर हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और

उपाय करें।

परहेज :

1. दूटे हुए खिलौने घर में न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से संबंध न रखें।

उपाय :

1. धर्म मंदिर में हर रोज सिर झुकाएं।
2. कुल पुरोहित की सेवा करें।

### शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी ज्योतिष, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी। आप अपने परिवार का पोषण करेंगे। राज्य पक्ष से अच्छा लाभ मिलेगा। आप हर प्रकार से सुखी रहेंगे। स्त्री के माध्यम से जो भी कार्य संपन्न होते हैं वह आपके लिए अच्छा होगा। आपके काम के सुनिश्चित परिणाम प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी आड़े समय में मददगार होगी। आपके जीवन में तरक्की की बागडोर आपकी पत्नी के हाथ में होगी। आप औरत की इज्जत करेंगे इसका अच्छा फल मिलेगा। विवाह के बाद काफी धन मिलेगा। स्त्री का पूरा सुख मिलेगा। आप सदैव ही दूसरों की सेवा हेतु तत्पर रहेंगे। आप जवानी में अपना समय ऐशो आराम से बिताएंगे। आपके मन में वहम समाया हुआ रहेगा। आप चित्रकला प्रिय अथवा गायन प्रिय होंगे। आप धर्माचरण करके शुभ प्रभाव को अपनाएंगे। आपको खेती-बाड़ी का लाभ भी मिलेगा। आप बेरहम होंगे फिर भी आपका मान-सम्मान बरकरार रहेगा। आपके पास बहुत जायदाद होगी।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे या पत्नी की सेहत खराब के समय देखभाल न की, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आप बूढ़े होने पर दूसरे लोगों को अपने जीवन में भुगती बातों को सुना कर समय बर्बाद करेंगे। पत्नी बीमार रहा करेगी तो आपका भाग्य अच्छा नहीं रहेगा। कन्या संतान का आपके जीवन पर बुरा प्रभाव हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. पत्नी के स्वास्थ्य का विधेय ध्यान रखें।

उपाय :

1. गाय दान करें।
2. देसी घी का दीपक जलावें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपके जन्म के बाद आपकी पैतृक संपत्ति और पिता का धन बढ़ेगा। आप इंजीनियर, डाक्टर बन सकते हैं। आप शक्की स्वभाव के होंगे। लोहा/लकड़ी और नमक, आग से संबंधित कामों से अधिक लाभ होगा। आपके धन में वृद्धि होगी। आपके माता-पिता को धन की कमी नहीं रहेगी। आपकी आयु पर कोई भी बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आपने झूठ बोला और बदनीयती रखी, व्यसनों में मदहोश रहे, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा भी अधूरी रह जाए या इच्छित शिक्षा नहीं मिले, ऐसी आशंका है। आप आलसी, अभावग्रस्त और अस्वस्थ रह सकते हैं। आपकी पत्नी, दौलत पर बुरा असर पड़ सकता है। आपके लिये खानदानी या जद्दी काम में बरकत नहीं होगी। आप चोरी, झूठ या धोखाधड़ी करने में भी पीछे नहीं रहेंगे। शरीर पर अधिक बालों का होना निर्धनता का सूचक है। आप अगर सरकारी नौकरी करते हैं तो नौकरी का फल विशेष मंदा रहेगा। सरकार से बहुत अच्छे लाभ का योग नहीं है। पत्नी को शारीरिक कष्ट हो सकता है। आपके साथ चोरी, धोखेबाजी, संतान को कष्ट या कुछ भी हो सकता है। माता को कष्ट और आपको दुःखी होना पड़े ऐसी आशंका है। आपका कारोबार बिगड़ सकता है या पिता-दादा के कारोबार का दिवाला भी निकल सकता है। भाग्य के बिगड़ने की आशंका है। आग से जलने का भय है। विद्या अधूरी, पेट में खराबी, धन की तंगी रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. विवाह या पुत्र जन्म आदि पर खुशी के समय ढोल-बाजे आदि न बजाएं।
2. शराब पीना, मांस खाना और इश्कबाजी दूर रहें।

उपाय :

1. वीरान जगह में सुरमा दबायें (नौकरी-व्यापार में तरक्की के लिये)।
2. बंदर को गुड़ केला खिलायें (धन की तंगी के समय)।
3. वट-वृक्ष की जड़ के दूध का तिलक करें (स्वास्थ्य खराब के समय)।

## राहु

आपकी जन्मकुंडली में राहु चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सर्वगुण संपन्न, धनवान, और आयुवान होंगे। आप तीर्थ यात्रा करेंगे। आप एक सज्जन पुरुष होंगे तथा अपना जीवन सुख से बितायेंगे। आप अपार धन-संपत्ति के मालिक बनेंगे। आपको अपने सगे संबंधियों से भी धन-दौलत प्राप्त होगी। आप दूसरों की भलाई करेंगे आप भले लोगों की गिनती में गिने जाएंगे। आप धर्मात्मा, वाहन सुख से युक्त होंगे। आप अपनी बहन और पुत्री पर धन खर्च करेंगे। आपको ससुराल से भी धनागम होता रहेगा। आपको सरकार पक्ष से पूरा लाभ

होगा तथा अपने बुजुर्गों का घर भर देंगे। ससुराल में भी धन की वृद्धि होगी। आप के पास 24 वर्ष की उम्र के बाद धन एकत्र होगा, गरीबी दूर हो जाएगी और धन की वर्षा होगी। आपके पिता और आपके पुत्र पर अच्छा असर पड़ेगा परंतु माता के लिए अशुभ होगा। आपके पास भूमि, भवन, वाहन सभी प्रकार के सुख-संसाधन उपलब्ध होंगे। यदि आप सरकारी महकमे में कार्यरत होंगे तो सरकारी महकमे में बड़े अफसर होकर अच्छा ओहदा प्राप्त करेंगे। आप जन्म भर सुखी रहेंगे। बंदूक-पिस्तौल आदि रखने का शौक होगा।

यदि आपने पाखाने की जगह बदली, घर की छत पर लकड़ी के कोयले रखे, सीढ़ियों के नीचे रसोई बनाई, माता की आयु की स्त्रियों से संबंध रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके जीवन का 34वां वर्ष कष्टकारी होगा। माता को कष्ट की आशंका है। आप माता का विरोध करेंगे। ससुराल, ननिहाल के लिये अशुभ रहेगा, राजदरबार में हानि, दो विवाह योग या पत्नी के साथ रखैल रखें, ऐसी शंका है। रखैल पर धन बर्बाद करके अपना जीवन नष्ट कर लेंगे। आपको वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। दिन में स्वप्न देखने वाले होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. माता की आयु की स्त्री से अवैध संबंध स्थापित न करें।
2. गंगा नदी में स्नान न करें।

उपाय :

1. घर पर गंगा जल से स्नान करें।
2. सूखा धनिया जल प्रवाह करें।

### केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान, नौकर-चाकरों से युक्त, उत्तम सुख से परिपूर्ण तथा अपने पथ पर अग्रसर रहने वाले होंगे। आप इतने अच्छे मुकद्दर के हैं कि आप मिट्टी छुएं तो सोना हो जाता है। 24 वर्ष की उम्र के बाद संतान प्राप्ति योग होगा। आपको कन्या संतान से सुख और पुत्र संतान से मध्यम सुख संभव है। आपको पुत्र का सुख प्राप्त होने की आशा है। आप खेल जगत में विश्व प्रसिद्ध बन कर ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी। निर्धनता कभी भी नहीं आएगी। आप शक्की स्वभाव के हैं। आपके जीवन में 48 वर्ष आयु तक समय तो मिला-जुला फल देगा। इसके बाद का समय बहुत ही शुभ और सुखकारक सिद्ध होगा। आपकी आर्थिक स्थिति पर कोई विशेष बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। कुल मिला-जुला कर आपका जीवन सुखमय ही रहेगा।

यदि आपने अपने भाई से झगड़ा किया, पर स्त्रियों से अनैतिक संबंध रखें तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से आपका चाल-चलन ढीला हो तो पुत्रियां अधिक होने, नपुंसक होने की संभावना रहती है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



निःसंतान या संतान गोद लेने का योग होता है और जिससे आपको बहुत ही पीड़ा भोगनी पड़ सकती है। आपके भाई आपको गद्दे में धकेल सकते हैं या आपके धन का दुरुपयोग करेंगे। पराई औरत से संबंध आपके दांपत्य सुख में बाधा पहुंचा सकते हैं। आपके जीवन के लिए घातक और मौत का कारण सिद्ध हो सकता है। 48 वर्ष के लगभग पुत्र सुख मिलेगा या माता की आंखें खराब होने पर या माता की मौत के बाद पुत्र जन्म हो ऐसी संभावना है। धन का अपव्यय या अवनति होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. कुत्तों से नफरत न करें।

उपाय :

1. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।
2. घर में चांदी के बर्तन में शहद भर कर रखें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वितीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि पंचम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि छठे सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि पंचम भाव में आ जाएगी।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकती है, जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप अपने साझेदार से संतुष्ट नहीं रहेंगे और आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए अच्छा रहेगा।

14 मई के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे। जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप बचत नहीं कर पाएंगे। बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

14 मई के बाद धनागम में निरन्तरता बढ़ जाएगी जिससे कर्जें इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च करेंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में कुछ विशम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य में आपकी अहम भूमिका होगी। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः उत्तम रहेगा।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे, परन्तु 14 मई से गुरुग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।

यह समय गर्भधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा। नैसर्गिक रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यदि वे विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार भी हो सकता है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीय स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव भी आपके शरीर पर पड़ेगा। 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर भी द्वितीय स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आप अचानक रोग ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरुग्रह के गोचर के बाद आपका समय काफी अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए इस वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः संघर्षात्मक परिस्थितियों में आपको सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए 14 मई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। नौकरी के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि से विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। 14 मई के बाद लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा, मन्त्र पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति

श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं और नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को राटी में गुड़ डालकर खिलाएं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## मासिक फलादेश

### जनवरी 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रुचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबंधियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

### फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राह्मणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबंध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपकी क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

### मार्च 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

### अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्टान्न के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

### मई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा

विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यों को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

### जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

### जुलाई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व

में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे। साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

### अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यों को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

### सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे। अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते हैं जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

### अक्टूबर 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राह्मणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

### नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबंधी कार्य भी सम्पन्न

होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

### दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यों को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनो को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ, खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी और दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें। अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## मासिक फलादेश

### जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय स्त्री पक्ष से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके सौभाग्य में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध हो जाएंगे इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आपकी रुचि उत्पन्न होगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे इस मास में आप इच्छित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपको रूके कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ समय समय पर अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप ठंड या वात से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

### फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा इस समय आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगे जिससे आप आर्थिक दृष्टि से परेशान होंगे। साथ ही आप दुष्ट मनुष्यों की संगति में भी रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अधिक परिश्रम के द्वारा अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में उपेक्षा का भाव रहेगा। संबंधियों तथा मित्रों से भी आपके मधुर सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा इनसे परस्पर मनमुटाव रहेगा। इस समय आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी फलतः मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रु वर्ग से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप शीत से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी तथा बाद में आप पश्चाताप करेंगे। साथ ही आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः संयम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

### मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आयस्त्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यों को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

### अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे तथापि अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा तथा उनमें आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध हो जाएंगे। मिष्टान्न के प्रति इस समय आपके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु आपसे इस समय निर्बल रहेंगे तथा उन्हें पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अतिरिक्त साधनों से धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभफल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोग से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस समय पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यों को संपन्न करना चाहिए।

### मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा अन्य लोग आपकी श्रेष्ठता तथा

प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही आप धन एवं सुखोपभोग की सामग्री अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। अन्य लोगों के परोपकार संबंधी कार्यों को करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा भाग्योदय संबंधी कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे।

### जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यों में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते हैं या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीड़ित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यों को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

### जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य अर्जित करेंगे। साथ ही पुत्र संतति से आपको इस मास में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रुचि

उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफल भी रहेंगे। आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस समय आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग भी प्राप्त होगा साथ ही समाज में भी आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से आवश्यक सहयोग अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुखार्जन में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगे तथा समाज में आदरणीय समझे जाएंगे।

### अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रु भी आपसे बलवान रहेंगे एवं आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित किया जा सकता है। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में भी आपके आदर में न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्रों से आपका इस समय मन मुटाव रहेगा तथा मानसिक इच्छाएं अपूर्ण ही रहेंगी। अतः तनाव से बचने के लिए संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित कर सकेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

### सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु पक्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही

आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबंध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।

### अक्टूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा चिन्तित भी रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते हैं। साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यों में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

### नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। साथ ही प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। आपके घर में इस मास में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। सन्तति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। समाज में सर्वत्र इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



तथा भाग्योन्नति संबंधी शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी इस मास में योग बनेगा। साथ ही सरकारी तंत्र से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा अन्य कारणों से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करें।

### दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। साथ ही बन्धु तथा मित्र वर्ग से मधुर तथा घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा दूसरे लोगों की भलाई के कार्यों में भी आप तत्पर रहेंगे। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक फैलेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में स्त्री तथा पुत्र से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या वस्तुओं को अर्जित कर सकते हैं। इस प्रकार आप आनन्द पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डाल जा सकते हैं। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा।

## संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थान पर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योंकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

## संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

## यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

### धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता है उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

### यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालों के स्थानान्तरण होगा। यह

परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे माह भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

23 सितम्बर के बाद आपके अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्वाइट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे

### धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 17 अप्रैल के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करें।

धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 1 मई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



मिलेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

17 अप्रैल के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू वातावरण में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। पंचम भाव पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकती है। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को कुछ और इंतजार करना पड़ सकता है।

1 मई के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। कार्यों के प्रति सक्रिय और अति उत्साहित होने के चलते आप पूरे साल एकदम तंदुरुस्त रहेंगे। सुबह-शाम टहलना व नियमित व्यायाम अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

17 अप्रैल के बाद मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। स्वस्थ रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 1 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से हट सकता है। आपको प्रतियोगिता परीक्षा एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से

प्रतियोगिता परिक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 17 अप्रैल को शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

1 मई से आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होने के प्रबल योग बन रहे हैं। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। इस समय आप अधिक पुण्य का कार्य करेंगे। 1 मई से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए उत्तम रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली खासियत जो आप में है, आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आनंद भी लेंगे। अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। आपकी कुण्डली में दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। आपके आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपको कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

### धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए और उद्देश्य पूर्ति के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

9 अगस्त के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। पारिवारिक चिंताएं बढ़ सकती हैं। 9 अगस्त से घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा।

15 अक्टूबर के बाद अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हो सकता है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपके पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपका आत्म सम्मान बढ़ेगा।

### संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। 18 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

### स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपकी दृढ़ निश्चयता और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण ही आप एकदम स्वस्थ रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

18 फरवरी से गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने के कारण आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता आएगी। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 18 फरवरी के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

राहु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 15 अक्टूबर के बाद व्यावसायिक व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

### यात्रा-तबादला

इस वर्ष कोई विशेष यात्रा के योग नहीं बन रहे। 18 फरवरी के बाद आपकी छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

राहु के गोचर के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु नमव भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुएकादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं एकादश में आजाएंगे और पुनः मार्गशीर्ष होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

### व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं वह काबिले तारीफ है। 5 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। 23 अक्टूबर से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगीपरन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए योजना निर्धारित करनी होगी।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तमरहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 5 मार्च के बाद गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर भी बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं।

12 अगस्त से आपको भाईयों और मित्रोंकर अच्छा सहयोग मिलने के कारण फिर से धन संचय करने में लग जाएंगे। आपके संचित धन में वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में आपको सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 23 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़ीयानहीं रहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। ऐसी

विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

12 अगस्त से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव होने से आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का योग बन रहा है। आपके भाई व मित्रों के लिए समय बहुत शुभ है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। आपको प्रेम संबंधों में भी सफलता मिलेगी।

### संतान

वर्ष के प्रारम्भ के दो माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे, परन्तु 5 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है। 31 मई से पंचम स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी।

उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 23 अक्टूबर से आपके बच्चों का समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 5 मार्च से द्वादश स्थान पर गुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए काफी अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आप शारीरिक आरोग्यता को प्राप्त करेंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकता है। 5 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहें तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। 5 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी।

12 अगस्त के बाद आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीयस्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में

आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। 12 अगस्त से पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप मन्त्र जाप करेंगे। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन भी करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।



## वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं नवम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं द्वादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

### व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे। 18 मार्च के बाद वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा और आपको बन्धु-बान्धवों का पूरा सहयोग मिलेगा।

आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का उनके कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपके कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति के योग हैं। आप अपने व्यापार को ऊंचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

### धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चतुर और सूझ-बूझ भरे व्यक्ति हैं तो इसके चलते आप इन चुनौतियों को ही लाभकारी अवसरों में परिवर्तित कर सकते हैं।

लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। यदि ऋण के लिए आवेदन दिया है तो वह भी मिल जाएगा। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक संपत्ति के लिए अच्छा नहीं है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वितीयस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगा। जिससे आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा। आपके



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा।

धर्मपत्नी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। भाई-बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। अतः आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

### संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं वे गलत संगत में पड़ सकते हैं जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ध्यान से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

18 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं। आपके बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो अपने लक्ष्य से उनका मन भटक सकता है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना प्रारम्भ हो जाएगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या पर ध्यान दें। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करने समय सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

वर्ष के मध्य में एकादश स्थान का मंगल प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए काफी शुभ है। उनके करियर में सफलता के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 18 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेंगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट होंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, भिखारियों को दान देना, धार्मिक स्थान पर भंडारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

### व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध हितकारी रहने वाला है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रह गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। अष्टम स्थान का राहु आपके व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी उत्पन्न कर सकता है, जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कुछ कठिनाइयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगा। अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

### धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के मार्ग खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 28 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। 12 अगस्त के बाद सप्तम भाव में राहु ग्रह का गोचर आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं रहेगा। शारीरिक अनुकूलता पर धन का व्यय होगा। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। पारिवारिक सुख सुविधा के लिए अधिक धन खर्च करेंगे।

### घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक दृष्टिकोण से उत्तम रहेगा। 28 मार्च के बाद आपके परिवार में



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



सदस्य वृद्धि के संकेत हैं। यह वृद्धि किसी के विवाह या शिशु जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध शुभ नहीं है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

### संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

बच्चों के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम एवं सुबह-सुबह टहलना आदि। वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप सेहत पर ध्यान नहीं देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर अनावश्यक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर योगा आदि करना आपके लिए लाभप्रद है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। ज्योतिष व गुप्त विद्या के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति व्यवसाय के रूप में करियर खोज रहे हैं। उनके लिए शनि ग्रह का गोचर एक सुनहरा अवसर लेकर आ रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है, जिसमें आपको अच्छी उन्नति मिलेगी।

### यात्रा-तबादला

28 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित भी यात्राएं होती रहेंगी। 13 जुलाई के बाद द्वादश स्थान पर



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

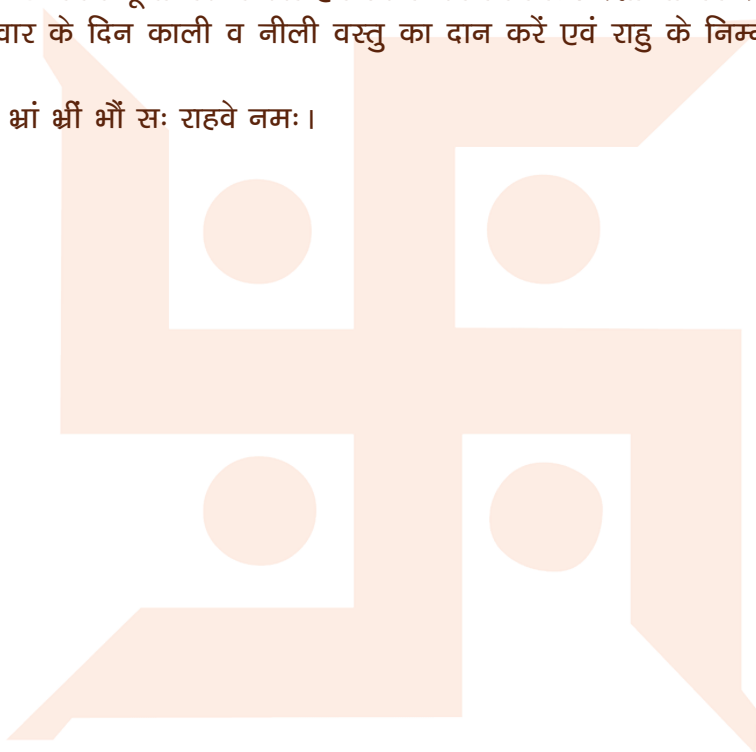


शनि ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है।

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान-पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने पूजा घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनि व बुधवार के दिन काली व नीली वस्तु का दान करें एवं राहु के निम्न मन्त्र का पाठ करें।

ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि छे भव में और सिंह राशि का राहु सप्तम भव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वितीय भव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं तृतीय भव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वितीय भव में रहेंगे।

### व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

6 अप्रैल के बाद आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझ कर ही धन का व्यवहार करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परन्तु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे।

### घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा जिससे पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 6 अप्रैल से आपके छोटे भाईयों के लिये समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य

भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे।

सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो इस पर विशेष ध्यान दें।

### संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो इस वर्ष अवश्य उनका विवाह हो जाएगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। सप्तमस्थ राहु के कारण अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। नहीं तो उसकी उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

### स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है। आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम या सुबह-सुबह टहलने जाना। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती है या प्रारम्भ हो सकती है। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योग करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों का नए-नए तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यवसाय में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है।

### यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 6 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं

के साथ आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक तीर्थ यात्रा भी करेंगे।

द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। 6 अप्रैल से समय धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दुसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। जितना आप अच्छा कार्य करेंगे उतना ही आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन व पूजन करें। इसके प्रभाव से ग्रहजनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा, साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आपका अच्छा खर्च हो जाएगा। 15 अप्रैल के बाद आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से भी आपको लाभ मिलेगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

15 अप्रैल के बाद घरेलू वातावरण बहुत ही अच्छा रहने वाला है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। परन्तु 27 अगस्त के बाद आपकी पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकता है।

### संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अप्रैल के बाद दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही श्रेष्ठ रहेगा। वे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे समाज में आपका मान संमान बढ़ेगा। यदि आप दूसरे संतान की इच्छा रखने हैं तो गर्भाधान के लिए अच्छा समय चल रहा है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय बहुत ही बढ़िया हो रहा है। आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छोटे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह टहलने जाना इत्यादि।

27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आप समय पर अपना खान पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। विद्यार्थियों को नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। रोजगार के नये नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। 27 अगस्त के बाद आलस्य की भावना आपकी सफलता में बाधक साबित हो सकती है। अतः अगस्त के बाद आलस्यता व अत्यधिक आत्मविश्वास का त्याग करें और यथार्थवादी बनें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 15 अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान पर गुरु, राहु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपकी अवश्य विदेश यात्रा होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- श्वेतार्क गणपति अपने घर में स्थापित करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में धारण करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य-व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में स्थानान्तरण की भी संभावना बन रही है। 26 अप्रैल से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके व्यापार में रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

सितम्बर के बाद समय और भी ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। आपके कार्यों में प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं है। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों को अचानक हानि होगी। परिवार में रोग-बीमारी अधिक होने के कारण आपका व्यय बढ़ेगा।

### धन संपत्ति

वर्षारम्भ में चतुर्थ स्थान का गुरु आपको भूमि, भवन, वाहन के साथ संचित धन की प्राप्ति करा सकते हैं। माता जी से धन लाभ होने का अच्छा योग बन रहा है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत तो बढ़ेंगे परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर भी ज्यादा खर्च होगा। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं।

16 सितम्बर के बाद लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आय के मार्ग प्रभावित होंगे। किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में आपका घरेलू माहौल अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। 26 अप्रैल से संतान व भाईयों के लिए समय बहुत

ही शुभ हो रहा है।

सप्तम स्थान का शनि आपकी पत्नी के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंचमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपके प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं संमान प्रदान करेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए आप श्रेष्ठ कार्य करने में रुचिशील रहेंगे।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा।

26 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का श्रेष्ठ समय रहेगा। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो इस समय के अंतराल में उसका विवाह हो सकता है। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह साल सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। मौसमजनित बीमारियां भी आपको तंग कर सकती हैं। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है। अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि छठे स्थान का राहु रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान कर रहा है।

अप्रैल के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे। फिर भी आलस्य की भावना बनी रहेगी। किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। 19 अक्टूबर के बाद अचानक आपकी संतान का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त हो सकते हैं। परन्तु शीघ्र ही यह स्थिति भी ठीक हो जाएगी।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्ठस्थ राहु के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए साल का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अप्रैल के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। लेकिन 16 सितम्बर के बाद करियर में उन्नति के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु एवं राहु की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इस वर्ष आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

26 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्रा भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी अधिक करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 26 अप्रैल के बाद आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। परन्तु इन सभी कार्यों में आपकी पत्नी का सहयोग कम ही रहेगा।

- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं और शाम के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन तांबे की लोटे में चावल, रोली डाल कर सूर्य को अर्घ्य दें।
- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उसका पूजन करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

### व्यवसाय

काम काज में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट उत्पन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। आपके शत्रु आपको किसी षड्यन्त्र में फंसा सकते हैं तथा आप इस परेशानी से निकालने में अपने को असमर्थ समझेंगे। 11 मई के बाद समय और भी प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। फिर भी किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह के बिना महत्वपूर्ण फैसले न लें। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण सतर्कता बरतने की जरूरत है। निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। इस बात को न भूलें की जल्दबाजी में लिए गए फैसले अक्सर गलत ही होते हैं। आपका कोई करीबी या कोई अन्य आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकता है। कारोबार से संबंधित सभी कार्यों में सावधानी बरतें और जो भी लेन-देन करें लिखित रूप में ही करें तो ज्यादा बेहतर होगा।

### धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छी है। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी फिर भी आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे क्योंकि राहु के साथ गुरु की युति अच्छी नहीं होती। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपके अच्छा संदेश नहीं दे रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऐसे में आप देन लेन के मामले में सावधान रहें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। धर्म पत्नी एवं पुत्र का स्वास्थ्य अनुकूल करने में धन व्यय होगा। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

7 अक्टूबर से व्यापारिक व्यक्तियों को कुछ लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जो आपके लिए अच्छा नहीं है। शेयर बाजार से दूरी बनाए रखना आपके लिए लाभदायक होगा। बिना सोचे-समझे कहीं भी निवेश करने से बचें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रही है। सहनशक्ति बनाए रखें। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। मई के बाद आपके मातुल पक्ष के लोगों के लिए समय अच्छा नहीं है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा। आपको भाईयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए शुभ नहीं है।

## संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो आपके बच्चों के लिए अनुकूल नहीं है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। 11 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों का संतान हानि (गर्भपात) हो सकता है। अतः उस समय आपको संतान पर विशेष ध्यान देना होगा।

अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय काफी शुभ है।

## स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, जिससे आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

11 मई को गुरु ग्रह का गोचर आपको मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। लग्न स्थान पर पाप ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी हो सकती है। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। इस समय के अंतराल में अचानक कोई बड़ी बीमारी होने का प्रबल संकेत दिखा रहा है। हालांकि अक्टूबर के बाद समय किंचित अनुकूल हो रहा है। फिर भी अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। तुला दान या महामृत्यंजय जाप करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। पंचम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपकी उन्नति को रोक रही है। मई के बाद नौकरी के लिए प्रयासरत अभ्यर्थियों को प्रतियोगिता में व्यवधान व करियर में रुकावटें आ सकती हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है क्योंकि आने वाले समय में यही परिश्रम आपकी सफलता का द्वार खोलेगा।

7 अक्टूबर के बाद समय में कुछ सुधार हो रहा है तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को सफलता मिल सकती है। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए भी समय शुभ है। नौकरी वांछित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि लम्बी यात्रा का योग बना रही है। धार्मिक यात्रा का भी आनन्द ले सकते हैं। व्यवसाय से संबंधित भी आपकी यात्राएं होती रहेंगी।

11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। सांस्कृतिक उत्सवों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। आपके धर्म के अनुसार जितने भी पर्व होते हैं उन सभी पर्वों को हर्षोल्लास के साथ मनाएंगे। मई के बाद आप दान पुण्य में ज्यादा रुचि लेंगे- जैसे मन्दिर निर्माण, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर खूब पुण्यार्जन करेंगे। अक्टूबर के बाद आपके दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष यज्ञ अनुष्ठान करेंगे, जिससे आपको अत्यधिक मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगा।

- दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें तथा सात मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न का दान (तुला दान) करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित कर नित्य उसका दर्शन करें।

## वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक स्थिति के लिए सामान्य रहेगा। आपके अंदर काम करने का जुनून तो होगा परन्तु कोई शुभ अवसर नहीं मिलने के कारण आपका मनोबल कमजोर हो सकता है। 5 अप्रैल के बाद आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा नहीं है, आपको धोखा मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है। 2 जून के बाद सफलता की कुछ उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको कुछ लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे, जिसमें आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। कोर्ट कचहरी व किसी कानूनी प्रक्रिया में फंस सकते हैं। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में रुचि से अधिक दबाव की स्थिति बन सकती है।

### धन संपत्ति

वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता बनी रहेगी। 3 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। धनागम के मार्ग प्रभावित होंगे। बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लें। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

अप्रैल के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। धन विनियोजन को प्रबल करने के लिये आपको पराक्रम से काम लेना होगा। इस अवधि में आपका सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा। 4 नवम्बर से वित्तीय विषयों के लिए समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ तो उत्तम रहेगा, परन्तु 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। 7 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह की उपस्थिति अचानक घरेलू महौल को खराब कर सकती है। आपकी रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। सप्तम स्थान में शनि की स्थिति आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छी नहीं है। आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें।

सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह साल अच्छा नहीं है। अतः आपको सभी के साथ अच्छा संबंध बना कर रखना चाहिए। छोटी-मोटी बातों को अनदेखा कर देना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के लिए भी यह समय शुभ नहीं है। 4 नवम्बर के बाद माता पिता के लिए समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उनके स्वास्थ्य पर आपको ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

## संतान

पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ में आपको अपनी संतान को लेकर चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा-दीक्षा पर भी पड़ेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। भाग्य थोड़ा कम ही साथ देगा।

2 जून के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए यह समय बढ़िया रहेगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। 4 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय बच्चों के रहन सहन पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंता भी बनी रहेगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि 2 जून से समय किंचित अच्छा हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लेकिन वर्षान्त में समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

4 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। अष्टमस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य सुख में कमी आ सकती है। यदि आपने छोटी मोटी बीमारियों को अनदेखा किया तो यह बड़ी चिंताजनक बनकर सामने आ सकती हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए समय

समय पर विकित्सक की सलाह का लाभ उठाना लाभकारी रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस साल आपको परिश्रम के अनुसार परिणाम नहीं मिलेंगे। आप अपने लक्ष्य के पथ पर अग्रसर रहेंगे तथा सफलता की उम्मीद को ले आगे बढ़ते रहेंगे। 2 जून से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपका रुझान राजनैतिक, तन्त्र, यन्त्र, मन्त्र, विद्या, सिद्धि एवं चमत्कारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक होगा।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनके लिए यह समय शुभ नहीं है। परन्तु विदेश में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अच्छी उन्नति करेंगे। 4 नवम्बर से समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। नौकरी करने वालों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है।

### यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। मोटी-माटी यात्राएं होती रहेंगी। लम्बी यात्रा का योग इस वर्ष कम ही बन रहा है। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी।

2 जून से सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्रा होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 4 नवम्बर के बाद दुर्घटना या चोट चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नहीं पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होंगे। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्मों को ही पूजा समझेंगे। 2 जून से धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में शुभ ग्रह का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएं।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं तथा काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।

## वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। मुख्यतः सारे ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ शनि एवं गुरु के कारण गुप्त शत्रु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकते हैं। वर्ष के प्रारम्भ में आपको किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास नहीं करना चाहिए। उच्चाधिकारियों का सहयोग समय पर न मिलने के कारण परेशानियां बनी रहेंगी। आप अधिकारों व शक्तियों का दुरुपयोग करने से बचें। व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए प्रयास लगान से करें क्योंकि 6 अप्रैल के बाद आपको सफलता मिल सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। व्यापार में हानि या साझेदारी में धोखा मिल सकता है। उन्नति के मार्ग भी प्रभावित होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे। 3 दिसम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके कार्यों में किंचित लाभ होगा तथा उन्नति के मार्ग भी खुलेंगे।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु एवं शनि के कारण कुछ अनावश्यक खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें तथा अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएं क्योंकि 6 अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। एकादश स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेगी, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आर्थिक मामलों के लिए और ज्यादा खराब रहने वाला है। चोरी, दुर्घटना व सट्टा इत्यादि के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। रोग-व्याधि, कोर्ट कचहरी इत्यादि में भी आपका धन व्यय होगा। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारी में शादी इत्यादि मांगलिक कार्यों में अधिक व्यय होगा। यदि आप कोई बड़ा निवेश करना चाहते हैं, तो 3 दिसम्बर के बाद समय शुभ हो रहा है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिंताएं बनी



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



रहेंगी। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता के स्वास्थ्य में कमी आ सकती है। परिवार में विचारों की भिन्नता तथा व्यर्थ के वाद विवाद सामने आ सकते हैं। किसी के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपको जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आएंगे। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

साल का उत्तरार्द्ध आपके ससुराल पक्ष के लोगों के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित परेशानी बढ़ेगी। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है इसलिए जितना हो सके पारिवारिक मतभेदों से दूर रहें। 3 दिसम्बर के बाद सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

### संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई व उन्नति में व्यवधान आते रहेंगे। आपको बच्चों के रहन सहन व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा। 6 अप्रैल से 28 जून तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। पंचम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि गर्भवती स्त्रियों के लिए खराब है। उनको अपने खान पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आप ज्यादा बीमार ही रहेंगे कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेंगी, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए श्रेष्ठ है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

साल का उत्तरार्द्ध स्वास्थ्य के लिए फिर से प्रतिकूल हो रहा है। आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति की कमी होगी, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। तुला दान या महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ नहीं है। वर्षान्त में बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

## यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। सामुद्रिक या दर्शनीय स्थलों की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप संतुष्ट नहीं रहेंगे।

नौकरी व व्यवसाय से संबंधित देश विदेश की यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा व वाहन चलाते समय हमेशा सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना इत्यादि का प्रबल योग बन रहा है क्योंकि इस वर्ष मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आलस्य व दीर्घसूत्रता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। आपके आस्था एवं विश्वास में कमी आ सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण गोपनीय विद्या, रहस्यमयी साधना तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथशाला या गरीब बच्चे के पढ़ाई लिखाई पर भी व्यय करेंगे।

- प्रत्येक दिन चिड़ियों एवं चींटियों को दाना डालें।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- महामृत्यंजय का पाठ करना या तुला दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगा।

## वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए सामान्य रहेगा। कार्य-स्थल में अपने काम को लेकर असमंजस की स्थिति बनी रहेगी। क्योंकि इस वर्ष अष्टमस्थ शनि आपको परेशान कर सकते हैं। वैसे मानसिक और शारीरिक रूप से आप काफी ऊर्जावान रहेंगे। नौकरी या व्यवसाय में आप काफी व्यस्त रहेंगे व आपका यह कड़ा परिश्रम ही आपकी सफलता में सहायक होगा। जहाँ तक हो सके अपने कार्यक्षेत्र की जिम्मेदारियों को समय पर पूरा करने की कोशिश करें। क्योंकि 6 मई के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आप मानसिक रूप से कुछ परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे।

25 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। सफलता के उम्मीद दिख रही है। व्यापारिक वर्गों से आपको लाभ होगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व कानूनी प्रक्रिया से दूर रहना ही आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

### धन संपत्ति

इस वर्ष अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर करने के लिए आप कठोर परिश्रम करने वाले हैं। ध्यान रखें वैसे भी सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। थोड़ी सूझ-बूझ और अवसर को पहचान कर आप मनचाहा धन कमाने में सफल रहेंगे। जुलाई के बाद आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार देखने को मिलेगा। साथ ही कोई पुराना फँसा हुआ पैसा भी वापस मिलने की उम्मीद है, जिससे आप काफी राहत महसूस करेंगे। शेयर बाजार में सोच समझकर ही निवेश करें। लॉटरी व सट्टेबाजी में धन न लगाएं।

25 सितम्बर के बाद आपकी आय में वृद्धि होगी। बैंक से आसानी से कर्ज प्राप्त हो सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ प्राप्त होगा। किसी प्रभावशाली व उच्च पदस्थ व्यक्ति की मदद से आपको आर्थिक लाभ होने की संभावना है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी। व्यावसायिक यात्राएँ धन अधिक खर्च करवाएंगी परंतु आपको आर्थिक लाभ भी होगा।

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग बना रहेगा। लेकिन 6 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस अवधि में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्ट कारक रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद करने से परहेज करें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

## संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

6 मई से जुलाई पर्यन्त समय प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। परन्तु 6 मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ शारीरिक परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं।

शारीरिक कष्ट के साथ मानसिक चिंताएं भी बढ़ेंगी। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। हालांकि जुलाई के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। अतः वाहनादि चलाते समय ज्यादा सावधान रहें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आपको सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त

होगा, जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। परन्तु 6 मई से जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। यह समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष शुभ नहीं है।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। अधिकांश यात्रा आपकी अचानक होंगी। 6 मई के बाद आप विदेश यात्रा करेंगे।

इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के कारण दुष्ट टिना या चोट-चपेट का योग बन रहा है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत ही जरूरी है। 25 सितम्बर के बाद शनि भी शुभ हो जाएंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। लग्न स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि का प्रभाव होने से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक पर्वों को खुशी के साथ मनाएं तथा सभी सत्कर्मों में पत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगी। 6 मई के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा। उस अवधि में आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा शनि मन्त्र का पाठ करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- मंगलवार का व्रत करें तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

### व्यवसाय

कार्य क्षेत्र में इस वर्ष आपको एक नई दिशा मिलेगी। जोखिम लेने से न घबराएं और अपने कम्फर्ट जोन से बाह्य निकलें। आपकी कार्यक्षमता और रचनात्मक ऊर्जा बहुत अच्छी बनी रहेगी। इसका सदुपयोग करें। आय के नए स्रोत खुलेंगे। अवसर का पूरा फायदा उठाएं। कार्यक्षेत्र में आपके विचारों की सराहना होगी। बड़े अधिकारी आपके काम से प्रसन्न रहेंगे। यदि अपना व्यवसाय आरम्भ करना चाहते हैं तो यह उचित समय है। अवसर और साधन आसानी से प्राप्त होंगे। नए कारोबारियों से आपका संपर्क बनेगा। उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध नौकरी वाले लोगों के लिए अनुकूल रहेगा। दशमस्थ गुरु के कारण नौकरी बदलने के ढेरों नए अवसर मिलेंगे। मनचाही नौकरी मिलेगी और पदोन्नति भी होगी। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ परेशानियां आएंगी। लेकिन इस मुसीबत से निकलने में आप सफल रहेंगे। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं। इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। भूमि, भवन व वाहन का सुख प्राप्त होगा। संचित धन की वृद्धि होगी। आभूषण एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे तथा आय के मार्ग में आने वाली सारी बाधाएं दूर होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु आपके दूसरे भाव में प्रवेश करने वाले हैं। उस समय आपको आर्थिक मामलों को लेकर बहुत ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है। दूसरों की बातों में न आएं और दूसरों के ऊपर पैसे खर्च करने से भी परहेज करें। आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है लेकिन घबराने की आवश्यकता नहीं है। गलत कार्य में धन निवेश न करें नहीं तो धन हानि हो सकती है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आप संतुष्ट व प्रसन्न रहेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम

भूमिका होगी। आपके भाईयों की उन्नति होगी। तृतीयस्थ राहु के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

22 जून को द्वितीय स्थान का राहु ग्रह का गोचर पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाओं को ठेस पहुंच सकती है तथा परिवार में कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा।

### संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए सामान्यतः अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनके दिल में स्नेह, आदर्श व सम्मान का भाव बढ़ेगा। आप लोगों के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

10 जून को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों की उन्नति में सहायक होगा। आपके बच्चे अपनी योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग पूरा वर्ष ही आपकी सेहत को सुधारने वाला रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं अथवा मौसम जनित बीमारियों से आपको परेशानी होती है तो आपकी सेहत शीघ्र ही सुधर जाएगी। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप योग क्रियाओं के द्वारा मन को एकाग्र करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी।

22 जून के बाद द्वितीयस्थ राहु के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। 10 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। इस अवधि में आपको इच्छित प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो यह समय उत्तम है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं उनके लिए यह समय उत्तम है।

### यात्रा-तबादला

इस अवधि में आपकी छोटी-बड़ी यात्राएं खूब होंगी। नौकरीपेसा व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी। नवमस्थ शनि के कारण लम्बी यात्राओं का आनन्द लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा में व्यवधान आ सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस अवधि में आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। नवमस्थ शनि के प्रभाव से आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

- शनिवार या बुधवार के दिन नीली वस्तु का दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें तथा काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- चिड़ियों, चींटियों व मछलियों के लिए दाना डालें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। पूरे वर्ष शनि तुला राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

### व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ़ जाएगी। व्यापार में आपके भाईयों से आर्थिक सहयोग मिलेगा। इस अवधि में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है तथा इस ब्राण्ड नेम से आपको भविष्य में अत्यधिक लाभ मिलेगा। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। लेकिन आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे।

30 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले लोगों का पदोन्नति के साथ अनुकूल स्थान पर तबादला होगा। समय समय पर आपको बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा तथा कार्यस्थल पर सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। सितम्बर के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय के अंतराल में व्यापार के साथ साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना लाभप्रद रहेगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वितीय स्थान का राहु अनावश्यक खर्च बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। निवेश या आर्थिक मामलों में कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर पूरे वर्ष प्रतिकूल रहेगा।

### घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपकी पारिवारिक जिन्दगी में कुछ उतार-चढ़ाव होते रहेंगे। 30 जुलाई

तक विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। द्वितीयस्थ राहु के कारण अनावश्यक रूप से कुछ झगड़े हो सकते हैं। जुलाई के बाद स्थिति सामान्य हो जाएगी। माता पिता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय ज्यादा कष्टकारक रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा व सबका सहयोग मिलेगा। सितम्बर के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी दूसरी संतान का चौमुखी विकास होगा। विवाह भी हो सकता है। 30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद पुनः अच्छा हो जाएगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। 19 सितम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है।

वर्षान्त में अत्यधिक आलस्य के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे तथा मानसिक तनाव भी बना रहेगा। नियमित रूप से व्यायाम करते रहें।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा कहा जा सकता है। तकनीकी शिक्षा व विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में सफलता के योग हैं। करियर में उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यापार में महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिकारी वर्ग से तनाव होने की संभावना है। व्यापार में आप नई टेक्नोलॉजी व मशीनों का इस्तेमाल कर सकते हैं। सितम्बर के बाद आपकी परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

### यात्रा-तबादला

इस वर्ष धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में नौकरी में स्थानान्तरण के योग हैं यह स्थानान्तरण आपके हित में होगा। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

30 जुलाई के बाद व्यवसाय या शैक्षणिक कार्यों हेतु आपकी यात्रा समीपवर्ती क्षेत्रों में होगी। साथ ही परिवार सहित प्रसिद्ध क्षेत्रों की यात्राएं होंगी एवं सगे संबंधियों के घर में विवाह इत्यादि शुभ कार्यों में जाने का अवसर मिलेगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका मन पूरी तरह से धार्मिक कार्यों में संलग्न होगा एवं इसमें आपको अपने परिवार का भी पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा विभिन्न ज्योतिर्लिंग एवं शक्ति पीठों के दर्शन का सुअवसर प्राप्त होगा।

सितम्बर के बाद आपके धार्मिक कार्य किंचित प्रभावित होंगे। लग्न स्थान का राहु आपके दैनिक पूजा पाठ में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। मानसिक अस्थिरता के कारण भी आप कोई विशेष पूजा पाठ नहीं कर पाएंगे। गणेश जी का मन्त्र पाठ आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन सूर्य को जल दें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहने वाला है। सहयोगी तथा उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति अथवा कार्यक्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होगी। व्यापार में नीति निपुणता से काम लेना आपके लिए लाभकारी रहेगा। 16 फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक मेहनत करनी होगी।

गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यापार में व्यवधान व परिवर्तन को दिखा रहा है। व्यवसाय में आपका निवेश अधिक होगा परंतु लाभ कम मिलेगा। हालांकि चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि पिता या किसी बड़े सम्मानित व्यक्ति की सहायता से आपको लाभ मिलेगा जो आने वाले समय के लिए बहुत ही अनुकूल है। साझेदारी में व्यापार शुरू करना आपके लिए शुभ नहीं है।

### धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण शारीरिक व्याधि दूर करने में अधिक व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है तथा अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप कुछ ऐसे कामों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। कुछ बेकार के कामों में आप पैसे बर्बाद कर सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च भी सामने आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। केस, मुकद्दमा व कानूनी प्रक्रिया में भी आपके कुछ अनावश्यक खर्च हो सकते हैं।

### घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं है। परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आपका वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। इस वर्ष परिवार में एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग

हो सकती है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं तथा अपने बौद्धिक शक्ति के द्वारा पारिवारिक विषमता को अनुकूल बनाने की कोशिश करें।

सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि पत्नी के स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। अतः उनको स्वास्थ्य संबंधी किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। इस वर्ष आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा सामान्य रहेगा।

### संतान

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष संतान के लिए कष्टप्रद रहने वाला है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा आपके प्रथम बच्चे की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

### स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग तथा इंफेक्शन के कारण होगा।

आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इस सब का नकारात्मक प्रभाव आपकी सेहत पर पड़ेगा, जिससे आपका स्वास्थ्य और प्रभावित हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण पेट, मोटापा व लीवर संबंधित बीमारियां हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी को गुरु ग्रह का गोचर विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पढ़ाई लिखाई में कमी या प्रतियोगिता में व्यवधान आ सकते हैं। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी हास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। प्रतियोगिता में प्रतिद्वंद्वियों द्वारा रुकावट डाली जा सकती है।

जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह साल श्रेष्ठ रहने वाला है। विदेशी शिक्षा प्राप्त करने वालों को वांछित सफलता मिलेगी।

### यात्रा-तबादला

इस वर्ष आपकी सारी यात्राओं में व्यवधान आने की संभावना है। पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं कर पाएंगे। अचानक व्यवसाय से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। इस यात्रा के अंतराल में आपको शरीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

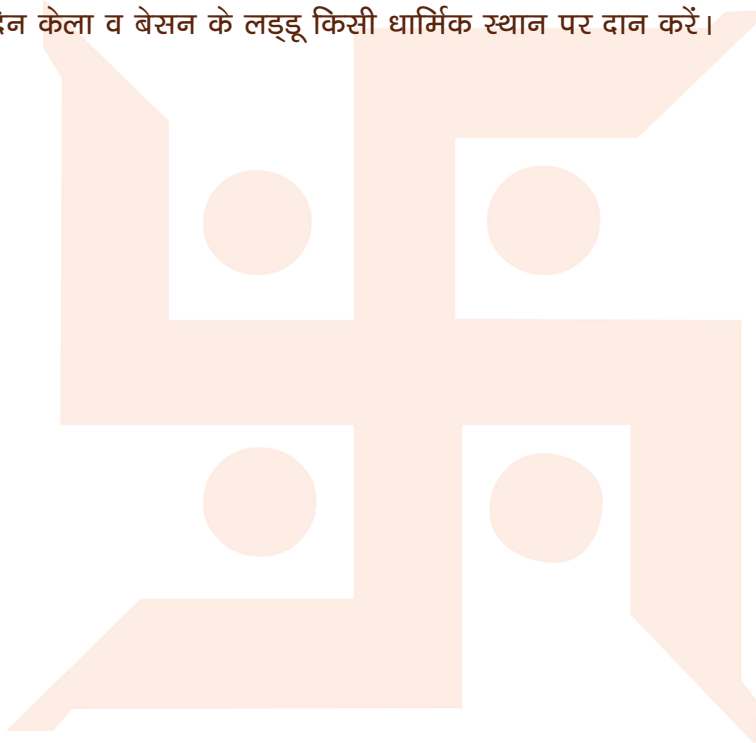


नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर तबादला होगा। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपके विदेश यात्रा होगी तथा इस यात्रा से आपको विशेष लाभ होने वाला है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा तथा मानसिक अस्थिरता के कारण आप पूजा-पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। तन्त्र मन्त्र व साधन के प्रति आपकी रुचि ज्यादा बढ़ेगी। धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा भी इस वर्ष प्रभावित रहने वाली है।

- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- बुधवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू किसी धार्मिक स्थान पर दान करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## दशा विश्लेषण

**महादशा :- राहु**  
**( 23/05/2014 - 23/05/2032 )**

राहु की महादशा 23/05/2014 को आरम्भ होकर 23/05/2032 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, जीविका में प्रगति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ की प्राप्ति, अचल सम्पत्ति तथा सुख में वृद्धि होगी।

**स्वास्थ्य :**

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे। एक सन्तुलित जीवन के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप चर्मरोग, पाचन-समस्या, हृदय संबंधी समस्या, विषाणुजन्य संक्रामक रोग आदि हो सकता है। थोड़ी सावधानी से इन रोगों से बचा जा सकता है।

**अर्थ और व्यवसाय :**

आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपको सभी भौतिक सुख मिलेंगे। आपको माता से लाभ मिल सकता है। आपको जहाँ तक सम्भव हो सट्टे से बचना चाहिए। व्यावसायिक उपार्जन, व्यापार से आय अच्छी होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि के क्षेत्र, विमान उड्डयन, विमान-चालन, कला, सम्पर्क-कार्य, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, व्यापार आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टी-बायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ आदि का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, सम्मान, वरिष्ठ कर्मचारियों के अनुग्रह तथा वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता, विदेश यात्रा, आय में वृद्धि और उपार्जन होगा। जीविका में प्राप्ति के लिए यह दशा उत्तम है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

इस दशा के दौरान आपको सभी भौतिक समृद्धि मिलेगी और सुखों में वृद्धि होगी। आप अपना आवास परिवर्तित कर सकते हैं। इस दशा में आपको चल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद की प्राप्ति हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी व दूर की यात्रा होगी। छोटी यात्रा में सम्भावित नुकसान से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

**शिक्षा :**

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप अपनी संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे। दशा की प्रगति के साथ स्थिति में सुधार आएगा। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर-विज्ञान, व्यापार आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है, आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी, आर्थिक-समृद्धि की प्राप्ति होगी और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पिता की यात्रा, अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक विकास होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक धन-लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय और भौतिक समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा भाग्यशाली सिद्ध होगी यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियों के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शनि की अन्तर्दशा कष्टकारक सिद्ध हो सकती है किन्तु, भौतिक कला व यात्रा का अवसर प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई-बहनों के लिए सहायक होगी और इसके फलस्वरूप उनको यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर दशा के फलस्वरूप लाभ और सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण पारिवारिक सुख मिलेगा और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल के कारण सुख की प्राप्ति, बच्चे का जन्म और जीविका में प्रगति होगी।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- राहु - केतु  
( 22/11/2024 - 10/12/2025 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/05/2014 को प्रारंभ होकर 23/05/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 22/11/2024 को प्रारंभ होकर 10/12/2025 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है परंतु वास्तव में वे शुभ या अशुभ कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आप साहसी, शक्तिशाली और प्रसिद्ध बनेंगे मगर पापकर्म में भी रुचि हो सकती है। इस कारण कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। आप प्रसन्नचित्त और धार्मिक होंगे। तीर्थयात्राएं हो सकती हैं। समाजसेवा करेंगे, गरीबों की मदद करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र  
( 10/12/2025 - 10/12/2028 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/05/2014 को प्रारंभ होकर 23/05/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 10/12/2025 को प्रारंभ होकर 10/12/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। शुक्र शुभ ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप ऐशो-आराम के पीछे बेचैन रहेंगे मगर यह बहुत परिश्रम के बाद ही उपलब्ध हो सकेगा। निम्न कोटि के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध स्थापित करने की कोशिश कर सकते हैं। विषय-वासनाओं की तृप्ति के लिए पापपथ पर चल सकते हैं, जिस कारण जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- लक्ष्मीजी की उपासना करें
- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं

- भोजन के समय पहली रोटी गाय को खिलाएं

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य**  
**( 10/12/2028 - 04/11/2029 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/05/2014 को प्रारंभ होकर 23/05/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 10/12/2028 को प्रारंभ होकर 04/11/2029 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। लग्न में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकते हैं। सत्ता के लिए व्याकुल रहेंगे। आशावादी और प्रसन्नचित्त रहेंगे; इस कारण लोकप्रिय होंगे। स्वास्थ्य में कुछ गिरावट आ सकती है। पापकर्म में लिप्त होकर सिद्धांतों से विमुख हो सकते हैं। इन कारणों से परिवार से दूर हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें।

प्रातः काल सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र**  
**( 04/11/2029 - 05/05/2031 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/05/2014 को प्रारंभ होकर 23/05/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 04/11/2029 को प्रारंभ होकर 05/05/2031 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। तृतीय भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी बुद्धिमत्ता, साहस, व्यक्तित्व और दक्षता में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। भाई-बहनों की मदद करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

चंद्रमा को चंद्र उदय के समय मंत्रोच्चार करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।

**महादशा :- गुरु  
( 23/05/2032 - 23/05/2048 )**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 23/05/2032 को आरम्भ और 23/05/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है और मातृभूमि, माता, निजी मामले, गुप्त जीवन, खेती, बगान पैतृक सम्पत्ति, शिक्षा-वृत्ति, जल, तालाब, दूध, नदी और झील के द्योतक इस भाव को बली कर रहा है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है। चौथे भाव में स्थित इस ग्रह की आपकी जन्मकुण्डली के आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर दृष्टि है और यह इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए अनुकूल, सुख तथा समृद्धिदायक होगी।

**स्वास्थ्य :**

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु चतुर्थ भाव को बली कर रहा है। आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा और कोई गम्भीर बीमारी या कष्ट नहीं होगा। आप अपना कार्य सामान्य ढंग से पूरा करेंगे।

**धन-सम्पत्ति :**

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (बारहवें भाव के अतिरिक्त) आठवें और 'मंगलीय कार्य' तथा व्यवसाय के दसवें भाव पर है। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति में वृद्धि

करने के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। आप नयी गाड़ियाँ तथा नया मकान खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

व्यवसाय :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (12वें भाव के अतिरिक्त) 8वें तथा व्यवसाय, दीर्घायु और 'सुखकार्य' के 10वें भाव पर है, अतः आप अपने व्यवसाय में सफल होंगे, कार्यक्षेत्र में आगे रहेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, आपको अपनी व्यावसायिक वृत्ति में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। आपके कार्य की आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चतुर्थ भाव अर्थात् माता, जन्म और 'सुखस्थान' के भाव में स्थित गुरु के कारण इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण रहेगा। परिवार में समरसता लाने में आपकी माता की भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

चतुर्थ भाव, जो शिक्षा का भाव भी है, में स्थित गुरु के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और आप सफल होंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु  
( 23/05/2032 - 11/07/2034 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 23/05/2032 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/05/2032 को प्रारंभ होकर 11/07/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपके माता से मधुर संबंध रहेंगे। अचल संपत्ति और वाहन का सुख मिलेगा। शिक्षा उत्तम होगी; परीक्षा में सफल होंगे। चरित्र उच्चकोटि का होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगे। अध्ययन के लिए समय बहुत अच्छा है। निवास के परिवर्तन के लिए भी शुभ समय है। अध्यात्म, धर्म और दान देने की ओर प्रवृत्ति होगी। कार्यों में सफल रहेंगे।

आपके जीवनसाथी सम्मानित होंगे। आपके पिता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्न, संपन्न और सौभाग्यशाली होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, पारिवारिक सुख, शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, खर्च बढ़ेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो हर प्रकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि  
( 11/07/2034 - 21/01/2037 )**

आपकी बृहस्पति की महादशा 23/05/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/07/2034 को प्रारंभ होकर 21/01/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी, मगर आप उन्हें पार करने में कामयाब होंगे। धैर्य का प्रयोग श्रेयस्कर रहेगा। विवेक और दृढ़निश्चय से युक्त रहेंगे। विवाह हो सकता है। व्यापार में लाभ, विदेश यात्रा, प्रोन्नति और प्रसिद्धि की संभावना है। छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनकी यात्राएं होंगी, व्यापार में लाभ होगा, जीवनस्तर सुधरेगा। आपके पिता को संतान से सुख मिलेगा; निवेश से लाभ होगा। माता के सम्मान में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचानक धनलाभ या अचल संपत्ति की

प्राप्ति, कर्मचारियों से सहयोग का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय अच्छी होगी, यात्राएं होंगी।

अगर आप परामर्शदाता हैं तो अचल संपत्ति क्रय करेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आलस्य से दूर रहें। मामूली बीमारियों का तुरंत इलाज करवाएं।

अरिष्ट से बचाव के लिए भोजन से पूर्व गाय को रोटी दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध  
( 21/01/2037 - 29/04/2039 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 23/05/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 21/01/2037 को प्रारंभ होकर 29/04/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपकी ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी; मानसिक क्षमता तीव्र रहेगी। विद्वानों की संगत में रुचि होगी। ज्योतिष, धर्म, गणित और कविता में दिलचस्पी होगी। अपने कार्यों को सुनियोजित करेंगे; सफलता प्राप्त होगी। यात्रा और सैर-सपाटे में मन लगेगा। प्रतिभा के कारण प्रशंसित होंगे; परिश्रम से सफलता मिलेगी। विवाह हो सकता है। व्यापार और निवेश में लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता को निवेश और शेयरों में लाभ हो सकता है। माता को कार्यों में सफलता मिलेगी, धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए नये मित्र, सम्मान, संतुष्टि, उत्तम शिक्षा और कार्यों की पूर्णता के संकेत हैं।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, जनसंपर्क बढ़ेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। परामर्शदाताओं की नींव मजबूत होगी, धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर अत्यधिक उत्तेजना से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए समाजसेवी संस्था में दान दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - केतु  
( 29/04/2039 - 04/04/2040 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 23/05/2032 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 29/04/2039 को प्रारंभ होकर 04/04/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसन्न होंगे। समाज और कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। माता-पिता और आयु में बड़े लोगों से लाभ होगा। सामाजिक कार्यों में रुचि लेंगे जिससे सम्मान मिलेगा।

माता से संबंध मधुर रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। बहुत से मित्र होंगे जो सहायता करेंगे। माता के माध्यम से लाभ हो सकता है। अचल संपत्ति से आय में वृद्धि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी सुखसाधनसंपन्न होंगे। आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित लाभ, अचानक घटना, परिवर्तन, यात्रा और अधिक खर्च का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कोई मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, कंबल, सतनजा और तिल दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र  
( 04/04/2040 - 04/12/2042 )**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 23/05/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 04/04/2040 को प्रारंभ होकर 04/12/2042 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। मितव्ययता और बचत से धन का संचय हो सकता है। संचित धन को टूटने न दें। अध्यात्म और दान-धर्म में रुचि हो सकती है। लोगों की भलाई के कार्य करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज अदा कर सकते हैं। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो संकता है।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा; उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

आपके पिता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता की यात्राएं होंगी; धनी बनेंगी सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उत्तम आय और जीवनशैली, विभिन्न माध्यमों से धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को सफलता मिलेगी, लघु यात्राएं हो सकती हैं या मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य का, विशेषकर आंखों का ध्यान रखें, संयम का जीवन जिएं। अरिष्ट से बचाव के लिए चावल, श्वेत वस्त्र, दही और चीनी का दान करें।

### **अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य ( 04/12/2042 - 22/09/2043 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 23/05/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/12/2042 को प्रारंभ होकर 22/09/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। तरक्की करने के लिए यह समय बहुत अच्छा है। आप में नेतृत्वक्षमता उत्तम है। उच्चाधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे। सरकार से सम्मान मिल सकता है। इच्छाएं पूर्ण होंगी, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, आपकी छवि उत्तम होगी। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है, इस से नीति और धैर्य द्वारा बचा जा सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को व्यापार से लाभ हो सकता है। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता, सफल और धनी बनेंगी, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उच्चपद, धन, इच्छाओं की पूर्ति और सुविधाओं का संकेत है।

आपकी संतान भाग्यशाली होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे। परामर्शदाता भी सफल रहेंगे। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्तविकारों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- गुरु - चन्द्र  
( 22/09/2043 - 21/01/2045 )**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 23/05/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 22/09/2043 को आरंभ होकर 21/01/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे। साहित्य और संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। वाक्शक्ति उत्तम होगी। छोटे भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। उत्तम वस्त्र प्राप्त होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी। लघु यात्राएं हो सकती हैं। भाग्यशाली, प्रसन्न और धनी होंगे। संतान से सुख मिलेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी बनेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, घरेलू जीवन सुखी रहेगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्रा हो सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए विरासत से लाभ, सुखी पारिवारिक जीवन, सरकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान का ज्ञानार्जन उत्तम होगा, बहुत से मित्र होंगे, सफलता मिलेगी। परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं को परिश्रम करना होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कुमारी कन्या को हरे वस्त्र दान में दें।

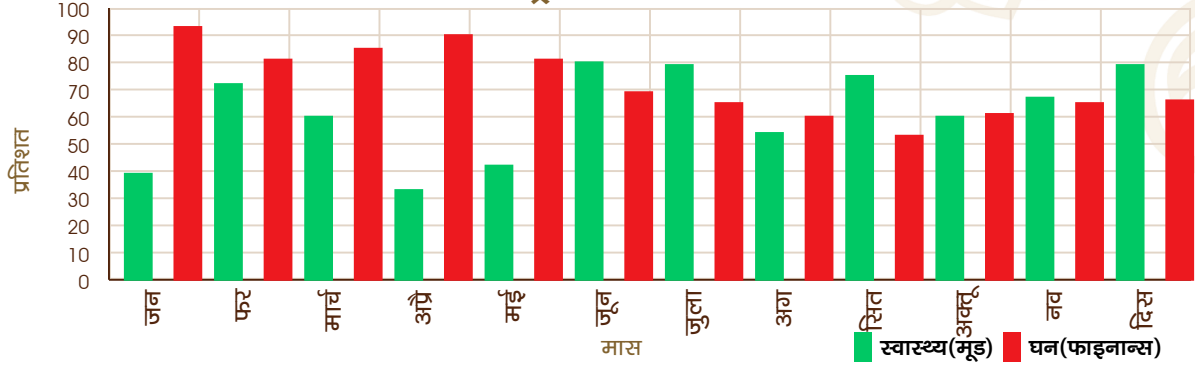
## एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रुचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते हैं।

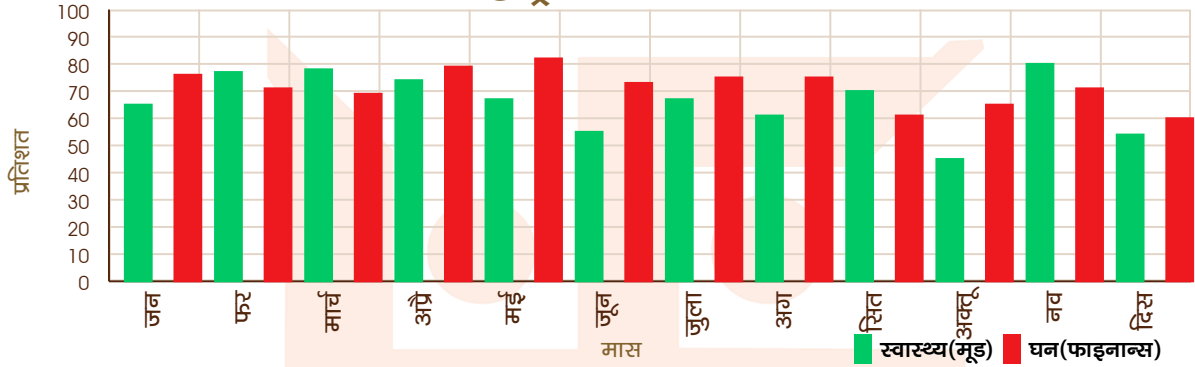
अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापकम के अनुसार हैं। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

|       |         |        |           |
|-------|---------|--------|-----------|
| 0-20  | निकृष्ट | 50-65  | श्रेष्ठ   |
| 20-35 | नेष्ट   | 65-80  | उत्तम     |
| 35-50 | सामान्य | 80-100 | अत्युत्तम |

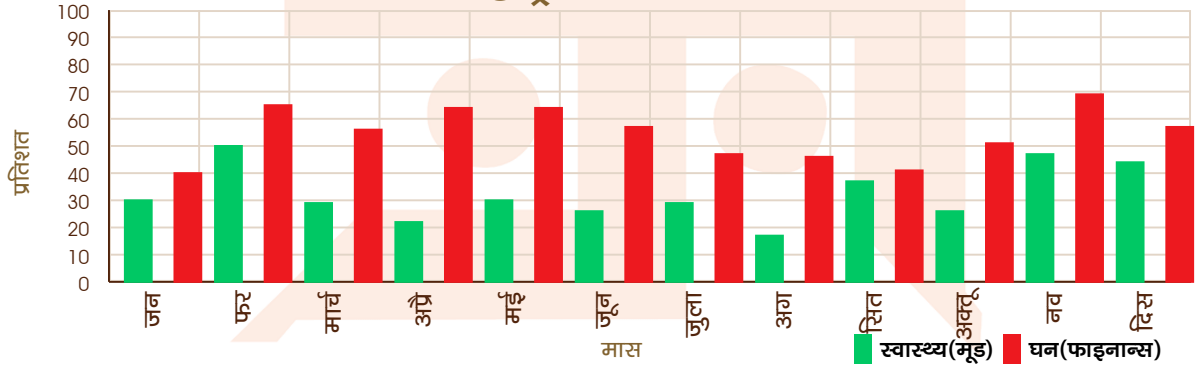
### एस्ट्रोग्राफ - 2025



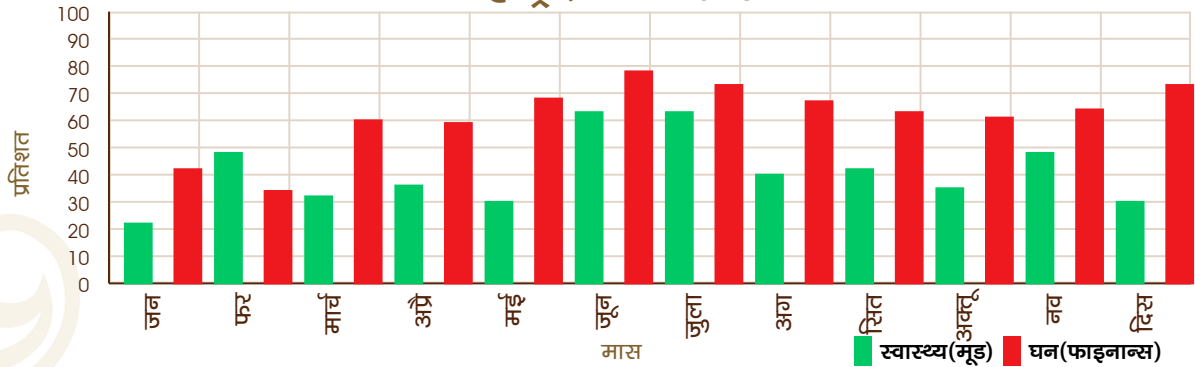
### एस्ट्रोग्राफ - 2026



### एस्ट्रोग्राफ - 2027



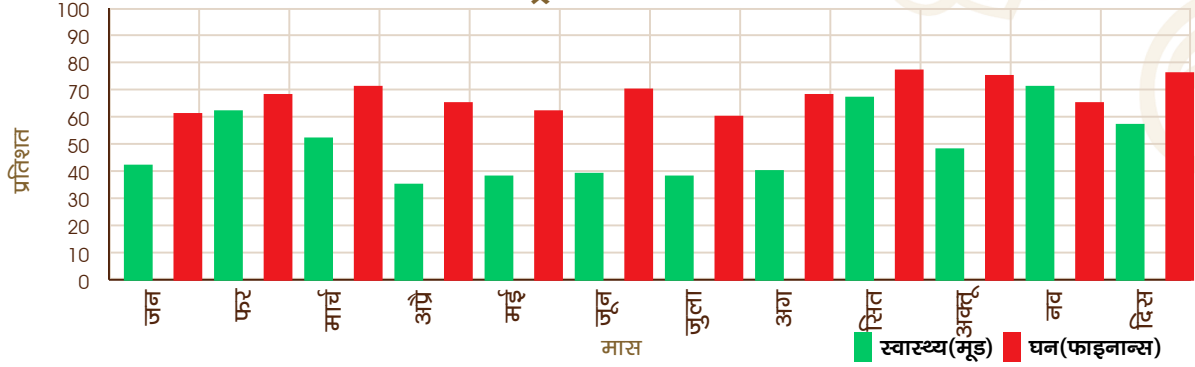
### एस्ट्रोग्राफ - 2028



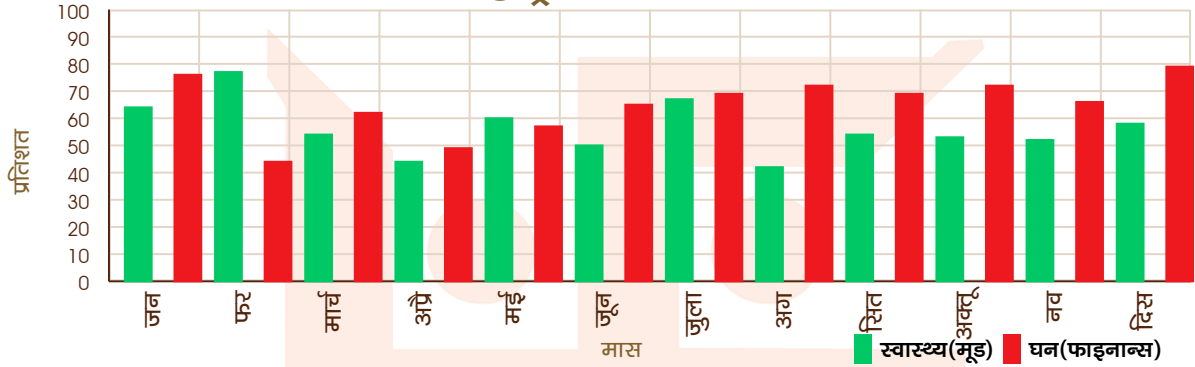
**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



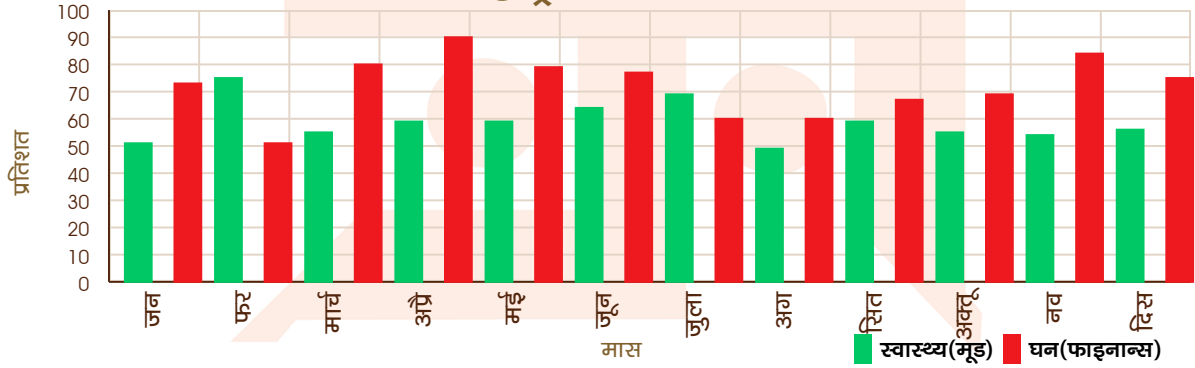
### एस्ट्रोग्राफ - 2029



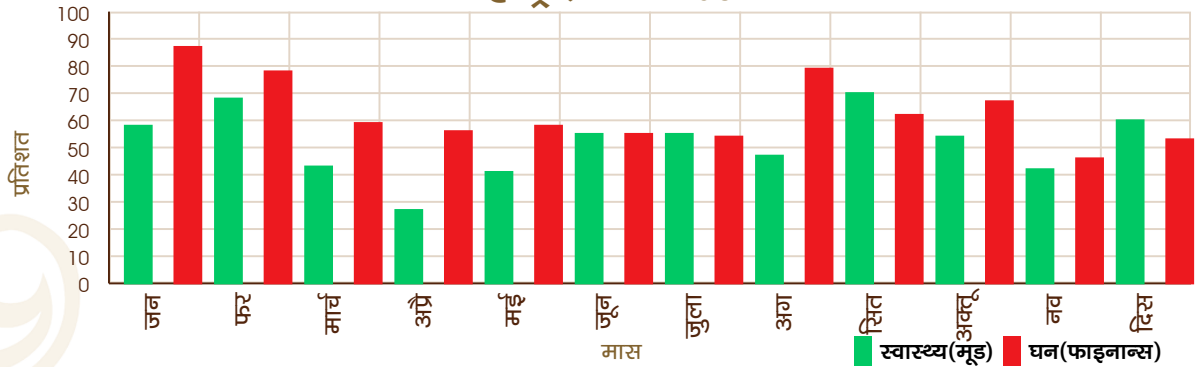
### एस्ट्रोग्राफ - 2030



### एस्ट्रोग्राफ - 2031



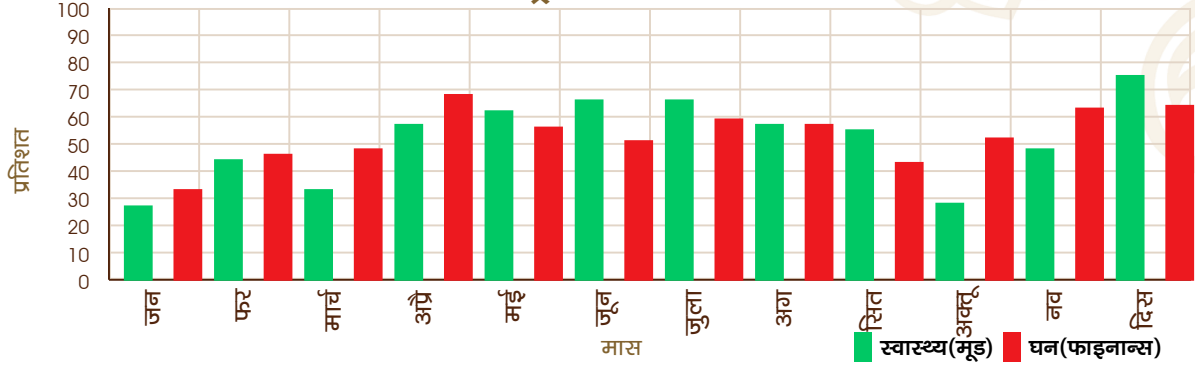
### एस्ट्रोग्राफ - 2032



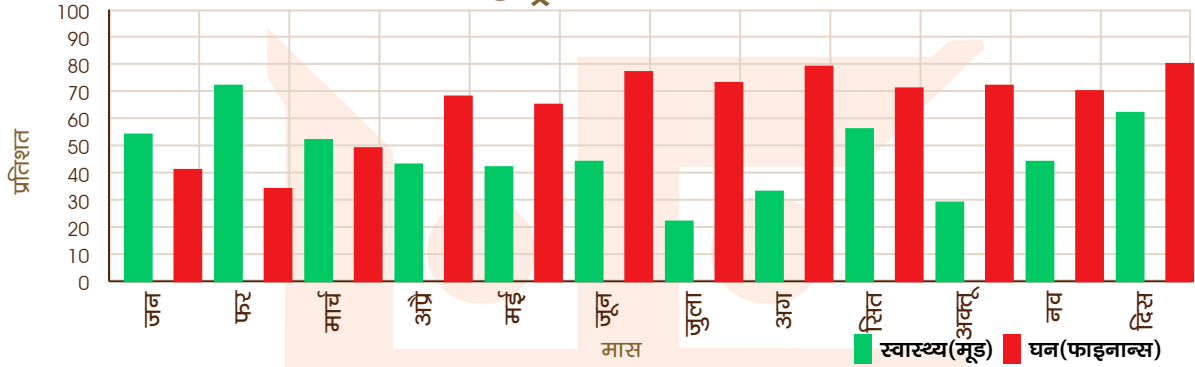
**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



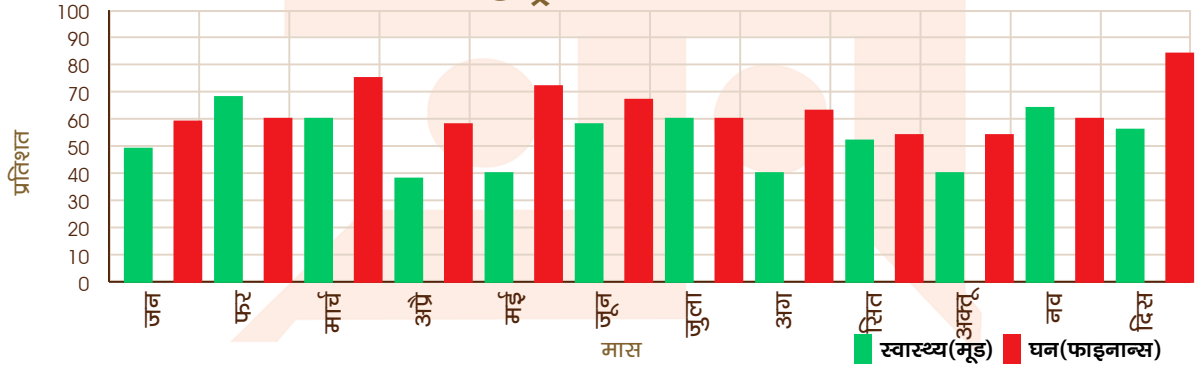
### एस्ट्रोग्राफ - 2033



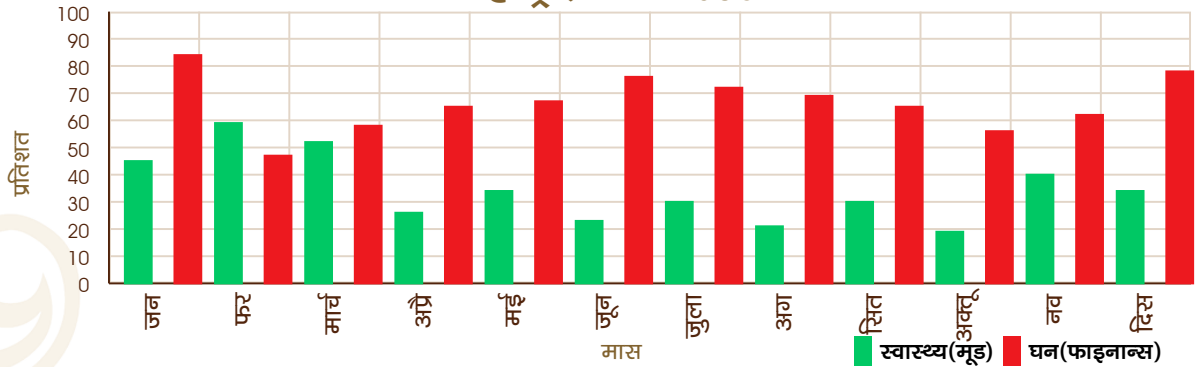
### एस्ट्रोग्राफ - 2034



### एस्ट्रोग्राफ - 2035



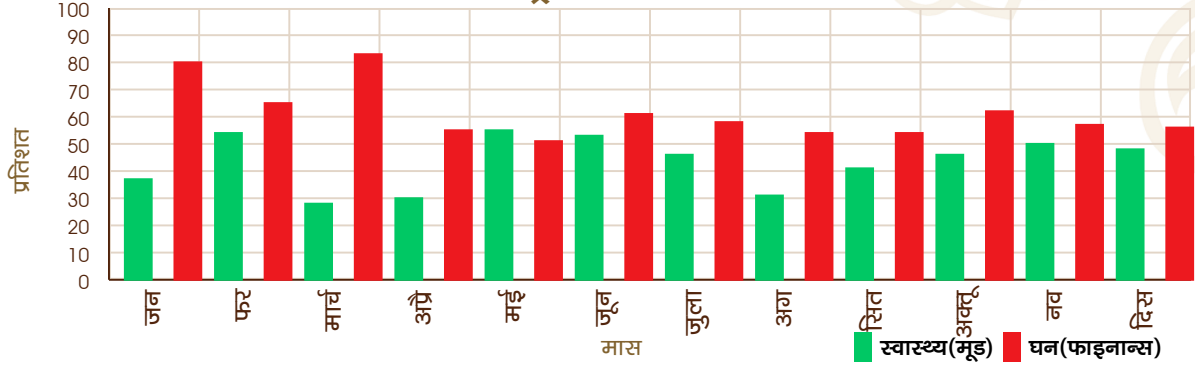
### एस्ट्रोग्राफ - 2036



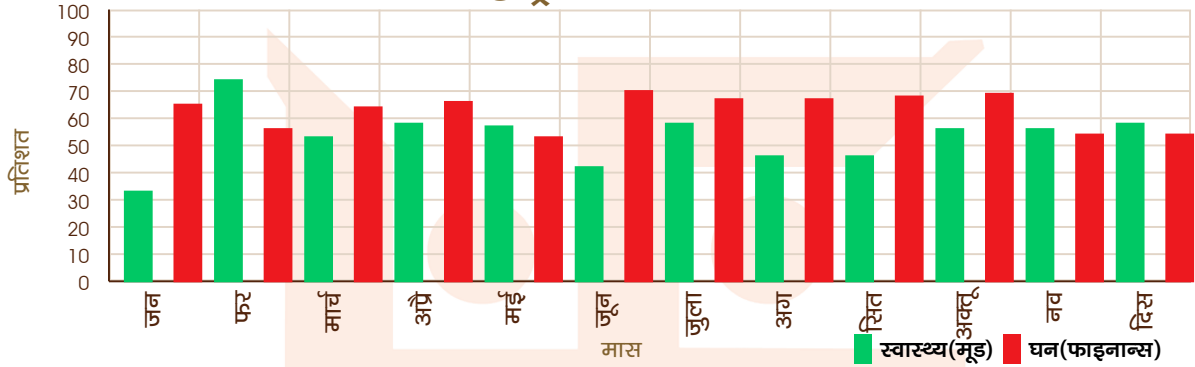
**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



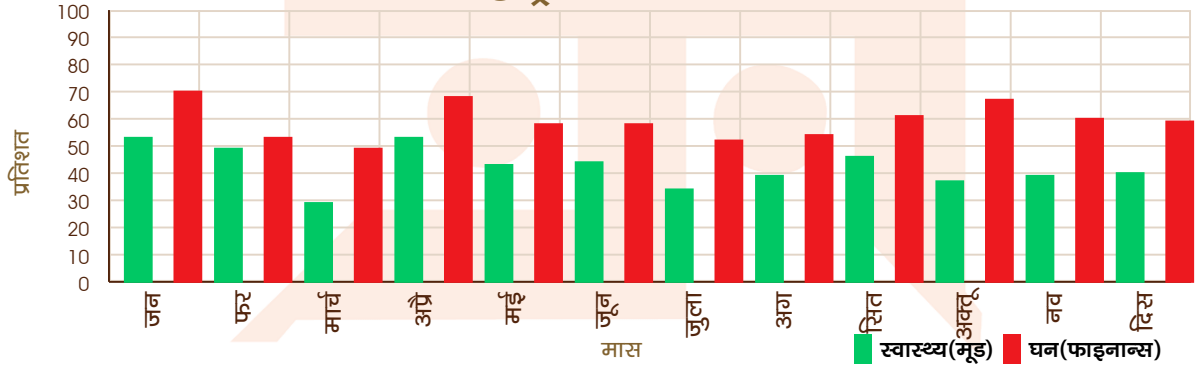
### एस्ट्रोग्राफ - 2037



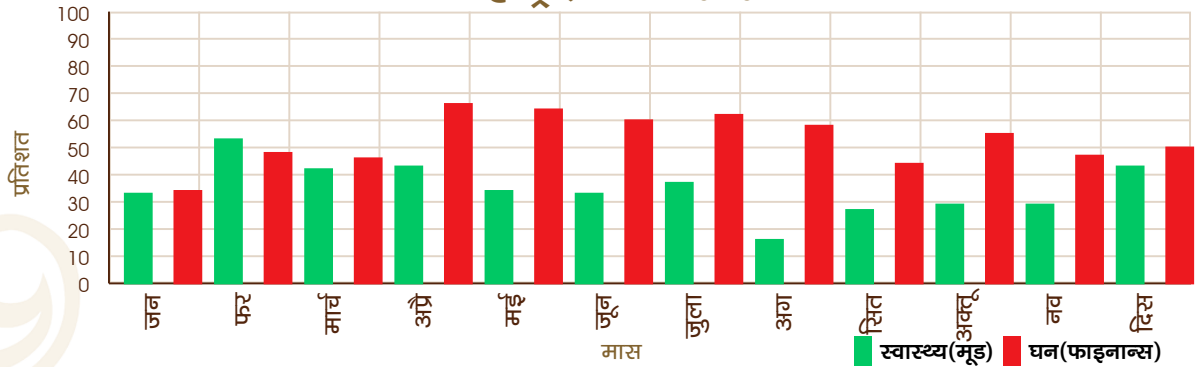
### एस्ट्रोग्राफ - 2038



### एस्ट्रोग्राफ - 2039



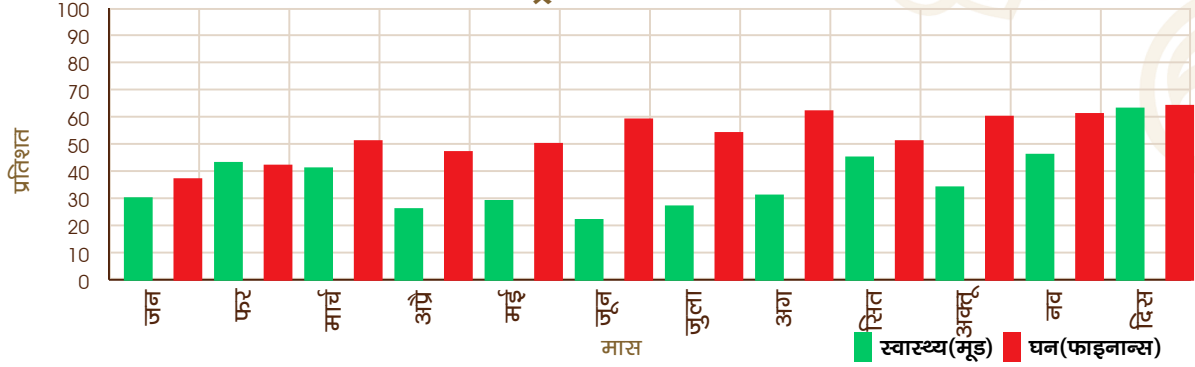
### एस्ट्रोग्राफ - 2040



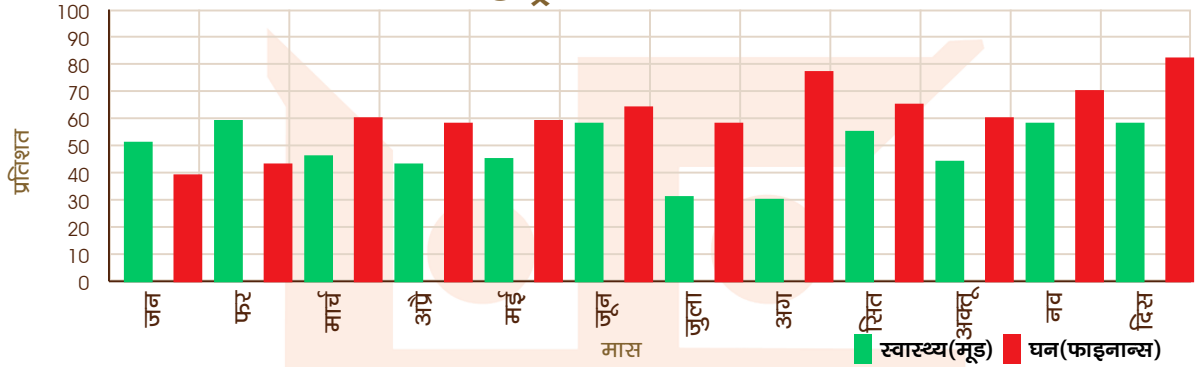
**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



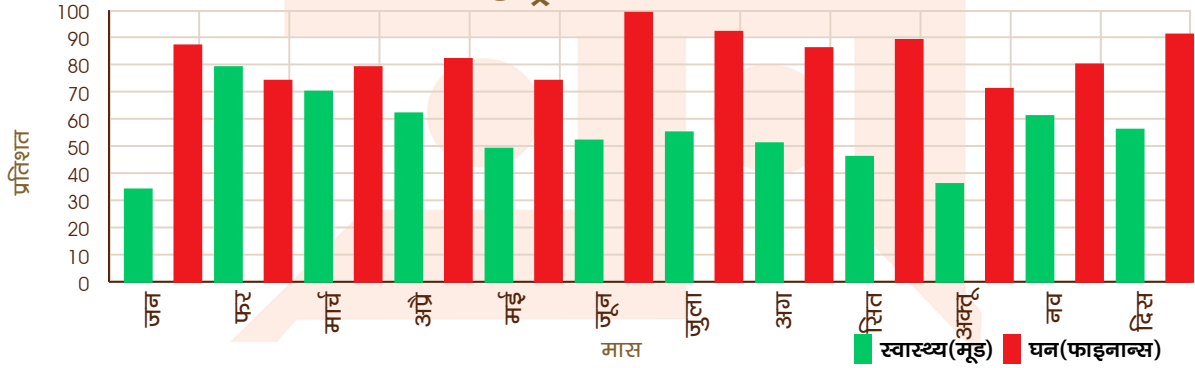
### एस्ट्रोग्राफ - 2041



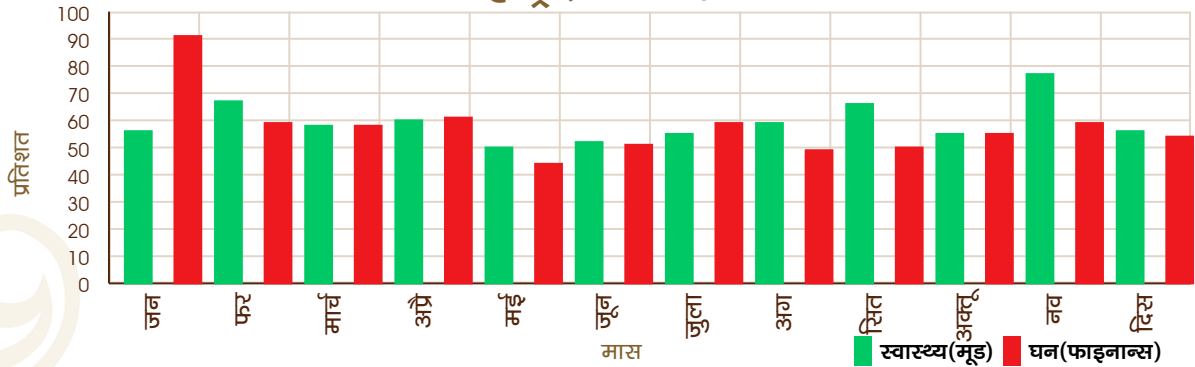
### एस्ट्रोग्राफ - 2042



### एस्ट्रोग्राफ - 2043



### एस्ट्रोग्राफ - 2044



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## योग

### शशक योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः ।  
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥  
लघुर्द्विजास्योऽद्रिगतः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः ।  
वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ताः प्रियातिथिर्नातिलघुः प्रसिद्धः ॥  
नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किंचि-  
द्धातोर्वादि भवति कुशलश्चंचलो लोलनेत्रः ।  
स्त्रीसंसक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजङ्घो  
मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ॥  
पर्यङ्कशङ्खशरशस्त्रमृदङ्गमाला-  
वीणोपमाः खलु करे चरणे च रेखाः ।  
वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं  
प्राप्तं शशाख्यनृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥

॥ मानसागरी ॥ अ.4/श्लोक 2, 9, 1-3 ॥

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर शनि केन्द्र में हो तो शशक योग बनता है ।

इस योग में समुत्पन्न जातक छोटे दाँत और छोटे मुखवाला, पर्वत पर रहने वाला, क्रोधी, हठी, महावीर, वन, पर्वत, नदी किनारे आदि में निवास करने वाला, अतिथि सेवा करने वाला, मध्यम कद का व्यक्ति होता है । सेनाओं को एकत्रित (इकट्ठा) करने में आसक्त, खनिज विद्या में निपुण, स्त्री में आसक्त, पराये धन हरण करने वाला, माता में भक्ति रखने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, दूसरे के छिद्रों को जानने वाला, हाथ पाँव में पलङ्ग, शङ्ख, वाण, शस्त्र, मृदङ्ग, माला वीणा आदि के चिह्नों से युक्त और 70 वर्ष पर्यन्त राज्य करने वाला होता है ।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है । फलस्वरूप जातक उद्योगपति, राजदूत, मुखिया, मैकेनिकल इन्जीनियर, रसायनिक इन्जीनियर या माइन्स इन्जीनियर, भवन निर्माण, लौहकार्य, ट्रांसपोर्ट कार्य, नौकरी, महाव्यवसायी, भारी उद्योग के मालिक, राजनेता, मंत्री, राजनीतिक क्षेत्र में वांछित सफलताएं प्राप्त होंगी ।

### वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि ।  
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ।  
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ ॥

॥ सारावली ॥ अ.14/श्लोक 1, 6 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

### चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।

समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ॥

॥ सारावली ॥ अ. 35 /श्लोक 64॥

यदि कोई भी ग्रह कुंडली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठित हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

### अमरयोग

चतुर्ष्वपि हि केन्द्रेषु क्रूराः सौम्या यदा ग्रहाः।

क्रूरैः पृथ्वीपतिं विद्यात्सौम्यैर्लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥

॥ मानसागरी ॥ अ. 4/श्लोक 1 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सभी पाप ग्रह या सभी शुभ ग्रह केंद्र स्थान (1-4-7-10) में स्थित हों तो अमर योग होता है। यदि सभी पाप ग्रह हो तो पृथ्वीपति होता है। यदि शुभ ग्रह हों तो लक्ष्मीपति (धनाढ्य) होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु

योग की संभावना : 2187 में 1

यह योग आपकी जन्मपत्रिका में पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही धनाढ्य, राजसेवक तथा उच्चाधिकारी होंगे। आप राजा के समान प्रसंशनीय होंगे।

### अमलयोग

चन्द्राद्योमन्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।

क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

### पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः

स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।

योगः स पर्वताख्यः।

स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 35, 36 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

### चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः

स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।

प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदयां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।

कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/ श्लोक 44-45 ॥

यदि जन्मकुंडली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध, शनि

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान्, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

### पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।  
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 3/श्लोक 17 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, गुरु

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

### सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।  
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः  
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।  
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।  
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने॥

॥ सारावली ॥ अ. 13/श्लोक 1, 4 ॥

यदि जन्मकुण्डली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु, चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

### भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते।  
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत्॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 4/श्लो. -16 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट

हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र,मंगल

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

### युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।

तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-33 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

### सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

### कंठरोग योग

विलग्नेविक्रमराशिनाथे बुधेन युक्ते गलरोगमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-44

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश बुध युक्त लग्न में स्थित हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल

योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



### कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्ध्वरोगमत्र ।  
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, शनि, मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

### दीर्घायु भातृ योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ.-285 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

### उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।  
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-59 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

### निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।  
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-143 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो

अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

### मातृस्नेह योग

यदा लग्नसुखेशौ वा मित्रभूतौ परस्परम् ।

शुभेक्षितौ शुभैर्युक्तौ मातृस्नेहं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-148 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश चतुर्थेश परस्पर मित्र हों, शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो तो माता का विशेष स्नेह प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,शनि

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अपनी माता का विशेष स्नेह प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

### सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।

लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्ये प्राकारसंयुतम् ॥

॥ जातकपारिजात ॥ अ.12/श्लो.-148 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि,शुक्र

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

### पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।

कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020

Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

योग कारक ग्रह : राहु,सूर्य,मंगल,शनि,गुरु

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

### एकपुत्र योग

पुत्रेशांशपतिः स्वभांशकगतो यद्येकपुत्रं वदेत् ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 13/श्लो.-11 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो, उस नवांश का स्वामी निज नवांश में हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मात्र एक पुत्र का सुख प्राप्त हो ऐसा प्रतीत होता है।

### शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते ।

मूर्धार्तिमुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ॥

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

### विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है ।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

## वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुण्ठवासी होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।

## स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्तराश्वंशतः ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है ।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

### बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥  
॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : राहु, गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

### बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।  
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-15 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

### बहुस्त्री योग

केन्द्रत्रिकोणे दारेशे स्वोच्चमित्रस्ववर्गगे ।  
कर्माधिपेन वा युक्ते बहुस्त्रीसहितो भवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-30 ॥

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में उच्च या मित्र राशि में या अपने अंशादि में हो अथवा दशमेश से युक्त हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक से संबंध स्थापित होगा। ऐसा प्रतीत होता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



### सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।  
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभागभवेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-40 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

### द्विभार्या योग

॥ भारतीय ज्योतिष ॥ पृ. 302-2 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश और सप्तमेश इन दोनों ही के लग्न या सप्तम भाव में स्थित रहने से द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि, सूर्य

योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो संबंध हों, ऐसा प्रतीत होता है।

### द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ॥

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 303 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

### द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः ॥

॥ बृहद्योग रत्नाकर ॥ पृ. 302 ॥



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

### विकलांग योग

बुधभौमो यदा लग्ने षष्ठस्थानेऽथवा स्थितौ।

तस्करश्चौर्यकर्मस्याद्धस्तपादौ च नश्यतः॥

॥ मानसागरी ॥ अ.4/अरि.-37 ॥

यदि जन्मकुंडली में बुध और मंगल लग्नस्थ हो अथवा ठे भाव में हो तो जातक अंगहीन (हाथ-पाँव नष्ट) होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, बुध

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप चोरी करनेवाले होंगे तथा अंगहीन हो कर जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

### पारिजात योग

”सपारिजातद्युचरः सुखानि ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

### उत्तमवर्ग योग

”नीरोगतामुत्तमवर्गयातः ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



योग कारक ग्रह : शनि

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

### गोपुरांश योग

“सगोपुरांशो यदि गोधनानि ”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका में “गोपुरांश” भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में “गोपुरांश” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

### वासि योग

“व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात् ।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो “वासि” योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वासि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

